: प्रसिद्ध व्यक्तियों के प्रेम-पत्र :

विश्व के सौ से भी अधिक महानतम व्यक्तियों के
एक सौ अट्ठाइस प्रामाणिक प्रेम-पत्रों का
अपने जैसा एकमात्र संकलन ।

सम्पादन : विजय चन्द | संकलन : वीरेन्द्र गुप्त

उन तमाम लेखको, सम्पादको, और प्रकाशको के प्रति हम अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं; जिनकी पुस्तको, पत्रिकाओ, और बहुमूल्य सहयोग के बिना, बेदाग हीरो का यह सकलन असम्भव ही होता !

मिट गये मेरी उम्मीदो की तरह हर्फ मगर,
आज तक तेरे खतों से तेरी खुश्बू न गई।

—अख्तर शीरानी

पत्रों से पूर्व

लगभग एक वर्ष की बात है। अपने अभिन्न मित्र श्री कैलाश नाथ सेठ से 'बडे लोग किस प्रकार के प्रेम-पत्र लिखते है ?'—पर बात चल निकली। मेरा तब भी यही कहना था, और अब भी यही मत है, कि प्रेम का जज्बा, सब कालो और सब व्यक्तियो मे एक समान होता है। पीड़ित किये जाने पर दुनिया के सब मनुष्यो मे जिस प्रकार क्रोध का उत्पन्न होना स्वाभाविक है, दुलराये जाने पर उनके हृदय मे प्यार की बासन्ती लहरे उठना भी उसी प्रकार लाजिमी, और जो व्यक्ति क्रोध और प्यार—यह दो बाते नही कर सकता, वह चाहे और कुछ भी भी हो सकता हो, पर उसके इन्सान होने मे, कम से कम मुझे शत-प्रतिशत सन्देह है।

तब से जीवनियो मे से खोज-खोज कर प्रेम-पत्र पढने का भूत सवार हो गया। सोचा—इनका सकलन किया जाये तो कैसा ?... भाई वीरेन्द्र जी ने राह दी, और काम में जुट पडे। पूरे-पूरे दिन बैठ कर दर्जनो लायब्रेरियां चाट डाली, और इन पत्रो मे से अधिकांश का सकलन एव अनुवाद किया। उर्दू के पत्र ढूंढने मे भाई निश्तर खानकाही का सहयोग मिला। इसके अतिरिक्त मैने लगभग दो सौ पत्र भारत के हर क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्तियो को भेजे, और उनसे प्रार्थना की, कि वे अपना प्रेम-पत्र, (जो कल तक निश्चय ही उनकी व्यक्तिगत 'सम्पत्ति' था), आगे से 'सार्वजनिक वस्तु' बनाने के हेतु हमको प्रदान करे ! उत्तर

आये पर कम । अधिकतर राजनीतिज्ञों (जैसे प्रसार मन्त्री श्री केसकर, अशोक मेहता, आदि, आदि) ने लिखा, कि उनके पास ऐसा कोई पत्र है ही नही ! .. (मेरा खयाल है, एक अदद ऐसा दिल तो अवश्य ही होगा !) साहित्यकारो से अपेक्षाकृत अधिक सहयोग मिला, चाहे अतिशय झिझक, और दर्जनो प्रार्थनाओ के पश्चात् ! कृष्ण चन्द्र, अमृता प्रीतम 'नीरज', के० एम० मुन्शी तथा विष्णु प्रभाकर के हम उनके इस सहयोग के लिए अत्यन्त आभारी है ।

'प्रेम शब्द को हमने उसके सीमित अर्थो मे लिया है । एक पुरुष अथवा स्त्री की अपने विपरीत-लिंगी के प्रति काम-आकर्षण के सीमित अर्थों मे । केवल पति, पत्नी, प्रेमी या प्रेमिका को लिखे गये पत्र ही हमने शामिल किये है । प्रेम-सम्बन्धी वे पत्र भी हमने छोड दिये, जो उपरोक्त व्यक्तियो के बारे मे तो थे, पर लिखे किसी दूसरे व्यक्ति को गये थे—जैसे लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक का पत्र । इसी प्रकार उन्ही व्यक्तियों को 'प्रसिद्ध' समझा गया, जो भारतवर्ष मे प्रसिद्ध हैं । उन व्यक्तियो के पत्रों को हमने छोड दिया, चाहे वे ब्रिटिश संसद के सदस्य ही क्यो न हों—जैसे लार्ड कॉलिंग वुड—जिनका नाम स्मरण करने के लिये किसी भारतीय को अपने माथे पर हाथ फिराना पडे । भारतीयों और स्त्रियो के पत्रो को हमने प्रमुखता दी । मुख्य क्रम के अतिरिक्त तीन परिशिष्ट—पत्र लिखने वालो के व्यवसाय के अनुसार, स्त्रियो के पत्र, और भारतियों के पत्र—भी हमने दिये । वे ही पत्र लिये गये, जिनकी प्रामाणिकता के विषय मे हमे पूरा निश्चय हो गया । ऐसे पत्र, चाहे वे किसी बडे से बडे व्यक्ति द्वारा ही लिखे गये प्रचारित क्यो न थे, हमने छोड दिये, जिनके बारे मे कल्पित होने का हमे जरा सा भी शक पड़ा । लार्ड क्लाइव और रुक्मणी द्वारा श्री कृष्ण को लिखा गया प्रेम-पत्र इसी श्रेणी के पत्र थे ।

केवल जीवित व्यक्तियो के पत्रो मे ही उनके प्रेमी या प्रेमिका का नाम गुप्त रखने की हमने छूट रखी, क्योकि इस पुस्तक का उद्देश्य आनन्द प्रदान करना है, किसी प्रकार की सनसनी फैलाना नही ।

आनन्द के साथ-साथ पत्र लेखको के लघु, पर भावात्मक परिचय और फुट-नोटो के द्वारा, पुस्तक मे एक स्वस्थ तथा प्रगतिशील जीवन-दर्शन, और एकसूत्रता लाने का प्रयत्न भी किया गया है। प्रेम की भावना दूसरी भावनाओ की तरह ही, सामाजिक या असामाजिक, स्वस्थ अथवा रुग्ण होती है, और हमने कोशिश की है, कि पुस्तक का समग्र प्रभाव सामाजिक और स्वस्थ ही पडे । एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति को लिखा गया केवल एक ही पत्र लेने का हमने नियम रखा, मगर विशेष स्थितियो मे, जहा एक से अधिक पत्र परस्पर सम्बन्धित थे—जैसे जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के तीन पत्र, जो एक ही सास मे, और एक ही दिन लिख कर, एक ही साथ पोस्ट किये गये थे—हमने इस नियम को तोडा भी है । एक बात अनुवाद की भाषा के सम्बन्ध मे । हिन्दी भाषा पर जिनका अधिकार है, उनको वह अवश्य खटकेगी, पर हमारा उद्देश्य ऐसी हिन्दी का प्रयोग करना रहा है, चाहे उसमे कुछ अहिन्दी शब्द और नयून्तम अहिन्दी व्याकरण भी क्यो न आ जाये, जो हिंदी के औसत पाठक को अर्थ-बोध और रस-ग्रहण करा सके । उर्दू पत्रो को, जहा तक हो सका, केवल लिपि परिवर्तन करके वैसे का वैसा प्रकाशित कर दिया गया है । सकलन सरस हो, और उसमे पर्याप्त गभीरता भी रहे, ऊपर से विपरीत लगने वाले इन दोनो उद्देश्यो को हमने अपने ध्यान में रखा है । अधिकाश पत्र जीवनियो मे से सकलित किये गये है, पर जिन जीवनियो मे से ये पत्र लिये गये है, उनकी संख्या से उन जीवनियो की सख्या बहुत बडी है, जिनको पढने के बाद उनमे से कोई पत्र नही मिला, या सकलन मे सम्मलित किये जाने योग्य नही

समझा गया।

गैरी पावर्स (अमरीकी जासूस व हवाबाज) का पत्रांश छपा, और हम पूरा पत्र प्राप्त करने के लिये दौड़ पड़े। आधी दर्जन संस्थाओं के चक्कर काटने, और लगभग इतने ही दिन खर्च करने के बाद, पूरा पत्र हमें मिल ही गया। ऐसा ही अमीर शहीद श्री लुमुम्बा के पत्र के साथ हुआ।

पत्र जिनको लिखे गये, उनके परिचय, नाम आदि के साथ-साथ, पत्र लिखने की पूर्व-भूमि और उसके बाद के सम्बंधित घटना-क्रम के संकेत फुट-नोटों में दिये गये हैं, पर इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है, कि ये फुट-नोट हिसाबी, और नीरस न हो जाये। पत्र अनेक भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त, अंग्रेजी और फ्रान्सीसी से भी अनुवाद किये गये हैं।

—और अब ये हीरे, या पत्थर जो कुछ भी ये हैं, आपके हाथों में हैं. ।

प्यार की किरणें आपके जीवन को जगमगायें, इस शुभ कामना के साथ—

—विजय चन्द

क्रम

विवाह से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र

(क) पत्र जिनमे विवाह का प्रस्ताव किया गया :

१. राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन का पत्र मेरी ओवन्स के नाम— २७
"...जब से मै यहाँ आया हूँ, केवल एक स्त्री ने मुझ से बातचीत की है "

२ उपन्यासकार टाल्स्टाय का पत्र सोनिया के नाम— ३०
" . क्या तुम मेरी पत्नी बनना चाहती हो ?"

३. उपन्यासकार सर वाल्टर स्कॉट का पत्र मारगरेट के नाम— ३३
"...जब चिन्ताये आयेगी, हम उन्हे हस कर उडा देगे..."

(ख) विवाह से ठीक पहले लिखे गये प्रेम-पत्र :

४. रानी विक्टोरिया का पत्र राजकुमार ऐल्बर्ट के नाम— ३७
" एक पक्ति लिख भेजना ओ मेरे प्रियतम दूल्हे !"

५. कवि ब्राऊनिंग का पत्र कवियत्री बैरट के नाम— ३८
".. वे तुम्हे नही बता सकते, कि तुम मुझे कितनी अधिक प्रिय हो . "

६ लेखक कार्लाइल के नाम जेन वैल्श का पत्र – ४०
" लेकिन प्रियतम, पत्रो मे लिये-दिये गये, ये चुम्बन किस काम के ?"

(ग) पत्र जिनका अन्त विवाह मे हुआ :

७ मनोवैज्ञानिक डा० फ्रायड का पत्र मार्था के नाम— ४७
" . मैं एक गरीब आदमी हूँ..."

८ वैज्ञानिक लुई पेस्चर का पत्र मेरी लारेंट के नाम— ५०
".. मे जिन्दगी भर के लिये तुम से और विज्ञान से वध गया हूँ ''

९. उद्योगपति हैनरी फोर्ड का पत्र क्लेरा के नाम— ५२
".. प्यार के फूल तुम्हारे चारो ओर गुंथ जाये '

१० वैज्ञानिक फैरेडे का पत्र सैराह के नाम— ५४
" मैं हजार तरह की दिली बाते तुम से कहना चाहता हूँ .."

११ निबन्धकार हैजलिट का पत्र स्टोडार्ट के नाम— ५६
" एक जीवित कुत्ता मरे हुये शेर से ज्यादा अच्छा होता है ।'

१२. साहित्यकार ऐडवर्ड फिज्गेराल्ड का पत्र ऐलन के नाम— ५८
" तुम वाकई वहुत अच्छी हो .

१३ कवि वर्डस्वर्थ का पत्र मेरी के नाम — ६१
"...अपना ध्यान रखो, और मोटा होने की कोशिश करो "

१४. हैनरी अष्ठम का पत्र ऐनीबोलीन के नाम— ६३
".. तुम अपने पिता से कह दो, वे शीघ्रता करें "

१५. वैज्ञानिक पियरे क्युरी का पत्र मेरी के नाम— ६५
".. क्या तुम भाग्यवादी हो...?"

१६. कवि टैनीसन का पत्र ऐमिली के नाम— ६८
". और उस दिन तुम रेशमी वस्त्र पहने थी ..!"

१७ कवि गेटे का पत्र वल्पचुअस के नाम— ६९
"...मैंने अपने से अधिक सुन्दर, और दूसरो को रिझा लेने वाले नवयुवक देखे हैं ."

(घ) पत्र जिनके लिखने वालों का परस्पर विवाह नही हुआ :

१८. कवि गेटे का पत्र फ्रैडरिका के नाम—
". मुझे इतना खाली-खाली कभी भी नही लगा..."
१९. कवि गेटे का पत्र शारलौटे बफ के नाम— ७४
" उस कमरे मे, मैं कभी प्रवेश नही करूगा..."
२० राजनीतिज्ञ बैन्जेमिन फ्रैन्कलिन का पत्र मादाम हैलवेशियस के नाम— ७६
" इस अच्छी दुनिया मे लौट आया, जिससे तुम्हे और सूर्य को देख सकूँ "
२१. साहित्यकार चैखव का पत्र लीडिया के नाम— ८०
" फरवरी अभी पकी नही है ..मैं तुम्हारे दोनो हाथो को चूमता हूँ..."
२२. इतिहासज्ञ गिब्बन्स का पत्र करशो के नाम— ८४
". .दो घन्टे तक मैं अपने कमरे मे बन्द रहा . "
२३ करशो का पत्र गिब्बन्स के नाम— ८७
" . एक सोचने वाली आत्मा, अपने आप मे एक पर्याप्त दड है "
२४ कवि कीट्स का पत्र फेनी के नाम— ८९
".. मेरे सिवाय किसी भी दूसरी चीज के बारे मे मत सोचो..."
२५ विचारक रूसो का पत्र मादाम मरचेल के नाम— ९३
".. महत्वाकाक्षा और स्वार्थ मुझे लुभा नही सकते "
२६ काफ्का फ्रान्ज का पत्र मिलेना के नाम— ९५
" शायद बच्चे किसी और तरीके से पैदा नही किये जा सकते ..!"

२७ क्रान्तिकारी मैजिनी का पत्र गिन्डिटा सिडोली के नाम— ९९
". यदि एक बार भी अपना सिर तुम्हारे घुटनों पर रख कर सो सकता !"
२८ साहित्यकार जोनेथन स्विफ्ट का पत्र वेनेसा के नाम - १००
"...मैं लिखता हूँ, और बहुत तेज सोचता भी हूँ..."
२९ वकील वेनेसा का पत्र जोनेथन स्विफ्ट के नाम— १०२
" . मत सोचो, कि वियोग मेरे ख्यालों को बदल पायेगा . "
३०. रानी एलिजाबेथ प्रथम के नाम दरबारी इसैक्स का पत्र— १०४
" . अगर मेरा घोड़ा उतना तेज भाग सकता, जितने तेज कि मेरे खयाल उड़ते है...!"
३१ उपन्यासकार अलैक्जेन्डर ड्यूमा का पत्र मिलेनी के नाम— १०६
"...मेरे सन्देहो की निन्दा करने के बदले उन पर रहम खाओ ..!"
३२ विजेता नैपोलियन का पत्र डिजायरी के नाम— १०८
" . उसे प्यार करती रहना, जो जीवन भर के लिये तुम्हारा है . "

विवाह के पश्चात् लिखे गये प्रेम-पत्र

(क) पति अथवा पत्नी को, हर्ष और प्रसन्नता के पत्र :

३३ वैज्ञानिक डार्विन का पत्र एमा के नाम— ११०
"...मैं एक दम भूल गया, कि पशु और पक्षी किस प्रकार बनाये गये थे . !"
३४ कवि बायरन का पत्र इसाबेला के नाम— १११
"...तुम्हारे कान तरह-तरह की अफवाहों से खूब भरे गये होंगे ..'

३५. उपन्यासकार दोस्तावस्की का पत्र ऐना के नाम— ११४
" अगर कोई हमारे पत्र पढे तो क्या हो ?"
३६. देश-भक्त जमनालाल बजाज का पत्र जानकी देवी के नाम—११६
" . कम से कम मेरे पीछे तो तुम आनन्द से रहो .."
३७ महारानी लूसी का पत्र नैपोलियन के नाम— ११८
" मुझ मे हिम्मत की कमी नही है..."
३८ कवि कॉलरिज का पत्र सैराह् के नाम— १२१
"...तुम्हे प्रत्यक्ष देखना मैं तभी बन्द करता हूँ, जब आँसू मेरी आखो से ढुलक पड़ते है "
३९ वैज्ञानिक सर हम्फरी डेवी के नाम जेन का पत्र— १२३
" मैं जितनी भी तेजी से हो सकेगा, सफर करूगी "
४० उपन्यासकार चार्ल्स डिक्न्स का पत्र कैट के नाम— १२५
" सब बहुत उत्साह मे हैं "
४१ सन्त अरविन्द का पत्र मृणालिनी के नाम— १२७
" अभी तक मैंने रुपये मे दो आने ही भगवान को लौटाये है..."
४२ शायर जाँ निसार अख्तर के नाम सफिया का पत्र— १३०
" . तुमने तो पूरी तन्ख्वाह ही मुझे भेज दी !"
४३ कवि रेनर मेरिया रिल्के का पत्र क्लेरा के नाम— १३२
"...कुछ बातो की तरफ हमे बिलकुल भी ध्यान नही देना चाहिये .."
४४ राष्ट्रपति रूजवल्ट का पत्र बेस्स के नाम— १३४
" . मैं एक बौखलाये हुये भालू की तरह होऊँगा '
४५ कवियत्री बैरट का पत्र कवि ब्राऊनिंग के नाम— १३६
" अब हमे कोई अलग नही कर सकता ..'

४५ अ विचारक सिसरो का पत्र टेरन्टिया के नाम— · १४०
" .मेरी बरबादी मेरे अपराधो ने नही, मेरी अच्छाइयो ने की है .."
४६ उपन्यासकार प्रेमचन्द का पत्र शिवरानी के नाम— १४२
"...घर मुझे खाये जा रहा है..."
४७ गर्वनर जनरल वारेन हेस्टिग का पत्र मेरियन के नाम— १४४
".. चार दिन बाद तुम आन मिलोगी .."
४८ रानी मेरी का पत्र राजकुमार विलियम के नाम— १४६
' अनावश्यक रूप से अपने आप को खतरे मे मत डालो .."
४९ कवि एडगर-एलन-पो का पत्र वर्जीनिया के नाम — १४८
"...अच्छी तरह सोना .."
५० सैनाध्यक्ष बिस्मार्क का पत्र जीनियटे के नाम— १५०
"...पिस्तौलो के साथ कल रात तुम्हारा पत्र मिला..."
५१ कवि जेब्रिल रोजेट्टी का पत्र मेरी के नाम – १५३
"...यह घर एक रेगिस्तान बन गया है '
५२ अवध के नवाब वाजिद-अली-शाह को शैदा बेगम का पत्र— १५५
"...फिरगियो के खिलाफ जहर उगला जा रहा है..."
५३ वैज्ञानिक मेरी क्यूरी का पत्र पियरे क्यूरी के नाम— १५७
"...सूर्य चमकता है, और वह गर्म है . '
५४ साहित्यकार कार्लाइल का पत्र जेन वैल्श के नाम— १५९
" ..मैंने अब तक नही पहचाना था, कि मैं तुम्हे कितना प्यार करता हूँ...।"
५५ तानाशाह चार्ल्स प्रथम का पत्र हेनरिटा मेरिया के नाम— १६२
"...आज मैं जितना अकेला हूँ, उतना कोई कभी भी न रहा होगा .."

५६ कवि वर्डस्वर्थ के नाम मेरी का पत्र—
" मैं तो अभी से अनुभव कर रही हूँ, जैसे तुम दोनो घर आ चुके हो .."

(ख) पति अथवा पत्नी को, दु.ख और मनमुटाव के पत्र :

५७ कवि नजरुल इस्लाम का पत्र अपनी प्रथम पत्नी के नाम— १६६
" यद्यपि मैं ग्रामोफोन के ट्रेडमार्क कुत्ते की गुलामी करता हूँ, तब भी किसी कुत्ते को मैंने चाटा नही .."

५८ स्वामी रामतीरथ का पत्र ? के नाम— १७२
" मेरे दिल पर तो एक भी धब्बा नही .."

५९ संगीतज्ञ मोजार्ट का पत्र कॅन्सटॅन्जे के नाम— १७३
" . बिना तुम्हारा चित्र अपने सामने रखे, मैंने एक भी पत्र आज तक तुम्हे नही लिखा है "

६० राजनीतिज्ञ के० एम० मुन्शी के नाम प्रथम पत्नी अतिलक्ष्मी का पत्र — १७५
". कब तक उर्वशियाँ आप पर रीझेंगी ?"

६१ कवि शैले का पत्र हैरियट के नाम— १७७
" . यदि तू प्यार नही कर सकती, तो मुझ पर दया ही कर !"

(ग) प्रेमी अथवा प्रेमिका को, दुतर्फा प्रेम के पत्र :

६२ कवि गेटे के नाम फ्रॉ-वॉन-स्टीन का पत्र— १८१
" जब भी मेरी इच्छा बाते करने की हुई, तुमने मेरे होठो को सी दिया ."

६३ कवि गेटे का पत्र फ्रॉ-वॉन-स्टीन के नाम— १८४
" मैं अपने बचाव मे कुछ भी नही कहूँगा "

६४ पर्यटक फ्रान्सिस यग हसबैंड का पत्र ? के नाम— १८६
".. तुम्हे सब कुछ बता कर मुझे शान्ति मिली है "

६५ साहित्यकार जॉर्ज सैंड का पत्र डा० पेजिलो के नाम— १८९
"...शायद तुम इस विचार को लेकर पले हो, कि स्त्रियो मे आत्मा ही नही होती... !"

६६ कवि बायरन का पत्र लेडी कैरोलिन के नाम— १९४
".. भगवान जानता है, मैं तुम्हे प्रसन्न देखना चाहता हूँ .."

६७ कवि बायरन का पत्र काऊन्टेस गाईकोली के नाम— १९६
" प्यार की क्रूरताये मे बहुत काफी : सह चुका हूँ "

६८ राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिगटन का पत्र सैराह के नाम— २००
" मौन, मधुरतम भाषण की अपेक्षा, अधिक चतुराई से अपनी बात कह जाता है "

६९ कवि शैले के नाम मेरी का पत्र— २०४
" . तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा करने का धीरज भी मुझ मे नही है..."

७० कवि शैले का पत्र मेरी के नाम— २०७
" वह अपने भरे यौवन मे ही कट कर गिर जायेगा . !"

७१ उपन्यासकार फ्लाबेयर का पत्र कालेट के नाम— २०९
". उफ ! तुम्हारे चेहरे की सुन्दरता ! मेरे चुम्बनो के कारण पीला पड़ा, कापता हुआ तुम्हारा मुख !"

७२ बेताज रानी सोफिया का पत्र कोनिग्समार्क के नाम— २१४
" . किसी स्त्री ने किसी पुरुष को इतना प्यार नही किया, जितना मैं तुम्हें करती हूँ ..!"

७३. कवि अलैक्जैन्डर पोप का पत्र मेरी के नाम—
" . जब से मैने तुम्हे देखा, मुझे निश्चय होता गया
है, कि दर्शन से अधिक शक्तिशाली भी कोई वस्तु है।
७५/७६ उपन्यासकार बालज़क का पत्र मैडम हन्सका के नाम— २१८
" मेरे पास हमेशा टिकटो के लिये पैसे नही होते थे "
७७ रानी कैदरिन 'दी ग्रेट' का पत्र दरबारी पटियामकिन
के नाम— २२०
".. मैं तुम्हारे बारे मे बहुत सोचती हूँ..."
७८ उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो के नाम जूलियट का पत्र— २२१
"...मैं तुम्हे इतने चुम्बन भेजती हूँ, कि तुम्हारे और
मेरे मुखो के बीच एक पुल सा बन जाये !"

(ख) प्रेमी अथवा प्रेमिका को लिखे गये, इकतर्फ़ा प्रेम के पत्र :

७९/८१ व्यंग्यकार बर्नार्ड शॉ के तीन पत्र, अभिनेत्री कैम्पबेल २२५
के नाम—
" तुम एक उल्लू हो, जो दो दिन मे ही मेरे सुख की धूप
चौंधिया उठी...!"
८२ अभिनेत्री कैम्पबेल का पत्र बर्नार्ड शॉ के नाम — २३२
" . मेरी अन्तरात्मा मे एक चादी का दीपक जलता है "
८३ साहित्यकार मौ० शिबली का पत्र अतिया फैजी के नाम— २३४
" . अफसोस है, कि आँखो को हृदय नही बनाया जा
सकता . ।"
८४ शायर इकबाल का पत्र अतिया फैजी के नाम— २३७
" तुम्हे प्रसन्न बनाना मेरे लिये यथेष्ठ पारितोषक
है ।"

८५. उपन्यासकार दोस्तोवस्की के नाम अपोलनेरिया का पत्र— २४०
“. मुझे शर्म आती है, कि मैंने तुमसे प्यार किया . !”

८६ शायर दाग का पत्र मुन्नी बाई के नाम— २४२
“.. मैं तुम्हारे लिये बिलबिला रहा हूँ ”

८७ कवि गेटे का पत्र कैचन के नाम— २४४
“.. मैंने देखा कि तुम्हारी शादी हो चुकी है ..क्या यह सपना सच है ..?”

८८ कवि बायरन के नाम हैरियट विल्सन का पत्र— २४८
“...शीत ऋतु मे जब उस्तरा कुन्द हो, और पानी ठण्डा, उस समय शायद तुम मुझे याद करो . ”

जेल से लिखे गये प्रेम-पत्र

(क) ये दोबारा सूर्य को नही देख सके :

८९ नाइट सर वाल्टर रैले का पत्र पत्नी एलिज़ाबेथ के नाम—२५३
“...मैं जिन्दगी की भीख मागने से घृणा करता हूँ !”

९० रानी ऐनीबोलीन का पत्र पति हेनरी अष्ठम के नाम— २५८
“ मेरे सच को किसी शर्म का डर नही ..”

९१ अणु-वैज्ञानिक जूली रोजनबर्ग का पत्र पत्नी ईथल के नाम— २६२
“.. लोहे की ये छडें, कही अधिक वास्तविक है.. !”

९२ अणु वैज्ञानिक ईथल रोजनबर्ग का पत्र पति जूली के नाम— २६५
“.. ईंटो, कंकरीट और फौलाद से बंध कर भी हमारा प्यार, यहा गहरी जडे जमायेगा ”

९३ अमर शहीद लुमुम्बा का अन्तिम पत्र अपनी पत्नी के नाम—२६७
".. सिर सीधा किये हुये मरने को ज्यादा पसद करता हूँ...
मेरी प्यारी पत्नी रोओ मत...!"
९४/९५ फ्रान्स की अन्तिम रानी मेरी अन्टोनियटे का पत्र २७०
प्रेमी फरमन के नाम—
" ..किसी भी वहाने से, यहाँ आने की कोशिश तुम न करना .."
९६ अवध के अन्तिम नवाब, वाजिद-अली-शाह का पत्र शैदा २७२
बेगम के नाम—
"...परिन्दा तक पर नही मार सकता..."
९७ क्रान्तिकारी डैस मौलिन का पत्र पत्नी लूसाइल के नाम— २७४
".. मेरे बधे हाथ तुम्हारा आलिगन करते है..."
(ख) इन्हे जेल के सीखचे नहो निगल सके :
९८ राष्ट्रपिता गाधी का पत्र कस्तूरबा के नाम— २८१
" तू मरेगी, तो वह भी सत्याग्रह के अनुकूल है..."
९९ कवि नाजिम हिकमत का पत्र अपनी पत्नी के नाम— २८३
" बीसवी सदी मे मरने वालो के लिये केवल एक
साल तक रोया जाता है .."
१०० शायर हसरत मोहानी का पत्र पत्नी निशातुन्निसा बेगम २८५
के नाम –
"...तुम पत्र रोज़ लिखा करो "
युद्ध के समय लिखे गये प्रेम-पत्र
(क) सैनाध्यक्षो द्वारा अथवा युद्ध-भूमि से लिखे गये :
१०१/१०२ विजेता नैपोलियन का पत्र पत्नी जोसेफीन के नाम— २८९
" तुम्हे बहुत सारे चुम्बन भेजता हूँ चुम्बन ! जो इक्वेटर
से भी ज्यादा गर्म हैं !"

१०३ नैपोलियन का पत्र पत्नी लूसी के नाम— २९२
"...मेरा दुर्भाग्य उतनी दूर तक ही मुझे प्रभावित करता है, जितनी दूर तक वह तुम्हे कष्ट पहुँचा पाता है "
१०४. क्रान्तिकारी ओलीवर क्रॉमवेल का पत्र पत्नी एलिज़ावेथ के नाम— २९४
" तू मुझे ससार के सब प्राणियो से अधिक प्यारी है—इसी को काफी समझना ."
१०५-१०६ लार्ड नैल्सन का पत्र प्रेमिका ऐमा के नाम— २९६
".. युद्ध से पहले मेरा अन्तिम लेख तुम्हारे लिये होगा..."
१०७ सेनापति रोमेल का पत्र पत्नी लू के नाम— २९८
" इस अन्तिम समय, मैं तुम्हारे ही बारे मे सोच रहा हूँ "
१०८ अभिनेता स्टैनले लूपिनो का पत्र पत्नी ऐडा के नाम— ३००
".. साठ के लिये बने एक सुरक्षागृह मे एक-सौ-चालीस आदमी ठसाठस फर्श पर लेटे थे "

(ख) क्रान्तिकारियो द्वारा लिखे गये :

१०९ लैनिन महान का पत्र पत्नी क्रुस्पकाया के नाम— ३०७
".. खूब खाओ, खूब सोओ.. तब तुम जाडो तक काम-काज के लिये तैयार हो जाओगी "
११० गैरेबाल्डी का पत्र पत्नी अनीता के नाम— ३०९
" प्रत्येक साहसिक क्रान्ति की जड विश्वासघात ने ही खोदी है "

मृत्यु से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र

(क) जिनकी अस्वाभाविक मृत्यु हुई :

१११. लेखिका वर्जीनिया वुल्फ का पत्र पति लियोनार्ड के नाम— ३१३
". मुझे आवाजे सुन पडती है .."

(ख) जिनकी मृत्यु स्वभाविक रूप से हुई

११२ उपन्यासकार विक्टर ह्यू गो का पत्र प्रेमिका जूलियट के नाम— ३१५

"... तुम्हारी मौत मेरी भी मौत सिद्ध होगी . "

११३ उपन्यासकार टाल्सटाय का अन्तिम पत्र पत्नी सोनिया के नाम— ३१६

"· तुम्हारे पास लौटना, जिन्दगी से मुँह मोडने के बराबर है .."

११४ प्रथम भारतीय-संसद के स्पीकर श्री मावलकर के नाम पत्नी मनोरमा का पत्र— ३१६

" मेरी इतनी चिन्ता न किया करो '

जीवित व्यक्तियों के प्रेम-पत्र

११५ प्रधान मन्त्री श्री नेहरू की सब से छोटी बहिन कृष्णा नेहरू के नाम, भावी पति हथीसिह का पत्र— ३ १

" . शौक : पाइप मुँह मे दबा कर आराम-कुर्सी पर लेटना "

११६ कवि नीरज का पत्र नी के नाम— ३२३

"· तुम्हारा प्रेम हमारे लिये कभी पिजरा तो नही बनेगा . ? '

११७ कवि नीरज के नाम नी ..का पत्र— ३२६

" ..उसका चेहरा डार्विन के उस सिद्धान्त का प्रमाण था, कि मनुष्य की उत्पत्ति बन्दर से हुई है ।"

११८ हवाबाज गैरी पावर्स का पत्र पत्नी बारबरा के नाम – ३३२

"... तुम्हे भी एक अधिक अच्छा पति मिलना चाहिये था ..।"

११६ उपन्यासकार कृष्णचन्द्र का पत्र ? के नाम— ३३५
"...तुम ! जो मेरी पाकीजगी हो, मेरी खूबसूरती हो, मेरा तखैयुल हो . !"
१२० राजनीतिज्ञ के० एम० मुन्शी का पत्र पहली पत्नी प्रतिलक्ष्मी के नाम— ३३६
"...जो फौज उनके (लीलावती के) आस-पास घूमती है, उसमे मैं कभी न घूमूंगा .."
१२१ के० एम० मुंशी का पत्र वर्तमान पत्नी लीलावती के नाम— ३४१
".. अब सारा घर जल जायेगा, कि तुम विवाह करने वाले हैं..."
१२२/१२३ श्री मुंशी के नाम पत्नी लीलावती के दो पत्र— ३४३
" ऐसा लगता है, जैसे मै नई हो गई हूँ... !"
१२४ कवि अर्नेस्ट टॉलर का पत्र पत्नी टेसा के नाम— ३४६
" मेरा अपना एक बाग था, जिसमे सूर्यमुखी के फूल खिले थे.. !"
१२५ कवियत्री अमृता प्रीतम का पत्र ? के नाम— ३४८
". .मैं प्राणों का जाग डालूंगी "
१२६ नाटककार विष्णु प्रभाकर का पत्र पत्नी सुशीला के नाम— ३५०
" काश ! कि तुम मेरे कधे पर सिर रक्खे बैठी होती, और मै लिक्खे चला जाता !"
१२७ साहित्यकार सज्जाद जहीर का पत्र पत्नी रजिया के नाम— ३५७
".. कहीं मेरे साथ वैसा न करना, जैसा शिवजी ने कामदेव के साथ किया था.. !"
१२८ जानकी देवी का पत्र पति जमनालाल बजाज के नाम— ३६०
".. मेरी कमजोरियाँ आपके तेज मे बाधक हो रही है.. "

क

पत्र

जिनमें

विवाह का

प्रस्ताव किया गया

: १ :

मामूली लकडहारे का वह बदसूरत लडका जो बाद मे अमेरिका का राष्ट्रपति कहलाया जिसने दासो के व्यापार के बदसूरत धब्बे को अमेरिका के चेहरे से मिटा दिया .....

—अब्राहिम लिकन का पत्र मेरी ओवन्स के नाम†

" ...जब से मैं यहाॅ आया हू, केवल एक स्त्री ने मुझसे बात-चीत की है .. .."

स्प्रिग-फील्ड,
७ मई, १८३७

मित्र मेरी,

प्रस्तुत पत्र से पहले मैंने दो चिट्ठियाँ लिखनी आरम्भ की। दोनो से ही मैं सन्तुष्ट न हो सका और मैंने उन्हे तुम्हारे तक पहुँचने से पहले ही फाड डाला। पहली चिट्ठी तो काफी गम्भीर नही बन पाई थी और दूसरी मे गम्भीरता की ज्यादती हो गई थी। अब यह चिट्ठी जैसी भी लिखी जायेगी, मैं इसे भेज दूँगा।

स्प्रिंग-फील्ड का जीवन बडा ही रूखा है। कम से कम मेरे लिए

---

†यह पत्र लिकन ने राष्ट्रपति बनने से बहुत पूर्व अपनी युवावस्था मे लिखा था।

तो वह ऐसा ही है। मैं यहाँ भी उतना ही अकेलापन महसूस करता हूँ जितना कि मैं अपने जीवन मे और सभी स्थानो पर करता रहा हूँ. जव से मैं यहाँ आया हूँ, केवल एक स्त्री ने मुझसे बात-चीत की है...वह भी बात न करती यदि वह मेरे पास आने को मजबूर न होती। मैं अब तक एक वार भी गिर्जे नही गया और शायद जल्दी ही जाऊँगा भी नही। मैं सबसे दूर-दूर रहता हूँ, क्योकि मैं नही जानना चाहता कि मुझे दूसरो से किस तरह का व्यवहार करना चाहिये।

तुम्हारे स्प्रिग-फील्ड पर रहने के विषय मे जो बातें हम दोनो मे हुई थी, उन पर मैं अक्सर विचार किया करता हूँ। मुझे डर है कि तुम यहाँ सन्तुष्ट नही रह सकोगी। यहाँ वग्घियो की भारी धूम-धाम रहती है। तुम उन्हे नित्य देखोगी पर स्वय वैसी शान-शौकत नही कर सकोगी। तुम्हे तरसना होगा, क्योकि तुम्हे ग़रीब बन कर रहना होगा, और अपनी गरीबी को छुपाने के साधन भी तुम्हारे पास नही होगे। क्या तुम्हे विश्वास है कि तुम यह सब धैर्य-पूर्वक सह सकती हो ? चाहे जो भी स्त्री मेरी जीवन-धारा मे अपनी जीवन-धारा मिलाये—यदि कभी किसी ने ऐसा किया तो—मैं उसे प्रसन्न और सन्तुष्ट बनाने मे कोई कोर-कसर उठा न रखूँगा, और यदि मैं ऐसा न कर सका, तो यह मेरे लिए सबसे अधिक दुख और दुर्भाग्य की वात होगी। तुम्हारे साथ रह कर मैं आज की अपेक्षा बहुत अधिक सुखी जीवन विताऊँगा, पर यदि मैंने तुम मे असन्तोष की झलक देखी तो मेरा सारा सुख धूल मे मिल जायेगा। वह जो तुम ने कहा था शायद मजाक मे कहा हो, और हो सकता है मैंने ही तुम्हें गलत समझा हो। यदि ऐसा है तो अच्छा हो हम इस वात को भूल जायें। पर, अगर मैंने तुम्हे ठीक समझा हो, तो मैं वहुत चाहूँगा कि तुम फैसला करने से पहले गम्भीरता से सोच लो। यदि तुमने मेरे साथ रहने

का फैसला किया तो जो कुछ भी मैंने कहा है, उसका अक्षरश पालन करूँगा। मेरी तो राय है तुम ऐसा न ही करो तो अच्छा है। तुम्हे कठोर जीवन का अभ्यास नही है और यहाँ का जीवन तुम्हारी आज की कल्पना से कही अधिक कठिन हो सकता है। मैं जानता हूँ तुम किसी भी विषय पर ठीक-ठीक विचार कर सकती हो और यदि तुम यह निर्णय करने से पहले ही गहराई से सब सोच-समझ लो, तो मैं तुम्हारे फैसले के अनुसार चलने को तैयार हूँ।

यह पत्र पाकर तुम्हें एक खूब लम्बा पत्र मुझे लिखना चाहिए! तुम्हें और कुछ तो नही करना पडता। जो तुम लिखोगी वह लिखे जाने पर चाहे तुम्हें रुचिकर मालूम न हो पर मेरे लिए वह इस 'व्यस्त उजाड' मे एक बढिया साथी का काम देगा।*

—तुम्हारा
लिंकन

* मेरी ने लिंकन के विवाह-प्रस्ताव को ठुकरा दिया, क्योंकि वह कुरूप ही नही निर्धन भी था! बाद मे जिस व्यक्ति से मेरी का विवाह हुआ, वह जीवन भर लिंकन का प्रमुख राजनीतिक विरोधी बना रहा।

रूस का महानतम लेखक तथा विचारक; गांधी जी ने जिससे अपने सिद्धान्त ग्रहण किये !.. लैनिन ने एक बार गोर्की से कहा था—'गोर्की ! लिखना सीखना है तो टाल्स्टाय से सीखो . . !

—टाल्स्टाय का प्रथम पत्र सोनिया के नाम†

"......*क्या तुम मेरी पत्नी बनना चाहती हो .. ?*

सोनिया,

मैं अब और बरदाश्त नही कर सकता ! पिछले तीन सप्ताह से हर दिन मैंने अपने से कहा है. कि बस आज मैं तुमसे सब कुछ कह डालूंगा! पर हर दिन अपनी आत्मा मे वही रंज, पछतावा, डर और खुशी लेकर मैं यहाँ से चला जाता रहा हूँ। रात मैंने जो कुछ उस दिन गुजरा उस पर विचार किया है। मैं सन्तप्त हुआ हूँ और मैंने अपने से प्रश्न किया है, कि क्या मैंने तुम्हे सब कुछ नही बता दिया था ? और यह, कि मुझे तुम से क्या कहना चाहिये था ?यह पत्र मैं अपने साथ लिये चल रहा हूँ, और

†जिस समय टालसटाय ने यह पत्र लिखा तब यह माना जा रहा था, कि टाल्सटाय सोनिया से नही बल्कि उसकी बडी बहिन एलिजाबेथ से प्यार करते हैं; और सोनिया की सगाई एक अन्य व्यक्ति पोलीवनोव से तय भी हो चुकी थी !

आज भी अगर तुम्हे सब कुछ कहने का साहस अथवा अवसर मै न पा सका तो इसे मैं तुम्हे दे दूँगा । मेरा विश्वास है कि तुम्हारा परिवार एक गलत धारणा बना बैठा है । वे सब शायद यह समझते हैं, कि मैं तुम्हारी बहन एलिजाबेथ से प्यार करता हूँ । यह सच नही है । तुम्हारी कहानी निरन्तर मेरे दिमाग मे है क्योकि उसे पढ कर मुझे विश्वास हो गया है, कि मुझ 'डुब्लिट्स्की'[1] के लिये सुख का सपना देखना अनुचित है। प्रेम की तुम्हारी कल्पना बहुत अधिक रूमानी है । जिससे तुम प्यार करो, उसके प्रति न मैं कभी ईर्षालू रहा हूँ, न रहूँगा। मेरा विश्वास है कि मैं तुमसे वही आनन्द प्राप्त करूंगा जो हम वच्चो से करते है ! जब हम इवित्सी मे थे तो मैंने लिखा था—'तुम्हारी आकृति अत्यन्त स्पष्टता से मुझे अपनी उम्र की याद दिलाती है, और यह भी कि तुम्हे पाना असम्भव है .. !

पर तब भी, और तबसे लगातार मैं अपने से झूठ बोलता आ रहा हूँ । उस समय तो फिर भी मैं रुक सकता था और एक बार दो-बारा अध्ययन-कक्ष मे अपने काम के एकान्त परिश्रम मे लग सकता था, पर अब मैं ऐसा महसूस नही करता, कि मै तुम्हारे परिवार मे एक सकट पैदा कर रहा हूँ, अथवा यह कि एक मित्र एव ईमानदार व्यक्ति के रूप मे मेरा तुम्हारा सीधा और मूल्यवान सम्बन्ध समाप्त हो चुका है। मैं न जा सकता हूँ, न ठहर-सकता हूँ। तुम एक सच्ची ईमानदार लडकी हो । अपना हाथ अपने दिल पर रखो और सोच-विचार कर—भगवान के लिए खूब सोच-विचार कर—बताओ कि मै क्या करूँ ? किसी बात को मजाक मे उडा कर तुम निश्चय ही उसके बारे मे कोई नतीजा नही निकाल सकोगी । एक महीने पहले यदि कोई मुझसे कहता कि मुझे इतना सन्ताप मिलेगा, जितना कि मुझे मिला है, तो मै हसते-हसते

१—सोनिया की लिखी हुई एक कहानी का पात्र ।

लोट-पोट हो जाता। मुझे सच-सच बतादो.. क्या तुम मेरी पत्नी बनना चाहती हो ?...वही उत्तर मुझे दो जो तुम पूरे विश्वास के साथ, और अपने हृदय के गहनतम से दे सकती हो। यदि सन्देह की छाया भी कही तुम्हे दीखे तो साफ इकार कर दो। भगवान के लिये अपने हृदय की छानबीन ध्यान से करो ! तुम्हारा इकार मेरे लिये भयानक होगा, पर मैं उसके लिये तैयार हूँ, और उसे स्वीकार करने की शक्ति मुझ मे है। लेकिन, जब मैं तुम्हारा पति होऊँगा, तुम्हारा मुझे उतना ही प्यार न करना, जितना कि मै तुम्हे करता हूँ, मेरे लिये भयंकर होगा...*

—टाल्स्टाय

*टाल्सटाय का वैवाहिक जीवन सुखद नही रहा। वे अनेक बार घर से भाग जाते थे। अन्तिम बार बयासी वर्ष की जर्जर आयु मे घर छोड़ने के बाद और अपनी मृत्यु से पूर्व, उन्होने सोनिया को अपना अन्तिम पत्र लिखा जो—'मृत्यु से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र'—खंड के 'ख' भाग मे उद्धृत है।

: ३ :

जिसकी रचनाये फ्रान्स की सामन्ती संस्कृति का दर्पण हैं ..आईवनहो—जिसकी फिल्म भी बन चुकी है—के यशस्वी लेखक .. .

—सर वाल्टर स्काट का पत्र मारगरेट के नाम

"......जब चिन्तायें आयेगी, तब हम उन्हे हँस कर उड़ा देगे......"

प्रिये,

भविष्य की सम्भावनाये मेरे लिए कितनी कीमती बन जायेगी अगर मेरी प्यारी मित्र मुझे यह सोचने की अनुमति देगी कि वह भी उनकी हिस्सेदार होगी। मेरी जिन्दगी का यह लक्ष्य होगा कि मैं तुम्हे एक पल के लिए भी ऊबने न दू ...जब चिन्ताए आयेगी तो हम उन्हे हस कर उडा देंगे ..और उस का बोझ बहुत भारी होगा तो हम बैठ कर उसे आपस मे बाट लेंगे, इतना कि वह सुख जितना हल्का हो जायेगा। मालूम पडता है तुम भी मेरे प्यार की शक्ति और कम से कम उसके स्थायित्व को सन्देह की दृष्टि से देखती हो। मैं यही कर सकता हूँ कि पूरी गम्भीरता से इस बात का प्रतिवाद करू और कहूँ कि किसी मर्त्य के हृदय मे अधिक सच्चा प्यार कभी पैदा नही हुआ और यद्यपि यह अचानक ही प्रस्फुटित हुआ है, बिना सोचे-समझे इसे ग्रहण नही

किया गया है। तुम्हारे प्रति जो भाव मेरे मन मे है वे मेरे लिए एकदम नये है, और मैंने, उस समय के अतिरिक्त जिसका तुमसे जिक्र किया है, ऐसे भाव कभी अनुभव नही किये। यह सप्ताह कैसे गुजरेगा मै नही जानता; लेकिन जितनी बेचैनी और अशाति के साथ आज सारा दिन मैंने घडियाँ गिनी हैं, उतनी बेचैनी मे कभी भी किसी ने नही गिनी होगी। जब हम दुबारा मिलें तो मत कहना कि मै तुम्हे भूल जाऊ। मत कहना ऐसा क्योकि मैं तुम्हे कितना प्यार करता हूँ यह प्रकट करना असम्भव है, और मेरा यह विश्वास है कि हम दोनो एक दूसरे के लिये ही बनाये गये है...

—वाल्टर स्काट

ख

विवाह से
ठीक पहले
लिखे गये
प्रेम-पत्र

इंगलैंड की वह महान ' साम्राज्ञी जिसके राज्य मे 'सूरज कभी नही डूबता था ! सन् १८५७ की भारतीय स्वतन्त्रता की पहली लडाई को जिसने शर्बत पिला कर मार डाला

—रानी विक्टोरिया का पत्र राजकुमार एल्बर्ट के नाम†

" ..*एक पवित लिख भेजना ओ मेरे प्रियतम दूल्हे .. ..*"

१० फरवरी १८४०

प्रियतम,

आज तुम कैसे हो ?—और क्या तुम जी भर कर सोये हो ? मैंने अच्छी तरह आराम किया है, और आज बडा हल्का महसूस कर रही हूँ। मौसम भी कैसा है आज ! मैं समझती हूँ वर्षा रुक जायेगी।

.. एक पवित लिख भेजना ओ मेरे प्रियतम दूल्हे, जब तुम तैयार हो जाओ . ! हमेशा के लिए तुम्हारी सेविका...

—विक्टोरिया

†यह पत्र रानी विक्टोरिया ने अपने विवाह के ही दिन प्रात.काल लिखा था।

: ५ :

इगलेंड का वह विश्व-प्रसिद्ध रोमान्टिक कवि जिसने अनेक महाकाव्य (बैलड्स) लिखे ....

—कवि ब्राऊनिंग का पत्र कवयित्री बैरट के नाम†

"... ..वे तुम्हे नहीं बता सकते कि तुम मुझे कितनी अधिक प्रिय हो .   "

शनिवार १ बजे

प्रिये,   १२-६-१८४६

तुम थोडे से ही शब्दो की उम्मीद करोगी, पर वे होगे क्या ? जब दिल लबालब भरा होता है, तो वह बह निकलता है, पर असल मे भरा हुआ दिल छलकता नही ।

कल तुमने मुझ से पूछा—'तुम पछतावा तो नही करोगे ? हाँ मेरी अपनी बै, कही वह अतीत वापिस लौट सकता और मैं बाहरी प्रेम-प्रदर्शन से अपनी आन्तरिक भावना की कुछ और पुष्टी कर सकता । जो कुछ मैंने अब तक कहा है वह बहुत ही कम है, और मेरे

---

†कुमारी बैरट ने एक बार उत्सुकता-वश अपनी कुछ कविताएँ ठीक कराने के लिए ब्राऊनिंग के पास भेजी थी । यही से उनके स्थायी सम्पर्क का शुभ आरम्भ हुआ ।

पहले प्यार की जरूरत को पूरा नही करता, और जब मैं इस अपर्याप्त प्रेम का खयाल करता हूँ, तो पछताना तो मुझे चाहिये ही !

शब्दो को किसी तरह भी गढ लूँ। उनकी कायापलट कर लूँ ;
वे तुम्हे नही बता सकते कि तुम मुझे कितनी अधिक प्रिय हो
कितनी मेरे हृदय और मेरी आत्मा को तुम पूरी तरह प्यारी हो !

जब मैं बीते दिनो पर नजर डालता हूँ, तो तुम्हारे हर शब्द, हर अन्दाज, हर पत्र और प्रत्येक चुप्पी पर हर दृष्टि से विचार करने के बाद तुम मुझे इतनी पूर्ण लगती हो, कि तुम्हारे एक शब्द और एक दृष्टिपात को भी मै बदलना नही चाहूँगा ...

मेरा लक्ष्य और मेरी उम्मीद इस प्यार को बनाये रखने की है, इसे छोडने की नही। मेरा विश्वास है कि वे भगवान, जिन्होने यह प्यार मुझे दिया है, मेरी सहायता करेंगे और मै निस्सन्देह इसको इसी प्रकार बनाये रख सकूँगा।

मेरी प्रियतमा, सबसे प्यारी मेरी अपनी बॅ, यह बहुत काफी है। तुम मुझे प्रेम का महानतम, पूर्णतम ! वह प्रमाण दे चुकी हो जो कि एक मानव दूसरे को दे सकता है। मैं कितना अहसान-मन्द हूँ ! मुझे तुम पर कितना घमण्ड है, (ठीक कारण से उत्पन्न हुआ उचित घमण्ड), कि तुमने मेरे जीवन को इस प्रकार अलकृत किया है।

तुम्हारा अपना रोबर्ट प्रार्थना करता है कि भगवान तुम पर अपनी कृपा करे।

मैं कल निश्चय ही लिखूँगा। मेरे जीवन का पूरा ध्यान रखना। वह तुम्हारे प्यारे नन्हे हाथो मे है ! मेरी प्यारी अपने मन को स्थिर रखो।*

---

*ब्राऊनिग को बैरट से विवाह अत्यन्त गुप्त रूप से करना पडा था, क्योकि बैरट के पिता इस विवाह से बिल्कुल सहमत नही थे।

बैरट का ब्राऊनिग के नाम एक पत्र – 'विवाह के बाद लिखे गए प्रेम-पत्र'—खड के 'क' भाग मे उद्धृत है।

: ६ :

जो स्वय एक महान लेखिका बन सकती थी, मगर जिसके गुलाब का पौधा उसके पति तथा साहित्यिक दिग्गज कार्लाइल के बरगद के नीचे धरती फोडने से पहले ही समाप्त हो गया.

—जेन वैल्श का पत्र कार्लाइल के नाम

"......लेकिन प्रियतम पत्रों में लिये-दिये गये ये चुम्बन किस काम के......?

टेम्पिल-लैंड

मगलवार, अक्तूबर ३, १८२६

वडे निर्दय हो तुम, जो स्वय निराश होकर मुझे दुखी वनाते हो। मुझे सातवें आस्मान पर पहुँचा देना तुम्हारे लिये तो चुटकी वजाने जैसा है। मेरी आत्मा आधी रात की तरह अधियारी थी। तुम्हारी लेखनी ने कहा,—'अब यहा चाँदनी हो'—और आज्ञा होते ही मेरी आत्मा जगमगा उठी। अव मेरा दिल मजवूत है और प्रसन्न भी है; यद्यपि मेरे सामने यह डरावना विवाह सस्कार है जिसके गर्भ मे शायद भूख, गरीबी और हर संभव भविष्य छुपा है। ओ मेरे प्रियतम मित्र! मुझसे सदा अच्छा व्यवहार करना और मैं एक सवसे अच्छी और सुख देने वाली पत्नी वन कर तुम्हें दिखाऊँगी। जव तुम्हारी आंखो मे और तुम्हारे शब्दो मे मैं पढती हूँ कि तुम मुझे पसन्द करते हो, तो अपनी आत्मा की

सबसे नीची गहराई मे मैं भी कुछ ऐसा ही महसूस करती हूँ। लेकिन जव तुम मेरे वाहु-पाश से दूर हट कर तम्वाकू पीने जाते हो, अथवा मुझे अपने जीवन का एक नया अध्याय वतलाते हो, तो यकीन मानो मेरा हृदय वहुत सी वातो के वारे मे चिन्तित हो उठता है।

मेरी माँ अभी नही आई है, लेकिन इसी सप्ताह आने वाली है। मेरा अगला सप्ताह उसका सप्ताह होगा, जिससे वह अपने 'वच्ची' ! को अन्तिम वार प्यार कर सके, और उसके वाद प्रियतम ! भगवान चाहेगा तो मैं सदा-सदा के लिये तुम्हारी अपनी वन जाऊँगी !

वृहस्पतवार की वजाय अगले से अगले सप्ताह का आज का ही दिन मुझे ठीक रहेगा, क्योकि तुम जानते ही हो कि विवाह की घोषणा के वाद आदमी मिलने-जुलने लायक नही रहता, और इसलिये जितनी जल्दी हम उस से निवट लें उतना ही अच्छा। पर शायद यह दिन व्यवस्था करने वालो को तव तक सुविधाजनक न रहे, जव तक कि तुम सारी वस्तुएँ उस से एक सप्ताह पूर्व ही न भेज दो, अथवा उन्हे वाद मे लायी जाने के लिये न छोड आओ। कुछ भी हो, दो दिन का अन्तर मेरे ख़याल मे इतना वडा अन्तर नही है, कि तुम दोनो मे से जिसे भी सुविधा-जनक समझो उसी के अनुसार व्यवस्था न कर सको। इसलिये निश्चित कर के मुझे सूचित करो।

जहाँ तक घोषणा का सम्वन्ध है, मुझे अफसोस है कि मैं तुम्हारी सहायता नही कर सकती। तुम्हे न सिर्फ अपने इलाके के गिरजाघर से किसी भी साधारण आदमी की तरह ही घोषित होना पडेगा, वल्कि यह प्रमाण-पत्र भी भिजवाना पड़ेगा कि तुम अविवाहित हो, और उसके वाद ही हमारी शादी की यहा घोषणा हो सकेगी। जहाँ तक श्री ऐन्ड-रसन का सम्वन्ध है, उन्हे ऐसी औपचारिक वातो की कोई आवश्यकता नही है, पर उनके ऊपर के अधिकारी इस विषय मे अत्यन्त कट्टर हैं। वे विवाह तव तक रजिस्टर नही करेंगे जव तक कि वह प्रचलित नियमो

के अनुसार पेश न किया जाये। यह बहुत ही खेद-जनक है, पर चिल्लाने से फायदा ?...

तुम और जॉन एक दिन पहले आ सकोगे या नही ? जैसा तुम ठीक समझो। अगर तुम आये भी तो भी मैं सोचती हूँ कि तुम से न ही मिलूं, पर अभी मैं पक्के तौर पर कुछ भी नही कह सकती। हे भगवान ! शादी के एक सप्ताह बाद अपने छोटे से घर मे बैठी हुई भला मे कैसी लगूंगी ?

क्या तुमने जेन से यहाँ आने के बारे मे कुछ कहा है ? और क्या वह यहाँ अपनी इस बहन की देख-रेख मे रहना पसद करेगी ? एक दो महीने तक तो मैं उसे नही बुलाना चाहूँगी, जब तक कि इस परिर्वतन से छुटकारा ना पा जाऊँ, और मेरी बुद्धि अपने चारो तरफ की नई दुनिया से कम से कम इतना चौकना वन्द न कर दे कि मैं उसकी ठीक-ठीक देख-भाल कर सकूं। सचमुच एक नन्ही सी जान को अपने साथ रख कर हमे ज्यादा खुशी अनुभव करनी चाहिए, और मेरा विश्वास है कि यह व्यवस्था उसके लिये भी लाभ-रहित नही रहेगी। अपने हिस्से का पूरा काम मै करूँगी। मैं उसकी सच्ची बहन तो बनूंगी ही, अपनी शक्ति भर उसकी शिक्षिका का कर्त्तव्य भी निभाऊँगी। यदि तुम उचित समझो तो यह बात उससे कह दो और मेरी तरफ से उनका एक चुम्बन लो। मै भी तुम्हारे बीसियो म से एक तुम्हे लौटाती हूँ ! लेकिन प्रियतम पत्रो मे लिये-दिये गये ये चुम्बन किस काम के . ? उस रात तुम बहुत ही बढिया रग मे थे और मेरी गर्दन पर तुमने एक चुम्बन अकित किया था। ऐसे ही एक और भूले हुए अवसर पर तुमने मेरे होटो को चूमा था। इन चुम्बनो को मैं लाखो कागजी चुम्बनो के एवज नही भूल सकती। शायद एक दिन दोनो मे से किसी प्रकार का भी चुम्बन मुझे न मिले। दुनिया के दिन ऐसे ही ढल जाया करते हैं।

क्या तुमने श्रीमती स्ट्रेची के विषय मे कुछ सुना ? मैंने सुना और

एक बदले की भावना मुझमे पैदा हुई। अपनी पिछली चिट्ठी मे श्रीमती मान्टेग ने उसे उपेक्षा-पूर्वक एक 'चुडैल' ! कह कर निन्दित किया है, और थोमस कार्लाइल ! तुम उसे 'स्वर्ग की देवी' बताते हो ! अब मैं चक्कर मे हूँ कि किसका विश्वास करूँ ? श्रीमती मान्टेग की बातो से एक विशेष ध्वनि निकलती है। क्या तुम्हारे विचार मे यह ईर्ष्या है ? अरे नही .मेरा पक्का विश्वास है कि यदि जूलिया स्ट्रेची जेन वैल्श होती, और मैं जूलिया स्ट्रेची, तब भी तुम मुझे ही सबसे अधिक प्यार करने का सन्मान देते। और हा—मैं भी तुम्हे ही प्यार करती ! लेकिन हे भगवान ! तब सब कुछ कैसा गडबडा जाता। मैं सोचती हूँ, सब जैसा अब है, वैसा ही ठीक है, उचित है।

मेरी प्यारी चचेरी बहन फोब बेली का पत्र मुझे मिला। पत्र एक दम भावुकता से भरा हुआ था। यह लडकी समझ बैठी है, और अकारण भी नही, कि मेरे गम्भीर पति उसे मुश्किल से ही बर्दाश्त कर पायेगे। इसलिये उसने बडी आजिजी से अनुरोध किया है, कि हम उसकी एक दम उपेक्षा न कर दें, और इस प्रकार विदूषी बनने की उसकी उम्मीदो पर पानी न फेर दे ! प्रियतम ! तुम निश्चय ही मुझे अनुमति दोगे कि मैं उसे जर्मन भाषा पढा दूं। मैंने वचन दिया है, और तुम नही चाहोगे कि मुझे अपना वचन भग करना पडे। सिवाय मेरे और कोई भी तो ऐसा नही है जो उस बेचारी नन्ही सी जान से एक भी काम की बात कहे-सुने। उसकी मूर्खताएँ और आचारण की भूले शिक्षा की कमी के कारण है, स्वभाव के कारण नही, यही मैं अपने को समझाऊँगी। तुम भी समय आने पर उसे देखोगे और उसके बारे मे अपने विचार बनाओगे, और तब, मेरी नही तुम्हारी ही मर्जी चलेगी। असल मे मै बडी ही दब्बू स्वभाव की पत्नी बनने जा रही हूँ, और अभी से दब्बू बनने भी लगी हूँ। मेरी मौसी कहती है—'तू बिना एक बार भी झगडे मेरे साथ रह सकती है।'—मैं इतनी खुश-मिजाज और औचित्य-प्रिय हूँ ! यह बात तुम्हारे दिल को कुछ खुशी

ही पहुँचायेगी। और सुनो—पिछली रात जब मैं खाना खा रही थी तो दादा जी ने अपने विचार यूँ प्रकट किये—'यह लडकी सचमुच ही बड़ी शान्त और मधुर स्वभाव की है।' इसलिए जनाबआली! आप देख लीजिए यदि हम दोनो प्रेम-पूर्वक न निभा सके तो दोष पूरी तरह केवल आप का ही होगा! पर अब मुझे समाप्त करना चाहिये। यह मेरा अन्तिम पत्र है! कैसी अनुभूति है यह! कैसी भय-दायक पर कितनी खुशियो से भरी! मेरे अपने प्यारे पति तुम सदा-सदा मुझे प्यार करोगे—क्या नही करोगे? और मैं भी सदा तुम्हारी वफादार प्यारी पत्नी बनी रहूँगी।*

—जेन वेल्श

*जेन, कार्लाइल के साहित्यिक व्यक्तित्व से बेहद प्रभावित थी और इसी कारण उनसे विवाह किया। कुछ वर्ष बाद जब इस इन्द्र-धनुष का जादू टूटा तब घरेलू झगडे उनके लिये प्रतिदिन के भोजन जैसी बात हो गई। कार्लाइल द्वारा जेन को लिखा हुआ एक पत्र—'विवाह के बाद लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'क' भाग मे उद्धृत है।

पत्र
जिनका
अन्त विवाह
में हुआ

: ७ :
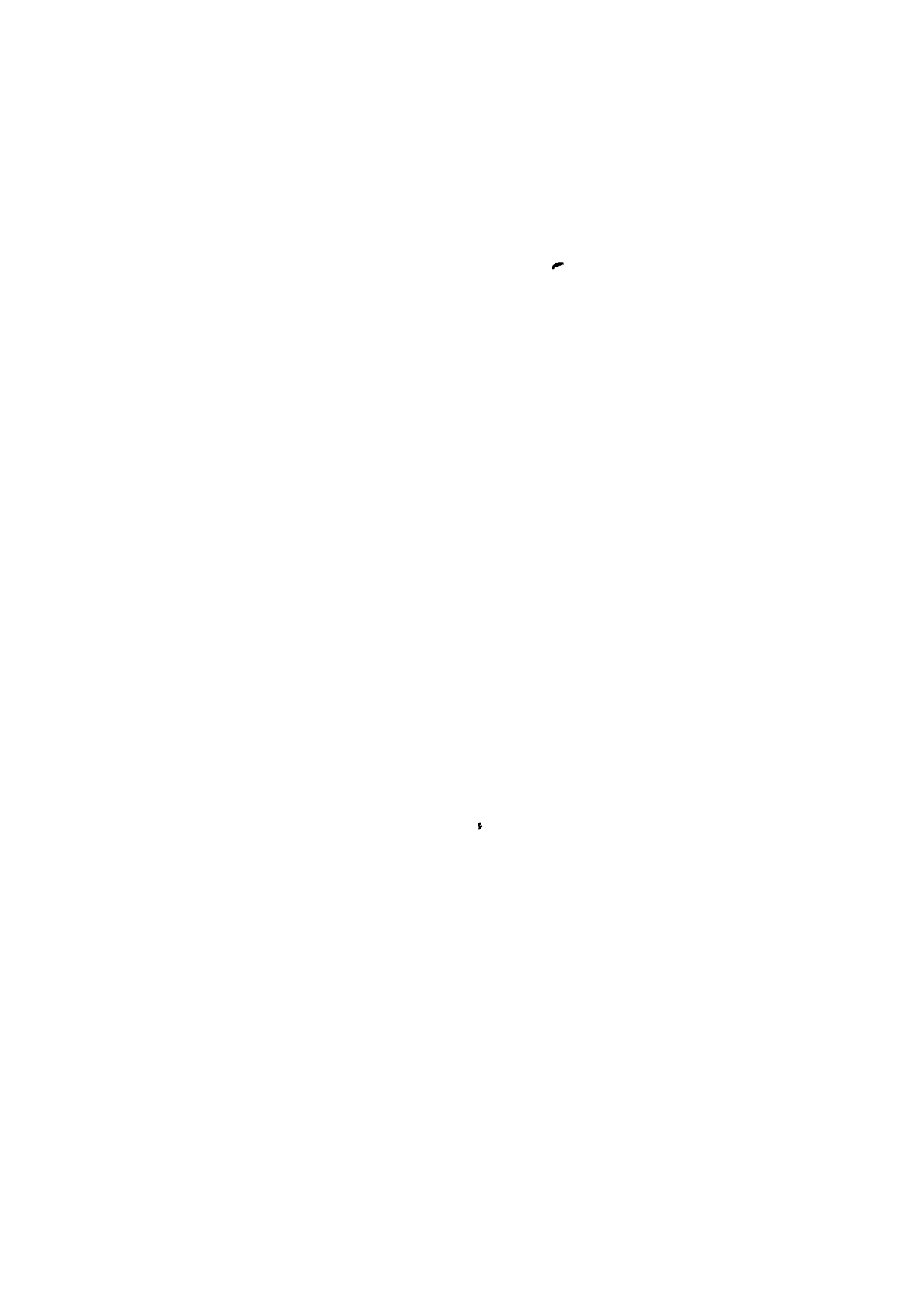
'व्यक्ति की सारी क्रियाये उसकी सैक्स-भावना से परिचालित होती हैं' – का सिद्धान्त स्थापित करने वाला विश्व का सबसे बडा मनोवैज्ञानिक......

—फ्रायड का पत्र मार्था के नाम

" .....*मैं एक गरीब-आदमी हूँ* .... ."

वियन
१५ जून, १८८२

मेरी प्यारी मधुर रानी,

अभी तक मैं नही जानता था, कि इन पक्तियो को अपने सपनो की रानी तक किस प्रकार पहुँचा पाऊँगा। सोचता हूँ अपनी बहनो से कहूँगा कि ऐली की मार्फत हम दोनो की मुलाकात इतवार के दिन पक्की तय करा दें और तभी मैं यह ढीठ पत्र तुम्हे चुपके से पकडा दूँगा। लेकिन, फिर भी मैं लिखना नही टाल सकता, क्योकि जिन कुछ मिनटो के लिये हम साथ होगे उनमे तुमसे सब कुछ कहने का न अवसर मिलेगा और न ही शायद मुझमे आवश्यक साहस पैदा हो सके। तुम हैम्बर्ग जा रही हो और उसके बारे मे मामूली चालाकी और तरकीब से हमे काम लेना है न ? प्रिये मार्था ! तुमने मेरी जिन्दगी

को कितना बदल दिया है ! आज जब मैं तुम्हारे घर था, तुम्हारे पास कितना अद्भुत लग रहा था। लेकिन ऐली ने जो कुछ मिनटो के लिए हमे अकेला छोडा उसका अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करना मुझे रुचिकर न लगा। यह मुझे उस आतिथ्य का, जो इतने प्रेम-पूर्वक मुझे अर्पित किया गया था, अपमान करने जैसा प्रतीत हुआ। मैं तुम्हारे पास होते हुए कोई नीच काम कर ही कैसे सकता था ? मैंने चाहा कि उस सन्ध्या और सैर का कभी अन्त न हो। कैसे लिखूं कि कौन सी चीज मुझे आन्दोलित कर रही थी ? उस समय मैं विश्वास नही कर सका कि मुझे तुम्हारी प्रिय आकृति के दर्शनो से महीनो के लिए दूर रहना होगा। मुझे इस बात का भी विश्वास नही होता कि जब नये प्रभाव मार्था पर पडते हैं तो इसमे मुझे कोई खतरा नही है। इतनी उम्मीद, सन्देह, खुशी और यातना दो सप्ताहो की इस सकुचित अवधि मे भर उठी है। अविश्वास की भावना मुझमे अब जरा भी नही है। यदि थोडा भी सन्देह मुझ मे होता तो इन दिनो के बीच अपनी भावनाओ को मैं तुम पर कभी भी जाहिर न करता। मार्था वह पत्र जिसका तुमने वादा किया था मुझे मिलना ही चाहिए ! मिलेगा ना ?...

तुम जा रही हो और तुम्हे मेरा चिट्ठियाँ लिखना सहन करना ही होगा। हम ऐसा इन्तजाम कैसे करें जिससे कोई यह बात नही जाने; क्योकि पहले तो तुम्हारी खातिर, और दूसरे क्योकि मैं एक गरीब आदमी हूँ और इस मूर्खतापूर्ण विचार-शून्यता पर सभी मुझे शर्मिन्दा करेंगे। सिर्फ मार्था ऐसा नही करेगी, मुझे आशा है। और मैं जानता हूँ इसके सिवाय मैं और कुछ कर ही नही सकता। मैंने मार्था का जादू अनुभव कर लिया है। एक तरकीब मुझे सूझी है। तुम्हारे चाचा के घर मे एक पुरुष का लेख शायद सबकी उत्सुकता का कारण बने। इसलिए क्यो न मार्था अपने कोमल कर से कुछ

लिफाफो पर पते लिखकर मुझे दे दे, और मै उनके कीमती शून्य को अपनी यातनाओ से भर कर तुम्हे भेज दूं। मार्था के जवाबो के बिना मेरा काम नही चल सकता। कल जो बात हमे अजीब लगती थी, आज वही अनिवार्य बन गई है और न मिलने पर पीडा देती है। अभी तक मुझे अपने पते का भी तो ठीक निश्चय नही।

वैसा नही हो सकेगा। जो मुझे अभी कहना है वह मै मार्था से कह नही सकूँगा। मुझ मे उस आत्म-विश्वास की कमी है जो मुझसे वह बात पूरी कहला सके, जिसको तुम किशोरी की नजरे और भाव-भगिमाएँ मुझे कहने से रोकती भी है और उसकी इजाजत भी देती है। आखिरी बार जब हम एक दूसरे से मिलेगे तब मैं अपनी प्यारी को, अपनी आराध्या को 'तू' कह कर सम्बोधित करना चाहूँगा जिसे शायद बहुत समय तक हमे गुप्त रखना पडेगा।

यह सब लिखने मे मुझे कितना प्रयास करना पडा है। अगर मार्था मुझ से एक मन नही है तो अपने सयम को तोड कर जो पक्तियाँ मैंने लिखी है उनको पढकर या तो वह हँस देगी या मुँह सिकोड लेगी, और मुझे एक लम्बा उत्कण्ठापूर्ण दिन बिताने के बाद ही वह अवसर मिल पायेगा जब कि मैं उसकी आँखो मे झाँककर अपने सशय से निवृत्ति पा सकूँ।

लेकिन मैंने साहस किया है और मैं किसी अजनबी को नही बल्कि उस लडकी को लिख रहा हूँ जो मेरी सबसे प्रियतमा मित्र है!, माना कि बहुत थोडे दिनो से ही, पर विचारो की असख्यो उलझनो के बाद।

मैं अपनी मित्र से इस पत्र पर पूरा विचार करने की प्रार्थना करता हूँ .*

डा० सिग्मड फ्रायड

---

*फ्रायड और मार्था का विवाह धन की अत्यन्त कमी के कारण बडी कठिनाई के साथ हो पाया। मित्रो से प्रार्थना की गई कि वे अपने उपहार वस्तुओ के रूप मे न दे कर नकदी के रूप मे दे!

बीमारियाँ कीटाणुओ से फैलती हैं—जिसने सब से पहले यह पता लगाया, वह विश्व-प्रसिद्ध वैज्ञानिक . । 'पेस्चेराइज्ड' दूध आदि का प्रथम शब्द ''पेस्चेराइज्ड' जिसके नाम पर पड़ा. .

- लुई पेस्चर का पत्र मेरी लारेंट के नाम

"......मैं ज़िन्दगी भर के लिए तुमसे और विज्ञान से बध गया हूँ......"

मदाम,

दो दिनो मे मेरी सारी जिन्दगी ही बदल गई है। मेरा भविष्य, मेरी खशी सब तुम्हारे हाथो मे है। एक बात का मुझे दुख है, और अत्यन्त हार्दिक दुख, कि मैं कुछ तुम्हारे काबिल नही हूँ ! मेरे पास वह कुछ भी नही है, जो मैं चाहता हूँ तुम्हे दे पाता; उदाहरण के लिए दुनिया मे एक अच्छी स्थिति , पर अपनी हालत को सुधारने का मैं कठोरतम प्रयास करूँगा।

तुम पर मेरा पहला प्रभाव क्या पडा इस बात की मुझे सबसे अधिक चिन्ता है, क्योकि निश्चय ही वह अनुकूल नही रहा होगा। मैं केवल यही प्रार्थना कर सकता हूँ कि तुम्हें बहुत जल्दबाजी मे कोई फैसला नही करना चाहिए। इस प्रकार तुम गलती कर बैठोगी। समय तुम्हे दिखा देगा कि मेरे इस उत्साह-हीन और सकोची स्वभाव के पीछे,

जिसे तुम निश्चय ही नापसन्द करोगी, वह दिल छुपा हुआ है जो तुम्हारे प्यार से भरा है।

.. मैं जिन्दगी भर के लिए तुमसे और विज्ञान से बध गया हूँ *

—लुई पेस्चर

*पेस्चर जिन वैज्ञानिक महोदयके आधीन रिसर्च कर रहा था, मेरी उन्ही की लडकी थी। जिस पेस्चर के बारे मे यह कहा जाता है, कि फ्रान्स को जर्मनी से हार जाने के कारण जितनी क्षति-पूर्ति करनी थी, वह सारी केवल उस अकेले के कार्य से भुगताई जा सकती थी। उसका विवाह-प्रस्ताव बडी हिचकिचाहट के बाद स्वीकार किया गया क्योंकि उसका 'भविष्य आशामय नही दीखता था.. !'

: ६ :

एक गरीब आदमी जो विश्व के सब से अधिक अमीर व्यक्तियो मे से एक बन गया . दुनिया की सबसे पहली मोटर-कार जिसने बनाई ...

—हेनरी फोर्ड का पत्र क्लेरा के नाम

" *प्यार के फूल तुम्हारे चारो ओर गुँथ जायें* "

स्प्रिग वेल्स
१४-२-१८८६

प्यारी क्लेरा,

मैं फिर कुछ पक्तियाँ तुम्हे लिखने का सुख उठा रहा हूँ। लगता है तुम्हे देखे पूरा साल बीत गया है। मुझे ऐसा महसूस होता है कि आज की रात भी नाव की सैर नही हो सकेगी। हाँ—बर्फ-गाडी मे बैठकर हम बर्फ पर तो फिसल लेगे ही। यहाँ पडोस मे बहुत से लोग बीमार पडे हैं। आज दोपहर बाद मैं पाँच बीमारो को देखने गया, जिसमे से तीन एक ही घर के थे। ऐसा लगता है कि हमारे यहाँ के लोगो को शीत ने बुरी तरह जकड लिया है। जॉन कल से स्कूल जाने लगेगा। मुझे उम्मीद है कि तुम और तुम्हारे यहाँ के सभी लोग ठीक-ठाक होगे। प्रिय क्लेरा, तुमने शुक्रवार की रात को मेरी प्रतीक्षा शायद

नही की होगी । मौसम बहुत ही खराब है, इसलिए आज की रात भी मेरे आने की आशा तुम न करना । यदि मौसम अच्छा रहा और सडके साफ मिली, तो शुक्र अथवा शनिवार की रात को ऑपेरा मे तुम से मुलाकात होगी, नही तो इतवार अथवा सोमवार की रात को मैं पार्टी मे शामिल होऊँगा । यदि तुम्हारा भाई इससे पहले कोई और पार्टी दे रहा हो तो मुझे लिखना । मेरा खयाल है मै उससे पहले ही तुमसे मिलूँगा । प्यारी क्लेरा, जब मै सोचता हूँ कि आखिर मुझे तुम्हारे जैसी एक प्यार भरी, उदार और सच्ची साथिन मिल ही गई है, और जब मैं उम्मीद करता हूँ कि हम दोनो मिलकर बडी-बडी सफलताये प्राप्त करेगे, तब मुझे कितना आनन्द मिलता है, इस बात की तुम कल्पना भी नही कर सकती । अच्छा मै अब यह पत्र समाप्त करूँगा । तुम्हे वर्ष के सभी सुख और आराम मिलें । प्रणाम !

प्यार के फूल तुम्हारे चारो ओर गुँथ जाये...और शान्ति की धूप तुम्हारे मन पर अपना रस बरसाये ।

उसकी ओर से जो तुम्हे बहुत-बहुत प्यार करता है ..

—हेनरी फोर्ड

. १० .

बिजली के क्षेत्र में जिसने मूलभूत खोजे की ..'फैरेडे नियम'—जिसके नाम पर आधारित है—और बिजली का यूनिट जिसके नाम के ऊपर 'फैरड' कहलाता है .. खानों में काम आने वाले 'सेफ्टी लैम्प' का आविष्कारक. .

—वैज्ञानिक फैरेडे का पत्र सैराह के नाम

"......मैं हजार तरह की दिली बाते तुमसे कहना चाहता हूँ"

रायल सस्था, वृहस्पतवार,
सन्ध्या

मेरी प्यारी सैराह,

ताज्जुब की ही बात है कि शरीर की हालत दिमाग की ताकत को इतना अधिक प्रभावित करती है। मैं आज सारी सुबह सोचता रहा कि एक रसीला रोचक पत्र लिख कर सन्ध्या समय तुम्हे भेजूंगा, लेकिन अब मै इतना थक चुका हूँ और इतना काम मुझे अभी करना बाकी है, कि मरे विचार एकदम चकरा उठे हैं। मेरे भाव तुम्हारी शक्ल के चारो ओर चक्कर तो काट रहे है, पर ठहर कर तुम्हारी प्रशसा करने की ताकत उनमे नही है। विश्वास मानो मैं हजार तरह की दिली बाते तुमसे कहना चाहता हूँ...लेकिन उस के लिए उपयुक्त भाषा पर अधिकार मैं नही रखता, और

जब मैं तुम्हारे बारे मे सोचता हूँ और गहरे विचार करता हूँ, तो क्लोराइड, परीक्षण तेल, डेवी फौलाद, पाक आदि पचासियो काम-काजी चीज़े मेरी आँखो के सामने तैरने लगती है, और एक भ्रमजाल सा तनने लगता है

सदा ही तुम्हारा प्यारा
—माइकेल

इगलेड का विश्व-प्रसिद्ध आलोचक, निबन्धकार तथा चित्रकार जिसके निवन्ध चार्लस लैम्ब की टक्कर के माने जाते हैं . ..

—हैज़लिट का पत्र स्टोडार्ट के नाम

" . .. एक जीवित कुत्ता मरे हुए शेर से ज्यादा अच्छा होता है ."

मेरी प्रिये,

एक सप्ताह मे ज्यादा गुजर चुका है और मुझे तुम्हारा कोई पत्र नही मिला ! तुम्हारा पत्र, जिसके सहारे मैं जीता हूँ, और जिसके विना मुझ मे जिन्दगी रहती ही नही ! क्या वन गया हे तुम्हारा ? क्या तुम ने शादी कर ली है, यह सुन कर कि मैं मर गया हूँ ? (क्योकि ऐसा ही मुझे वताया गया है), अथवा तुम किसी मठ मे चली गई हो ? या वोकेशियो* के कामुक प्रेमियो मे से किसी एक के प्यार मे पड गई हो ? भला किसके ? क्या चिनान के, जो मसखरे से एक प्रमी वन गया और सौन्दर्य के जोर से पढना सीख गया ? अथवा इजावेला के प्रेमी लोरेन्जो के प्रेम मे, जो एक सौदागर का क्लर्क था और जिसे इजा के तीनो भाई घृणा करते थे (जैसे कि तुम्हारा भाई मुझ से

* एक लेखक का नाम ।

करता है)। अथवा फेडरिगो एलबेरिगो के प्रेम मे जो कि एक ईमानदार तथा सज्जन व्यक्ति था और अपनी सम्पत्ति खो बैठा था, और जिसने कि अपनी प्रेमिका को बाज का बढिया गोश्त पका कर खिलाया था और इस प्रकार से उसे प्राप्त किया था, (यद्यपि स्वय अपने लिए भी भोजन पाने का यही तरीका उसके पास बच रहा था) । इस अन्तिम व्यक्ति से मे बहुत प्रभावित हूँ, क्योकि खुद मैंने भी तुम्हे सीखो की दावत देकर अपनी ओर आर्कपित किया था और उस समय मेरे पास भी उन्हे खरीदने के लिए पैसे नही थे । अब इस बात से इन्कार मत करना । क्या उससे अगली रात मैंने तुम्हारी स्वीकृति की याचना नही की थी, और क्या तुम ने वह मुझे दे नही दी थी ?

उन सुन्दर योद्धाओ से मुझे बुरी तरह ईर्ष्या करनी चाहिए थी अगर मैं यह न जानता होता कि . एक जीवित कुत्ता मरे हुए शेर से ज्यादा अच्छा होता है . बोकेशियो अपने प्रेमियो पर ज्यादा ध्यान नही देता । उमकी स्त्रिया ज्यादा आकर्षक व रसीली होती है । मै सोचता हूँ कि उस युग मे जीवित होता व थोडा अधिक सुन्दर होता । अब अगर किसी स्त्री ने यह पुस्तक लिखी होती तो यह मुझे इतना प्रभावित न करती, क्योकि उस दशा मे उसके पुरुष पात्र तो वीर और देवता समान होते पर स्त्रियाँ कुछ भी नही । क्या इस बात मे कुछ सच्चाई नही है ? अतीत प्यार की बाते कर रहे है न हम ! अभी एक दिन मैंने सडक पर अपनी पुरानी प्रेमिका को देखा, और एक दिन मैंने सपने मे भी उसे देखा; पर सिर्फ एक दिन ! बाकी सभी रातो मे मैंने वही सपने देखे, जो मैं पिछले दो महीनो से देखता चला आ रहा हूँ । अब अगर तुम जरा भी न्याय-प्रिय हो तो तुम्हे मेरी इस बात मे सतुष्ट हो जाना चाहिए .

—विलियम हैजलिट

उमर खैयाम की रुबाइयो की मदिरा का अंग्रेजी अनुवाद करके जिसने विश्व के मयरख़ाने को महका दिया

—एडवर्ड फिज़्गेराल्ड का पत्र ऐलन के नाम

"....*तुम वाकई बहुत अच्छी हो.*...."

गोल्डस्टोन हाल,
६ सितम्बर, १८३६

प्रिय ऐलन,

मेरे पास कहने के लिए कुछ नही, और मै निरुद्देश्य, विना किसी खास कारण के, पेमब्रोकशायर से तुम्हारे पास यह तीसरा पत्र भेजते समय बहुत ही लज्जित हूँ, परन्तु मुझे अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला है और यह तुम्हे पता ही है कि तुम्हारे पत्र मुझे तुम्हारे स्वागत की तरह महसूस होते है, और इसीलिए तुम्हारे इस पत्र ने मुझे इतनी शीघ्रता से उत्तर देने के लिए उत्तेजित कर दिया है। यह सच है कि तुम्हारा पत्र बहुत दिनो बाद आया है। शायद तुम अन्दाजा नही लगा सकती कि मै किस उत्सुकता से उसका इन्तजार कर रहा था। किस प्रकार मेरी आँखे बार-बार

कमरे मे आने पर मेज की तरफ घूम जाती थी । कभी-कभी मेरी तुम पर क्रोधित होने को इच्छा होने लगती । फिर मै सोचता कि तुम इतनी सुस्त हो कि चाहे बैठकर मुझे एक पत्र तक न लिख सको, फिर भी मुझे पूरा विश्वास है कि सैकडो मील दूर से मेरी खबर लेने को चली आओगी । मेरा खयाल है कि जो लोग लोक-जीवन में गम्भीर रूप से व्यस्त होते हैं और जिनके मस्तिष्क एक दम पूरी तरह से घिरे हुए है, वे इस प्रकार इतनी उत्सुकता से पत्रो के आने-जाने की प्रतीक्षा नही किया करते; परन्तु मै ठहरा एक बेकार खाली आदमी; स्त्रियो जैसी भावुकता से पूर्ण ! सोचता हूँ कि मेरी मित्रता प्यार से कुछ आगे की है। 'मैरी वाइव्स ऑफ विन्डसर' नामक पुस्तक पढते हुए मुझे तुम्हारा पत्र मिला । मै आप ही आप वहुत जोरो से हँसा और सोचा कि ऐसी प्रसन्नता के क्षणो मे और कौन सी खुशी मुझ पर छायेगी ? तुम वाकई बहुत अच्छी हो . और मैं अपने सम्पूर्ण अस्तित्व-सहित तुम्हे प्यार करता हूँ !

सचाई यह है कि मैं तुम्हारे इस पत्र के लिए बहुत ही व्यग्र था, क्योंकि मुझे वास्तव मे यह पता नही लग रहा था कि तुम विवाहित हो अथवा नही, या तुम बीमार हो । मैंने कल्पना की तुम कुछ भी और कही भी हो सकती हो ।

अध्ययन के सिलसिले मे कुछ अधिक नही कर पाया हूँ । मै 'स्पैक्टेटर' पढ रहा हूँ, जिसे आजकल लोग एक बेकार की पुस्तक समझते है, परन्तु मै इस का वहुत आदर करता हूँ ।

कैसी उच्चकोटि की पुस्तिका है वह !

उसमे वास्तव मे वहुत कुछ ऐसा है जिसे एक 'गोली' कहा जा सकता है, परन्तु कितना ज्ञान भरा हुआ है उसमे, और मेरा विश्वास है कि वह इतने सरल रूप से समझाया गया है कि लोग उस विशुद्ध तथा ठोस ज्ञान पर विश्वास तक न करे ।

जिस छोटी पुस्तक के विषय मे तुमने लिखा है वह मै ख़रीद लूंगा। थैकरे—जो कि फ्रांस जाने को एकदम तैयार बैठा है और शायद अब तक वहाँ पहुँच भी चुका हो—से मैं मिला हूँ, पर शायद अधिक नही मिल पाऊँ......

अच्छा विदा, मेरे साथी !

तुमने पत्र डालकर मुझे बहुत ही सुख पहुँचाया है और यह जान कर कि तुम वहां अच्छी तरह से हो, मैं वास्तव मे अत्यन्त खुश हुआ हूँ।

विश्वास के साथ तुम्हारा एक प्रिय साथी,

—ई० फिज़्गेराल्ड

१३ :

इगलैंड का प्रकृति का उपासक कवि जिसने पहाड़ों, झरनो, पेड़ों—प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को-जीवित रूप मे देखा, समझा और अपनी कविता मे बुन दिया .....

—कवि वर्डस्वर्थ का पत्र मेरी के नाम

" *अपना, ध्यान रखो और मोटा होने की कोशिश करो* "

(ग्रॅस मीर)
बुधवार, अप्रल २७, १८०१

प्रिये,

तुम्हारे स्वास्थ्य का ऐसा अच्छा समाचार पाकर हम बहुत ही खुश हुए...अपना ध्यान रखो और मोटा होने की कोशिश करो ..डोरोथी की तरह नही, जो कि एक दिन मोटी होती है और दूसरे ही दिन पतली, वल्कि पूरे आधे साल के लिए मोटी और प्रसन्न ! डोरोथी और मैं आज सुबह दो घन्टे तक जौ के बाग मे बैठे रहे। आज का दिन बहुत ज्यादा गर्म था, पर वहाँ मीठी और ठडी हवा चल रही थी। कितना हमने अपने प्यारे मित्रो—तुम्हे और सैरा को—याद किया ! तुम्हे याद होगा सडक के पार फर के बाग के ठीक सामने एक द्वार है। यह द्वार सदा ही हमारी प्रिय जगह रहा है और अब हम इसे सैरा के कारण और

भी ज्यादा प्यार करते है। तुम जानती हो इसमे वहुत सुन्दर सम्भावनाएँ छुपी हुई है। सैंरा ने इसकी एक छड़ पर अपना नाम खोदा था और इसे अपना द्वार कह कर पुकारा था। हम तुम्हारे नाम के लिये भी एक और स्थान खोज निकालेगे पर तुम्हे आना पड़ेगा और अपना स्थान स्वय निश्चित करना पड़ेगा। कितना हम तुम से मिलने के इच्छुक है, मेरी प्यारी मेरी !

हम कोलरिज के यहाँ गये थे।

विदा ! टाम को प्यार ! ईश्वर सदा तुम्हे आशीर्वाद दे। मेरी प्यारी मेरी, विदा !*

—वर्डस्वर्थ

*वर्डस्वर्थ के नाम मेरी का एक पत्र—'विवाह के बाद लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'क' भाग मे उद्धृत है।

· १४ ·

ट्यूडर वंश का सब से चालाक तथा विलासी राजा जिसने अपने राज्य-काल मे इगलैंड की पालियर्मिन्ट तथा रोम के पोप—दोनो मे से किसी एक को भी सिर नही उठाने दिया......

—हैनरी अष्ठम का पत्र एनीबोलीन के नाम†

"..... तुम अपने पिता से कह दो, वे शीघ्रता करें......"

प्रिये,

जिसकी मैंने इतने दिनो मे आस की है उस क्षण का समीप आ जाना कितना आनन्द देता है ! लगता है, जैसे कि वह क्षण बस आ ही पहुँचा, लेकिन सम्पूर्ण उपलब्धि तब तक सम्भव नही, जब तक कि हम दोनो मिल नही जाते, और इस मिलन की ससार के सब पदार्थों से अधिक मुझे इच्छा है। भला धरती की कौन सी चीज उस एक के सहवास से बडी हो सकती है, जो कि मेरी प्रियतमा मित्र है ? यह जानना और सोचना कि वह भी ऐसा ही विचार रखती है मुझे अत्यन्त आनन्द देता है। तुम खुद ही फैसला कर लो कि उस की उपस्थिति मुझे कितना प्रभावित करेगी, जिसकी अनुपस्थिति ने मेरे

†ऐनीबोलीन हैनरी की बहिन की नौकरानी मात्र थी। उनके विवाह का हर किसी ने विरोध किया।

दिल मे इतना गहरा घाव कर दिया है, कि वाणी अथवा लेखनी उसे प्रकट नही कर सकती और उसके लौटने के सिवाय अन्य कोई भी चीज उस घाव को नही भर सकती। प्यारी प्रियतमा ! मेरा अनुरोध है कि तुम अपने पिता से कह दो, वे शीघ्रता करे और निश्चित तिथि से दो दिन पहले ही सब कुछ कर डाले। वे पुरानी अवधि के खतम होने से पहले ही दरबार मे पहुँच जाये, अथवा अधिक से अधिक पूर्व निश्चित दिन तो पहुँच ही जाये, नही तो मैं समझूँगा कि वे एक प्रेमी के साथ उचित व्यवहार नही कर रहे है और अपने कहे अनुसार मेरी आशाओ को पूरा नही कर रहे हैं। समय की कमी के कारण अब और कुछ नही। मुझे आशा है कि तुम्हारी अनुपस्थिति ने जो भावनाये मुझ को दी है, उनका वर्णन मैं अपने मुख से ही तुम से कर सकूँगा।

यह पत्र उसके हाथ से लिखा जा रहा है जो इस समय तुम्हारे साथ होना चाहता है और जो तुम्हारा सबसे विश्वास-पात्र शाही सेवक रहेगा।[1]

—हेनरी

[1] विलासी हेनरी ने मन भर जाने के बाद एनीबोलीन को झूठा आरोप लगा कर मरवा डाला। उसके बाद उसने एक के बाद एक कई विवाह किये। एनीबोलीन का एक पत्र जो उसने अपने हेनरी को जेल मे लिखा था—'जेल से लिखे गये प्रेम-पत्र'—खंड के 'क' भाग मे उद्धृत है।

१५ :

विश्व की सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा मूल्यवान धातू 'रेडियम' [1] का अपनी पत्नी के साथ सह-अविष्कारक । नोबल पुरस्कार प्राप्त वह विश्व-प्रसिद्ध वैज्ञानिक जिसे पहले पैरिस यूनीवर्सिटी ने 'प्रोफैसर की कुर्सी तक देने से इन्कार कर दिया था .. ..

—पियरे क्यूरी का पत्र मेरी स्क्लोडोस्का के नाम†

"... . क्या तुम भाग्यवादी हो......?"

पेरिस

. १४ अगस्त, १८९४

प्रिये,

मैं आने और तुमसे मिलने का फैसला न कर सका। पूरे एक दिन मैं हिचकिचाता रहा और अन्त मे न जाने के निर्णय पर ही पहुँच पाया। तुम्हारे पत्र से पहले तो मुझे ऐसा लगा मानो तुम मेरा न आना ही चाहती हो। दूसरे, तुम तो मुझे कृपा करके तीन दिन अपने साथ बिताने का मौका दे रही थी, और मैं जाने को तैयार भी हो गया था, पर तभी एक अजीब लज्जा ने मुझे घर दबाया, कि क्यो मैं तुम्हारी

---

†मेरी विज्ञान की विद्यार्थिनी के रूप मे अपना देश पोलेंड छोटकर पेरिस में शिक्षा प्राप्त करने आई थी। वही उसका पियरे से परिचय हुआ। यह पत्र उस समय का है जब मेरी छुट्टियाँ बिताने अपने देश पोलेंड गई हुई थी।

इच्छा के विरुद्ध तुम्हारा पीछा करने चला हूँ ? और अन्त मे जिस बात ने न जाने का फैसला मुझसे कराया वह यह थी कि मुझे लगभग पूरा विश्वास हो गया कि मेरी उपस्थिति तुम्हारे पिताजी को नागवार गुज़रेगी और उनके उस आनन्द मे बाधा पहुँचायेगी जो उन्हे तुम्हारे अल्प ससर्ग से मिल रहा है ।

अब अवसर बीत चुका है और मुझे अफसोस है कि मै क्यो न चला गया । क्या इससे हमारी आपसी मित्रता दुगनी न हो गई होती ? यदि हम तीन दिन एक साथ बिताते तो क्या हमे वियोग के इन अगले ढाई महीनो मे एक दूसरे को न भूल पाने का उत्साह न मिलता ?

क्या तुम भाग्यवादी हो ?...क्या तुम्हे 'मी कैरीम' मेले का वह दिन याद है ? मैंने अचानक भीड मे तुम्हे खो दिया था ! मुझे लगता है कि हमारे मैत्री सम्बन्ध, बिना हम मे से किसी एक के भी चाहे, इसी प्रकार अचानक टूट जायेंगे । मैं भाग्यवादी नही हूँ पर शायद हमारे चरित्रो का यही परिणाम होगा । मै उचित समय पर उचित आचरण करना कभी भी नही सीख पाऊँगा ।

तुम्हारे लिए यह बात अच्छी ही होगी क्योंकि पता नही क्यो मेरे दिल मे यह समा गया है कि तुम्हे फ्रान्स में ही रोक रखा जाये । तुम्हे, तुम्हारे देश व परिवार से निर्वासित कर दिया जाये, और इस त्याग के बदले मे कोई अच्छी चीज भी मैं तुम्हे नही दे सकता ।

जब तुम कहती हो कि तुम पूरी तरह आजाद हो, तो क्या तुम थोडी अहवादी नही बन रही हो ? हम अपने स्नेह-सम्बन्धो के आधीन होकर चलते हैं । हम अपने प्रिय लोगो के पक्षपात-पूर्ण विचारों के भी गुलाम होते हैं । हमे अपनी रोजी कमानी पडती है और इस प्रकार हम एक यत्र के पुर्जे बन कर रह जाते है । आदि आदि ।

सबसे अधिक दर्दनाक बात यह है कि हमे उस समाज के, जो कि हमे चारो ओर से घेरे हुये है, पूर्व निर्णयो के सामने घुटने टेकने पडते है,

और ऐसा अपनी शक्ति अथवा कमजोरी के अनुसार ज्यादा या कम हमे अक्सर करना पडता है। यदि हम काफी बार ऐसा नही करते तो हमे कुचल दिया जाता है, और यदि हम वहुत अधिक बार ऐसा करते हैं तो नीच चरित्र बनकर स्वयं अपने से घृणा करने लगते है। दस वर्ष पहले जो मेरे सिद्धान्त थे मै उनसे वहुत दूर नही रहा हूँ। उस समय मेरा विश्वास था कि व्यक्ति को हर विषय मे अतिवादी होना चाहिए और वातावरण का कोई लिहाज नही करना चाहिए। मेरा विचार था कि हमे गुणो व दोषो दोनो को ही बढा-चढा कर पेश करना चाहिए। मैं कमकरो की तरह केवल नीली कमीजे ही पहना करता था।

और तुम देखती ही हो कि मै आयु मे काफी वडा हो चला हूँ, और कमजोर भी काफी पड गया हूँ। मुझे आशा है, तुम अपना खासा मनोरजन कर सकोगी...*

तुम्हारा अनुरागी मित्र
पियरे क्यूरी

*मेरी अपना देश पोलेंड नही छोडना चाहती थी और पियरे अपना देश फ्रास। पियरे ने धीरज से काम लिया और अन्त मे उसी की जीत हुई। पियरे को मेरी का लिखा हुआ एक पत्र—'विवाह के पश्चात् लिखे गये 'प्रेम-पत्र'—खड के 'क' भाग मे उद्धृत है।

वर्डस्वर्थ के बाद इगलैंड का राष्ट्र-कवि जिसकी कविता मे अनन्त गुलाबो की खुशबू और असख्य पहाडी झरनों का सगीत भरा हुआ है......

—लार्ड टेनीसन का पत्र एमिली के नाम†

"... ..और उस दिन तुम रेशमी वस्त्र पहने थीं......"

प्रिये,

हागवर्थिगम मे गुजरते हुए मैंने सडक पर से सामसेबाई के मैंदानो मे खडे देवदार के पेडो को देखा, जिन मे हरियाली फूट रही थी। क्या तुम्हे याद है—एक दिन, मै तभी-तभी लन्दन से लौटा था, और मै और तुम बाग मे पडीं लोहे की कुर्सी पर बैठे थे ? आज की तुलना मे वर्ष के वे ज्यादा शुरू के दिन थे। तुमसे प्रार्थना करने का कारण यही है कि तीन साल पहले की वह सुबह मेरी याद मे आज भी ताजी और आनन्ददायी है उस दिन तुम रेशमी वस्त्र पहने थी. और मेरा खयाल है कि मैंने तुम्हे कोई किताब पढ कर सुनाई थी

---

†टैनीसन कट्टर धार्मिक व्यक्ति थे। वे अपने पुत्र के नाम वसीयत कर गये कि पत्नी के नाम लिखे गये उनके 'भावुक' पत्रो को जला दिया जाये, (पर सारी आयु वे स्वय ऐसा नही कर सके)। जो पत्र 'होम' होने से बच गये, उन्ही मे से यह एक पत्र है।

विश्व-क्लासिक 'फास्ट' का कवि, नाटककार, जर्मन वैज्ञानिक और दार्शनिक......

—गेटे का पत्र वल्पचुग्रस के नाम†

"......मैने अपने से अधिक सुन्दर और दूसरों को रिझा लेने वाले नवयुवक देखे है......"

प्रिये,

मैं तुम्हे हृदय से प्यार करता हूँ। मिलन के सिवाय और कुछ भी उससे अधिक अच्छा नही है। मेरे हृदय मे आओ मेरे प्यार ! मैं तुम से केवल इतना ही मागता हूँ, केवल इतना . क्योकि मेरे हृदय मे अनेक ईर्ष्यालू विचार पनप रहे है और मैं सोचता हूँ कि मुझ से भी अधिक प्रिय तुम्हें कोई और भी हो सकता है मैंने अपने से अधिक सुन्दर और दूसरो को रिझा लेने वाले नवयुवक देखे हैं .

---

†गेटे इससे पूर्व भी लगभग आधे दर्जन प्रेम कर चुका था। वल्पचुअस भी गेटे के साथ विवाह से पूर्व अनेक वर्षो से रह रही थी। उन दोनो के कई बच्चे भी हो चुके थे, जिनको 'जायज' ! करार देने के लिये गेटे ने यह विवाह किया। गेटे के फ्रैड्रिका और शारलौटे को लिखे गये दो अन्य पत्र इसी खड के 'घ' भाग मे उद्धृत है, तथा कैचन को लिखा गया एक और पत्र—'विवाह के पश्चात लिखे गये प्रेम-पत्र'— खड के 'ख' भाग मे उद्धत है। गेटे को कुमारी कैंचन द्वारा लिखा गया एक पत्र—'विवाह के पश्चात् लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'घ' भाग मे उद्धृत है।

घ

पत्र
जिनके
लिखने वालों का
परस्पर विवाह नहीं हुआ

: १८ :

—जर्मन कवि गेटे का पत्र फ्रैंडरिका के नाम†

... ..मुझे इतना खाली-खाली कभी भी नहीं लगा . ."

स्ट्रासबर्ग
१५-१०-१७७२

प्रिय नव मित्र,

मैं तुम्हे ऐसा कहने का साहस कर रहा हूँ, क्योकि अगर आँखो की भाषा पर मुझे विश्वास करना चाहिए, तो मेरी आँखो ने तुम्हारी आँखो मे इस नई मित्रता की आशा को पहली ही दृष्टि मे पढा है। जैसा कि मैं तुम्हें जानता हूँ, तुम बहुत ही अच्छी और उदार हो। क्या तुम उसके प्रति कुछ भी कृपा प्रदर्शित नही करोगी जो तुम्हे इस प्रकार प्यार करता है . ?

---

†फ्रैंडरिका एक पादरी की लडकी थी, जिसकी सुन्दरता को गेटे सारी आयु नही भुला सका।

प्यारी प्यारी मित्र, मुझे तुम से कुछ कहना है, इस वात में तो सन्देह हो ही नही सकता; लेकिन यह वात और है कि मुझे यह ठीक-ठीक ज्ञात भी है या नही, कि मै किसको पत्र लिख रहा हूँ, और मुझे क्या लिखना चाहिये ? एक निश्चित आन्तरिक बेचैनी ने मुझे वहुत कुछ ज्ञान करा दिया है। मुझे वडी खुशी होती यदि मै तुम्हारे पास होता। यह कागज का टुकडा इस शोर-शरावे से भरे स्ट्रासवर्ग मे वैसी ही सच्ची सान्त्वना देता है, जैसी कि कोई परो वाला घोडा! अगर तुम भी अपने मित्र के वियोग को उतनी ही सच्चाई से अनुभव करो तो तुम्हारे शान्त स्थान मे यह कागज़ का टुकडा तुम्हें भी वैसी ही सान्त्वना देगा।

तडपन! अगर तुमने अलग होते समय मेरे को देखा होता तो तुम कल्पना कर सकती, कि किन परिस्थितियो से विवश होकर मुझे वापिस लौटना पडा और कितना-कितना मैंने तुम्हारे पास रह जाना चाहा। वेलैंड के विचार आगे की ओर भाग रहे थे, मेरे पीछे की ओर। तुम समझ सकती हो कि हमारी बात-चीत न रोचक हो सकी, न विस्तृत।

वान्जनो के अन्त मे हमने रास्ता काटना चाहा, पर हम एक दलदल मे जा फसे। रात आ गई और अव हमे बस एक तूफान का इन्तजार और था।

खो जाने के डर से जो कागज मैं लगातार अपनी मुट्ठी मे पकड़े हुये था, उस तावीज ने यात्रा के सव खतरो को मार भगाया। और अब ? मैं कहने का साहस नही कर सकता। या तो तुम स्वय अनुमान कर लोगी या विश्वास ही नही करोगी।

अन्त मे हम जा पहुँचे और हमारा पहला खयाल था—तुम से फिर मिलने की योजना वनाना, और रास्ते भर यही खयाल हमे प्रेरित करता रहा।

जिन्हें हम प्यार करते है, उनसे फिर मिलने की आशा कितनी मजेदार होती है। और जब हमारा प्यार से बिगडा हुआ दिल जरा रजीदा होता है, तो हम फौरन उसके लिए आशा की औषधि लाते है, और उससे कहते हैं,—'प्यारे नन्हे दिल शान्त हो ! तुम अपनी प्रेमिका से ज्यादा समय के लिये जुदा नही रहोगे। प्यारे नन्हे दिल शान्त बन !'—इसी बीच हम उसे एक खिलौना खेलने को दे देते है और वह शान्त हो जाता है—उस बच्चे की तरह जिसे उसकी माँ सेव की जगह गुडिया दे देती है, क्योकि सेव उसे नही खाना चाहिए !

वहुत काफी है . हम यहाँ नही हैं...तुम गलत थी। तुम्हे विश्वास नही होगा कि गाँव के जो मधुर सुख मैने तुम्हारे साथ भोगे उनके बाद अब स्ट्रासबर्ग का शोर-शराबा मुझे बिल्कुल अच्छा नही लगता। प्रिये ! स्ट्रासबर्ग.. मुझे इतना खाली खाली कभी भी नही लगा...मै सोचता हूँ कि तभी ठीक रहेगा जब उन मोहक क्षणो की याद थोडी मद्धम पड जायेगी और मुझे इतने स्पष्ट रूप से यह स्मरण नही रहेगा, कि मेरी मित्र कितनी अच्छी और सुन्दर थी, लेकिन मै यह भूल कैसे सकता हूँ ? और ऐसा सोच भी कैसे सकता हूँ मैं ? नही-नही इसके बदले मै थोडा रज और सहन कर लूंगा और तुम्हे अधिक बार पत्र लिखूंगा।

और अब तुम्हारे प्रिय माता-पिता को बहुत-बहुत धन्यवाद और तुम्हारी प्यारी बहन को कई सौ हार्दिक स्मृति...और तुम्हे ? बताओ मै और क्या दूं ?*

---

*गेटे के तीन अन्य स्त्रियो को लिखे गये प्रेम-पत्र इसी खड के 'ग' और 'घ' भाग व—'विवाह के पश्चात् लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'ग' भाग मे उद्धृत हैं। कुमारी कैचन द्वारा गेटे को लिखा गया एक और पत्र—'विवाह के पश्चात लिखे गये प्रेम-पत्र—खड के 'घ' भाग मे उद्धृत है।

: १६ :

गेटे का पत्र शारलौटे बफ़ के नाम[1]

"......उस कमरे में मै कभी प्रवेश नही करूंगा ..."

प्रिये,

मैं निश्चय ही दुवारा आने का प्रण करता हूँ, पर कब ? यह भगवान ही जाने ! लौटे ! तुम्हारे दिल ने उस समय क्या महसूस किया, जब तुम मुझसे बाते कर रही थी और जानती थी, (जैसे कि मैं भी जानता था), कि यह मेरा तुमसे अन्तिम मिलन है। अन्तिम नही, पर कल मैं जा रहा हूँ। वह जा चुका है। वैसी बातो के लिए तुम्हे किसने प्रेरित किया ? जब मुझे तुमसे अपने दिल की बाते कह डालनी चाहिए थी, उस समय मेरा सबसे अधिक ध्यान तुम्हारी उस हथेली की ओर था जिसे मैंने अन्तिम बार चूमा ! . उस कमरे मे मैं अब कभी प्रवेश नही करूँगा . तुम्हारे प्यारे पिता मुझे छोड़ने आखिरी बार दरवाज़े तक आये। मैं अब अकेला

---

[1]शारलौटे गेटे के एक मित्र की मगेतर थी, इसलिए गेटे को उससे बिल्कुल अचानक ही सम्बन्ध तोड देना पडा।

हूँ, और शायद मैं रोऊँ भी ! तुम खुश रहो ! मैं तुम्हारे दिल मे रहूँगा ! ! मैं तुम से फिर मिलूँगा पर कल कभी नही ! उनसे कह देना वह जा चुका है। मैं और अधिक कुछ नही कह सकता ...*

*गेटे के तीन अन्य स्त्रियो को लिखे गये प्रेम-पत्र इसी खड के 'ग' और 'घ' भाग, व—'विवाह के पश्चात लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'ग' भाग मे उद्धृत हैं। कुमारी कैचन द्वारा गेटे को लिखा गया एक और पत्र—'विवाह के पश्चात लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'घ' भाग मे उद्धृत है।

अमेरिका के सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्तियो में से एक वैज्ञानिक, गणितज्ञ, लेखक, तथा राजनीतिक विचारक...न्यूटन और वाल्टेयर से भी अधिक सम्मानित......

—बैन्जेमिन फ्रैन्कलिन का पत्र मादाम हैलवेशियस के नाम*

"... ..इस अच्छी दुनिया में लौट आया, जिससे तुम्हें और सूर्य को देख सकू ......"

पैसी

जनवरी, १७८०

प्रिये,

अपने प्यारे पति के सम्मान मे जीवन भर अकेले रहने का अपना जो फैसला तुमने पिछली रात अत्यन्त दृढ वाणी में मुझे सुनाया, उसे सुनकर मैं अपने घर जाकर बिस्तरे पर गिर पडा। मैंने अपने को मरा हुआ समझा और स्वय को एलीसियन फील्ड्स मे पाया।

वहाँ मुझ से पूछा गया—'क्या तुम्हे किन्ही विशेष व्यक्तियो से मिलना है?'

---

*विधुर फ्रैन्कलिन ने बहत्तर वर्ष की आयु मे इकसठ वर्ष की विधवा श्रीमती हैलवेशियस के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा. जो ठुकरा दिया गया क्योंकि वह अपने मृत पति के प्रति मृत्यु तक 'वफादार' रहना चाहती थी!

"मुझे दार्शनिको के पास ले चलो"

"इस बाग मे ही दो रहते है। दोनो बहुत अच्छे पडौसी और मित्र हैं।"

"कौन है वे ?"

"सुकरात और हेलवेशियस"

"मैं दोनो की ही बेहद इज्जत करता हूँ, पर पहले मैं हेलवेशियस से मिलूँगा, क्योकि फ्रान्सीसी भाषा तो मुझे थोडी सी आती भी है, पर ग्रीक का तो मैं एक शब्द भी नही जानता। हेलवेशियस ने सम्मानपूर्वक मुझसे बाते की, क्योकि उन्ही के कहे अनुसार मेरे यश के कारण कुछ समय से वे मुझे जानते थे। उन्होने, युद्ध के बारे मे और फ्रान्स मे धर्म, स्वतन्त्रता एव सरकार के बारे मे मुझसे हजारो बाते पूछी।

"आप अपनी मित्र श्रीमती हेलवेशियस के बारे मै कुछ भी नही पूछ रहे। वह अब भी आपको अत्याधिक प्यार करती है। अभी दो घन्टे पहले ही तो मैं उनके घर पर था।"

"आह! तुम मुझे मेरे उस सौभाग्य की याद दिला रहे हो! पर अब मुझे यही प्रसन्न रहना चाहिये। कितने ही वर्षो तक मैंने उसके सिवाय और किसी के बारे मे कुछ भी नही सोचा। आखिर मुझे सान्त्वना मिल गई है। मैंने एक और स्त्री से विवाह कर लिया हैं। वह लगभग उसी जैसी है। यह सच है कि वह उस जितनी खूबसूरत तो नही है, पर उसमे उतनी ही समझ और कल्पना-शक्ति है, और वह मुझे असीम प्रेम करती है। उसका निरन्तर यही प्रयास रहता है कि मै खुश रहूँ। इस समय भी वह सर्वोत्तम अमृत व भोजन की खोज मे गई हुई है, जिससे सन्ध्या समय मुझे तृप्त कर सके। तुम ठहरो और उससे मिलो।

मैंने उनसे कहा,—'मैं देखता हूँ कि आपकी पुरानी साथिन आपसे

अधिक वफादार निकली, क्योकि उसके सामने कितने ही अच्छे रिश्ते आये पर उसने सबको इन्कार कर दिया। मैं आपके सामने स्वीकार करता हूँ कि स्वय मैंने उसे अत्याधिक प्यार किया, पर उसने मुझ से बहुत ही कठोर वर्ताव किया और आपके प्यार की खातिर मुझ को भी एक दम इकार कर दिया।"

"मैं तुम्हारे दुर्भाग्य पर तुम से सहानुभूति प्रकट करता हूँ, क्योकि असल मे वह बहुत अच्छी औरत है और अत्यन्त अच्छे स्वभाव की है। लेकिन ऐबे-द-ला-रौचे और ऐबे मारलट अब भी उसके घर आते है या नही?"

'जी हाँ बराबर आते है, क्योकि उसने आपके एक भी मित्र को विमुख नही होने दिया है।"

"अगर तुम कही कॉफी और क्रीम देकर ऐबे मारलट से सिफारिश कराते तो शायद तुम सफल होते, क्योकि वह स्कॉट्स अथवा सन्त टॉम्स जैसा ही तार्किक है और अपने तर्कों को ऐसे क्रम से रखता है कि वे अकाट्य बन जाते है, अथवा कही तुम किसी पुरानी साहित्यिक कृति की बढ़िया जिल्द देकर ऐबे-द-ला रौचे से अपने विरुद्ध कुछ कहलवा देते तो और भी अच्छा होता, क्योकि मैंने खूब देखा था कि वह जिस बात की सलाह देता था वह निश्चय ही उससे उल्टा करती थी...!"

तभी नई श्रीमती हेलवेशियस अमृत लेकर अन्दर आई और मैंने उन्हे फौरन ही पहचान लिया क्योकि वह मेरी अमेरीकन मित्र श्रीमती फ्रैंकलिन थी! मैंने उसे फिर से प्राप्त करना चाहा पर उसने मुझे डाँट दिया।

"मैं पचास वर्ष चार महीनो तक तुम्हारी पत्नी रही हूँ, लगभग आधी शताब्दी! बस उतने से सन्तोष करो।"

अपनी पुरानी साथिन के इस इकार से निराश होकर मैंने तत्काल

उस अहसान-फरामोश अंधेरी जगह को त्याग देने का निश्चय किया और इस अच्छी दुनिया मे लौट आया जिससे तुम्हे और सूर्य को देख सकूं . लो यह मैं हूँ । आओ हम अपना बदला ले लें ..*

*कुछ समय बाद श्रीमती हैलवेशियस राजी हो गईं, तो फ्रैन्कलिन तैयार नही हुआ और फ्रान्स छोड कर अमेरिका चला गया । फिर भी वे दोनो जीवन भर अच्छे मित्र बने रहे ।

दुनिया के दो सब से बड़े कहानीकारों में से एक...रूस का वह महानतम लेखक जिसने शोषित जनता के हक़ में अपनी कलम को तलवार बना लिया .....

—चैखव का पत्र लीडिया के नाम†

.....फरवरी अभी पकी नही है...मै तुम्हारे दोनों हाथों को चूमता हूँ......"

२७ मार्च, १८९४
याल्टा

मधुर लीका,

पत्र के लिए धन्यवाद। यद्यपि तुम यह कहकर मुझे डराना चाहती हो कि तुम जल्दी ही मर जाओगी, और मुझे ताना मारती हो कि मैं तुम्हे छोड दूंगा, फिर भी तुम्हें धन्यवाद ! मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम मरोगी नही और कोई तुम्हे छोडेगा नही।

मैं याल्टा मे हूँ और खूब मज़े कर रहा हूँ। स्थानीय सामन्तशाही, अथवा कुछ भी नाम तुम उसे दो, 'फास्ट' खिलवा रही है और मैं

---

†लीडिया थियेटर मे नाचने-गाने का काम करती थी। अपने ड्रामो के खेले जाने के सिलसिले में चैखव का उस से परिचय हुआ।

रिहर्सलो की देख-रेख कर रहा हूँ। मनोरम, काले, लाल, पीले, भूरे सिरो के फूलो के गुच्छो को लगातार देखते रहने मे, और गाना सुनने मे बडा मजा आता है। मैं खूब खाता हूँ। मोटे मेमने का भुना हुआ गोश्त, प्याज की टिकिया, मटन-चाप और काशा—यह सब मैं लडकियो के स्कूल की सचालिका के साथ खाता हूँ। अम्लवेत का शोरबा मैं यहाँ के बडे घरो मे पीता हूँ। पेस्टरी की दुकान और अपने होटल पर मैं अलग खाता हूँ। मै दस बजे सोता हूँ, दस बजे उठता हूँ, और भोजन के बाद भी आराम करता हूँ, पर मधुर लीका, फिर भी मैं उकता रहा हूँ। मै इसलिए नही उकता रहा, क्योकि मेरी 'स्त्रीयें' मेरे पास नही है, बल्कि इसलिए कि यहाँ का बसन्त बहुत ही बढिया होता है और दूसरा कारण यह कि मुझे कुछ लिखना चाहिए, यह खयाल एक पल के लिए भी मेरा साथ नही छोडता। मुझे कुछ लिखना चाहिए...लिखना चाहिए ..लिखना चाहिए । मेरा विचार है कि सुस्ती के बिना असली खुशी असम्भव है। मेरा आदर्श तो यह है कि बेकार रहा जाये और एक मोटी जवान लडकी से प्यार किया जाये। मेरे लिए सबसे अधिक मजे की बात है बेकार घूमना या बैठना। मेरा प्रिय शौक है बेकार की चीजें (पत्ते, घास आदि) इकट्ठे करना और बेकार का काम करना। पर मैं एक साहित्यिक हूँ और मुझे यहाँ याल्टा मे भी लिखना चाहिए। प्यारी लीका! जब तुम एक बडी गायिका बन जाओ और तुम्हे खूब पैसे मिलने लगें तो तुम दयावान बन कर मझ से शादी कर लेना और मुझे सहारा देना, जिससे बिना काम किए जी सकना मेरे लिए सम्भव हो सके। और यदि तुम सचमुच ही मरने वाली हो तो यह काम बारबरा एबर्ले को सौंप जाना, जिसको तुम जानती ही हो मै प्यार करता हूँ। जिम्मेदारियो की, और उन कामो की जिनसे मै छुटकारा नही पा सकता निरन्तर चिन्ता ने मुझे इस स्थिति मे ला खडा किया है। एक सप्ताह से मैं घोर

कष्ट मे हूँ, यद्यपि दिल का दौरा मुझे नही पड़ा है। यह एक घृणास्पद अनुभूति है।

मैंने अपना फॉक्स कोट वीस रूबल मे बेच डाला, यद्यपि वह साठ रूबल मे बना था, लेकिन चालीस रूबल की कीमत का रोया तो पहले ही झड चुका था, और वीस रूबल कोई बुरे नही रहे। झरबेरी अभी पकी नही है पर मौसम गर्म और चमकदार है। पेड खूब जवानी पर हैं। समुद्र का दृश्य बहुत प्यारा लगता है और स्त्रियाँ प्यार की सिहरनो के लिए तडपती हैं। फिर भी उत्तर का रूस दक्षिणी रूस से ज्यादा अच्छा है, खासकर बसन्त-ऋतु मे। दिल के दौरे के कारण एक सप्ताह से मैंने शराब नही पी है, और शराब न पीने के कारण स्थानीय वातावरण मुझे बहुत उदास और रूखा दिखाई पडता है। क्या तुम कुछ दिन हुए पैरिस मे थी? फ्रान्सीसी कैसे है? क्या तुम उन्हे पसन्द करती हो? तब तुम उन्हे स्वय से दूर करो।

मीरोद ने यहा एक नृत्य-नाटक किया और पूरे एक सौ पचास रूबल का लाभ उठाया। वह एक शेर की तरह दहाडा और उसने भारी सफलता प्राप्त की। मुझे बडा दुख है कि मैंने सगीत नही सीखा नही तो मै भी दहाड सकता, क्योकि मेरा गला रूखे स्वरो से भरा हुआ है और लोग कहते है कि मै अष्टक बहुत ही बढिया गा सकता हूँ। तब मै खूब पैसा कमाता और स्त्रियो मे बहुत प्रसिद्ध हो जाता।

मै इस जून पैरिस नही जाना चाहता। मै चाहता हूँ कि तुम यहाँ मिलिखोव मे ही आ जाओ। रूस की याद तुम्हे वापस ले आयेगी। रूस आने से, भले ही एक दिन के लिए, बचने का कोई रास्ता नही है। तुम अक्सर पोटापैंके से मिलती हो। इस गर्मी वह भी रूस लौट रहा है। अगर तुम उसके साथ यात्रा करो तो खर्च कम पडेगा। अपना टिकट उससे खरीदवाओ और पैसे देना भूल जाओ, (और ऐसा करने वाली तुम पहली स्त्री नही होगी)। अगर तुम वापिस नही आओगी तो

मुझे पैरिस जाना पड़ेगा, पर मुझे विश्वास है तुम आ रही हो। स्वस्थ रहो; शान्त, खुश और सन्तुष्ट ! तुम सफल होओ। तुम एक सुन्दर लड़की हो।

तुम अगर पत्र डाल कर मेरी आदत ही बिगाड़ना चाहो तो पत्र मिलिखोव भेजो। मैं शीघ्र ही वहाँ पहुँच जाऊँगा। मैं नियमित रूप से तुम्हारे पत्रों का उत्तर दूंगा। मैं तुम्हारे दोनों हाथों को चूमता हूँ।

तुम्हारा
ए० चेखव

जिसने दुनिया की सर्वप्रिय इतिहास-पुस्तक 'रोमन् साम्राज्य का उत्थान-पतन' लिखो . जीवन में जो करना चाहा उस पर अपनी प्रत्येक सास खर्च कर दी ..और कार्य के पूरा होते ही जिन्दगी की स्टेज खाली कर गया......

—इतिहासज्ञ गिब्बन्स का पत्र कुमारी करशो के नाम †

" ....दो घन्टे तक मैं अपने कमरे में बन्द रहा..... "

२४-८-१७५८

कुमारी,

कैसे शुरू करूँ ? पर करना तो होगा ही। कलम उठाता हूँ, रख देता हूँ, और फिर उठा लेता हूँ। मेरे ऐसे आरम्भ से शायद तुम समझ गई होगी कि मुझे क्या कहना है। कृपा करके मुझे क्षमा कर देना। हाँ कुमारी ! मुझे सदा के लिये तुम्हे छोड देना पडेगा। अन्त आ चुका है, और यद्यपि मेरा दिल रो रहा है, फिर भी कर्त्तव्य के आगे तो सब को झुकना ही पडता है।

इगलैड आने के बाद मैंने अपने पिता का स्नेह प्राप्त करने की पूरी-पूरी कोशिश की और ऐसा करने के लिए उन हलके बादलो को

---

†यह पत्र सीधे फ्रान्सीसी से अनुवाद किया गया है।

छितराने का प्रयास किया जो कुछ समय से घिर रहे थे । मेरी व्यवहार-बुद्धि और मेरी स्वार्थ-कामना दोनो ने ही मुझे ऐसा करने की सलाह दी । मुझे लगा कि मैं सफल हो गया हूँ । उनका सम्पूर्ण व्यवहार, उनकी सत्कार-पूर्ण दृष्टि, कोमलता पूर्वक उनका मेरी ओर आकृष्ट होना, उनकी कृपा व उदारता, सब ने मुझे मेरी सफलता का विश्वास दिला दिया । जिस क्षण उन्होने मुझे आश्वासन दिया कि वे मुझे सब प्रकार से प्रसन्न बनाना चाहते है, उसी क्षण का उपयोग करके मैंने उनसे प्रार्थना की, कि वे मुझे उस युवती से विवाह करने की अनुमति प्रदान करे, जिस का सग सभी देशो, सभी परिस्थितियो एव सभी प्रकार के वातावरण मे मुझे एक जैसा आनन्द प्रदान कर सकता है, और जिसके बिना हर चीज मेरे लिये भार बन जायेगी । उन्होने उत्तर दिया,—'क्या तुम एक विदेशी स्त्री से विवाह करना चाहते हो ? तुम ऐसा करने के लिये स्वतन्त्र हो पर याद रखो, कि तुम एक बेटे भी हो और एक नागरिक भी ।' इसके बाद उन्होने अपने इस दुनिया से छूट जाने, समय से पहले ही कब्र मे चले जाने और मेरे द्वारा देश के प्रति अपने कर्त्तव्य को ठुकरा दिये जाने की सम्भावनाओ की चर्चा की...दो घण्टे तक मै अपने कमरे मे बन्द रहा अपनी मन स्थिति का वर्णन करने की मै कोशिश नही करूँगा । अपने पिता को यह बताने के लिये में बाहर आया कि उन की खातिर मैं अपने जीवन की सब खुशियो की बलि दे दूँगा ।

कुमारी ! जितना मैं अपने को खुश बनाने की सोच सकता हूँ, उससे कही अधिक भगवान तुम्हे खुश बनायें , मैं सदा इस बात के लिए प्रार्थना करता रहूँगा । मेरे लिये यह सबसे बडे सन्तोप की बात होगी । मैं शुभकामनाएँ करने के सिवाय और किसी भी प्रकार से तुम्हारे सुख मे योगदान नही दे सकता । फिर भी मुझे अधेरे मे मत रखना । मेरे लिये वह एक सुन्दर पर क्रूर क्षण होगा । श्री व श्रीमती करशो

को मेरा सन्मान, आदर व मेरा खेद-निवेदन अर्पित करना । विदा—कुमारी विदा...मैं सर्वाधिक सन्मानित एवं सर्वाधिक आकर्षक युवती के रूप में तुम्हें सदा याद रखूंगा, और तुम भी उस व्यक्ति को एकदम नहीं भूल पाओगी जो ऐसी अयोग्य निराशा का शिकार बना ।

भगवान तुम पर कृपा करे ! कुमारी, यह पत्र हर दृष्टि से तुम्हें अजीब प्रतीत होगा, फिर भी यह मेरी आत्मा का प्रतिविम्ब है । रास्ते में दो बार मैंने तुम्हे लिखा, एक बार लारेन के एक गाँव से और एक बार लन्दन से । तुम्हे वे पत्र मिले नहीं । पता नहीं अब भी उनके तुम्हारे तक पहुँचने की आशा की जाये अथवा नहीं ।

तुम्हारे प्रति अक्षय आदर और ऐसे भाव रखने का सन्मान मुझे प्राप्त है, जो जीवन भर मुझे सताते रहेंगे ।*

मैं हूँ तुम्हारा तुच्छ व आज्ञाकारी सेवक
—गिव्वनस

*गिव्वनस का विवाह करशो से नहीं हो सका, फिर भी उसने करशो व उसके पति की जीवन भर सहायता की । उनका फ्रान्स से भागना गिव्वनस के कारण ही सभव हो सका था ।

: २३

—करशो का पत्र गिब्बेन्स के नाम†

"......एक सोचने वाली आत्मा अपने आप में पर्याप्त दड है ....."

३० मई १७६३

श्रीमन्

जो कदम मै उठा रही हूँ, उस पर लाज से गडी जाती हूँ। इसे मै तुमसे और स्वय अपने से भी छुपाना चाहती थी। हे भगवान्! क्या यह सम्भव है कि एक भोले हृदय को इतनी नीचाई तक गिरना पडे ? कितना अपमानजनक है यह! अत्यन्त यातनादायक दुखो से मेरा परिचय रहा है पर उनमे से किसी ने भी इतनी गहरी चोट मुझे नही पहुँचाई जितनी इस एक ने। फिक्र मत करना। मैं अपनेपन के बावजूद यह कर रही हूँ। अपनी शान्ति के लिये यह प्रयास मुझे करना ही पडेगा। अगर मै इस मौके को हाथ से निकल जाने दूँ, तो फिर मुझे कभी शान्ति नही मिल सकेगी। क्या मैने उन क्षणो के बाद कभी भी आराम

---

†यह पत्र सीधे फ्रान्सीसी से अनुवाद किया गया है।

पाया है, जब कि मेरे दिल ने अपने को सताने की कोशिश की, और तुम्हारे उदासीन व्यवहार के नीचे भी तुम्हारी कोमलता के सबूत पाये।

उन क्षणो से लगातार पाच वर्षो तक मैं, एक अनोखे, अकल्पनीय आचरण के द्वारा उपरोक्त भ्रम पर अपनी बलि देती रही। मेरा दिल, कितना भी प्रेममय क्यो न रहा हो कम से कम अपनी गलती का अहसास कर चुका था। मै तुमसे विनीत प्रार्थना करती हूँ कि तुम एक पागल और अस्थिर हृदय को अपने से विमुख बना दो। मुझे बता दो कि तुमने पूरी तरह मुझसे मुँह फेर लिया है, और मेरी आत्मा प्रस्तुत परिस्थिति से अपना ताल-मेल बैठा लेगी। इससे निश्चय ही मेरे मन को वह शान्ति मिल जायेगी जिसे पाने के लिये मै तडप रही हूँ। अगर तुम साफ-साफ कह देने की इस मामूली बात से भी इकार करोगे, तो तुम ससार के सबसे घृणास्पद प्राणी होगे। अगर तुम्हारे उत्तर मे ज़रा भी छुपाव होगा, या चुप रह कर तुम मुझे अपना खिलौना बनाना चाहोगे तो वह भगवान जो मेरे अन्तर से परिचित है, और जो, यद्यपि उसने मुझे सख्त चोटें पहुचाई है, मुझे प्यार करता है, मेरी प्रार्थनाओ के बावजूद तुम्हें सज़ा देगा। और अगर तुमने कभी मेरी इस अभद्र कोशिश को दुनिया के किसी भी आदमी के सामने, मेरे प्रिय मित्रों तक के भी सामने जाहिर किया तो मै अपने को जो दण्ड दूँगी उसकी भयानवता मुझे अपनी गलती महसूस करा देगी; और मै इस काम को एक भयानक अपराध मानूँगी जिसकी क्रूरता से अभी तक भी मै परिचित नही हूँ। मैं अभी से महसूस कर रही हूँ कि यह एक नीच कार्य है। इसने मेरी मर्यादा, मेरे अतीत आचरण और वर्तमान भावो को उत्तेजित कर दिया है।

...एक सोचने वाली आत्मा अपने आप मे एक पर्याप्त दण्ड है... और सोच अन्दर का खून बाहर खीच लाता है।

विश्व-प्रसिद्ध अग्रेज कवि जिसकी कविता और ज़िन्दगी दोनों ही मे निराशा और दर्द कूट-कूट कर भरा था जो केवल छब्बीस वर्ष की अल्पायु में मर गया......

—कवि कीट्स का पत्र फेनी के नाम†

"   *मेरे सिवाय किसी भी दूसरी चीज के बारे में मत सोचो......*"

मई १८२०

मगलवार प्रातः

मेरी प्रियतमा प्रेयसी,

मैंने तुम्हारे लिए एक पत्र लिखा था। मुझे आशा थी कि तुम्हारी माँ से मिलना होगा। अब अगर यह पत्र मैं तुम्हारे पास भेजूँ तो यह मेरा स्वार्थ ही होगा, क्योकि मैं जानता हूँ कि तुम्हे यह थोडा कष्ट पहुँचाएगा। मैं चाहता हूँ तुम समझो कि तुम्हारे प्रेम ने मुझे कितना दुखी और पीडित बना दिया है। मैं तुम्हे अपनी ओर खीचने की जितनी भी कोशिश कर सकता हूँ, करता हूं, और चाहता हूँ कि तुम मुझे अपने हृदय का पूरा प्यार दो। इसी एक बात पर मेरी

---

†कीट्स को तपेदिक हो गई थी, और उसने यह पत्र अपनी प्रेयसी को सैनेटोरियम से लिखा था।

जिन्दगी निर्भर करती है। तुम जरा इधर-उधर हिली या तुमने अपना ध्यान इधर-उधर किया, और मेरा हृदय फट सा गया। मुझे तुम्हारा गहरा लालच हो गया है. मेरे सिवाय किसी भी दूसरी चीज के बारे मे मत सोचो . ऐसे मत रहो जैसे मैं इस दुनिया मे हूँ ही नही। मुझे भूल मत जाओ। लेकिन यह कहने का मुझे क्या अधिकार है कि तुम मुझे भूल गई हो ? शायद तुम सारे-सारे दिन मुझे याद करती हो । क्या अधिकार है मुझे यह चाहने का, कि मेरे कारण तुम अपनी खुशियो को छोड दो ? पर मुझे क्षमा करना, मैं ऐसा ही चाहता हूँ। अगर तुम जानती कि मेरे हृदय मे कितनी उत्कट लालसा है कि तुम मुझे उतना ही प्यार करो जितना कि मैं तुम्हे करता हूँ, कि तुम मेरे सिवाय और किसी के बारे मे कुछ भी न सोचो तो वह वाक्य तुम कभी भी न लिखती जो तुमने लिखा है। कल और आज सुबह भी तुम्हारा मीठा रूप मेरी आँखो मे भरा रहा। सारे समय मै तुम्हे तुम्हारी लकडहारिन के वेष मे देखता रहा। कितनी पीडा मेरी इन्द्रियों ने अनुभव की ! मेरा हृदय तुम्हारे इस रूप की ओर कितना लपका ! किस प्रकार मेरी आँखे आँसुओ से भर-भर आई ! मेरा विश्वास है कि सच्चा प्यार विशाल से विशाल हृदय को आपूर भर देने के लिए एकदम काफी है। जब मैंने सुना कि तुम अकेली शहर गई, तो मेरे दिल को धक्का सा लगा, पर मुझे इस बात का डर पहले से ही था। वचन दो कि जब तक मैं अच्छा न हो जाऊं तुम ऐसा न करोगी। मुझे वचन दो और अपने पत्र को प्यार की मीठी भाषा से भर दो । यदि तुम मन से ऐसा नही कर सकती तो, मेरी प्यारी! मुझे साफ-साफ बता दो। अपने हृदय को मेरे सामने खोल दो। यदि तुम्हारा हृदय सासारिक सुखो की ओर बहुत अधिक भागता है तो इस सत्य को मेरे सामने स्वीकार करो। शायद मैं समझ लूँगा कि तुम मुझसे बहुत दूर हो। तब मैं तुम्हे पूरी तरह अपना बनाने

मे स्वय को असफल मान लूँगा। अगर तुम्हारी एक चहेती चिडिया पिंजरे से छूट कर उड जाये, तो जब तक वह दिखाई देती रहेगी तुम उसे वापिस लाने के लिए तडपती रहोगी। जब वह बिल्कुल ही गायब हो जाये तभी तुम थोडा सा चैन पा सको तो पा सको। यदि ऐसी ही बात हो तो तुम मुझे स्पष्ट बता दो, कि मेरे सिवाय किन-किन चीजो की तुम्हे अनिवार्य आवश्यकता है। मैं व्यय कर लूँगा और थोडा अधिक खुश रह सकूँगा। ठीक है तुम कह सकती हो—'मुझे यौवन के भोग न भोगने देना कितना स्वार्थपूर्ण और क्रूर है, और मुझे अप्रसन्न बनाना है।' यदि तुम मुझे प्यार करती हो तो तुम्हे ऐसा ही बनना पडेगा। मेरी आत्मा दूसरी किसी भी बात से सन्तुष्ट नही हो सकती। अगर तुम पार्टियो का आनन्द लेना चाहो और उन्ही मे अपनी खुशी मानो; यदि तुम लोगो के सामने मुस्कराओ और उन्हे अपनी तारीफे करने पर मजबूर करो, तो न तुम्हे मुझ से प्यार है और न कभी तुम मुझसे प्यार कर सकोगी। तुम्हारे प्यार का निश्चय ही मेरी जिन्दगी है। मेरी मधुरे! मुझे अपने प्यार का विश्वास दिला दो! यदि तुम किसी भी तरह ऐसा यकीन न दिला सकी तो मैं हृदय की पोडा से मर जाऊँगा। अगर हम एक दूसरे से प्यार करते है तो हमे दूसरे स्त्री-पुरुपो की तरह नही रहना होगा। मै फैशन, चमक-दमक और गुप्त प्यार के मीठे विष को सहन नही कर सकता। तुम्हे सिर्फ मेरी होना होगा। यदि तुम्हे सूली पर चढने के लिए भी मै कहूँ तो तुम्हे वह भी करना होगा। मै नही कहता कि मुझ मे मेरे दूसरे साथियो की अपेक्षा अधिक पीडा है, पर मै चाहता हूँ कि तुम मेरे कोमल अथवा सख्त सभी पत्रो को ध्यान से पढो और साचो, कि इन पत्रो को लिखने वाला व्यक्ति आखिर कितनी देर तक इन मानसिक कष्टो और सन्देहो को सहता चला जायेगा, जिन्हे तुम अपने विचित्र व्यवहारो से उस पर थोपती चली जा रही हो? यदि तुम पूरी तरह मेरी न बन

सकीं तो शारीरिक स्वास्थ को फिर से प्राप्त करने का मुझे क्या लाभ होगा ? भगवान के लिए मुझे बचा लो या मुझे बता दो कि तुम्हारी लालसा मेरी लिए एक भयानक चीज है । ईश्वर तुम्हारी सहायता करे ..

—जॉन कीट्स

नही मेरी मधुर फेनी ! मैंने ऊपर गलत कहा है । मै नही चाहता कि तुम अप्रसन्न रहो और फिर भी मै ऐसा ही चाहता हूँ; और मै जरूर-जरूर ऐसा चाहूँगा जब कि मेरी प्रेयसी इतनी मधुर लावण्यवती प्रिय है । मेरी मनोहिनी ! मेरी प्यारी ! विदा । तुम्हे मेरे चुम्बन—आह कितना कष्ट है *

* फेनी ने कीट्स के प्यार को ठुकरा दिया और वह अपने लिखे अनुसार शीघ्र ही मर गया ।

: २५ :

फ्रांसीसी क्रांति का जनक, जिसने सामन्तशाही के अंधेरे मे सबसे पहले बराबरी ! भाईचारा ! और स्वतन्त्रता !!! के तीन सूरज उगाए......

—रूसो का पत्र मदाम मरचेल के नाम

"...महत्त्वाकांक्षा और स्वार्थ मुझे लुभा नहीं सकते....."

अक्तूबर १७६०

प्रिये,

तुम्हारी भलमनसाहत भी कितनी क्रूर है ! तुम क्यो एक अकेले और ऐसे व्यक्ति की शांति भग करना चाहती हो, जो जिन्दगी के मजो को त्याग चुका था ? इसलिए कि उन मजो के बाद मिलने वाले दुख उसे न झेलने पडे। मैने स्थायी स्नेह-सम्बन्धो की खोज मे अपना पूरा जीवन बेकार किया है। अपनी बराबरी के समाज-स्तर मे तो मैं कोई ऐसा सम्बन्ध बना नही सका। अब क्या मुझे तुम्हारे वर्ग मे उसकी खोज करनी पडेगी ? ..महत्त्वाकांक्षा और स्वार्थ मुझे लुभा नही सकते . घमन्ड भी मुझमे नही है। हाँ—थोडा डर है। मैं किसी के प्यार-प्रदर्शन को ठुकरा नही सकता। शेष सब बातो की उपेक्षा मैं कर सकता हूँ। तब मेरी उस कमजोरी को तुम क्यो उभारना चाहती हो, जिस पर काबू पाने को मैं उत्सुक हूँ ? हम दोनो के बीच मे जो सामाजिक दूरी है

वह भावो से लबालब भरे होने पर भी इन दो बेचैन दिलो को नज़दीक न आने देगी। जो दिल प्यार की अभिव्यक्ति के एक से अधिक तरीके नही जानता और प्यार के सिवाय सभी बातो के लिए अपने को असमर्थ अनुभव करता है, उस के लिए क्या मात्र कृतज्ञता काफ़ी रहेगी ? मदाम ला मरचेल ! मित्रता.. ? तुम और मरचेल मित्रता की बाते करो तो उचित है। मैं तो मात्र इससे सन्तुष्ट नही। जब मैं तुम्हारी बातें सुनता हूँ तो पागल हो उठता हूँ। तुम आनन्द लेती हो और मैं तुम्हारी ओर खिचता हूँ, और अन्त मे मुझे कई बातो के लिए पछताना पडता है। और सुनो, मैं तुम्हारी इतनी सब उपाधियो से बहुत-बहुत घृणा करता हूँ। मुझे तुम पर दया आती है कि तुम्हे उन सबो का भार ढोना पडता है। आह ! तुम निजी जिन्दगी के मजे लेने के लिए कितनी उपयुक्त हो। तुम क्लेरन्स मे क्यो नही रहती ? खुशी की खोज मे मै वहाँ तो पहुँच सकता हूँ, पर मौन्टमारेन्सी का किला और लग्जमबर्ग का होटल—ऐसी जगहो मे भला क्या यह सम्भव हो सकता है कि बराबरी के दो दोस्त अपने अनुभूतिशील हृदयो मे प्यार भर कर पहुँचे ? एक दूसरे को उतनी ही इज्जत दे जितनी कि दूसरा पहले को देता है, और सोचे कि मैंने जितना पाया है उतना लौटा भी दिया है ? मैं जानता हूँ, और देख भी चुका हूँ, कि तुम अच्छी भी हो और उत्सुक भी। मुझे खेद है कि मुझे जल्दी ही इस बात का विश्वास क्यो नही हो गया ? लेकिन उस वर्ग मे जिससे तुम सम्बन्ध रखती हो, और तुम्हारे जिन्दगी के तरीके मे कुछ भी तो ऐसा नही है जो किसी पर स्थायी प्रभाव डाल सके। एक के बाद एक नई चीजे नजर के सामने आती-जाती रहती हैं और कुछ भी दिमाग मे टिक नही पाता। मदाम ! तुम मुझे भूल जाओगी जब कि मेरा अनुकरण करना तुम्हारे लिए असम्भव हो जायेगा। मुझे दुखी बनाने में तुमने बहुत काफी हाथ बटाया है, और यह बात माफ नही की जा सकती

जर्मनी का वह विश्व-प्रसिद्ध यहूदी उपन्यासकार जिसकी इसाई प्रेमिका नाजियो के बर्बर 'कन्सन्ट्रेशन कैम्प' मे मार डाली गई.....

—कापका फ्रान्ज का पत्र कुमारी मिलेना के नाम

"... शायद बच्चे किसी और तरीके से नहीं पैदा किये जा सकते. "

सोमवार, दोपहर बाद

प्रिये,

आज सुबह के पत्र मे मैने जितना कुछ कहा है उससे अधिक यदि इस पत्र मे नही कहता तो मैं झूठा ही कहलाऊँगा। कहना भी विशेषकर तुमसे, जिसमे मैं इतनी आजादी से कह-सुन सकता हूँ जितनी कि किसी और से नही कह सकता, क्योकि किसी ने भी इतना जानते-बूझते और इतने मन से मेरा पक्ष नही लिया, जितना कि तुमने, और वह भी सब कुछ के बावजूद।

तुम्हारे सबसे सुन्दर पत्र वे है जिनमे तुम मेरे भय से सहमत हो और साथ ही यह समझाने का प्रयत्न करती हो कि मेरे लिये भय का कोई कारण नही है। (मेरे लिये यह बहुत कुछ है क्योकि कुल मिलाकर तुम्हारे पत्र और उनकी प्रत्येक पक्ति, जो कुछ भी मेरे

जीवन मे सुन्दर गुज़रा है उसमे सबसे सुन्दर है) । शायद तुम्हे कभी-कभी लगता हो जैसे मैं घूंस खा कर अपने भय का पोषण कर रहा हूँ, पर तुम भी मुझसे सहमत होगी कि यह भय मुझ मे बहुत गहरा रम चुका है, और शायद यही मेरा सर्वोत्तम अंश है । इसलिये शायद यही मेरा वह अकेला रूप है जिसे तुम प्यार करती हो; क्योंकि मुझ मे प्यार के काबिल और क्या मिलेगा ? लेकिन यह भय निश्चय ही प्यार के काबिल है ।

और जब एक बार तुमने मुझसे पूछा था कि मै उस शनिवार को 'अच्छा' कैसे कह सका जब कि वह भय मेरे हृदय मे था, तो यह बात समझानी कुछ कठिन नहीं रहती, क्योंकि मैं तुम्हे प्यार करता हूँ। (मैं तुझे प्यार करता हूँ, तुझ बेवकूफ को, वैसे ही जैसे समुद्र अपनी गहराई मे पडे पत्थर को प्यार करता है और उसी तरह मेरा प्यार तुम्हें अपने मे समा लेता है, और यदि भगवान की मर्जी होगी तो शायद मैं पत्थर हो सकूँ और तुम समुद्र) । इसीलिये मैं सारी दुनिया को प्यार करता हूँ। और दुनिया मे तुम्हारा बाया कन्धा भी शामिल है...नही यह तो तुम्हारा दाहिना कन्धा था । पहले, और जब भी मैंने चाहा उस का चुम्बन लिया । (और अगर तुम जरा उदार होगी तो अपना ब्लाउज हटा लोगी) । और इस मे तुम्हारा बाया कन्धा और जगल मे मुझसे ऊपर उठा हुआ तुम्हारा चेहरा, और तुम्हारी उघडी छाती पर मेरे सिर का टिकना भी शामिल है। इसीलिये शायद तुम ठीक ही कहती थी कि हम पहले ही एक हो चुके हैं। मैं इस बात से डरता नही और यही मेरी एकमात्र खुशी और गर्व है और मैं इसे केवल जगल तक ही सीमित नही रखना चाहता ।

लेकिन इस दिन की दुनिया और आध घन्टे के उस शयन के बीच जिसे एक बार तुमने ग्लानिपूर्वक 'पुरुषो का धन्धा' कहा था, मेरे लिये एक शून्य पडा है और मैं इसे भर नही सकता, क्योंकि मैं

भरना चाहता ही नही । वह वात रात से सम्वन्ध रखती है, और पूरी तरह और हर दृष्टि से केवल रात से ही सम्वन्ध रखती है । यह वह दुनिया है जो इस समय मेरे हाथ मे है और उस रात की दुनिया पर एक वार फिर से अधिकार करने के लिये मुझे कूद कर रात मे पहुँचना पडेगा । क्या किसी चीज पर कोई दो बार अधिकार कर सकता है ? क्या इसका मतलब उसको खो देना ही नही है ? यह आनन्द मेरे कब्जे मे है और उस दूसरे भयानक काले जादू, इन्द्रजाल, पारस पत्थर, रसायन और जादू की अगूठी के लिये मुझे कूद कर रात मे पहुँचना पडेगा ! इसलिये दूर रहो । मै इससे वहुत डरता हूँ ।

जो कुछ दिन इन खुली आँखो को देता है उसी को जल्दवार्जी मे, हाँफते हुए शकित मन से काले जादू के द्वारा एक रात मे प्राप्त करने का प्रयत्न करना । शायद बच्चे किसी और तरीके से नही पैदा किये जा सकते और शायद वच्चे भी जादू का खेल ही है । खैर इस विषय को अभी रहने दो । और शायद इसीलिये जव मै तुम्हारे पास होता हू तो एक साथ ही सर्वाधिक शान्त व अशान्त, सर्वाधिक वधा हुआ व आजाद, दोनो ही होता हूँ, और इसीलिये यह समझ लेने के वाद मैने जीवन की और सभी बातो का त्याग कर दिया है । मेरी आखो मे झाँक कर देखो ।

श्रीमती 'के' ने मुझे वताया है कि पुस्तके विस्तर के पास वाली मेज से हटा कर लिखने की मेज पर रख दी गई है । निश्चय ही इस परिवर्तन से पहले मुझसे पूछा जाना चाहिये था कि मै इससे सहमत भी हूँ अथवा नही, और मै कहता—नही ।

और अव मेरा अहसान मानो कि कुछ उल्टा-सीधा (कुछ ईर्ष्या

भरा उल्टा-सीधा), इन अन्तिम पक्तियो के साथ जोड़ने की इच्छा को मैंने सफलता-पूर्वक दवा लिया है।

लेकिन यह काफी है। अब मुझे एमिली के बारे मे बताओ।*

*काफ्का यहूदी था और मिलेना इसाई। इसलिये मन एक होने के बावजूद धार्मिक पडो ने उनके तन को कभी एक नही होने दिया।

इटली का सब से वड़ा क्रान्तिकारी, जिसको अपनी आधे से ज्यादा जिन्दगी अपने प्यारे देश से वाहर मारे-मारे घूमने मे काट देनी पडी इटली का लैनिन......

— क्रान्तिकार मैंजिनी का पत्र गिन्डिटा सिडोली के नाम

"......यदि एक बार भी अपना सिर तुम्हारे घुटनों पर रख कर सो सकता......"

प्रिये,

तुम्हारे पत्र मे ऐसे शब्द हैं, जिनकी स्मृति अभी तक मेरे हृदय मे आनन्द की सिहरन पैदा कर रही है। इन अन्तिम दिनो मे मैंने अपने प्यार की शक्ति को अनुभव कर लिया है। मैंने तुम्हारे बालो की लटो को चुम्बनों से भर दिया है। आह ! यदि एक बार भी मैं अपना सिर तुम्हारे घुटनो पर रख कर सो सकता।*

---

*गिन्डिटा ने अपने प्रेमी मैंजिनी की क्रान्ति के कार्य मे बेहद सहायता की। उसका पहला पति भी क्रान्तिकारी था। उनका विवाह न होने का मात्र कारण यह था कि मैंजिनी की जिन्दगी पूर्णतया अनिश्चित थी और वह अपने घर मे क्या, अपने देश मे भी नही रह सकता था।

: २८ :

जिसने भ्रमण-साहित्य की विश्व-प्रसिद्ध पुस्तक 'गुलीवर की यात्रायें' लिखी, मगर जिसकी स्वयं की जीवन-यात्रा का दुखद अन्त पागलखाने में हुआ......

—जोनेथन स्विफ्ट का पत्र वनेसा के नाम

"......मैं लिखता हूँ और बहुत तेज सोचता भी हूँ......"

८ अगस्त १७२२

प्रिये,

कल मैं बीस मील बिना थके घोड़े पर चला। यहाँ से मैं यह पत्र डाल रहा हूँ। यह एक दिशा मे सफर करेगा और दूसरी में मैं। लेकिन मैं नही जानता कि मैं कहाँ जाऊंगा और कैसे-कैसे जगल और झाड़िया मेरे रास्ते मे पड़ेगी। इस पल तुम मेरी नजरो के सामने हो, ठीक उसी रूप मे जिस मे तुम दस बजे के समय दिखायी दिया करती हो। मुझे दीख रहा है जैसे तुम प्रश्न पूछ रही हो और मैं बनावटी देरी के साथ उनका उत्तर दे रहा हूँ। यही दृश्य दो बजे से सात बजे तक लगभग चालीस बार मेरी आँखों के सामने आया और हर बार उसमे एक नयापन मालूम हुआ।

लम्बी छुट्टियाँ हो गई है। अदालते सो गई हैं। मौसम खराब है। तुम अपना समय कैसे बिताती हो? गाँव के खेतो और झाड़ियों मे

या नगर मे अपने भाई-बहिनो के साथ, या ऐसे सोच-विचार मे जो निश्चय ही दुखदाई हैं, या तर्क करने और गलत विचारो से कष्टकर नतीजे निकालने मे ? तुम्हारा सर्वोत्तम साथी एक दार्शनिक ही हो सकता है, जिसकी इज्जत तुम धार्मिक उपदेशको जितनी ही करती हो । जब से मै तुम से अलग हुआ हूँ मैने तुम्हारी अलमारियो मे जितनी समा सकती हैं उससे अधिक पुस्तके पढी है । इनसे मुझे बहुत काफी मिला है यद्यपि उस सबका एक अक्षर भी अब मुझे याद नही है । समय कितना मूर्ख है, और आदमी भी कितना, कि समय के रुक जाने पर वह उतनी ही नाराजगी महसूस करता है, जितनी कि उसके बीतने पर । लेकिन मै समय की चाल के अनुसार आगे नही बढ सकता, क्योकि . मै लिखता हूँ और बहुत तेज सोचता भी हूँ . इसलिए तब तक के लिए विदा जब तक कि मै लिखने के लिए अगला स्थान तय करू । हो सकता है लौटने तक मै कही न रुकूँ क्योकि यह बात भाग्य व मौसम पर निर्भर करती है ।

—जोनेथन स्विफ्ट

: २६

—जोनेथन स्विफ्ट को कुमारी वेनसा का पत्र†

"……मत सोचो कि वियोग मेरे ख़यालों को बदल पायेगा . ."

केमब्रिज, १७२०

प्रिये,

यकीन मानो, यह बडे ही दुख की वात है कि आज मुझे तुम से शिकायत करनी पड रही है, क्योकि मैं जानती हूँ कि तुम्हारा स्वभाव इतना अच्छा है कि किसी भी मनुष्य को दुखी देख कर तुम्हारा दिल रोये विना रह ही नही सकता। फिर भी मै क्या करूँ? या तो मुझे अपने दिल को खाली करना पडेगा और अपने दुख तुम से कहने पडेंगे, नही तो मैं तुम्हारी इस अजीव उपेक्षा की अकथनीय पीडा के नीचे घुट-घुट कर मर जाऊँगी। दस लम्वे सप्ताह वीत चुके हैं, जव मैं तुमसे

---

†जोनेथन वेनेसा को वहुत कम समय और उस से भी कम ध्यान देता था। वह उस को विवाह के लिये जीवन भर टालता रहा। वेनेसा वकील होने हुये भी अत्यन्त भावुक थी। आयु भर विवाह नही किया और घुल-घुल कर मर गई ..

मिली थी, और इस के बीच एक पत्र और बहाने भरी दो पक्तियो के सिवाय कुछ भी तो मुझे तुम से नही मिला। आह! कैसे मुझे तुम अपने से दूर छिटकाना चाहते हो। मै तुम्हे दोष भी नही दे सकती, क्योकि अपनी इस पीडा और घबराहट को लेकर मै तुम्हारे लिये केवल दुखद चिन्ता का कारण ही नो बनती हूँ। मै तुम्हे जरा सा सुख भी नही दे सकती। लेकिन, इस बात की मै यहाँ घोषणा करती हूँ कि कला, समय अथवा आकस्मिकता, किसी के भी बस की यह बात नही है कि उस अकथनीय चाह को कम कर सके जो मुझमे तुम्हारे लिये है। मेरी चाह पर सख्त से सख्त रोक लगा दो, मुझे अपने से इतनी दूर भेज दो जितनी भी कि इस धरती पर मुझे भेजा जा सके, तब भी तुम उन प्यार भरे खयालो को मुझसे दूर नही कर सकते जो मुझसे तब तक चिपके रहेगे जब तक कि मुझ मे स्मरण-शक्ति है। वह प्यार जो मुझे तुम्हारे लिये है, सिर्फ मेरी आत्मा मे निहित नही है, बल्कि मेरे शरीर का एक भी अणु ऐसा नही है जिसमे वह न रमा हुआ हो। इसलिये...मत सोचो कि वियोग मेरे खयालो को बदल पायेगा क्योकि जब भी मैं अकेली होती हूँ, अपने को बेचैन पाती हूँ और मेरा दिल दुख और प्यार से बिध जाता है। भगवान के लिये बताओ कि किस बात ने यह अजीब परिवर्त्तन, तुम मे पैदा किया है, जिसे मैं कुछ समय से तुम मे देख रही हूँ? अगर तुम्हारे दिल मे मेरे लिये जरा भी दया बाकी हो तो मुझे बताओ। नही मत बताओ जिससे यह दुख मेरी मौत का कारण बन जाये और इस धीमी मौत जैसी जिन्दगी की यातना से मेरा छुटकारा हो जाये, क्योकि यदि तुम्हारे मन मे मेरे लिये कोई कोमल भावना ही नही बची है, तो ऐसी ही जिन्दगी तो मुझे जीनी पडेगी।*

---

*स्विफ्ट के जीवन मे एक अन्य स्त्री एस्थर जॉनसन थी। इन तीनो को लेकर अंग्रेजी मे काफी साहित्य लिखा गया है।

: ३० .

इगलेंड की वह अत्यन्त महत्वपूर्ण रानी जिसने विश्व में सर्वप्रथम इगलैंड का प्रभुत्व स्थापित किया.. जो सारी आयु कुंवारी रही और शादी करने का लालच दे-दे कर स्पेन, पुर्तगाल आदि देशो के राजाओ को आपस में लडाती रही. जिसने ईस्ट इन्डिया कम्पनी की स्थापना करके भारत की गुलामी की बदसूरत इमारत की नीव डाली . . .

—ऐलिजाबेथ प्रथम के नाम दरबारी इसैक्स का पत्र†

१५९४

देवी,

इस जगह के मजो के बीच मे भी मैं उस एक को नही भूल सकता जिसके मधुर सग मे मैंने उतना ही आनन्द प्राप्त किया है, जितना कि दुनिया का सबसे सुखी आदमी अपनी आत्म-तुष्टि मे पायेगा । और अगर मेरा घोडा उतना तेज भाग सकता, जितने तेज कि मेरे खयाल उडते हैं, तो मैं अपने प्यार की निधि, आपको देख कर उतनी ही वार अपनी आँखो को सफल बनाता जितनी वार मेरी कामना आपके प्रतिरोधी

†इसैक्स उस समय के इगलेंड का अत्यन्त महत्वपूर्ण जनरल था। जब वह ऐलिजावेथ का विरोधी हो गया तो उसके माफी माँगने पर भी उसका सिर भुट्टे की तरह उड़वा दिया गया।

निश्चय पर विजय पाती हुई अपनी सजीव कल्पना मे मुझे मालूम पडती है। उदार और प्रिय रानी भले ही मैं वहाँ हूँ पर आपके कृपा-पात्रो मे मुझे किसी से भी पिछला स्थान नही मिलना चाहिए; और जब मै घर पहुँचूँगा तब अगर उस श्रेष्ठ स्थान पर मुझे सर्वोपरि अधिकार न मिला तो चाहे मुझे सारी दुनिया के अधिकार ही क्यो न छीनने पडें मै हिचकूँगा नही।

आपकी सेवा मे अपने को उतना ही विनत बनाते हुए जितना कि अपने प्यार मे मैं महत्वाकाक्षी हूँ, मैं आपकी सब सुखाकाक्षाओ की पूर्ति की कामना करता हूँ।

आपका सबसे स्वामिभक्त सेवक
आर० इसक्स

फ्राँस का वह विश्व-प्रसिद्ध नाटककार एव उपन्यासकार, जो अपने ड्रामे व उपन्यास अलग-अलग रंग के कागजो पर ही लिख सकता था......

—अलैक्जैंडर ड्यूमा का पत्र मिलेनी के नाम

"......मेरे सन्देहों की निन्दा करने के बदले उन पर रहम खाओ......"

प्रिये,

मेरे स्वास्थ्य की फिक्र मत करो। दो साल पहले भी मुझे यही बीमारी हुई थी और तब मेरा रूमाल कठिनाई से ही सफेद रहा होगा। भला मैं मर कैसे सकता था, जब तुम मुझसे प्यार करती हो ?

आह, मेरी परी ! तब मैं नास्तिक और ईश्वर-निन्दक होता और भगवान के बारे मे तभी सोचता जब मैं उसको कोसना चाहता !

ईश्वर हमे अलग कर देगा ? और सदा के लिये ? आह, मेरी जिन्दगी मेरे सन्देहो की निन्दा करने के बदले उन पर रहम खाओ·· जितना दुख मैं उठा रहा हूँ उतना कोई नही उठा सकता।

जिन्दगी के अधिकतर सुखो को जीते जी ही भोग लो; मृतको की शान्त नीद मे डूबने से पहले-पहले। मृतको का बिस्तर इतना ठण्डा है कि वहा जिन्दगी या प्यार की एक चमक भी असम्भव है। एक दूसरे की

बाहों मे लिपट कर सोना उस घडी तक स्थगित मत करो ।

तुम कुछ भी कहो मैं नास्तिक नही हूँ । मैं वैसा कभी भी नही हो सकता क्योकि नास्तिक वह होता हैं जो किसी भी चीज मे विश्वास न करे; और मैं भगवान मे विश्वास न भी करूँ पर तुममे तो करता ही हूँ !

अरे हाँ ! मैं तुम्हें प्यार करता हूँ प्यार करता हूँ प्यार करता हूँ ! यह बुखार मेरे खून मे मिल गया है । मेरे प्यार का जोश और पागल-पन हमेशा की बनिस्वत आज सबसे ज्यादा है । डरो मत मैं तुम्हें प्यार करता हूँ...प्यार करत हूँ .और दुनिया मे तुम्हारे सिवाय किसी भी और को प्यार नही कर सकता । मिलेनी मेरी ! मैं तुम्हें प्यार करता हूँ । मेरा दिमाग उबल रहा है और मैं अपने को होश-हवास मे नही बल्कि पागलपन के नजदीक महसूस कर रहा हूँ । आखिर तुम मुझे समझने लगी हो । तुम जान गई हो कि प्यार करना क्या होता है, क्योकि तुम जान गई हो कि जलन क्या चीज है ! और देखो ये बेवकूफ जो अपने आप को धर्म का प्रतिनिधि मानते हैं शारीरिक यातनाओ का स्थान नरक को कहते है ! मेरे लिये तो असली नरक तुम्हे किसी और की बाहो मे देखना होगा. इसका विचार भी मुझे अपराध करने के लिये मजबूर करने को काफी है ।

—अलैक्ज़ैन्डर

.. जिसने प्यार और युद्ध दोनो मे मैदान जीते मगर युद्ध हारे !.. असम्भव शब्द जिसके कोष में नही था (?) वही प्यार के सन्मुख किस तरह घुटने टेक कर गिड़गिडाता है......

—नेपोलियन का पत्र, डिजायरी के नाम

प्रिये,

मै एविग्नान बहुत ही उदास मन लेकर पहुँचा हूँ, क्योंकि इतनी लम्बी देर तक मुझे तुमसे अलग रहना पडा है। यह यात्रा मुझे बहुत ही कठिन लगी है। मेरी प्यारी यूजैनी अक्सर अपने प्रिय की याद करती होगी और, जैसा कि उसने वादा किया है, वह उसे प्यार करती रहेगी।-बस यही आस मेरे दुख को कम कर सकती है और मेरी स्थिति को सह्य बना सकती है।

मुझे तुम्हारा कोई भी पत्र पेरिस पहुँचने से पहले नही मिल पायेगा। यह बात मुझे प्रेरित करेगी कि मै और तेज भागूँ और वहाँ पहुँच कर देखूँ कि तुम्हारे समाचार मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ड्यूरैन्स मे बाढ आ जाने के कारण मै इस स्थान पर जल्दी नही पहुँच सका।

मै तुम्हारी मा का काम भी नही कर सका । मामूली सा कारण यह हुआ कि मैं उस प्रार्थना-पत्र और उन सिफारिशी चिट्ठियो को भूल आने की बेवकूफी कर बैठा ।

कल सध्या को मैं लियन्स पहुँच जाऊँगा । मेरी प्यारी ! मेरी मधुर रानी, विदा ! मुझे भूलना मत और उसे प्यार करती रहना जो जीवन भर के लिए तुम्हारा है ।*

—नेपोलियन बोनापार्ट

*डिजायरी नेपोलियन की सर्व-प्रथम प्रेमिका थी जिसे नेपोलियन आयु भर नही भूल सका । जब वह वाटरलू के युद्ध पर गया तो अपने कागजात—यहाँ तक कि अपनी पत्नी लूसी के पत्र तक डिजायरी के पास रख गया । डिजायरी, जो कि एक मामूली घराने की लडकी थी, फ्रान्स की नही तो स्वीडन की रानी बन गई...

३३ :

जिसके विकासवाद के सिद्धान्त ने दुनिया भर के सोचने-समझने को आमूल-चूल परिवर्तित कर दिया, उन्नीसवी शताब्दी का वह महान ! क्रान्तिकारी वैज्ञानिक......

—डार्विन का पत्र एमा के नाम

"..... मैं एक दम भूल गया कि पशु और पक्षी किस प्रकार बनाये गये थे......"

मूर पार्क बुद्धवार
अप्रेल १८५८

प्रिये,

मौसम बहुत मजेदार है। कल तुम्हे पत्र लिखने के बाद मैं मैदान के कुछ आगे तक डेढ घन्टे तक घूमता और आनन्द लेता रहा। स्कॉटलैंड के देवदार के पेडो की ताजी फिर भी गहरी हरियाली; सफेद तनो वाले पुराने 'बिर्च' के पेडो के भूरे-भूरे फूल; बबूल के पेडो पर लटकी हरी-हरी झालरें बहुत ही प्यारा दृश्य उपस्थित कर रही थी। अन्त मे मै घास पर गहरी नीद मे सो गया और तब जागा जब मेरे चारो ओर चिटिया कोरस गा रही थी, गिलहरियाँ भाग-भाग कर पेडो पर चढ रही थी, और कुछ कठफोडने हस रही थी। यह ऐसा मनोरजक और ग्रामीण दृश्य था कि...मै एक दम भूल गया कि पशु और पक्षी किस प्रकार बनाये गये थे...

—डार्विन

क

विवाह के पश्चात्
पति अथवा पत्नी को लिखे गये
हर्ष तथा प्रसन्नता के पत्र

इगलैड का वह 'जॉन डूग्रन' जो गर्व से कहा करता था—'राजवश के अधिकाश कुमार-कुमारियो की नसो मे मेरा खून बहता है ! . जिसके लगडे होने के कारण इगलैड के कालिज के छोकरो ने लगडा कर चलना शुरू कर दिया ... और जिसने अपने प्राण एक दूसरे देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई में होम दिये

—बायरन का पत्र पत्नी इसाबेला के नाम†

"......*तुम्हारे कान तरह-तरह की अफ़वाहों से खूब भरे गये होंगे......*"

प्रिये,

मैं नही जानता कि क्या कहूँ ? जो भी कदम उठाता हूँ, वह प्रतीत होता है , तुम्हे मुझ से दूर ही ले जाता है और तुम्हारे व मेरे बीच की खाई को चौडा ही करता है। यदि यह खाई पाटी न जा सकी तो मैं इसकी गहराई मे खुद को मिटा डालूंगा।

मैंने तुम्हारे लिये दो पत्र लिखे है पर उनको भेजा नही है और यह पत्र भी लिख तो रहा हूँ पर पता नही इसको भी भेजूंगा या नही। तुम्हारा अपना व्यवहार एक पत्नी और मा के कर्त्तव्य और प्यार से कितना मेल खाता है यह प्रश्न सिर्फ तुम्हारे सोचने का है। इस इम्तिहान

---

†जिस समय बायरन ने यह पत्र लिखा इसाबेला लडकर अपने पिता के घर चली गई थी। दोनो का झगडा उग्र रूप धारण कर चुका था और तलाक की कार्यवाही तक चालू हो चुकी थी।

को चलते बहुत देर नही बीती है। कुल एक वर्ष ही तो बीता है। परेशानी, बदमगजी और दुर्भाग्य से भरा हुआ एक वर्ष ! और ये सब वस्तुये मेरे ही सिर पर मुख्यत गिरी है। इस बीच मे जो कुछ मैने सहा है उसकी याद बडी ही कष्ट-प्रद है। विशेप कष्ट-प्रद इसलिए कि मैंने तुम्हे भी अपने इस अकेलेपन का हिस्सेदार बनाया । मुझ पर क्या इलजाम लगाये गये हैं इस बारे मे मैने दो बार पूछ-ताछ की और दोनो ही बार तुम्हारे पिता और उनके परामर्शदाताओ ने मुझे कोई भी सूचना देने से इकार कर दिया। यह एक पखवाडा मैंने शशोपज तिरस्कार और गन्दी भापा में लगाये गये हर प्रकार के भद्दे, गले-सडे झूटे आरोपो के बीच गुजारे है और मुझ मे इन काल्पनिक उद्दण्ड इलजामो का जवाब देने की भी ताकत नही है क्योकि इन आरोपो का पूरा या कम विवरण देने से उन लोगो ने इकार कर दिया है एक मात्र जो कि वह सब दे सकते है। इस बीच मै आशा करता हूँ तुम्हारे कान तरह-तरह की अफवाहो से खूब भरे गये होगे

मैंने तुम्हारी वापसी चाही पर मुझे इंकार कर दिया गया । मैने जानना चाहा कि मुझ पर क्या अभियोग है, पर उसकी भी मनाही कर दी गई। क्या यही दया है, न्याय है ? खैर देखा जायगा। अच्छा ठीक है मेरी प्रियतमा ! इस सत्यानाशी आपसी झगड़े का कोई भी फल क्यो न हो, तुम मुझे वापस कर दी जाओ या मुझसे छीन ली जाओ, विपत्ति की इस गहनता मे, विना किसी आशा, स्वार्थ अथवा उद्देश्य के मै एक वार फिर वही कहता हूँ जो मैं कितनी ही वार वेकार दोहरा चुका हूँ, कि मै तुमसे प्यार करता हूँ! अच्छा या बुरा, पागल या समझदार, दीन या सन्तुष्ट जैसा भी मैं हूँ, तुम्हें प्यार करता हूँ और जब तक मेरी स्मरण-शक्ति और मेरी जिन्दगी कायम है, करता रहूँगा। जब मै हर सम्भव उत्तेजनाओ और भयानक हालतो के बीच भी तुम्हारे

लिये वे भाव रख सकता हूँ जो हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर सकते है और मस्तिष्क को प्रज्वलित कर सकते है, तो शायद तुम एक दिन जानो या कम से कम सोचो कि मै वह सब नही था जो तुम मुझे समझ बैठी !*

मै हूँ तुम्हारा
—बायरन

---

*श्रीमती इसाबेला की तलाक की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई और वे दोनो एक दूसरे से मुक्त घोषित कर दिये गये।

बायरन द्वारा कैरोलिन, गाईकोली व हैरियट द्वारा बायरन को लिखे गये तीन अन्य प्रेम-पत्र इसी खड के 'ख' भाग मे उद्धृत है।

विश्व का सब से बडा मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जिस को राजद्रोह के अपराध में मृत्यु-दड दे दिया गया पर ठीक समय पर वह दंड सात साल के साईबेरिया निष्काषन मे परिवर्तित कर दिया गया......

—दोस्तोवस्की का पत्र ऐना के नाम†

".. ..अगर कोई हमारे पत्र पढ़े तो क्या हो......"

प्रिये,

तुम लिखती हो मुझे 'प्यार करो।' पर क्या मैं तुम्हे प्यार नही करता ? असल बात यह है कि ऐसा शब्दो मे कहना मेरी प्रवृत्ति के खिलाफ है। तुमने स्वय ही यह अनुभव किया होगा पर अफसोस की बात है कि तुम जानती ही नही कि कोई बात महसूस की जाये तो कैसे, मै जो तुममे लगातार दाम्पत्य रस लेता जा रहा हूँ। (लगातार काफी नही है, क्योकि हर वर्ष के साथ इस रस का मिठास बढता ही जाता है।) इस बात ने तुम्हे काफी कुछ सूचित किया होगा

..

†यह पत्र दोस्तावस्की ने अपनी मृत्यु से एक वर्ष पहले लगभग साठ वर्ष की आयु मे अपनी पैंतीस वर्षीया पत्नी ऐना को लिखा था।

लेकिन या तो तुम कुछ समझना ही नही चाहती या अनुभवहीनता के कारण तुम समझ ही नही पाती । मुझे तुम किसी एक ऐसे विवाह-सम्बन्ध का पता बता दो जिसमे हमारे इस बारह वर्ष पुराने सम्वन्ध जैसा पक्का लगाव मौजूद हो । जहा तक मेरे आनन्द और मेरी प्रशसा का सम्बन्ध है दोनो ही अगाध है । तुम कहोगी यह केवल एक पक्ष है और वह भी सब से घटिया । नही यह घटिया नही है । असल मे शेष सब कुछ उसी पर निर्भर करता है । लेकिन यही सत्य तो तुम पकडना नही चाहती । इस लम्बे भाषण को समाप्त करते हुए मै फिर तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि मै तुम्हारे नन्हे से पैर की हर उगली का बार-बार चुम्बन लेने को तडपता हूँ । और तुम देखोगी ऐसा मै करके रहूँगा, । तुम लिखती हो अगर कोई हमारे पत्र पढे तो क्या हो ? ठीक है, लेकिन उनको पढने दो , उन्हे जलन महसूस करने दो ।

—दोस्तोवस्की

गाँधी जी जिन्हे अपना 'पाँचवाँ पुत्र मानते थे... भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के भामाशाह......

—जमनालाल बजाज का पत्र जानकी देवी के नाम†

"......कम से कम मेरे पीछे तो तुम आनन्द से रहो......"

प्रिय जानकी,

तुम्हे दुखी देखकर दुखी होना स्वाभाविक है। मैंने तुमसे कई वार कहा है कि तुम हसते-खेलते आनन्द से रहो, तो मुझे भी बहुत मदद होगी कम से कम मेरे पीछे तो तुम आनन्द से रहो. इतनी तसल्ली ही मुझे रहे तो फिर यात्रा और प्रवास मे तो मुझे चिन्ता रखने का कारण न रहे। तुम्हे मैंने जान या अनजान मे दुख पहुँचाया है, परन्तु उसका क्या उपाय ? तुम्हें यदि विश्वास हो तो मै लिखता हूँ कि मेरा तुम पर प्रेम-श्रद्धा-भक्ति तीनो का मिश्रण है। मै

---

†श्री जमनालाल का अपनी पत्नी जानकी देवी से स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेने के कारण काफी मन-मुटाव चलता था। उसी पार्श्वभूमि मे यह पत्र लिखा गया है।

अपने जीवन मे उचित फेर-फार करने का विचार कर रहा हूँ। ईश्वर की मदद व तुम्हारा पूरा सहयोग रहा तो भावी जीवन सुख से बीत सकेगा, अन्यथा जैसा भी समय आवे उसी में सुख समाधान मान कर ही चलना होगा। मैं यह पत्र तो इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम्हे थोडी शान्ति मिले।

—जमना लाल

चालू रेलवे
२५-४-३७

जिसने नैपोलियन को उसकी मुसीबत के दिनों में छोड़ दिया......

—महारानी लूसी का पत्र नैपोलियन के नाम†

"....मुझमें हिम्मत की कमी नहीं है ....."

चैटेड्डन १ अप्रैल, १८१४
प्रात. १० बजे

मेरे प्रियतम,

३१ तारीख का तुम्हारा सुखद पत्र मुझे सुबह ३ बजे मिला। उसी के लिए धन्यवाद देने को मैं यह छोटे से छोटा पत्र लिख रही हूँ। तुम्हारी उन कुछ पंक्तियो ने मेरा बडा ही हित किया। मैं सिर्फ यह जानना चाहती थी कि तुम अच्छे हो और मेरे

---

†नैपोलियन सधि की शर्तो के विपरीत एल्वा के टापू से भागकर फ्रान्स जा पहुँचा। वाटरलू की लडाई से कुछ समय पूर्व लूसी ने यह पत्र उसे लिखा। लूसी का पिता नैपोलियन के विरुद्ध लड रहा था। अपनी पुत्री का ध्यान नैपोलियन से हटाने के लिए उसने उसका परिचय एक अन्य जनरल काऊन्ट निटपर्ग से करा दिया था।

नजदीक ही हो। मै अब भी बहुत विकल हूँ। यह सोचकर कि तुम वहाँ अकेले हो और इतने थोडे आदमी तुम्हारे पास है मेरे दिल मे एक हूक सी उठती है और मै डरती हूँ कि कही तुम्हे कुछ हो न जाये। ऐसा विचार मात्र भी मुझे एकदम घबरा डालता है। जितनी बार भी सभव हो सके मुझे पत्र लिखो। मै निरन्तर बेचैन रहती हूँ और जब मै दुखी होती हूँ तो मुझे यह जानने की और भी इच्छा होती है कि तुम मुझे प्यार करते हो और मुझे भूल नही गये हो।

बादशाह लिखता है कि तुमने मुझे कहलाया है कि मै या तो ओरलियन्स की तरफ बढूँ या ब्लायस की तरफ। मैं ब्लायस ही जाऊँगी क्योकि मेरे विचार मे मै वहाँ अधिक सुरक्षित रह सकूँगी। शत्रु एक बार तो ओरलियन्स के बहुत समीप पहुँच ही चुका है। मैं आज की रात वेन्डन मे गुजारूँगी और कल की रात ब्लायस मे। यह जगह कुल सोलह मील है, पर मैं तुम्हारे घोडो के साथ सफर कर रही हूँ और हम एक दिन मे दस लीग से अधिक बढ ही नही पाते।

पिछली रात हमने सचमुच एक भयानक जगह गुज़ारी। यह एक बहुत ही गन्दी सराय थी पर तुम्हारे बेटे को एक अच्छा कमरा मिल गया और बस उसी की मुझे चिन्ता थी। वह एक दम ठीक है और इस समय खिलौनो के लिये रो रहा है। भगवान जाने कब मैं उसके लिये कुछ खिलौने प्राप्त कर सकूँगी।

मै बिल्कुल ठीक तो नही रहती, पर तुम जानते ही हो...मुझ मे हिम्मत की कमी नही है इसलिये फिक्र न करना। मुझ मे वह सब करने की शक्ति है जो मुझे अपने बचाव के लिए करना पड सकता है। भगवान करे तुम मुझे अपनी और शान्ति-स्थापना की

खबर जल्दी ही दो। इस दुनिया मे मुझे और कुछ भी नही चाहिए। जब तक जान मे जान है तुम मुझमे विश्वास बनाये रखो।*

तुम्हारी वफादार और प्यारी
लूसी

---

*नैपोलियन के जोसफीन व लूसी के नाम लिखे हुये दो पत्र—'युद्ध के समय लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'क' भाग मे उद्धृत हैं। नैपोलियन द्वारा डिजायरी को लिखा गया एक अन्य पत्र 'विवाह से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र' खड के 'घ' भाग मे उद्धृत है।

विश्व-प्रसिद्ध रोमान्टिक अंग्रेजी कवि, जो एक सप्ताह में आधा गैलन अफीम का टिंचर पी जाता था जिसके लिये जो बाद मे बेहद पछताया......

—कॉलरिज का पत्र सेराह के नाम†

"......*तुम्हें प्रत्यक्ष देखना मैं तभी बन्द करता हूँ, जब आंसू मेरी आँखों से ढुलक पड़ते हैं .*"

रेट्‌जबर्ग

प्रिये,

नवम्बर २८, १७९८

एक और, एक और, और फिर एक और डाक का दिन बीत गया और अब भी चेस्टर यही कह कर मेरा अभिवादन करता है,—'इंग्लैंड से कोई पत्र नहीं'—और उसकी यह सूचना मुझे उस अशुभ घण्टा-ध्वनि के समान लगती है जो सप्ताह मे चार बार बजती है। मेरी प्यारी! ऐसा क्यो है? तुम मुझे पत्र क्यो नही लिखती? क्या तुम परदेस मे मुझे इस प्रकार बेसहारा बनाकर मेरे प्रवास-काल को कम करना चाहती हो? या शायद तुम सोचती हो कि तुम्हारा पत्र पाकर मैं अपनी पढाई छोड दूंगा और तुम्हारे व प्यारे बच्चो के ध्यान मे व्यर्थ ही खो

†कॉलरिज कुछ समय के लिए जर्मन भाषा सीखने जर्मनी गया था। वही से यह पत्र उसने अपनी पत्नी को लिखा।

जाऊँगा। अजी हाँ ! मुझे सचमुच ही तुम्हारे ध्यान मे लवलीन रहना चाहिये। घन्टो-घन्टो तुम्हारे और प्यारे 'पूल' के ध्यान मे और उस शिशु के ध्यान मे जो अभी तुम्हारे स्तन चूसता है, और बहुत-बहुत प्यारे हार्टली के ध्यान मे। तुम सदा मेरे साथ रहती हो। तुम उस हवा मे समाई हुई हो जिसकी साँस मै लेता हूँ...तुम्हे प्रत्यक्ष देखना मैं तभी बन्द करता हूँ जब आँसू मेरी आखो से ढुलक पडते है...और तब यह सूना, अधेरा कमरा फिर मेरे सामने आ जाता है। ओह ! कितने रुदनमय और आनन्दमय मन से मैं अपने यहाँ के जीवन की वास्तविकताओ तथा अपने काम की ओर लौटता हूँ। लेकिन मै वर्णन नही कर सकता कि हर डाक वाले दिन कितने दुख-पूर्ण विचार मेरे मन मे आते रहते है और कितना बोझा और कष्ट मेरा हृदय अनुभव करता है। शेष सारे दिन मै बौखलाहट भरी कुपित भावनाओ की उत्सुक कल्पनाएँ करने के सिवा और किसी काम का नही रहता। मुझे विश्वास हैं कि तुमने एक से अधिक बार मुझे लिखा होगा, पर मैं यहाँ अधेरे मे ठोकरे खा रहा हूँ और निरर्थक अनुमान लगा रहा हूँ, कि कौन सा कारण ऐसा हुआ है कि मुझे तुम्हारा पत्र नही मिल सका।

—एस० टी० कॉलरिज

: ३९ .

—वैज्ञानिक सर हम्फ्री डेवी के नाम जेन का पत्र

" मैं जितनी भी तेजी से हो सकेगा सफर करूंगी ....."

प्रिये,

मेरे प्यारे सर हम्फ्री मुझे तुम्हारा पहली मार्च का पत्र मिला जो तुम्हारे हस्ताक्षर से युक्त है और जिसमे प्यार की मूल्यवान कामना व्यक्त की गई है। मैं कल चल रही हूँ, क्योकि डाक्टर बेविंगटन और डाक्टर क्लार्क ने आज तक के लिये मुझे रोक रखा था मै जितनी भी तेजी से हो सकेगा सफर करूँगी जिससे मेरा पहुँचना बिल्कुल ही बेकार न हो जाये। मेरा अब भी विश्वास है कि मैं तुम्हारा आलिगन कर सकूँगी, क्योकि इतनी स्पष्ट और सुन्दर अभिव्यक्ति और ऐसे भाव एक जर्जर हृदय मे कैसे बस सकते हैं, चाहे शरीर कितना भी दीन व अशक्त क्यो न हो गया हो? मै तुम्हारी इच्छाओ को चरम सीमा तक पवित्र मानूंगी और सदा अत्यन्त तत्परता से तुम्हारे आदेशो के शब्दो से अधिक उनकी भावनाओ पर चलने के लिये तैयार रहूँगी। भगवान तुम्हे अभी बनाये रखे! तुम जान लो कि तुम्हारे पत्र मे व्यक्त

उच्च तथा उदार भावो ने मेरे उस प्यार व विश्वास को ओर भी गहरा बना दिया है जो कि मुझमे तुम्हारे लिए रहा है। विश्वास मानो तुम्हारे प्यार के प्रयास से निकले शब्द मेरे लिये जीवन भर ढाल का काम करते रहेंगे। मैं और अधिक नही कह सकती। तुम्हारा यश अमर है। तुम्हारी स्मृति एक महिमा की चीज है। तुम्हारा जीवन अब भी आशा से शून्य नही है।*

तुम्हारी वफादार व प्यारी पत्नी
—जेन डेवी

*जेन को उसका प्यारा पति हम्फ्री मिल तो गया, पर वह उसे बचा नहीं सकी!

: ४० :

एक आँख से हसाने और दूसरी से रुलाने वालाविश्व का अपने जैसा अकेला उपन्यासकार जो गरीबी मे जन्मा और उम्र भर गरीबों के लिये लिखता रहा......

—चार्ल्स डिकन्स का पत्र केट के नाम

"... ...सब बहुत उत्साह में हैं......"

ब्रोड्स टेयर्स, मगलवार
३० दिसम्र १८५०

मेरी प्रियतमा केट,

जॉर्जी की कुछ पक्तियाँ साथ मे नत्थी कर रहा हूँ। मेरा विचार मगलवार को किसी समय घर जाने का है। ठीक-ठीक कब, यह मै नही बता सकता। यह इस बात पर निर्भर करता है कि कल मै कितना काम निपटाता हूँ। कल चार्ल्स, नाईट, ह्वाइट, फोर्स्टर, चार्ली और मै रिचबोरा के किले तक पैदल गये और वापिस आये। नाईट ने हमारे साथ ही खाना खाया और ह्वाइट्स, बिकनेल्स और श्रीमती गिब्सन सन्ध्या को आये और सबने ताश खेला।

लिखने को कोई नई बात तो है नही। लो मै तुम्हे एक घटना सुनाता हूँ। इतवार की शाम को बच्चे, जॉर्जी और मै बाग मे घूम रहे

थे। मैंने सिडनी से कहा—'क्या तुम रेल तक जाकर देखोगे कि फोर्स्टर आ रहा है या नही ?'—उसने बड़े उत्साह से उत्तर दिया—'हाँ', और मैंने बाग का फाटक खोल दिया। वह अकेला इतनी तेजी से लपका जितनी तेजी से भी वह लपक सकता था। पीछा करने पर कोई उसे पकड नही सका। हम उसे लॉन हाउस आर्चवे मे से गुज़रते समय ही पकड पाये और तब भी वह अपनी पूरी रफ्तार से भाग रहा था। उसे एक विजेता के रूप मे वापिस लाया गया। वापिस आकर भी उसने बार-बार दौड पडने का उपक्रम किया और चाहा कि उसे पकडा जाये। इसे उसने एक खेल ही बना लिया। अन्त मे वह और ऐली भाग ही निकले। उनके पीछे भागने के बदले हम बाग़ मे आ गये और जमीन पर लेट गये। फौरन ही हमने उन्हे वापिस आते और यह कहते हुये सुना,—'अरे यह फाटक बन्द क्यो है, और क्या वे लोग जा चुके ?' ऐली तो निराश होकर वापिस जाने लगा, पर सिडनी ने 'दरवाजा खोलो'—यह चीखते हुए एक बडा सा ढेला बाग मे हमारी ओर फेंका जिससे कि बाग के कारिन्दो को चौकाया जा सके। मैं उसके इस काम को उसकी चारित्रिक मजबूती का एक सुन्दर नमूना मानता हूँ, जिससे उसकी तुरन्त सक्रियता का पता लगता है। वह तो पत्थरो की वर्षा ही हम पर कर देता और बहुत मुमकिन था, मोदी-खाने की खिडकी ही तोड देता यदि तब ही हम उसे अन्दर न ले लेते।

.. सब बहुत उत्साह मे है . और अपना प्यार तुम्हें भेजते हैं। शुक्रवार को तुमसे मिलने की आशा मे सब बहुत ही जोश मे हैं। यदि मैं जाना चाहूँ तो ये मुझे तुम्हे लेने अभी भेज दे।

हमारी रेल शुक्रवार को साढे बारह बजे पहुँचेगी। मैंने जॉर्जी से तीतरो के बारे मे कह दिया है और उम्मीद है कि कुछ मिल ही जायेंगे।

सर्वाधिक प्यार सहित

—डिकन्स

: ४१

बगाल विभाजन के समय का सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी जो बाद मे राजनीति से 'सन्यास' लेकर धर्म की शरण में चला गया.....

—श्री अरविन्द का पत्र मृणालिनी के नाम†

"......अभी तक मैंने रुपये मे दो आने ही भगवान को लौटाये हैं......"

प्रिये,

याद रखो तुम्हारा विवाह एक अजीब व असाधारण आदमी से हुआ है। उसे पागल भी कहा जा सकता है। लेकिन जब एक 'पागल' आदमी अपने मनचाहे लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, तो दुनिया उसे महान् कह कर पुकारती है। मैंने अभी तक अपना लक्ष्य प्राप्त नही किया है। अभी तक मैंने सजीदगी से अपने को नियमपूर्वक काम मे लगाया भी नही है, लेकिन वह दिन दूर नही जब मै वैसा करूँगा। क्या तब तुम एक सच्ची 'सहधर्मिनी' और अपने पति की 'शक्ति' बन कर मेरी बगल मे खडी होओगी?

---

†अरविन्द ने जिन दिनो यह पत्र लिखा वे पारिवारिक जीवन से हट कर राष्ट्रीय कार्यों मे भाग ले रहे थे। उनके केवल तीन-चार पत्र मिलते है, जो पुलिस उनके घर छापा मार कर उठा ले गई थी। बाद मे न्यायालय के कागजो मे से ये पत्र नकल किए गये। यह पत्र मूल रूप मे बगाली भाषा मे लिखा गया था।

तीन शक्तिशाली धारणाये जिन्हे दुनिया पागलपन के विचार कहेगी, मेरे हृदय मे जड जमाते जा रहे हैं। पहला यह, कि जो कुछ भी मेरे पास है वह असल मे भगवान की धरोहर है, और अपनी कमाई मे से बहुत थोडा खर्च करने का ही मै हकदार हूँ। बाकी धर्म-कार्यों मे लगना चाहिए .. अभी तक मैने रुपये मे दो आने ही भगवान को लौटाये है . इतना अधूरा हिसाब मैंने उसको दिया है ! तुम्हे या बहन सरोजनी को रुपया देना बहुत आसान है, लेकिन मेरा कर्त्तव्य तीस करोड भारतीयो को भाई-बहन समझना है। इसी शर्त पर भगवान ने मुझे रुपया दिया था। मेरा कर्त्तव्य है, कि देश के लोगो के कष्ट दूर करने के लिए सब कुछ करूँ।

दूसरे, मै भगवान के दर्शन करना चाहता हूँ !, रास्ता कितना भी लम्बा क्यो न हो और यात्रा कितनी भी कठिन क्यो न हो। मै उन्हे आमने-सामने देखूंगा। और भगवान है—और वह है—तो उससे साक्षात्कार करने का तथा उसे अनुभव करने का कोई न कोई रास्ता जरूर होगा। हिन्दू शास्त्रो का कहना है कि भगवान को देखा जा सकता है। वे इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कुछ विधियाँ निश्चित करते है। अपने सीमित व्यक्तिगत अनुभव से मै तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि हिन्दू शास्त्रो की बात मे सच्चाई है। तुम अगर मेरे साथ न भी चल सको, पर मेरे पीछे-पीछे तो ईश्वर-प्राप्ति की यात्रा पर चल सकोगी ?

तीसरे, मै इस देश को सिर्फ एक भौगोलिक इकाई नही मानता। एक इकाई जिस पर पहाड़ियो के धब्बे है, नदियो की लकीरें हैं और मैदानो के फैलाव है, बल्कि इसे माँ मानता हूँ ! मा के इस भौतिक शरीर के पीछे एक आत्मिक सच्चाई है। एक राक्षस मा के जीवन-रक्त को चूस रहा है। मै जानता हूँ, उसे राक्षस के चगुल से बचाने की ताकत मुझ मे है, और वह मै करूंगा, लेकिन क्षत्रिय तेज के द्वारा

नही, बल्कि अपने ब्रह्म तेज के द्वारा इस महाव्रत को मैं पूरा करके दिखलाऊंगा। यह एक सनक मात्र नही है। मेरी हड्डियो मे ईश्वर ने यह सब भर कर मुझे भेजा है। इसका बीज चौदह वर्ष की आयु मे ही फूटना आरम्भ हो गया था। अट्ठारह वर्ष की आयु तक यह जडे जमा चुका था। क्या तुम मेरी अपनी पत्नी मेरे साथ खडी होओगी और मुझे उत्साह व शक्ति दोगी? यद्यपि देखने मे तुम एक कमजोर औरत लगती हो पर तुम भी पूर्ण-आत्म-समर्पण की भावना से ईश्वर मे विश्वास रख कर काफी साहस कर सकती हो, और बहुत कुछ प्राप्त कर सकती हो। हम दोनो इकट्ठे मिल कर ईश्वर की इच्छा पूरी कर सकते है

— अरविन्द

उर्दू के प्रसिद्धतम शायर मजाज की बहिन और जाँ निसार अख्तर की पत्नी......

"—सफ़िया का पत्र जां निसार अख्तर क नाम[1]

"......*तुमने तो पूरी तन्स्वाह ही मुझे भेज दी......*"

भोपाल,
१५ जनवरी, १९५१

अख्तर मेरे,

पिछले हफ्ते तुम्हारे तीन खत मिले, और शनीचर को मनीआर्डर भी वसूल हुआ तुमने तो पूरी तन्ख्वाह ही मुझे भेज दी·· तुम्हे शायद तंगी मे बसर करने मे मजा आने लगा है । यह तो कोई बात न हुई दोस्त ! घर से दूर रह कर वैसे ही कौन सी आसाइश तुम्हारे हिस्से की रह जाती है जो महनत करके जेब भी खाली रहे ? खैर ! मेरे पास वो पैसे भी, जो तुमने बम्बई से रवानगी के वक्त दिये थे, जमा हैं, और ये भी । अब मैं तुमसे अलग रह कर पैसे की काफी हिफाजत करना सीख

---

[1]सफिया के द्वारा लिखे गये खत बनावट से एक दम रहित हैं । अख्तर ने सफिया की मौत के बाद उन्हे स्वय प्रकाशित किया ।

गयी हूँ।

परसो कॉलेज मे मुशायरा था। अख्तर सईद और ताज भी आए थे। मुलाकात हुई थी। ताज ने घर पर आने को भी कहा था। शायद बीस की वापिसी का इरादा रखते है। बन पड़ा तो कुछ उनकी मार्फत भेज ही दूँगी।

कल शहाब की मा, उनकी बीवी और नौशा साहब की बीवी आ गई थी। आज तन्हाई है। अदीस को नज़ला हो रहा है। उसकी तीमारदारी मे लगी हूँ। इसने भी तुमको खत लिखवाया है।

अच्छा अख्तर ! अब कब तुम्हारे मुस्कराहट की दमक मेरे चेहरे पर आ सकेगी। बाज़ लम्हो मे तो अपनी बाहे तुम्हारे गिर्द हल्का करके तुमसे इस तरह चिमट जाने की ख्वाहिश होती है कि तुम चाहो भी तो मुझे छुटा न सको। तुम्हारी एक निगाह मेरी जिन्दगी मे उजाला कर देती है। सोचो तो कितनी तारीक और बदहाल थी मेरी ज़िन्दगी जब तुमने उसे सम्हाला। कितनी बजर और कैसी बेमानी और तल्ख थी मेरी जिन्दगी जब तुम मेरी दुनिया मे दाखिल हुये। और मुझे उन गुजरे हुए दिनो पर गम होता है, जो हम दोनो ने अलीगढ मे एक दूसरे की शिरकत से महरूम रहकर गुजार दिये। अख्तर ! मुझे आईन्दा की बाते मालूम हो सकती, तो सच जानो मैं तुम्हे उसी जमाने मे बहुत चाहती। कोई कशिश तो शुरु से ही तुम्हारी जानिब खीचती थी और कोई घुलावट खुद-ब-खुद मेरे दिल मे पैदा थी, मगर बताने वाला कौन था, कि यह सब क्यो ?

आओ ! मै तुम्हारे सीने पर सिर रख कर दुनिया को मगरूर नजरो से देख सकूंगी।

तुम्हारी अपनी
—सफ़िया

—विश्व-प्रसिद्ध कवि रेनर मेरिया रिल्के का पत्र क्लेयरा के नाम

" ....कुछ बातों की तरफ हमें बिल्कुल भी ध्यान नहीं देना चाहिये......"

कैपरी
२२-२-१६०७

प्रिये,

मैं इन थोडे से शब्दो मे तुम्हारे पाँचवे पत्र के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं तुम्हारे रज को अच्छी तरह समझ सकता हूँ और स्वय उसे अनुभव कर सकता हूँ, क्योकि मैं उससे बहुत अच्छी तरह परिचित हूँ। इस रज का कारण ढूँढ निकालना असम्भव है। यह और कुछ नही, हम लोगो के दिलो मे उपस्थित एक ऐसी दर्दीली जगह है जो जब दर्द करती है तो पता ही नही चलता कि दर्द हो कहा रहा है ? इसलिए हम समझ नही पाते कि अपने इस खामोश पर भरे दिल को हम कैसे समझें और कैसे उसका इलाज करे ? मैं यह सब जानता हूँ। इस रज के समान ही एक खुशी की अनुभूति भी है। काश ! किसी तरह हम इन दोनो

से दूर जा सकते । मैं पीछे इसी के बारे मे सोचता रहा। जब कुछ दिन लगातार मैं अनाकापरी की सुनसान चढाइयो पर चढता चला गया तो ऊपर पहुँच कर मैं बहुत खुश हो उठा, और मेरी आत्मा उस खुशी के कारण थकन भी महसूस करने लगी। यह खुशी, वह रज; समय—समय पर महसूस होने वाली इन दोनो चीजो से हम समान रूप से दूर रहे। दोनो मे से हमारी अपनी कोई भी नही है। और कभी-कभी हम कही खडे होते हैं, और बाहर की हवा या प्रकाश, या पक्षी के सगीत का एक स्वर हमे कही ले उडता है, और हमसे अपनी मर्जी करा लेता है। यह सब देखना-सुनना और ग्रहण करना तो ठीक है, इसके प्रति जड होना भी उचित नही, लेकिन बिना इसमे पूरी तरह डूबे हुए ही हमको इसके सब स्तरो का अधिक से अधिक गहराई से अनुभव करना चाहिए। बसन्त के उन्माद से भरे एक अप्रेल के दिन मैंने रोडिन से कहा था "कैसे यह चीज तुम्हारे खण्ड-खण्ड कर डालती है, कैसे तुम्हे अपनी सारी शक्ति बटोर कर काम मे लगना पडता है, और जब तक चूर-चूर न हो जाओ सघर्ष करना पडता है ? क्या तुम भी ऐसा ही महसूस नही करते ?" और उसने, जो निश्चय ही बसत के असर को जानता-समझता था, मेरी ओर एक तेज नजर फेक कर कहा था, "आह इसकी तरफ ध्यान मत दो।" यही हमे करना पडता है कुछ बातो की तरफ हमे बिल्कुल भी ध्यान नही देना चाहिए हमे अपने अन्त करण की इन दर्दीली जगहो के प्रति एकाग्र और सचेत रहना चाहिए, क्योकि अपने पूरे व्यक्तित्व से भी हम इस दर्द को समझ नही सकते। अपनी पूरी जीवनी शक्ति से हर चीज को अनुभव करने पर भी बहुत कुछ बाकी रह जाता है, और वही सब से महत्त्वपूर्ण है।

—रिल्के

द्वितीय विश्व-युद्ध का अमरीकी राष्ट्रपति, जिसने फ़ासिस्ट हिटलर का मुकाबला करने के लिए, अनेकानेक विरोधों के बावजूद कम्यूनिस्ट रूस के साथ गठबन्धन करने की दूरदर्शिता दिखलाई . ...

—राष्ट्रपति रूजवेल्ट का पत्र वैन्स के नाम†

वाशिंगटन
सोमवार, १६ जुलाई १९१७

प्रियतमा वैन्स,

तुम्हारे जाने के बाद दिन बहुत ही खराब गुजरा। मैं घर पर ही रहा। खासता रहा, और ऊघता रहा। मैंने कुछ पढने की कोशिश की पर नाकामयाब रहा। यहाँ तक कि मिसमिल्किन (एक खेल) भी मैं न खेल सका। लेकिन आज लगभग मे एकदम ठीक हूँ। मैंने दफ्तर मे काम किया। दोपहर का खाना मैंने ब्लायर दम्पति के साथ खाया

†रूजवेल्ट के अधिकतर पत्र शुष्क एव घटनाओ के विवरण मात्र है। इन मे से उपरोक्त पत्र अपेक्षतया सरस है।

ग्रौर रात का भोजन मैं वारेन और इरीन के साथ, पर फिर भी अकेला, करूँगा। सचमुच ही इस घर मे तुम्हारे बिना अकेले रहना मैं बरदाश्त नही कर सकता, और तुम ऐसी बावली लडकी हो कि सोचती हो, या शायद सोचने का बहाना भर करती हो, कि पूरी गर्मी तुम्हारा यहाँ रहना मै नही चाहता। तुम ऐसा इसलिए सोचती हो क्योकि तुम जानती हो कि मै वैसा चाहता हूँ। ईमानदारी की बात तो यह है कि तुम्हे छ सप्ताह कैम्पूस मे रहना ही चाहिए, जैसा कि मुझे भी रहना चाहिए। अन्तर यही है कि तुम रह सकती हो, और म नही रह सकता। मै जानता हूँ कि यहाँ की पूरी गर्मियाँ लोगो के दिल और दिमाग पर कैसा प्रभाव छोड जाती है। इन गर्मियो के अन्त मे मै एक बोखलाये हुए भालू की तरह होऊगा जब तक कि मुझे थोडी ठडी जगह मौसम-बदल न मिले। असल मे तुम जानती ही हो मै आजकल बहुत ही असहनशील और चिडचिडा हो गया हूँ, लेकिन मै अपने को सुधारने का प्रयत्न करूँगा।

दिन भर ही बहुत गर्मी और सीलन रही है, और इस समय सध्या के छ बजे प्रतिदिन की तरह गडगडाहट के साथ तूफान आया है।

मुझे आशा है कि तुम बोस्टन मे ठीक रहोगी और टूरेन का वह व्यक्ति तुम्हे वहाँ मिलेगा व उसके साथ तुम टिकटो और चैक आदि का मामला तय कर लोगी। इस मामले का मुझे बेहद दुख है और मैं उसके लिये सदा ही स्वय को कोसता रहूँगा।

नन्हे बच्चे को मेरी तरफ से चूमो, और तुम्हे भी मेरे कितने ही चुम्बन. *

तुम्हारा प्यारा

—रूजवेल्ट

*यह पत्र प्रथम विश्व-युद्ध के दिनो मे लिखा गया। उन दिनो रूजवेल्ट अमरीका के समुद्री सेना के सचिव थे।

—कवयित्री बैरट का पत्र कवि ब्राऊनिंग के नाम†

"... ...अब हमें कोई अलग नहीं कर सकता... .."

शनिवार, १४-९-१८४८

मेरे अपने प्यारे,

अगर कभी तुम्हे ऐसी बातो की शिकायत करनी पडी जो मेरे बस की है और की जा सकनी सम्भव हैं, तो मैं अपने आप को इतना नीच और अयोग्य समझूँगी कि अन्य सब स्त्रियो को अधिकार होगा कि वे मुझे अपने पैरो के नीचे कुचल डालें ! तुमने जो कल लिखा कि तुम मेरे प्रति कुछ और अच्छा बनना चाहते हो यह उसका जवाब है। इससे अधिक अच्छा और क्या हो सकता है, कि तुम मुझे जमीन से उठाकर एक नई जिन्दगी और रोशनी मे ले

†यह पत्र बैरट ने अपने विवाह के अगले ही रोज़ लिखा था। इस विवाह से उसके पिता कतई सहमत नहीं थे, और बैरट व ब्राऊनिंग को यह विवाह अत्यन्त गुप्त रूप से करना पडा था।

आये हो। मै तुम्हारी हूँ; उपहार की दृष्टि से उतनी नही जितनी कि तुम्हारे अधिकार की दृष्टि से (और मेरे प्यारे! उपहार की दृष्टि से भी!) क्योकि जिसको तुमने बचाया है और नया जीवन दिया है वह निश्चय ही तुम्हारी है। जो कुछ भी मै हूँ उसका श्रेय तुम्हे है। अब अगर और आगे भी मै कोई आनन्द प्राप्त करती हूँ तो वह भी तुम्हारे माध्यम से ही प्राप्त करूँगी। तुम इसे भली प्रकार जानते हो। मै भी आरम्भ से ही जानती थी, कि मुझमे ऐसी ताकत नही जो तुम्हारा विरोध कर सके और अगर कोई ताकत है भी तो वह तुम्हारे लिए है।

प्रियतम! कल सुबह के भावातिरेक व मानसिक हलचल मे भी मेरे दिल मे एक खयाल के लिए जगह थी। वह केवल विचार था अनुभूति नही, और वह यह कि उन अनेकानेक स्त्रियो मे जो वहाँ इसी उद्देश्य से खडी थी, शायद उनमे से एक के पास भी, और शायद जब से यह चर्च-भवन बना है तब से लेकर एक स्त्री के पास भी, उस पुरुष के प्रति जिससे कि उसने विवाह किया, पूर्ण विश्वास व प्रेम धारण करने के उतने मजबूत कारण नही थे जितने कि मेरे पास है! सच—एक के पास भी नही! और तब मैने सोचा, और महसूस भी किया, कि उनके लिए, इन स्त्रियो के लिए जो कम खुश रही, यह उचित ही था कि वे अपने सबसे नजदीकी रिश्तेदारो, माता-पिता अथवा बहन की सहानुभुति, प्यार, सहारा और उपस्थिति प्राप्त करें जो मै न कर सकी, जिसकी मुझे उनसे कम जरूरत थी क्योकि मै उनसे अधिक खुश थी।

आज सुबह मेरे सब भाई यही थे। हँस रहे थे, बाते कर रहे थे और इस नगर को छोडने के मामले पर बहस कर रहे थे। कमरे मे हमारी दो-तीन स्त्री मित्र भी थी। यद्यपि शोर के मारे मेरा सिर दो टूक हुआ जा रहा था, (दोनो कन्धो की तरफ एक-एक), पर मै चीख पडने का साहस नही कर सकी। उनके मनो मे शक पैदा

करने का ऐसा डर मेरे दिल मे समाया हुआ था । ट्रेपी भी उनमे से एक थी । मैने उससे वादा किया कि मैं कल उससे मिलने आऊँगी और यदि वह मक्खन-रोटी खाने को देगी तो उसके ड्राँइग-रूम मे ही भोजन भी करूँगी । यह सब एक बुखार की तरह था और तभी दूर घन्टिया बजने लगी । किसी ने पूछा, 'ये कैसी घन्टिया है ?' मेरी कुर्सी के पीछे खडी हेनरिटे ने कहा, 'मेरिल बोन के गिर्जाघर की घन्टिया है ।'

· और अब जब कि उस शोर से भाग कर, और यहाँ चुपचाप बैठ कर यह पत्र मैं तुम्हे लिख रही थी तो जानते हो कौन आया ? मिस्टर केनियन !

वह अपने चश्मे के पीछे से ऐसे देखता हुआ आया जैसे उसकी आँखें पुतलियो से बाहर निकल पडेगी और उसके सबसे पहले शब्द थे · "तुम ब्राउनिंग से कब मिली !" और मै सोचती हूँ कि मैं आगे से समयानुकूल सूत्र का बहाना अवश्य किया करूँगी, क्योकि यद्यपि निश्चय ही मेरा रग उडा और उसने यह बात देखी भी, फिर भी मैंने सतोषजनक रूप से उसे टालते हुए उत्तर दिया—"शुक्रवार को वे यहीं थे ।" और मैं सीधे एक अन्य विषय पर बाते करने लगी, और वह मेरे चेहरे को घूरता रह गया। प्रियतम ! उसने कुछ भाँपा जरूर पर सब कुछ नही । हम बाते करते रहे, करते रहे । उसने बताया कि 'सरटोरियस का मृग-शावक' जिसकी आलोचना करने से मैंने कल इकार कर दिया था लैंडर की है और यह कि बुधवार को फिर वह नगर से बाहर जायेगा और उससे पहले एक बार मुझसे मिलेगा। जाने के लिए उठने से पूर्व उसने दूसरी बार तुम्हारा जिक्र किया, "तुम ब्राउनिग से फिर कब मिल रही हो ।"..."कह नही सकती" मैंने उत्तर दिया ।

क्या यह सब मजेदार नही है ? इन सब सयोगो का सब से

बुरा परिणाम यह होता है कि मै हडबडा उठती हूँ और पत्र भेजने का आवश्यक प्रबन्ध नही कर पाती। पर मुझे सपनो की इस बेहोशी से, जो मुझ पर तब आती है जब मैं जरा अकेली होती हूँ, छुटकारा पाना ही पडेगा और जो कुछ करना बाकी है, करना पडेगा।

जब मैं अकेली होती हूँ, तो सपनो मे खो जाती हूँ। न मैं कुछ विश्वास कर सकती हूँ, न समझ सकती हूँ। ओह! इस कठिन, दुखद और व्यग्र करने वाली स्थिति मे भी मैं स्थिर रही। मैंने विजय पाई। हर विरोध के बावजूद तुम्हारी बन जाने पर मुझे गर्व है! कम से कम अब हमे कोई अलग नही कर सकता. अब मुझे हक है, कि मैं तुमसे खुले रूप से प्यार करूँ, और जब मैं ऐसा करूँ तो दूसरे लोग इसे मेरा कर्त्तव्य माने, क्योकि मैं जानती हूँ कि यदि यह पाप भी होता तो भी ऐसा ही माना जाता! प्रियतम! भगवान तुम्हें सदा-सदा आशीर्वाद दे। अपने माता-पिता से मुझ पर अनुग्रह करने की प्रार्थना करो और अपनी बहन से कहो कि मुझसे प्यार करे। मुझे ऐसा अनुभव होता है, जैसे मैं दीवार फाद कर किसी के बगीचे मे कूद गई हूँ। मुझे शर्म आती है! उन सब के प्रति अहसानमन्द होना और जब तक मैं जीती हूँ उनसे प्यार करना, यही मैं कर सकती हूँ। यह इतनी सरल व मामूली सी बात है कि इसके लिये वचन-बद्ध होने की जरूरत ही महसूस नही होती। पिछली रात अपने प्रिय पत्र से तुमने मुझे प्रसन्न बनाया। अब अगले पत्र मे लिखो कि तुम कैसे हो और तुम्हारी माँ कैसी हैं?

अगूठी उतार कर रखते हुए मुझे बडी ग्लानि हुई। तुम्हे एक दिन फिर यह अगूठी मुझे पहनानी पडेगी!

---

*बैरट ब्राऊनिग से लगभग आठ वर्ष बडी थी, और अक्सर बीमार रहती थी। फिर भी इस कवि-युगल का वैवाहिक जीवन पूर्णत सफल रहा। ब्राउनिग का बैरट के नाम एक पत्र—'विवाह से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र' खड के 'ख' भाग मे उद्धृत है।

रोम का महान ! राजनीतिक विचारक, व्याख्यान-दाता और कूट-नीतिज्ञ, जो रोम की उन्नति के लिये स्वय नीव का पत्थर बन गया !......

—सिसरो का पत्र टेरन्टिया के नाम†

" . ...मेरी वर्बादी मेरे अपराधों ने नहीं, मेरी अच्छाईयों ने की है ....."

अप्रेल, ५८ ईसा-पूर्व

प्रिये,

आह ! जिन्दगी मे मैने वहुत ही कम रुचि ली । ऐसे दुख तो यकीनन ही मुझे नही मिलने चाहिये थे, और अगर मिलते भी तो कुल मिला कर वहुत कम । जो कुछ मै खो चुका हूँ, उसमे से कुछ भी वापिस पाने के लिये अगर भाग्य मुझे जीवित रखता है, तो मै समझूँगा मेरा दोष वहुत कम था, और इन दुर्दिनो मे यदि कोई परिवर्तन नही होता, तो भी हे ! मेरी जिन्दगी मै तुम्हे जल्दी से जल्दी मिलना चाहूँगा, और तुम्हारे वाहु-पाश मे ही मरना चाहूँगा ! क्योकि उन देवताओ ने जिनकी तुमने सवसे अधिक निष्ठापूर्वक पूजा की है, और उन आदमियो ने

†जिस समय यह पत्र लिखा गया सिसरो की सम्पूर्ण सम्पत्ति जब्त कर के उसे देश-निकाला दिया जा चुका था, और वह 'गर्दन' तक कष्टों के समुद्र मे डूबा हुआ था ।

जिनकी मैंने सेवा की है, हमारे प्रति कोई भी कृतज्ञता और सहानुभूति नही दिखाई है।

आह ! मै बर्बाद और सताया हुआ हूँ। मै तुम्हे अपने पास आने के लिये कहूँ भी तो कैसे ? तुम्हारा स्वास्थ्य गिरा हुआ है। शरीर और मन दोनो जर्जर है। तब भी, क्या मै तुम्हे पास न बुलाऊँ ? क्या मै तुम्हारे बिना जीवित रह सकता हूँ ? विश्वास मानना—अगर तुम मेरे साथ होगी तो मै अपने आप को पूरी तरह बर्बाद नही समझूँगा। लेकिन, मेरी प्यारी तूलिया का क्या होगा ? क्या तुम दोनो कुछ समझ पाती हो ? मै कोई सलाह नही दे सकता। और मेरी सिसरो ? वह क्या करेगा ? मै और अधिक नही लिख सकता। मेरी भरी छाती मुझे रोक रही है। मै नही जानता तुम्हारे साथ क्या बीती है ? कि तुम्हारे पास कुछ बचा भी है, या जैसा कि मुझे डर है, तुम भी पूरी तरह बर्बाद की जा चुकी हो। जैसा कि तुमने लिखा है, मै स्वय भी उम्मीद करता हूँ पीसो सदा हमारे प्रति वफादार रहेगा।

मेरी टेरन्टिया ! जो कुछ बचा है उसी से जैसे भी हो सके अपना काम चलाओ। मैंने इज्जत की जिन्दगी बिताई है। मैंने वैभव भोगा है,. मेरी बर्बादी मेरे अपराधो ने नही मेरी अच्छाइयो ने की है। मैंने कोई अपराध नही किया, सिवाय इसके, कि जीवन की सब विभूतियो के खो जाने पर भी अपने प्राणो को नही खो दिया ! लेकिन अगर मेरे बच्चे चाहते है कि मै जिऊ, तो मैं बाकी सब भी सहूँगा, यद्यपि यह असह्य है। और मै, जो तुम्हे दिलासा दे रहा हूँ, स्वय अपने को सान्त्वना नही दे पाता। जितना भी सम्भव हो सके अपने स्वास्थ्य की देख-रेख करो, और याद रखो कि मेरा मन जितना तुम्हारी तक्लीफ़ो से बेचैन होता है; उतना अपनी तक्लीफो से नही। मेरी टेरन्टिया ! मेरी वफादार और अच्छी पत्नी विदा ! मेरी प्यारी बेटी और सिसरा ही अब हमारी एक मात्र आशा है।

---

*सिसरा का दामाद

हिन्दी का उपन्यास सम्राट ! जिसने 'गोदान' लिख कर मानो भारतीय ग्राम्-जीवन की गीता लिख दी .. जो भूखा मर गया, लेकिन अपनी कलम गिरवी रखने के लिए तैयार नही हुआ .. ..

— प्रेमचद का पत्र शिवरानी के नाम†

"... घर मुझे खाये जा रहा है......"

प्रिय रानी,

मैं तुम्हे छोड कर काशी आया , मगर यहाँ तुम्हारे बिना सूना-सूना लग रहा है । क्या कहूँ ? तुम्हारी बहन की बात कैसे न मानता ? न मानने पर तुम्हे भी बुरा लगता । जिस समय तुम्हे उन्होने रोका, मैं जी मसोस कर रह गया । तुम तो अपनी बहन के साथ वहाँ खुश होगी, मगर मैं यहाँ परेशान हूँ; जैसे एक घोंसले मे दो पक्षी रह रहे हों और उनमे से एक के न रहने पर दूसरा परेशान हो । तुम्हारा यही न्याय है, कि तुम वहाँ मौज करो, और मैं तुम्हारे नाम की माला फेरू ? तुम मेरे

---

†जिस समय प्रेमचन्द ने यह पत्र लिखा, शिवरानी अपने किसी सम्बन्धी के घर गई हुई थी । कुछ दिनो का यह विछोह भी प्रेमचद जी को सहन नही हुआ ।

पास रहती हो तो मैं भरसक कही जाने का नाम नही लेता। तुम आने का नाम नही लेती। मुझे १५ तारीख को प्रयाग यूनिवर्सिटी मे बुलाया गया है। यही बात है कि मैं अभी तक नही आया, नही तो अभी तक कभी का पहुच गया होता। इसलिए मैं सब्र किये बैठा हूँ। अब तुम पन्द्रह तारीख को आने के लिए तैयार रहना। सच कह रहा हूँ...घर मुझे खाये जा रहा है कभी-कभी मैं यह सोचता हूँ, कि क्या सभी की तबियत इसी तरह चिन्तित हो जाती है या मेरी ही ? तुम्हारे पास रुपये पहुँच गये होगे। अपनी बहन को मेरी नमस्ते कहना। बच्चो को प्यार ! कही ऐसा न हो कि इस पत्र के साथ ही मैं भी पहुँचूं ! जवाब जल्दी लिखना।*

तुम्हारा
—धनपत

*प्रेमचन्द जी सह-जीवन का आधार प्रेम को मानते थे, विवाह को नही। मन बध जाये तो लग्न चाहे न भी बधे। बाद के जीवन मे उन्होने एक रखैल रख ली थी, पर शिवरानी से उनका प्रेम फिर भी पूर्ववत बना रहा।

भारत की पराधीनता की जंजीरों को और अधिक कस देने वाला धूर्त अग्रेज गवर्नर जनरल जिसने अपनी कूट-नीति के द्वारा टीपू और मराठों को समाप्त कर दिया... ..

—वारेन हेस्टिंग का पत्र मेरियन के नाम

"......चार दिन बाद तुम आन मिलोगी "

कलकत्ता, २२ दिसम्बर १७८०
शुक्रवार, सन्ध्या समय

मेरी प्यारी मेरियन,

आज तक ऐसा कोई पत्र नही मिला जिसने मुझे इतना आनन्द दिया हो। जवाब मे लिखने के लिए एक शब्द भी मेरे पास नही है। यह आशा भी मुझे खुशी ही देती है कि...चार दिन बाद तुम आन मिलोगी - पर कही तुमने मुझे निराश किया तो ?...मै इस बारे मे अधिक नहीं सोचूंगा। सोमवार की रात मैं अपने बिस्तर पर अकेला सोऊँगा, पर मगलवार को अपनी प्यारी मेरियन के साथ ! मैं तो पहली जनवरी के बाद तक तुम्हें वही ठहरने के लिये कहता , लेकिन अगर ऐसा करूँ, तो मै तो मर गया ! तुम्हे कुछ लिखना चाहता था,

पर वह भूल रहा हूँ। मेरी प्यारी विदा ! श्रीमती सूलिवन, सैन्ड्स, सैम्सन और प्यारी श्रीमती मोट्टे को मेरा प्रणाम। कितना मै मोट्टे से ईर्ष्या करता हूँ !

सदा-सदा के लिये तुम्हारा उससे भी अधिक, जितना कि लिखा जा सकता है ..

—वारेन हेस्टिग

लिखना तुम कब कूच कर रही हो। यदि मौका हुआ तो शायद मै तुमसे मिलूं।

इगलैंड की वह रानी जिसने पति के बिना सिंहासन पर अकेले बैठने से इन्कार कर दिया . ...

—मेरी द्वितीय का पत्र राजकुमारविलियम के नाम†

"... ...अनावश्यक रूप से अपने आप को खतरे में मत डालो......"

ह्वाइट हाल
१२-२-१६६०

प्रिये,

जब तक मैं तुम्हें यह न बता सकूं कि तुम्हारे आने के खयाल से मुझे कितनी खुशी हो रही है; तब तक यह बताना बिल्कुल ही बेकार है कि तुम्हारे शीघ्र न आने पर मुझे कितनी ज्यादा निराशा हो रही है। मुझे पता लगा है कि पीछे एक बृहस्पतवार को एक बड़े जोर का तूफान आया था। मैं नही उसे सुन सकी, क्योंकि वह घर की दूसरी तरफ था। मुझे बडी बेचैनी रही। कही तुम उसमें न फँस गये हो। तुम्हारे २६

†जिस समय मेरी ने यह पत्र लिखा विलियम युद्ध मे व्यस्त था। यह पत्र उसे युद्ध-स्थल पर ही मिला।

तारीख के पत्र ने मुझे इस चिन्ता से मुक्ति दिलाई। मैं मानती हूँ इस बात से मुझे खुशी होनी चाहिए। शायद तुम्हारी यह विजय बहुत बडी हो और मैंने ईश्वर को यथेष्ठ धन्यवाद भी न दिया हो। हम तुम्हारी इतनी जल्दी विजय पा लेने पर बहुत चकित भी हैं। पर एक बात की मुझे बडी भारी चिन्ता है—कही मेरा प्यारा शॅनोन के रास्ते मे फिर खतरे मे न पड जाये, क्योकि बायन का यही हिस्सा बाकी बच रहा है। यह बात मेरे दिल मे आती है, पर कुछ कारण ऐसे हैं, जिन्हे ध्यान मे रखते हुए मुझे चिन्ता नही करनी चाहिए। क्योकि यदि तुम इन गर्मियो मे लड़ाई खत्म कर सके, तो लोग तुम से और भी ज्यादा खुश हो जायेंगे, बनिस्बत तब जब लोगो को अगले साल भी लडना पड़े। इन सब बातो को ध्यान मे रखते हुए मै ईश्वर की मर्जी और तुम्हारी इच्छा पर अपने को छोडती हूँ। पर तुम्हें उस गरीब पत्नी को क्षमा करना चाहिए जो तुम्हे इतना अधिक प्यार करती है; और अपनी आँखो को सूखा नही रख सकती। जब ईश्वर ने जीवन भर अद्भुत रूप से तुम्हारी रक्षा की है तब मुझे कोई सदेह नही, कि वह आगे भी तुम्हें बचाएगा। फिर भी मै प्रार्थना करती हूँ...तुम अनावश्यक रूप से अपने आप को खतरे मे मत डालो . ऐसा करना मानो विधना से बहुत ज्यादा चाहना होगा। पर मुझे उम्मीद है कि भगवान इतने पर भी तुम्हारी देख-भाल करेंगे।

---

*विलियम को किसी न किसी युद्ध मे उलझे रहने के कारण अक्सर घर से बाहर रहना पडता था। मेरी की आयु मुसीबतो मे ही कटी और वह जल्दी ही मर गई।

अमेरिका के दो सर्व-प्रसिद्ध कवियों में से एक ...

—एडगर-एलन-पो का पत्र वर्जीनिया के नाम†

"......अच्छी तरह सोना......"

१२, जून १८४६

मेरी प्यारी भावना, मेरी प्यारी वर्जीनिया,

आज रात मैं तुमसे दूर यहाँ क्यो टिक गया हूँ, यह मेरी माँ तुम्हे समझा देगी। मेरा विश्वास है कि इस भेंट से मेरे हित मे एक ठोस और लाभकारी नतीजा निकल सकेगा। अपनी और उसकी खातिर दिल मे आशा वनाये रखो, और कुछ देर और विश्वास को न डिगने दो। अपनी पिछली वड़ी असफलता के समय मैं तो हिम्मत हार वैठता, यदि तुम, मेरी प्यारी पत्नी मेरे साथ न होती। इस विपम,

†जिस समय पो ने यह पत्र लिखा वर्जीनिया मृत्यु-शैया पर पडी थी, और वह किसी अन्य स्त्री के प्रेम-पाश मे फसा हुआ था। कुछ समय वाद वह वेचारी मर गई

असन्तोषप्रद व अकृतज्ञ जीवन मे अब तुम्ही मेरी सबसे बडी एक मात्र प्रेरणा हो !

मैं कल दोपहर बाद तुम्हारे पास होऊँगा और विश्वास रखो कि दुबारा मिलने तक तुम्हारे अन्तिम शब्दो को, और तुम्हारी आवेश-युक्त प्रार्थना को, प्रिय स्मृति के रूप मे अपने दिल मे संजोए रखूँगा ।

.. अच्छी तरह सोना...और भगवान करे ये गर्मियाँ तुम अपने प्यारे एडगर के साथ शन्तिपूर्वक बिताओ...

—एडगर

*पो ने अपने जीवन मे अनेक स्त्रियो से प्रेम किया ।

जर्मनी का लौह पुरुष ! जिसने जर्मन-सैन्य-शक्ति की नींव रक्खी . फासिस्ट हिटलर का आदर्श...... !

—बिस्मार्क का पत्र जीनियटे के नाम †

" .. ..पिस्तौलों के साथ कल रात तुम्हारा पत्र मिला .. "

बर्लिन
७ मई, १८५१

मेरी प्यारी हृदयेश्वरी,

कितना मैं तुमसे मिलने के लिए घुला जाता हूँ और कितना मैं तुम सबके पास इस हरियाले बसन्त के बीच उस ग्रामीण जीवन मे घर वापिस लौटने के लिए बेचैन हूँ, व कितना मेरा दिल भारी है, यह मैं तुम्हे दो शब्दो मे बता देना चाहता हूँ । आज दोपहर, यानी रात के खाने से पहले मैं जनरल गारलेच के यहाँ था । जब वे सन्धियो और बादशाहो के बारे मे बाते कर रहे थे, तो खिडकी से बाहर 'बास' के बगीचे मे हवा अखरोट के पेडो और आल्डर के फूलो के बीच उछल-

†बिस्मार्क ने यह पत्र अपनी प्रसिद्धि के आरम्भिक दिनो मे लिखा था ।

उछल कर चल रही थी, और मैंने अनुभव किया कि मै तुम्हारे साथ भोजनगृह की खिडकी के पास खडा हुआ छज्जे के ऊपर से देख रहा हूँ, और बुलबुलो की आवाज़े सुन रहा हूँ। उस समय मुझे कुछ पता नही लगा कि जनरल क्या बाते कर रहा है.. ? पिस्तौलो के साथ तुम्हारा पत्र कल रात मिला अगर तुम पिस्तौलो से घबराती थी, तो उन्हे चुपचाप रख लेती। खैर ! उस पत्र को पाकर मैं बहुत उदास हो गया और तुम्हे देखने की इच्छा इतनी बढी कि मै बिस्तर मे लेट कर रोया, और भगवान से प्रार्थना की, कि वे मुझे अपना कर्त्तव्य पूरा करने की ताकत दे। हैस एक रात पोट्सडम मे रहा जहाँ कि उसकी प्रेमिका अपनी बहन के साथ रहती है। काउन्टेस केलर और मैंने इतना अधिक अकेलापन महसूस किया, कि मै तो सो भी न सका। मेरा पक्का विश्वास है कि दयालू भगवान तुम्हारी और बच्चो की रक्षा कर रहे है, और जल्दी ही वे हमे आनन्ददायक पुनर्मिलन का वरदान देगे। समय भाग रहा है, और हम अभी तक अलग है ! कल सुबह मुझे राजा के पास जाना है। वहाँ से मै अगले दिन, अथवा शनिवार को चल पाऊगा क्योकि मुझे फ्रेकफर्ट इतवार तक पहुंचना है, और अभी इतना काम करना बाकी है कि मै घबरा रहा हूँ। काम का आरम्भिक जोर खत्म होने के बाद, जब कि यहाँ के मामले काफी ठीक-ठाक हो चुकेगे और उचित ढग से चल निकलेंगे, शायद पहले कुछ सप्ताहो मे ही मै कुछ दिनो के लिए फ्रेकफर्ट से निकल सकूंगा और स्टेटिन अथवा कुल्ज मे हम दोनो मिल सकेगे। रीन फील्ड मे एक दिन गुजारने के लिए जरूरी चार दिन निकाल पाना मेरे लिए पिछले कुछ दिनो से असम्भव हो रहा है। कल मै तुम्हे किताबो व दस्तानो आदि का छोटा बक्सा भेजूंगा। और चीजो के लिए इसमे जगह नही है। वे मै अलग से भेजूंगा। मैंने लडको के लिए दो जोडी जूते खरीदे है। उनमे एक नमूने से कुछ बडा है। अगर ये ठीक न बैठे तो इन्हे [illegible] रखना।

फ्रेंकफर्ट मे मुझे फिलहाल तीन हजार रिक्सथेलर मिलेंगे, लेकिन यदि ये लोग अपनी बात पर कायम रहे, तो यह राशि अधिक दिन नही मिलती रहेगी, कुछ महीनो बाद ही ज्यादा मिलेगी। कुछ भी हो मुझे खर्च भी तो ज्यादा करना पडेगा—यह कि मुझे प्रिवी कौसिलर होना पड़ेगा। मेरे साथ यह एक मजाक है, जिसके माध्यम से भगवान मुझे उन आलोचनाओं की सजा दे रहे है, जो मैने प्रिवी कौसिलरो की की है। हैस अभी-अभी वापिस लौटा है। वह अपना सन्मान तुम्हें अर्पित करता है, और कहता है कि सब कुछ अत्यन्त आनन्दप्रद है। स्टालबर्ग वाले बहुत मेहरबान हैं और उसकी मगेतर एक बहुत ही सुन्दर लडकी है, और उसे बहुत ही अच्छी लगी है। वह कहता है कि वह बरनिग रोड से माँ को लिखेगा। उसकी खुशी मुझे उकसाती है। मेरी परी! हम एक दूसरे से कब मिलेंगे? मेरी प्यारी! काश! मै तुझे एक पल के लिए अपनी बाहो मे बाँध सकता और बता सकता कि मै तुझे कितना प्यार करता हूँ! और कहता कि जो कुछ भी बुराई मैने तेरे साथ की हो तू उसके लिए मुझे माफ़ कर। तुम्हारी मुझे कितनी चिन्ता है। मेरी तरफ से बच्चो को चूमो और माता-पिता को हर प्रकार की स्नेह-भरी सूचनाएँ दो। मेरी प्यारी को नमस्कार! भगवान का आशीर्वाद तुम्हारी रक्षा करे।

तुम्हारा वफादार
—बिस्मार्क

इटली का वह जनवादी कवि जिसने सामन्तशाही के खिलाफ कलम के साथ-साथ तलवार भी चलाई.. जिसकी कविता पास होना किसी को जेल मे डाल देने के लिए काफी होता था...

—जेब्रिल रोज़ेटी का पत्र फ्रान्सिस मेरी के नाम†

" *यह घर एक रेगिस्तान बन गया है......*"

प्रिय,

जान कर खुशी हुई कि सब ठीक है, यद्यपि हमारे प्यारे तुप्पि-तियलो ने अभी तक ठड से छुटकारा नही पाया है। बेचारा नन्हा सा शिशु ! मुझे तुम से ईर्ष्या होती है कि तुम हमारी उन दो नन्ही मूरतो के सग का आनन्द उठा रही हो।

. .तो मेरिया फ्रान्सिस्का ने पहले तुम्हे पहचाना ही नही ? सोचता हूँ तुम बडी निराश हुई होगी। पर अब तो वह भाव दूर हो गया होगा, क्योकि अब मेरिया तुम्हारे साथ ही तो रहती है। वह तुम्हे 'मामा' कहती होगी, अपने छोटे भाई को प्यार करती होगी, और तुम्हे दिखाती होगी, कि वह कितनी अच्छी तरह चल-फिर सकती है।

.. यह घर एक रेगिस्तान बन गया है...मै जितना भी हो सकता है

---

†मेरी अपनी मायके गई हुई थी। रोज़ेटी ने तब यह पत्र उसे लिखा।

तुम्हारी अनुपस्थिति को अपनी किताबो मे भूलने की कोशिश करता हूँ पर सफलता बहुत थोडी ही मिल पाती है। एक दो बार तो मानसिक शून्यता मैं मैने समझा, कि तुम और मेरा पुत्र दोनो यही हो, और मैं तुम्हे देखने के लिए सोने के कमरे मे गया। जब वहाँ जाकर मेरा भ्रम दूर हुआ, तो अत्यन्त दीन व खिन्न चित्त लिये अपनी किताबो के पास लौट आया ; लेकिन कुछ समय तक तो उनका एक शब्द भी मै समझ नही सका।

जब भी अवसर मिले मुझे पत्र लिखना और बताना कि हमारा प्यारा 'क्यूपिड—' (काम) और हमारी 'सिकै' (मनोविज्ञान) कैसे हैं ?*

—जेब्रिल रोज़ेटी

*क्रान्ति मे हार जाने के पश्चात् रोज़ेटी को अपनी शेष आयु इटली छोड कर इंगलैंड मे काटनी पडी।

: ५२ .

अवध का अन्तिम और अय्याश नवाब, जो कलकत्ते की ब्रिटिश जेल मे मरा... .

—नवाब वाजिद-अली-शाह के नाम शैंदा बेगम का पत्र†

" . *फिरंगियों के खिलाफ जहर उगला जा रहा है.....*"

जाने-आलम,

शोज़े-तपे-फुरकत से अजब रग है दिल के
तहरीर नही होते है जो ढग है दिल के

आशनाये दरियाये मुवानसत व इखलास शादरे-कुलज़म मसावकत मिर्ज़ा जाने-आलम, बल्कि जाने-जहाँ से बढकर सुलताने-आलम ! जैद अललतफा

तेरे फिराक मे क्यूँकर यह दर्दनाक जिये ?
मरे तो मर नही सकता, जिये तो खाक जिये !

चर्खे-ना-हजार मस्तइद आज़ार है। कोई मौनास है न गमख़ार है। जिन्दगी से यास है। जीने की किसे आस है ? दिल मे दर्द है। आह

†जिस समय शैंदा बेगम ने यह पत्र लिखा वाजिद-अली-शाह कलकत्ते की ब्रिटिश जेल मे थे। हरम की सैकडो बेगमो मे से शैंदा भी एक थी। सब से ज्यादा पत्र उसी के पाये जाते है।

सर्द है। सीना मातमसरा है। जिस्म खुश्क व जिगर हरा है। जोशे-वहशत की शिद्दत है। जीने से जी बेज़ार, दुनिया से नफरत है...

काश ! के दो दिल भी होते इश्क में !
एक रखते, एक खोते इश्क मे !

पिया जाने आलम ! जब से आप लखनऊ से सिधारे, ख्वाबो-खोर हराम है। रोना-धोना मदाम है। यहाँ शब-व-रोज़ आह-व-बका मे गुज़रती है; मगर मेरी दूसरी हम-जिन्सें खुशी-खुशी इतराती फिरती हैं। आपके वाद से...फिरगियो के खिलाफ जहर उगला जा रहा है. नई-नई वातें सुनने मे आ रही हैं। दिल को हौल है। देखिये फ़लक क्या-क्या रग दिखाता है ! घास-मण्डी मे मौलवियो का जमाव है। सुना है कि एक सूफी अहमदुल्ला शाह आये हुए है। नवाब चिनाउद्दीन के शहज़ादे कहलाते है। आगरे से आये हैं। यह भी सुना है कि उनके हजार मुरीद है। पालकी मे निकलते हैं। आगे डका वजता होता है। पीछे अजदहाम वटा होता है। वहशत-नाक खवरो की गर्म-बाज़ारी है। सरकारे-सुलताने-आलम अपना हाल लिखिये। दिल को शादे-काम कीजिये।*

—शैदा वेगम

*शैदा वेगम के नाम नवाब वाजिद-अली-शाह का एक पत्र—'जेल से लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'क' भाग मे उद्धृत है।

: ५३ :

दो बार नोबिल-पुरस्कार प्राप्त करने वाली विश्व की एक मात्र महिला ..सब से अधिक मूल्यवान धातू 'रेडियम' का अपने पति के साथ जिसने सह-अविष्कार किया, पर जो स्वय इतनी निर्धन थी, कि अपनी सुसराल भी साइकिल पर बैठ कर गई ·

— मेरी क्यूरी का पत्र पियरे क्यूरी के नाम।·

"..... सूर्य चमकता है और वह गर्म है ..."

मेरे प्यारे पति,

मौसम बहुत बढिया है...सूर्य चमकता है, और वह गर्म है तुम्हारे बिना मैं उदास हूँ। जल्दी आओ ! सुवह से रात तक तुम्हारे आने की आशा मुझे लगी रहती है, पर तुम्हे आता हुआ नही पाती। मैं ठीक हूँ। जितना कर सकती हूँ काम करती हूँ, लेकिन पोयनकैरे की पुस्तक में जितनी सोचती थी, उससे कही अधिक कठिन है। मुझे इसके विषय मे तुमसे बाते करनी हैं। जो भाग मुझे महत्वपूर्ण, पर समझने मे

---

†अपने पिता के पोलैंड से फ्रान्स आने पर मेरी कुछ दिनो के लिये उनके निवास-स्थान पर चली गई थी। वही से उसने यह पत्र पियरे को लिखा। विवाह के बाद मेरी बहुत कम समय ही अपने पति से अलग रही।

कठिन लगे हैं, उन्हे हम क्यो न दुबारा इकट्ठे पढे ?

--मेरी

---

*मेरी पोलैन्ड से विज्ञान की एक विद्यार्थिनी के रूप मे फ्रान्स आई थी, जब कि उसका पियरे से सर्वप्रथम परिचय हुआ दोनो मे अत्यन्त प्रेम होने के वावजूद विवाह इस वात पर अटक जाता था कि मेरी पोलैंड नही छोडना चाहती थी, और पियरे फ्रान्स । पियरे ने धीरज से काम लिया और अन्त मे उसी की जीत हुई ।

पियरे का मेरी के नाम एक पत्र,—'विवाह से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'ग' भाग मे उद्धृत है ।

उन्नीसवी शताब्दी का महान् विचारक, आलोचक और लेखक, जिसने 'फासीसी क्राति' नाम की विश्व-प्रसिद्ध पुस्तक लिखी......

—कार्लाइल का पत्र जेन-वैल्श के नाम†

" ...मैंने अब तक नहीं पहचाना था, कि मै तुम्हें कितना प्यार करता हूँ "

लन्दन, बुधवार की रात्रि
२४-८-१८३१

प्रियतमा पत्नी,

अफसोस ! लगभग एक सप्ताह से मुझे तुम्हारा कोई पत्र नही मिला। आज सुबह मै जर्मीन स्ट्रीट लगभग दौडता-दौडता गया। मुझे विश्वास था कि तुम्हारा पत्र मिलेगा। मैंने कह रखा था कि मेरा पत्र वही रोक लिया जाये, जिससे मैं उसे निश्चित समय से कई घन्टे पहले पा सकूं पर—"तुम्हारा कोई पत्र नही कार्लाइल"—आवाज ने ही वहा मेरा स्वागत किया। निश्चय ही इसमे तुम्हारा कोई दोष नही है। बीच मे पत्र कही रुका है। कोई चिन्ता की बात नही है, पर तुम्हे मैं कैसे बताऊँ कि यह देरी मुझे कितना निराश करती है ? इससे कैसा एक मूर्खतापूर्ण

दुख का पागलपन सा मेरे हृदय मे पैदा हो जाता है। ओह ! यदि मेरी प्यारी को कुछ हो गया होगा तो मै क्या करूँगा ? हे प्यारी ! मुझे पत्र लिखो। लिखना एक दम असभव हो जाने पर ही तुम रुको, वरना नही। सप्ताह मे दो पत्र मुझे मिलने ही चाहिये। यही हमने अगले मिलन तक के लिये तय किया था।

जैसी कि मुझे आशका थी, मेरा लेख वापिस आ गया है। कारण ? 'उच्च योग्यता-पूर्वक लिखा होते हुए भी . आदि आदि'—लिख कर उन्होने लेख लौटा दिया है। मेरी प्यारी डरे नही। मैने तो डर अपने दिल से निकाल दिया है। मै अनुभव करता हूँ, कि यहाँ मेरे लिए खुला क्षेत्र है, और मैं किसी न किसी तरह सफलता के लिये जरुरी साधन व ताकत प्राप्त कर ही लूंगा। प्रिये ! मेरा साथ देती रहो। मेरी अपनी 'जेन' की तरह, जॉन नॉक्स की योग्य वशज और जॉन वेल्श की पुत्री की तरह, और टॉमस कार्लाइल की पत्नी की तरह ! कोई बात मेरे उत्साह को घटा नही सकती। जव मै यहाँ के लोगो से अपने बुद्धि-वैभव का मुकावला करता हूँ, तो महसूस करता हूँ, कि इन लोगो पर, जो हीनताओ और क्षुद्रताओ से भरे पड़े है, मै पूरी तरह छा सकता हूँ, और वहुत अच्छा काम कर सकता हूँ। लेकिन तेरे साथ रहते हुए...तेरे साथ रहते हुए.. तेरे विना कदापि नही !

हे मेरी प्यारी जीनी ! मेरी अपनी हृदयेश्वरी ! ईश्वर तुम पर आशीर्वादो की वर्षा करें, और तुम्हे मेरे लिये सुरक्षित रखे ..मैंने अब तक नही पहचाना था कि मैं तुझे कितना प्यार करता हूँ ..एक दिन मैं तुझे वता सकूँगा कि हर बुरी स्थिति मे से किस तरह तू मुझे निकाल ले गई है। किस प्रकार तू इस दुनिया मे, जो तेरे विना कितनी घृणास्पद होती, एक सच्ची पत्नी, साथिन और सहायिका की तरह मेरी वगल मे खडी रही है। लेकिन मैं कैसा मूर्ख हूँ, कि यह सब वके जा रहा हूँ जो कि मुझे सिर्फ महसूस करना चाहिए, और जिस पर मुझे आचरण करना

चाहिए । इस सत्य को जान ले, कि तू मुझे ससार की हर चीज से अधिक प्यारी है । मेरी आंखो के प्रकाश से भी तू मुझे अधिक प्यारी रहेगी । इस बात पर तुझे गर्व करना चाहिए, विशेषकर ऐसी स्थिति मे जब कि तेरा पति एक प्रतिभा-सम्पन्न पुरुप है । अन्त मे मै चाहता हूँ, तू मुझे लिख और खूब लिख । अगर तू बच्चो की तरह लिखती तो भी दूसरे प्रौढ और प्रभाव-पूर्ण लेखो से तेरा लेख मुझे अधिक प्यारा लगता । ईश्वर तुझे आशीर्वाद दे । मेरा चुम्बन और प्यार तुझे मिले । अगले बुधवार को मै फिर तुझे लिखूँगा । अपने जीवन के हर घन्टे और हर पल तू मेरे ही बारे मे सोच और एक अच्छी नन्ही प्रेमिका बन । मैं भी तेरे साथ, अपनी प्यारी के साथ, सदा मीठा व्यवहार करता रहूँगा । हम दोनो चाहे सुखी न हो पर भगवान के कृपापात्र जरूर होगे, जो उससे कही ज्यादा अच्छा है । आमीन !

भगवान शीघ्र ही हमे एक दूसरे के आलिगन-पाश मे बाधेगे । इसमे अब अधिक समय नही लगेगा, क्योकि तेरे बिना जीवन निस्सार है । अच्छा, मेरी अपनी जेनी [illegible] विदा।

सदा ही तेरा प्रिय पति
—टॉमस कार्लाइल

---

*आरम्भ के दिनो मे कार्लाइल अत्यन्त निर्धन था । उसके साहित्यिक व्यक्तित्व से अभिभूत होकर जेन ने उससे विवाह किया, मगर जब इस इन्द्र-धनुष का जादू टूटा तो घरेलू झगडे उनके लिए प्रतिदिन के भोजन जैसी बात हो गई ।

कार्लाइल के नाम जेन का एक पत्र—'विवाह से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र' खड के 'ख' भाग मे उद्धृत है ।

: ५५ :

इंगलैंड का वह क्रूर तानाशाह, जनता और पार्लियामैन्ट को जिसकी अकडी हुई गर्दन उडा देनी पडी......!

—चार्ल्स प्रथम का पत्र हेनरिटा मेरिया के नाम†

"......आज मैं जितना अकेला हूँ, उतना कोई कभी भी न रहा होगा......"

न्यू कैंसिल
१० जून, १६४६

प्रिये,

पिछले दो सप्ताहो से तुम्हारा कोई पत्र नही मिला, न ही तुम्हारे बारे मे कुछ सुना और इस ने मेरी वर्तमान स्थिति को बडा ही कष्ट-प्रद बना दिया है। मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम अपने समाचारो से मुझे प्रतिदिन सान्त्वना देती रहोगी। असल मे मुझे कुछ सहारा चाहिये, क्योंकि अब से पहले

---

†जिस समय चार्ल्स ने यह पत्र लिखा पार्लियामेंट से उसका झगडा अपने उग्रतम रूप मे था। चार्ल्स इंगलैंड छोड कर स्कॉटलैंड की सेना की शरण मे जा चुका था। सिविल-वार से ठीक पहले यह पत्र उसने लिखा।

मैने कभी नही जाना था कि नृशसता से सताया जाना क्या होता है ? इन पिछले पाच या छ दिनो मे तो पहले की सभी सीमाये टूट गई हैं, और जब से मै स्कॉच सेना मे आया हूँ मेरी आत्मा पर क्रूर दबाव डाला जा रहा है। मै नही जानता कि लन्दन के क्या समाचार हैं; पर समस्या का हल तब तक नही निकल सकता, जब तक कि मै इकरारनामे पर दस्तखत नही कर देता और बिना किसी शर्त के प्रेस बिटीरियनो के पक्ष मे निरकुश घोषणा नही कर देता, अपने परिवार मे सचालको का स्वागत नही करता और सारे राज्य को भी ऐसा ही करने की स्पष्ट आज्ञा नही देता। और अगर मैने ऐसा नही किया तो बिना मेरी परवाह किये, ऐसा समझौता पार्लियामैंट के साथ कर लिया जायेगा, और वे कहते है कि बिना इसके शाति अथवा न्यायपूर्ण युद्ध की आशा नही की जा सकती। यह सच है कि मेरे द्वारा उनकी मर्जी पूरी कर दिये जाने की दशा मे और भी कितने ही वादे उन्होने मेरे साथ किये है। (फिर भी वे अपनी सेना को प्रतिदिन मजबूत करते चले जा रहे है)। मैने उन्हे उत्तर दिया है कि उनकी माग मेरी आत्मा के एक दम विरुद्ध है, और मेरी आत्मा को वे अपने कार्यो अथवा वचनो से फुसला कर तैयार तो कर सकते है, पर मजबूर नही कर सकते। जो बहस हमारे बीच मे हुई और जो कागजो का आदान-प्रदान हुआ, यह उसी का सार है। पूरा विवरण तुम्हे मै नही भेज सकता। कम से कम मै उनको इस बात के लिये तैयार कर सका, कि वे मेरे दूसरे प्रस्ताव को लेकर लन्दन जाये और पहले का उत्तर लाये। मैने यह भी कहा है कि मै सम्मानपूर्ण सख्त शर्तो पर लन्दन जा सकता हूँ। इस प्रकार मैं बस इतना ही कर सकता हूँ, कि दुर्भाग्य को कुछ समय के लिये टाल दूं, पर तुम्हारी सहायता के बिना मैं बहुत देर तक ऐसा भी नही कर पाऊँगा। मैं तुम्हे फिर से याद दिलाये बिना नही रह सकता कि आज मैं जितना अकेला हूँ उतना कोई कभी भी न रहा होगा...इस-

लिये मेरी गल्तियो का जिक्र करने का यह समय नही है। उनकी हर सम्मति पर सन्देह करने का मेरे पास कारण है, और अपनी अकेली सम्मति पर भी मै विश्वास नही कर सकता; क्योकि कोई भी जीवित प्राणी आज मेरा सहायक नही है। अन्त मैं मुझे तेरे प्यार का और साफ अन्त करण का ही सहारा है। मैं जानता हूँ पहला मुझे धोखा नही देगा और भगवान की कृपा से दूसरा भी नही। मैं तुम्हारी विशेष सहायता चाहता हूँ, जिससे मैं कम से कम परेशान रहूँ। अगर तुम मेरे साथ हो तो फिर मुझे किसी बात की भी चिन्ता नही। मुझे कुछ और अधिक कहने की आवश्यकता नही है और न ही मैं इस समय कुछ कहूँगा, सिवाय इसके कि मै सदा के लिये तुम्हारा हूँ

इगलैंड का प्रकृति का उपासक कवि जिसने पहाड़ो, झरनो, पेड़ो—प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को—जीवित रूप मे देखा, समझा और अपनी कविता में बुन दिया......

—कवि वर्डस्वर्थ के नाम मेरी वर्डस्वर्थ का पत्र।

"......मैं तो अभी से अनुभव कर रही हूं, जैसे तुम दोनों घर आ चुके हो.... ."

२९/७/१८३७

प्रिये,

स्वागत ! इस निरीह इगलैंड मे तुम्हारा हजार वार स्वागत ! मेरा विचार है कि इसे तुम कुछ गिरी हुई हालत मे ही पाओगे, क्योकि जब तक यह पत्र तुम्हारे हाथो मे होगा यह घृणित चुनाव अधिकाश समाप्त हो चुकेगा। म्यूनिच से जो पत्र तुमने डाला उसे पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, पर मुझे अफसोस है मेरा दूसरा पत्र, जो मैंने वही के पते पर डाला था, तुम्हे नही मिल सका। हो सकता है अब भी अन्तिम क्षण वह तुम्हें मिल जाये। यही एक सम्भावना बची है। मेरा दूसरा पत्र तुम्हे हीडलबर्ग मे मिलेगा।

डोरा तुम्हे श्रीमती होर के यहाँ मिलेगी। तुम उससे सब कुछ जान लोगे। यहाँ की सब बातें तुम्हारी इच्छानुकूल ठीक हैं, और हम सब इस प्यारे द्वीप पर पहुँच चुके है। इसलिये कृपा कर प्रसन्न और

शान्त रहना, जैसे कि मै रहूँगी, तब तक, जब तक कि डोरा अपने सब काम खत्म न कर ले, और तुम उससे सम्वधित सब कार्यों से निवृत्ति न पा लो· मै तो अभी से अनुभव कर रही हूँ जैसे तुम दोनो घर आ चुके हो.. क्योकि मैं सोच रही हूँ कि तुम दोनो मिल चुके होगे और तुम्हारी वापिसी होने ही वाली है। यही खुशी तव तक के लिये मुझे काफी है जब तक तुम सब काम निपटा कर लौट न आओ और हम असल रूप मे न मिल जाये।

डोरा से तुम्हे नये पोते के जन्म के हाल-चाल मालूम होगे और यह भी कि इजा बिल्कुल ठीक है आदि, आदि। मेरा भाई व उसका परिवार ब्रिन्सन लौट आये है। कुछ दिन बाद मैं खबर भेज सकूंगी कि वे इस यात्रा के बाद कैसे है। मुझे तो एक अखबार से ही यह सूचना मिल सकी कि वे हरफोर्ड पहुँच गये। इस सप्ताह के बीच जॉन शायद यहाँ आये और मुझे उस परिवार से मिलने के लिये ब्रिघम ले चले। अगर ये लोग सदा की तरह अपने वादे से फिर न गये तो नन्हे हैरी को अपने साथ ले आने की मुझे उम्मीद है।

भगवान का आशीर्वाद तुम्हें मिले। जिस कविता को मै तुम्हारे लौटते ही पढना चाह रही हूँ, उसकी कुछ पक्तियाँ मुझे भेजना। श्री मोक्सन तुम्हारी कविताये दुवारा लिख देगे। कोई लम्वा पत्र उस समय तक मुझे न लिखना जब तक तुम्हे अधिक फुरसत न मिल जाये, और तुम मुझे यह न वता सको कि डोरा के वारे मे तुम्हारा क्या खयाल है? प्यारे, प्यारे विलियम! तुम्हारा हजार वार स्वागत!

हमेशा तुम्हारी वफादार
—मेरी वर्डसवर्थ

ख

विवाह के पश्चात
पति अथवा पत्नी को लिखे गये
दुःख और मनमुटाव
के पत्र

''

: ५७ :

बगाल का वो बबर-शेर ! जिसने अपनी प्रत्येक साँस क्रांति की अगवानी के गीत गाने में खर्च कर दी . और जिस क्षण निराश हुआ, पागल हो गया· . .

—नजरुल इस्लाम का प्रथम और अन्तिम पत्र पहली पत्नी के नाम†

". . .यद्यपि मैं ग्रामोफोन के ट्रेडमार्क कुत्ते की गुलामी करता हूँ तब किसी भी कुत्ते को मैंने चाटा नहीं......"

६, अपर चितपुर रोड
ग्रामोफोन रिहर्सल-रूम
कलकत्ता, १ जुलाई १९२७

जानम !

नौरोज की सुहानी सुबह को तुम्हारा खत मिला। उस समय आकाश पर हल्के-हल्के बादल छाये हुए थे। आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व आषाढ के इसी महीने का वह दिन भी ऐसा ही था। सभव है तुम्हारी स्मृति मे उस दिन की बात ताजा हो। यही मघ-दूत विरही अबला

---

†प्रकृति-विरोध के कारण, नज़रुल की पत्नी से पटी नही और वे अलग-अलग रहने लगे। विवाह के सोलह वर्ष बाद नज़रुल ने अपना यह पहला और अन्तिम पत्र उसे लिखा !

की वाणी लेकर कालिदास के जग मे रेवा नदी के किनारे-किनारे गया और फिर अपने प्रियतम के पास पहुँचा। यह चौकडी भरते हुए वादल भी मेरे पास दुख के सन्देश लाते है, और यह आसाढ मुझको कल्पना के स्वर्ग से पृथक कर, दर्द और कसक की अथाह गहराई मे फेंक देता है।

. .

विश्वास करो, मैने जो कुछ लिखा है उसका आधार सत्य है। यदि लोगो की सुनी-सुनाई बातो पर तुम विश्वास कर बैठी, तो इसका अर्थ यह है कि तुमने मुझे समझने मे गलती की। खुदा गवाह है कि मेरे दिल मे तुम्हारे विरुद्ध न कोई अदावत है और न कोई बुरा भाव। मैं तुम्हे कैसे विश्वास दिलाऊ, कि मैं तुम्हारे लिये कितना दुखी हूँ, और अब तो इस दुख की आग मे विल्कुल झुलस कर ही रह गया हूँ? तुम मेरे दिल को यदि यह आग न देती, तो शायद मैं आग के राग न अलाप सकता, और न ही एक पूर्ण सितारा वन का आकाश पर उग सकता। मैंने अपनी उठती जवानी मे सबसे पहले तुम्हारे रूप को देखा था, और उसी को मैंने अपने जीवन का प्रथम उपहार भेंट कर दिया!

तुम यह न भूलो कि मैं एक कवि हूँ। तुम्हे दुख पहुचाऊ, उससे मुझे भी एक किस्म का दुःख ही होगा।

.. हाँ, तुम पर मेरा कोई अधिकार नही है। यद्यपि मैं ग्रामोफोन के ट्रेडमार्क कुत्ते की गुलामी करता हूं, तब भी किसी कुत्ते को मैंने चाटा नही तुम लोगो का भी एक कुत्ता मुझ पर क्रोध से गुर्राया, किन्तु मैंने शक्ति होने पर भी उस पर आक्रमण नही किया। तुम तो जानती ही हो, कि नवयुवक मुझे कितना चाहते है? मेरे समझाने-बुझाने पर उन्होने उसे क्षमा कर दिया अन्यथा उसका नामोनिशान तक भी न वचता। अफसोस! कि इन वातो के वावजूद तुम मुझे नही

पहचान सकी।

अचानक ही मुझे पन्द्रह वर्ष पूर्व की एक बात स्मरण हो आई है। तुम लगातार ज्वर मे पडी हुई थी, और मैने वडे चाव और मौहब्बत से तुम्हारे जलते हुए माथे पर हाथ रक्खा था। तुमने अजीब निगाहो से मुझे देखा। मेरी आखो मे आँसुओ की वरखा थी, और हाथो मे तुम्हारी सेवा करने की तडप। उन बातो को याद करके ऐसा लगता है जैसे कि यह कल-परसो की ही बात हो।

खैर, छोडो इन बातो को। आज मै जिन्दगी की ढलती हुई शाम मे भाटे की ओर बढता जा रहा हूँ, और अब इस राह से तुम मुझे हटा नही सकती।

तुम्हारे नाम मेरा यह पहला और अन्तिम खत है। तुम जहाँ भी रहो सुखी रहो, यही मेरी दुआ है . तुम मुझे जितना बुरा समझती हो उतना बुरा मैं नही हूँ ..

तुम्हारा
—नजरुल इस्लाम

विश्व-प्रसिद्ध भारतीय वेदान्ती, दार्शनिक, सन्त और गणितज्ञ, जिसने अमेरिका व अन्य देशों में जा कर हिन्दू धर्म का प्रचार किया......

—स्वामी रामतीर्थ का पत्र ? के नाम†

"......मेरे दिल पर तो एक भी धब्बा नहीं . .."

.. तो तुम नाराज हो ! मै कर क्या सकता हूँ ? . मेरे दिल पर तो एक भी धब्बा नही जो मुझे प्रेरित कर रहा हो कि मै तुम्हारे साथ कुछ वैसा बर्ताव करू ; पर तुम लगातार नाराज हो। तुम्हारे लिए सर्वोत्तम यही है, कि तुम मुझे सदा ही माफ करती रहो। तुम्हारे कड़ुवे शब्द भी मेरे लिए मीठे है। तुम्हारा क्रोध मुझे हानि नही पहुचा सकता। 'प्रिये ! ओ प्रिये ! तुम्हारा विष मुझे मार नही सकता।' जो कुछ भी मैंने आज तक पढा हे, उसके आधार पर कहता हूँ कि तुम्हारे आपे से बाहर होने का मूल कारण तुम्हारा पेट है। तुम्हारा हाज़मा अच्छा नही है। अच्छा हो यदि तुम नीचे लिखे नुस्खे को आजमाओ। इसने मुझे भी लाभ पहुचाया हे।*

---

†यह पत्र जिस स्त्री को लिखा गया—उसके नाम आदि का कोई पता नही चलता।

*स्वामी रामतीर्थ ने गंगा मे डूब कर अपने प्राण त्यागे।

: ५६ :

फ्रांस का तानसेन ! जिसकी सगीत-रचनाएँ आज भी जीवित और लोक-प्रिय हैं......

—मोज़ार्ट का पत्र कैन्सटैन्ज़े के नाम†

"......बिना तुम्हारा चित्र अपने सामने रखे, मैंने एक भी पत्र आज तक तुम्हें नहीं लिखा है......"

ड्रेस्डन
१६-४-१७८६

मेरी प्यारी नन्ही पत्नी,

मुझे तुमसे कितनी ही प्रार्थनायें करनी है;

मैं प्रार्थना करता हूँ कि—

१. तुम उदास न रहा करो।

२ अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो और बसन्त की हवाओ से सावधान रहो।

३. बाहर अकेली घूमने मत जाया करो, और अच्छा तो यह होगा

†कैन्सटैन्ज़े उच्च श्रेणी के सामाजिक व्यवहारो से अनभिज्ञ थी। उसको कब, कहाँ, कैसे, क्या और क्या नही करना चाहिए, यही समझाते हुए मोजार्ट ने यह पत्र उसे लिखा।

कि घूमने, जाओ ही नही।

४. मेरे प्यार मे पूरा विश्वास रखो ...विना तुम्हारा चित्र अपने सामने रखे, मैने एक भी पत्र तुम्हे आज तक नही लिखा है ..

५. मै यह भी प्रार्थना करता हूँ, कि तुम अपने व्यवहार-मे मेरे और अपने सम्मान का ध्यान रखो, और दिखावट व बनावट का भी पूरा विचार किया करो। मेरे ऐसा कहने पर नाराज़ मत होना। इस प्रकार मेरी इज्जत का ध्यान रखकर तुम मुझे अधिक प्यार करोगी।

६ और अन्त मे अपने पत्रो मे तुम मुझे अपने हाल खुलासा लिखा करो। मैं जानना चाहूँगा कि क्या मेरे चले आने के वाद हमारा सम्बन्धी होफर हमसे मिलने आया था ? क्या वह अक्सर आता है, जैसा कि उसने वादा किया था कि वह आयेगा ? क्या लैंगेस कभी-कभी आता है ? क्या चित्र वनाने मे कुछ प्रगति हुई है ? तुम किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रही हो ? स्वाभाविक रूप मे ही ये सव वाते मेरी रुचि की है।

—मोज़ार्ट

: ६० :

भारत प्रसिद्ध लेखक तथा राजनीतिज्ञ स्वतन्त्र पार्टी के वर्तमान कर्णधारो मे से एक......

—के० एम० मुन्शी के नाम प्रथम पत्नी अतिलक्ष्मी का पत्र†

"......कब तक उर्वशियाॅ आप पर रीझेंगी......?"

८-१२-१९२२

आपकी कीर्ति सुनकर मुझे कितना आनन्द मिलता होगा ? केवल एक ही चिन्ता है...कब तक उर्वशियाँ (आप पर) रीझेंगी प्रसन्न होगी ? उनके लिए मुझे कब तक कितने व्रत करने पडेगे ? कितनी रातो जागरण करने पडेगे ? बडे परिश्रम से दस वर्ष तप करके मै अपने घनश्याम को खोज लाई थी। अब फिर दस वर्ष बाद मुझे मिलेंगे, या जल्दी ? उर्वशियाॅ तो ज्यो-त्यो करके चली जायेंगी, पर उर्वशो का निकालना तो कठिन ही पडेगा। जूनागढ से...जैसे युवराज को न लाइयेगा। कारण, कि पिताजी ठीक न समझे तो बड़ी कठिनाई होगी। वहाँ भाषण सुनने तथा देखने को बहुत से पुत्र

†यह पत्र अतिलक्ष्मी द्वारा उस समय लिखा गया था, जब मुंशी का हृदय उससे हट कर लीलावती (मुंशी की वर्तमान पत्नी) की ओर आकृष्ट होना प्रारम्भ हो गया था।

तैयार होंगे ही।

जगदीश, उषा आपको बहुत याद करते है। छोटी बच्ची की राशि मिथुन है—जो आपकी है, इसलिए क्या नाम रखा जाये, यह लिखिएगा। हमने कोकिला, कीर्ति देवी, कमला देवी और कला—यह पसन्द किये है। स्वास्थ्य का ध्यान रखिएगा।*

—अतिलक्ष्मी

*मुंशी जी का अतिलक्ष्मी और लीलावती के नाम एक-एक पत्र, तथा लीलावती का मुंशी के नाम एक पत्र,—'जीवित व्यक्तियो के प्रेम-पत्र' खड मे उद्धृत है।

विश्व-प्रसिद्ध रोमान्टिक कवि, जिसने अपनी प्रेमिका को शहर से बाहर ले जाकर उस के साथ विवाह कर लिया, जब कि वे दोनो अभी पूरे से बालिग भी नही हुए थे .....!

—शैले का पत्र हैरियट के नाम†

"......*यदि तू प्यार नहीं कर सकती, तो मुझ पर दया ही कर ...*"

प्रिये,

तेरी प्रेम-दृष्टि मेरी आत्मा की सबसे तूफानी वासना को शान्त करने की ताकत रखती है। तेरे कोमल मधुर शब्द जिन्दगी के इस कडुए प्याले मे अमृत की बूंदो के समान हैं। और कोई दुःख मुझे नही है। है तो यही कि उस सर्वोत्तम सुख से मेरा परिचय रहा है।

हैरियट! अगर उन सबको जो तेरी आँखो की ऊष्ण धूप मे जीने की इच्छा करते है, सब यातनाओं से ऊपर तेरे रोष के प्रहार से मरने की कीमत अदा करनी पडे, तब भी तू अपने उस प्रियतम की बात

---

† हैरियट ने दुख और गरीबी के दिनो मे शैले के साथ विवाह किया, मगर हालत के सुधरते ही शैले उससे विमुख होकर मेरी के प्रेम में पड गया, और उसे तलाक दे दिया। यह पत्र तलाक से पूर्व का है। अन्त मे मेरी को नदी मे डूब कर आत्म-हत्या करनी पडी।

ज़रूर सुनना, चाहे देर से ही, जो कि तेरी घृणा का सबसे बड़ा पात्र है।

तुम उन मानवो मे से बनना, जिनका दिल सख्त है पर किसी का बुरा करने के लिए नही। इस नफरत की दुनिया मे तुम्ही एक उदार, कृपालू व दयावान् व्यक्ति बनना। इस प्रकार तुम अपनी साधारण सहिष्णुता से एक साथी के स्थिर सुख को पक्का बना दोगी।

क्योकि उसके कपोल यातना से पीले पडे है, उसकी सांस तेज चलती है, उसकी आँखो की रोशनी मद्धिम पड गई है; उसके हर बोल मे पहले तेरा नाम उसकी ज़बान पर लड़खडाता है; उसके हाथ-पैर कमजोरी से काप रहे हैं—उस पर दया कर, और किसी घातक इलाज की दुर्दशा उसे न सहने दे।

अरी, तू एक बार भी अपने गलत मार्ग-दर्शक का विश्वास न कर। पश्चात्ताप शून्य भावनाओं को भगा दे। यह ईर्ष्या है, बदले की भावना है, दम्भ है; पर तू तो ऐसी नही हो सकती ? मन के उदार गर्व को सिद्ध हो लेने दे यदि तू प्यार नही कर सकती, तो मुझे पर दया ही कर . !

शैले का एक पत्र मेरी के नाम, व मेरी का एक पत्र शैले के नाम—'विवाह के पश्चात् लिखे गये प्रेम-पत्र'-खड के 'ग' भाग मे उद्धृत हैं।

ग

विवाह के बाद
प्रेमी अथवा प्रेमिका को लिखे गये
इकतर्फ़ा प्रेम के पत्र

जर्मनी का विश्व-प्रसिद्ध कवि, नाटककार, एव विचारक
. 'फास्ट' का रचियता......

—कवि गेटे के नॉम फ्रॉ-वान-स्टीन का पत्र†

" .....जब भी मेरी इच्छा बातें करने की हुई, तुमने मेरे होटों को सी दिया......"

प्रिये,

तुम्हारे पत्र के लिये धन्यवाद, यद्यपि इस पत्र ने मुझे एक से अधिक रूपो मे परेशान किया है। जवाव देने मे मैंने देर की, क्योकि ऐसे मामलो मे तकलीफ न पहुँचाना, और सच्चा वना रहना अत्यन्त कठिन हो जाता है। इटली मे क्या कुछ गुजरा, उसे मैं नही दोहराऊँगी, क्योकि उस विषय मे पहले ही काफी अभिन्नतापूर्ण रूप मे तुम मेरे विश्वास को तोड चुके हो। जव मै पहली बार लौटी तो दुर्भाग्य से तुम एक अजीव तौर मे थे, और मै ईमानदारी से कहती हूँ, कि जिस रूप मे तुमने मुझे लिया वह वहुत ही रज पहुचाने वाला था। हर्डर और डचेस इटली जा रहे थे

---

†स्टीन कई वच्चो की मा थी। गेटे को यह पत्र उसने उस समय लिखा, जव वह उससे विमुख हो कर वलपचुअस के प्रेम मे पड चुका था, जिससे वाद मे उसने विवाह किया।

और उन्होने मुझे अपनी गाडी मे जगह भी दी, पर मै उस मित्र की ख़ातिर ठहर गई, जिसके लिये मैं वापिस लौटी थी; और ऐसा मैने उस समय किया, जब कि मुझे लगातार ताना मारा जा रहा था, कि मुझे भी इटली मे ही रह जाना चाहिए था; और यह कि मुझ मे जरा भी सहानुभूति नही है, आदि आदि । फ़िट्ज से पूछो । हर्डर दम्पति से पूछो । वे मुझ बहुत नजदीक से जानते है । सहानुभूति, सक्रियता एव मित्र-भाव क्या मुझे मे पहले से कम हो गये है ? क्या मैं पहले की अपेक्षा अब उनकी और समाज की ज्यादा नही बन गई हूँ ? यह कोई चमत्कार ही होगा, कि मै अपने सबसे अच्छे व गहरे मित्र, यानी तुमको भूल जाऊ ! जब कभी भी हमने किसी रोचक विषय पर बातचीत की है, मैने अपने मन को पहले जैसा ही पाया है, पर मै साफ-साफ कहती हूँ कि इधर कुछ दिनो से जो व्यवहार तुमने मेरे साथ किया है, वह सहने के क़ाबिल नही रहा है · जब भी मेरी इच्छा बाते करने की हुई तुमने मेरे होटो को सी दिया · जब मैं इटली की बाते बताना चाहती थी, तुम शिकायत करने लगे कि मै उदासीन व लापरवाह हूँ । जब मैं अपने मित्रो के लिये सक्रिय बनती थी तुम अपनी ऐंठ व उपेक्षा से मुझे डाँटते थे । तुमने मेरी हर दृष्टि की आलोचना की, मेरी हर हरकत को दोषपूर्ण बताया और मुझे उकता जाने पर मजबूर कर दिया । भला पारस्परिक विश्वास व खुलापन कैसे कायम रह सकता है, जब तुम पूर्व-निश्चित बदमिज़ाजी से मुझे दूर हटा देना चाहते हो ? मै अभी और लिखूँगी । क्या मैं डरती नही रही, कि तुम्हारी वर्तमान मन.स्थिति मे ये सब बातें शायद दुबारा मित्रता स्थापित करने के बदले तुम्हे और नाराज न कर दे ? कॉफी के बारे मे जो सलाह मैंने तुम्हे दी, उससे तुम दुर्भाग्यवश एक अर्से से घृणा कर रहे हो, और तुमने ऐसा रग-ढग ग्रहण कर लिया है, जो तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है, मानो विशेष सस्कारो पर विजय पाना

पहले ही पर्याप्त कठिन न हो। तुम अपने वातोन्माद को बाहरी चीजो से बढाये जाते हो। इनका बुरा प्रभाव तुम जान और समझ चुके हो। मेरे प्यार के वशीभूत हो कर जब कुछ दिनो के लिये तुमने यह सब छोड दिया था, तो तुम्हारे स्वास्थ्य मे स्पष्ट ही सुधार हुआ था। ईश्वर करे तुम्हारा वर्त्तमान सफर तुम्हे लाभ पहुँचाये। मैं इस आशा को पूरी तरह नही त्याग रही हूँ, कि एक दिन फिर कभी तुम मुझे समझोगे। विदा ! फ्रिट्ज प्रसन्न है, और मुझ से निरन्तर मिलने आता है।*

—फ्रॉ-वॉन-स्टीन

* गेटे के फ्रॉ-वॉन-स्टीन, वल्पचुअस, फ्रैडरिका, शारलौटे तथा कैचन को लिखे गये प्रेम-पत्र— 'विवाह से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र— खड के 'ग' व 'घ' भाग तथा—'विवाह के पश्चात लिखे गये प्रेम-पत्र खड के 'ग' व 'घ' भाग मे उद्धृत है।

: ६३ :

—कवि गेटे का पत्र फ्रॉ-वॉन-स्टीन के नाम[†]

'. .. मै अपने बचाव में कुछ भी नहीं कहूँगा......"

प्रिये,

जितनी पीडा के साथ मैंने पिछला पत्र तुम्हें लिखा था, जिसका पढना शायद तुम्हे उतना ही बुरा लगा हो, जितना बुरा मुझे उसका लिखना लगा था, उससे अधिक पीडा के साथ तुम्हे पत्र लिखना मेरे लिए आसान नही है। इस बीच कम से कम होंट तो खुले, और मैं आशा करता हूँ कि आगे उनको बन्द नही रखा जायेगा। तुम मे जो मेरा विश्वास था, उस विश्वास से बडी खुशी की बात मरे लिये दूसरी कोई नही थी। यह विश्वास पहले असीम था, और क्योंकि पीछे मैं इसका इस्तेमाल करने मे असमर्थ रहा, मैं एक दूसरा ही आदमी बन गया, और भविष्य मे शायद मैं और भी अधिक दूसरा बनूंगा। मैं अपनी वर्तमान

---

† यह पत्र पिछले पत्र का उत्तर है।

स्थिति की शिकायत नही करता। मैंने इसी मे आराम महसूस करना शुरु कर दिया है, और भविष्य मे भी ऐसा करते रहने की मुझे उम्मीद है। यद्यपि जलवायु मुझ पर अपना प्रभाव डालती है, और जल्दी या देरी से, वह मुझे सभी अच्छे कामो के अयोग्य बना देगी, लेकिन जब मै यहा की तर गर्मियो व सख्त सर्दियो तथा अन्य बाहरी परिस्थितियो पर, जो मेरा यहा रहना कठिन बना रहे है, विचार करता हूँ, तो मैं नही समझ पाता कि मैं किधर जाऊ ? मैं यह तुम्हारे बारे मे भी उतना ही कह रहा हूँ, जितना कि अपने बारे मे, और तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ, कि इन परिस्थितियो मे तुम्हे तक्लीफ पहुचाना मुझे बहुत ज्यादा कष्टकर है मै अपने बचाव मे कुछ भी नही कहूँगा पर मैं याचना करता हूँ, कि हमारा यह सम्बन्ध, जिसका तुम विरोध करती हो, जैसा है वैसा ही रहे, और और अधिक न बिगडे। एक बार फिर मुझे अपना विश्वास दो ! विषय पर नैसर्गिक दृष्टिकोण से विचार करो। मुझे इस बारे मे शान्ति-पूर्वक विचार-सगत ढग से बात करने का मौका दो। मैं आशा करता हूँ, कि एक बार फिर हम दोनो के बीच मे पहले की तरह ही, सब कुछ साफ व मित्रता-पूर्ण हो जायेगा। तुम मेरी मा से मिली हो, और तुमने उसे प्रसन्नता दी है। ईश्वर करे लौट कर मैं भी प्रसन्नता प्राप्त कर सकूं।*

---

* गेटे के चार अन्य स्त्रियो—वलचुअस, फ्रैडरिका, शारलौटे तथा कैंचन को लिखे गये प्रेम-पत्र—'विवाह से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'ग' व 'घ' भाग तथा—"विवाह के पश्चात् लिखे गये प्रेम-पत्र—खड के 'घ' भाग मे उद्धृत है। फ्रॉ-वॉन-स्टीन द्वारा गेटे को लिखा गया एक प्रेम पत्र इसी खड के इसी भाग मे अन्यत्र उद्धृत है।

रॉयल-ज्योग्रैफिकल-सोसाइटी का प्रधान, जिसने दो वार हिमालय पर्वत पार किया, और एक नये दर्रे का पता लगाया.. विश्व का महान घुमक्कड़ ......

—फ्रान्सिस यग हसबैड का पत्र ? के नाम†

"......तुम्हे सब कुछ बताकर मुझे शान्ति मिली है......"

गुलमर्ग
२३-२-१८९२

प्रिये,

पिछले कुछ दिनो मे हम दोनो ने एक दूसरे को काफी देख-समझ लिया है, और हम परस्पर मित्र बन गये हैं। मै अनुभव करता हूँ कि मुझे अपने जीवन की वह बडी बात तुम्हे बता देनी चाहिए, जिसके बारे मे तुम से जबानी तो मै कह नही सकता, पर चाहता हूँ कि वह तुम्हे पता जरूर लग जाये।

आठ साल हुए जब मै एक मामूली सहायक था, और बहुत ही छोटा था, मैं एक लड़की के प्रेम मे पड गया। जब मैंने समझा कि उस

---

†जिस स्त्री को यह पत्र लिखा गया उसके नाम आदि के बारे मे कोई पता नही चलता।

समय विवाह करने का कोई लाभ नही, तो मै अपनी स्थिति को अच्छा बनाने मे लग गया, और मैंने यह यात्रा करने का काम पकडा । चार साल बाद जब कि मै अपनी पहली बडी यात्रा कर चुका था, मैंने किसी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा । उस समय तो मुझे अस्वीकार कर दिया गया, पर बाद मे स्वीकार कर लिया गया। जब मेरे माता-पिता ने इस सम्बन्ध के बारे मे सुना तो वे इसके एकदम विरुद्ध हो गये । स्वभावत ही उनका शायद यह विचार था कि यह सम्बन्ध मेरे उज्ज्वल भविष्य को बर्बाद कर देगा । रिश्ते को तोड दिया गया, और फौरन ही मैं अपनी दूसरी यात्रा पर निकल पडा । कुछ महीने मै भारत मे रहा, और तब मैं अपनी पिछली यात्रा पर ही दोबारा चल पडा । जब मैं मार्ग मे था, तो मेरे माता-पिता ने लिखा, कि उन्हे मेरे विवाह कर लेने पर अब कोई आपत्ति नही रही है । मैंने लडकी के सामने फिर प्रस्ताव रखा । उत्तर के लिए मुझे साढे चार महीने प्रतीक्षा करनी पडी । तब मैंने सुना कि उसकी मँगनी किसी और से हो गई है ! इसके पाच दिन बाद मुझे समाचार मिला कि अचानक ही मेरी माँ की मृत्यु हो गई है ! इन दो धक्को नें मुझे ऐसा तोडा, कि मैं अब तक नही सँभल पाया हूँ, और तब से, जब भी मैं किसी काम मे व्यस्त नही होता, अपने को घबराया हुआ सा, और अनिश्चित मन पाता हूँ । मैं इतना ज्यादा अकेला रहा हूँ, कि अब अकेलेपन से और स्वय अपने से, काप कर मैं पीछे हटने लगा हूँ । तुम नही समझोगी कि यह अनुभव करके मुझे कितना आराम मिला हे, कि आखिर मेरे पास एक मित्र तो ऐसा है, जो मेरे मन की सब जानता है । मै बिल्कुल ठीक हूँ, मजबूत हूँ, खुश हूँ, और निराश अथवा उत्साहहीन होने का, अथवा जीवन के अन्धकारपूर्ण पक्ष की ओर ही देखने का मुझे कोई कारण नही है । बात सिर्फ इतनी है, कि कभी-कभी मैं थोडा कमजोर सा महसूस

करता हूँ, और वास्तव मे तुम्हे सब कुछ बता कर मुझे शान्ति मिली है

मैं अपने से सघर्ष कर रहा हूँ, कि मै अतीत के सपनो और अपने हृदय की इच्छाओ को भूल जाऊँ, और अपने रोजाना के जीवन मे घुलमिल जाऊँ, पर मै स्वय को उसके लिए तैयार नही कर पाता। मेरे खयाल इधर-उधर भटक जाते है, और यह इच्छा, कि कोई एक ऐसी हो, जो पूरी तरह मेरी अपनी बन जाये, इतनी उग्र हो उठती है कि मैं सहन नही कर सकता। मैं ऐसा अनुभव करता हूँ, जैसे दौड मे मेरी सारी ताकत चुक गई है...पर मैं निराश नही हूँ, और जानता हूँ कि जिन्दगी मे कितना रस और आनन्द है। जिस दिन वह प्यार मेरे जीवन से छीन लिया गया, मेरी शक्ति भी जैसे चली गई, और तब से अकेला खडा होना मेरे लिए कठिन ो गया है।*

* फ्रान्सिस के इस प्रेम के आगे फलने-फूलने का ब्योरा नही मिलता।

: ६५ :

फ्रान्स की प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका तथा आलोचक, जिसने अपना जनाना नाम, जनाने कपडे और स्त्री-स्वभाव—हर जनानी चीज को धता बताकर, अपनी जिन्दगी मर्दो की तरह बिताई......

—जॉर्ज सैंड (मैडम डूडेवेन्ट) का पत्र डा० पेजिलो के नाम†

"......शायद तुम इस विचार को लेकर पले हो, कि स्त्रियों मे आत्मा ही नहीं होती......"

ग्रीष्म १८३४

प्रिये,

हम भिन्न देशो मे पैदा हुए है । न हमारे विचार एक है, न भाषा एक । शायद दिल ही है, जो एक दूसरे से मेल खाते है ।

जिस ठंडी और धुंधली जलवायु से मै चली आ रही हूँ, उसने मुझ मे उदार और उदास भावनाये भर दी है । उस उदार सूरज ने, जिसने तुम्हारा रग तावे जैसा बना दिया है, तुम मे कौन सी लालसाये भरी है ? मै जानती हूं प्यार कैसे किया जाता है, और दुख कैसे सहा जाता है ? और तुम, तुम प्यार के बारे मे क्या जानते हो ?

---

†सैंड एक कम-उम्र लडके एल्फ्रेड को साथ लेकर इटली चली गई । जब वह वहाँ बीमार पडा तो उसके इलाज के लिये जिस डा० पेजिलो को बुलाया, उसी के प्रेम मे पड गई । एक पुराने प्रेमी की रोग-शैया के पास बैठकर, एक नये प्रेमी को उसने यह पत्र लिखा ।

तुम्हारी नजरो का भावावेश, तुम्हारी बाँहो की कठोर पकड, तुम्हारी कामना की उत्तेजना, मुझे आकर्षित भी करती है, और मुझे डराती भी है। मै नही जानती कि तुम्हारे भावोद्रेक का विरोध करूँ या उसकी हिस्सेदार बनूँ? मेरे देश मे इस तरह प्यार नही किया जाता। तुम्हारे बराबर मे खडी हुई, मै एक पीली मूर्ति के सिवाय और कुछ भी तो नही, जो तुम्हे कामना, परेशानी व आश्चर्य के साथ देखती है। मै नही जानती कि तुम मुझे सच्चा प्यार करते हो अथवा नही। मै यह कभी भी नही जान पाऊँगी। तुम कठिनाई से ही मेरी भाषा के गिने-चुने शब्द बोल पाते हो, और मैं भी तुम्हारी भाषा इतनी काफी नही जानती, कि ऐसे गभीर प्रश्नोत्तर कर सकूँ। यदि मैं तुम्हारी भाषा अच्छी तरह जानती होती भी, तो भी मैं स्वय को तुम्हे समझा न पाती। जिन लोगो के बीच हम रहे, और जिन लोगो ने हमे पढाया-लिखाया, वे निस्सन्देह इस बात का कारण है, कि हमारे विचार, हमारे भाव और हमारी जरूरते एक दूसरे से इतनी भिन्न हो गई है, कि उन्हे समझा नही जा सकता। मेरा दुर्बल स्वभाव और तुम्हारी उत्तेजनापूर्ण प्रकृति निश्चय ही भिन्न विचार पैदा करेगी। हजारो बहुत तुच्छ बाते, जो मुझे परेशान कर देती है, उनसे शायद तुम परिचित भी न हो, और शायद तुम उनसे घृणा करो, और जिन बातो पर मैं रो पडती हूँ, उन्हें शायद तुम हसकर उडा दो। शायद तुम यह भी न जानते हो कि आँसू किसे कहते हैं! मेरे लिए तुम एक सहारा बनोगे या एक मालिक? तुमसे मिलने से पहले जो पाप मैंने किये है, क्या तुम मुझे उनके लिए सान्त्वना दोगे? क्या तुम जानते हो मै क्यो रजीदा रहती हूँ? क्या तुम दया, सहिष्णुता और मित्रता को समझते हो?...शायद तुम इस विचार को लेकर पले हो कि स्त्रियो मे आत्मा ही नही होती - क्या तुम जानते हो कि उनमें आत्मा होती है? तुम न इसाई हो न मुसलमान, न सभ्य

- -

न असभ्य। क्या तुम मानव हो ? उस पुरुषत्व-पूर्ण छाती के पीछे, उन उत्तम भौहो के पीछे, उन शेर जैसी आँखो के पीछे क्या है ? क्या कभी तुम्हारे हृदय मे एक अधिक उच्च, अधिक वढ़िया भ्रातृत्व का पवित्र भाव पैदा होता है ? जब तुम सोते हो, तो क्या तुम सपना देखते हो कि स्वर्ग की तरफ उडे जा रहे हो ? आदमी जब तुम्हे हानि पहुँचाते है, क्या तब भी तुम भगवान मे अपना विश्वास कायम रखते हो ? मै तुम्हारी साथिन बनूँगी या तुम्हारी लौडी ? तुम मेरी कामना करते हो या मुझसे प्यार करते हो ? जब तुम्हारी वासना तृप्त हो जायेगी तो क्या तुम मुझे धन्यवाद दोगे ? जब मै तुम्हे प्रसन्न बना चुकी हूँगी, तब क्या तुम मुझे यह बता सकोगे ? क्या तुम जानते हो मैं क्या हूँ, और यह न जान कर तुम्हे परेशानी तो नही होती ? तुम्हारी नजरो मे मै वह अनजान औरत हूँ, जिसके सपने लिए जाते हैं, और जिसे खोजा जाता है, या वह जो रनिवासो मे पडी मुटाया करती हैं ? तुम्हारी आँखो मे, जिनमे मुझे एक स्वर्गीय चमक दीखती है, क्या उस वासना के सिवाय और कुछ भी नही, जिसे ऐसी औरते उद्दीप्त करती हैं ? क्या तुम आत्मा की उस वासना से परिचित हो, जिसे समय शान्त नही कर सकता, और ज्यादती जिसे मार या थका नही सकती ? जब तुम्हारी प्रेयसी तुम्हारी बाँहो मे सोती है, तब क्या तुम भगवान से प्रार्थना करने, रोने, और उस की निगरानी करने के लिए जागते हो ? प्यार का आनन्द तुम्हे हँफा देता है और क्रूर बना देता है, या तुम एक दैवी परमानन्द को अनुभव करने लगते हो ? अपनी प्रेयसी के आलिंगन से अलग होते समय तुम्हारी आत्मा तुम्हारे शरीर पर हावी हो जाती है या नही ? जब मै तुम्हे अलग शान्त पडे देखूँगी उस समय तुम मुझे विचार-मग्न मिलोगे या आराम करते हुए ? जब तुम्हारी नजरे झुकी हुई होगी, तब वे कोमलता

के कारण झुकी होगी या थकावट के कारण ? शायद तुम सोचते हो, कि न मै तुम्हे समझती हूँ और न ही तुम मुझे। मै न तुम्हारे पिछले जीवन से परिचित हूँ, न ही तुम्हारे चरित्र से; न इस बात से कि तुम्हारे परिचित तुम्हारे बारे मे क्या सोचते है। शायद तुम उनमे सबसे आगे हो, और शायद सबसे आखिरी। बिना जाने कि मै तुम्हारी इज्जत भी कर सकती हूँ या नही, मै तुम्हे प्यार करती हूँ। मै तुम्हे प्यार करती हूँ, क्योकि तुम मुझे अच्छे लगते हो, और शायद एक दिन मै तुम्हे नफरत करने पर भी मजबूर हो जाऊँ। अगर तुम मेरे देश के आदमी होते, तो मै तुमसे सवाल करती और तुम मुझे समझते। पर शायद मै और भी ज्यादा दुख उठाऊँगी, क्योकि तुम मुझे गुमराह करोगे। कुछ भी हो, कम से कम तुम मुझे धोखा नही दोगे, झूठे वादे नही करोगे, और झूठी कसमे नही खाओगे। तुम मुझे वैसा ही प्यार करोगे, जैसा कि तुम प्यार को समझते हो, या जैसा कि प्यार तुम कर सकते हो। जो कुछ मैने दूसरो मे खोजा है, शायद मुझे तुममे भी न मिले, लेकिन मै इस बात का विश्वास कर सकती हूँ, कि वह तुममे है। इन नजरो के, प्यार के उन चुम्बनो के, जिन्होने दूसरो को समझने मे सदा ही मुझे धोखा दिया है, मुझे तुम इजाजत दोगे कि मैं उनके बिना छलपूर्ण शब्दो का इस्तेमाल किये, जैसे चाहूँ अर्थ लगाऊ। मै तुम्हारे दिवास्वप्नो के अर्थ लगाऊगी, और तुम्हारी खामोशियो को कलरव से भर दूंगी। तुम्हारे कार्यो को मैं वह उद्देश्य दूंगी जो मैं चाहती हूँ कि उनका हो। जब तुम कोमलता से मेरी ओर देखोगे तो मैं समझूँगी कि तुम्हारी आत्मा मेरी आत्मा को निहार रही है, और जब तुम आकाश की ओर देखोगे तो मै समझूँगी कि तुम्हारा मन उस अनन्त की ओर उन्मुख हो रहा है, जहाँ से वह पैदा हुआ है। हमे ऐसा ही रहने दो। मेरी भाषा मत सीखो, और मैं तुम्हारी भाषा मे वे शब्द नही ढूंढूंगी, जिनसे मै अपने सन्देहो

और भावो को व्यक्त कर सकूँ। मै नही जानना चाहती, कि तुम अपनी जिन्दगी का क्या करते हो, और अपने साथियो से कैसा व्यवहार करते हो ? मैं तुम्हारा नाम तक नही जानना चाहती ! अपनी आत्मा को मुझमे छुपाये रखो, जिससे मै सदा ही उसे खूबसूरत समझती रहूँ।...

*सैंड, डा० पेजिलो को अपने साथ फ्रान्स ले आई, और ऊब जाने पर उसे भी छोड दिया। उस समय डॉक्टर के पास दूसरे वक्त खाना खाने के लिए भी पैसे नही थे !

इगलैड का वह विश्व-प्रसिद्ध कवि, जो जितना कि एक दूसरे देश के स्वतन्त्रता-युद्ध में अपने प्राण होम देने के लिये प्रशंसनीय है, उतना ही अपने दायित्व-हीन प्रेम-सम्बन्धों के कारण बदनाम......

—कवि बायरन का पत्र लेडी केरोलिन के नाम†

"......*भगवान जानता है, मैं तुम्हें प्रसन्न देखना चाहता हूँ......*"

अगस्त १८१२

मेरी प्रियतमा कैरोलिन,

अगर वे आँसू जो तुमने देखे, और तुम जानती हो जिन्हे मैं न बहा पाता, यदि जिस मानसिक खलबली मे हम दोनों जुदा हुए, वह जुदा होने का क्षण आने तक मुझ मे न पैदा हो गई होती। तुमने इस हडबडाहट भरे सारे मामले मे मेरी उत्तेजना साफ देखी होगी। अगर जो कुछ मैंने कहा और किया है, और जिसे कहने व करने को मैं सदा ही तैयार हूँ, उन मेरी सच्ची भावनाओ को जो हमेशा अपनी प्यारी के प्रति ऐसी ही रहेगी, तुम्हारी नजरो मे सच्चा सावित करने के लिए यह काफी नही है, तो और कोई सबूत मेरे पास नही है . भगवान जानता

†बायरन अपनी इस अंग्रेज प्रेमिका के कारण ही सब से अधिक बदनाम हुआ, और उसकी पत्नी ने उसे तलाक़ दे दिया।

है मै तुम्हे प्रसन्न देखना चाहता हूँ. और जब भी तुमसे बिछुडता हूँ, अथवा अपनी माता एव पति के प्रति कर्त्तव्य-भावना के कारण जब भी तुम मुझसे अलग होती हो, तो मेरी इस बात की सच्चाई को तुम मानोगी, जिसका मै बार-बार तुम्हे वचन देता हूँ, कि किसी भी और को कर्म और वचन से मेरे हृदय मे वह स्थान नही मिलेगा, जो तुम्हे मिला है ! और जो तब तक तुम्हारा रहेगा, जब तक कि मै मिट्टी नही बन जाता ! इस क्षण तक मै अपनी प्रियतमा और अपनी सबसे प्यारी सखी के पागलपन को पहचान नही सका था। मै अपनी भावनाओ को व्यक्त नही कर सकता। यह बातें बनाने का समय है भी नही। लेकिन उस यातना के सहने मे एक गर्व, एक अवसाद-पूर्ण खुशी का अनुभव मै करूँगा, जिस की कल्पना तक तुम कठिनाई से ही कर पाओगी, क्योकि तुम मुझे नही जानती। मै एक भारी दिल लेकर बाहर जा रहा हूँ, क्योकि सन्ध्या समय मेरे आने से लोगो के बीच उठी वह बकवास बन्द हो जायेगी, जो शायद दिन की घटनाओ को लेकर पैदा हुई हो। क्या अब भी तुम सोचती हो कि मै उदासीन हूँ, कठोर हूँ, और बनता हूँ ? क्या दूसरे भी ऐसा ही सोचेगे ? क्या तुम्हारी माँ भी कभी ऐसा सोचेगी? —वह माँ जिसके लिए हमे बहुत अधिक त्याग करना चाहिए, और मुझे तो और भी ज्यादा, इतना जिसे न वे जान सकेगी और न कल्पना ही कर सकेगी। 'तुम्हे प्यार न करने का वादा करू'—हाय कैरोलिन यह बात वादा करने से परे की बात हो गई है। लेकिन मै सब अवसरो का उपयोग उचित उद्देश्य के लिए ही करूगा, और वह सब अनुभव करने से नही रुकूँगा, जो तुम पहले ही देख चुकी हो, और यह मेरे और तुम्हारे दिल के सिवाय और किसी को भी ज्ञात नही हो सकेगा। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे, तुम्हे क्षमा करे, और तुम्हे आशीर्वाद दे ! सदा, और सदा से भी अधिक तुम्हारा सर्वाधिक प्यारा ! *

—बायरन

*बायरन के पत्नी इसाबेला व काउन्टस गाईकोली को लिखे गये दो पत्र इसी खड के 'क' भाग व हैनरिटे विल्सन द्वारा बायरन को लिखा गया एक पत्र इसी खड के 'घ' भाग मे उद्धृत है।

सुन्दर स्त्रियाँ भीतर रहे . बायरन बाहर है.....

—बायरन का पत्र काऊन्टेस गाईकोली के नाम†

"......प्यार की क्रूरताये मै बहुत काफी सह चुका हूं......"

काऊन्टेस गाईकोली की सेवा मे , वेनिस
२५-४-१८१९

मेरी प्यारी,

मेरा २२ तारीख का पत्र तुम्हे मिल गया होगा। यह पत्र मैंने रेवन्ना के उस आदमी के ही जरिये भेजा था, जिसका पता तुम वेनिस से जाते समय मुझे दे गई थी। तुमने मुझे डाँटा है, कि मैने तुम्हें पत्र क्यों नही लिखा ? पर बताओ तो मै लिखता तो कैसे ? मेरी मधुरतम निधि ! रेवन्ना के सिवाय और कोई पता तुमने मुझे दिया ही कब ? अगर तुम

---

†काऊन्टेस की आयु उस समय केवल १८-१९ वर्ष थी, और वह अपनी पति के साथ यात्रा पर गई हुई थी, जब कि बायरन ने यह पत्र उसे लिखा। बायरन की विदेशी प्रेमीकाओ मे गाईकोली का स्थान विशेष है।

जानती कि मेरे हृदय मे तुम्हारे लिये कितना गहरा प्रेम है, तो तुम यह कभी न सोचती कि पल भर के लिये भी मैं तुम्हे भूल सकूँगा ! तुम्हे मेरे बारे मे और अधिक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। शायद एक दिन तुम्हे पता लगे, कि यद्यपि मैं तुम्हारे योग्य नही था, पर मैने प्यार तुम्हे अवश्य किया !

तुमने जानना चाहा है, कि तुम्हारे चले जाने के बाद किसकी सगति मे मुझे सबसे अधिक सुख मिला है ? किसे देख कर मै सिहर उठा हूँ, और किसे पास पाकर मैंने—बिल्कुल वही तो नही जो तुमने मेरे प्राणो मे उत्पन्न की है—पर कुछ-कुछ वैसी ही अनुभूतियाँ अनुभव की है ? लो मै तुम्हे बताता हूँ। ऐसा आदमी वह बूढा नौकर ही है जिसके हाथ फैनी तुम्हारें वेनिस रहते हुये तुम्हारी चिट्ठियाँ भेजा करती थी, और जो अब भी तुम्हारे पत्र लाता है। तुम्हारे अजकल के पत्र मुझे प्रिय तो है, पर उन पत्रो जितने प्रिय नही जो उसी दिन निश्चित समय पर तुम्हारे मिलने की आशा मेरे हृदय मे पैदा करते थे। मेरी टैरेसा ! तुम कहा हो ? यहॉ की हर चीज मुझे तुम्हारी याद दिलाती है। यहा की हर चीज वैसी ही है, केवल तुम्ही यहाँ नही हो, और फिर भी मैं यहा हूँ। विरहावस्था मे बाहर जाने वाले को वहॉ ठहरने वाले से कम कष्ट सहना पडता है । यात्रा, बदले हुए नजारे, प्रकृति की सुन्दरता, घूमना-फिरना और शायद स्वय प्रिय का वियोग भी—ये सब बाते बाहर जाने वाले के मन को बाट लेती है, और उसके दिल को हल्का कर देती हैं, लेकिन वही ठहर जाने वाला उन्ही सुपरिचित चीजो से घिरा रहता है। जैसे वह कल घिरा हुआ था, वैसे ही कल भी घिरा रहेगा। बस एक उसी की कमी बनी रहेगी, जिसके साथ रहते हुये मैं भूल जाता था, कि कोई 'कल' भी कभी आएगा ! जब मैं कनरसाजियन जाता हूँ, तो मै वियोग की पीडा से उतना नही जितना एक उकताहट, थकान

ग्रौर मानसिक गिरावट से दुखी हो उठता हूँ । वही परिचित चेहरे देखने को मिलते है, वही ग्रावाज़े सुनने को मिलती हैं, पर उस सोफे की तरफ देखने की मेरी जरा भी हिम्मत नही होती, जिस पर तुम तो अव वैठी मिलोगी नही, तुम्हारे स्थान पर शायद कोई बूढी खूसट वैठी दीखे, जिसे देख कर मन बहुत ही कसैला हो उठे ! मै हल्की से हल्की भावना से भी रहित हो कर उस द्वार की ग्रोर देखता हूँ, जिसकी ओर अत्यन्त बेचैनी से मै उन दिनो देखा करता था, जिन दिनो तुम्हारे ग्राने की प्रतीक्षा मुझे रहती थी । ग्रौर भी कितने ही स्थान है, जो मुझे इससे भी अधिक प्रिय है, पर जहा मै तव तक नही जाऊगा, जव तक कि तुम लौट न आओ । तुम्हारे बारे मे सोचने के सिवाय मेरे लिये दूसरी कोई खुशी नही है, पर मै नही जानता कि कैसे, ग्रौर कव, मैं उन सब स्थानो को, विशेष कर उनको जो हमारे प्यार के परम साक्षी है, एक दुख ग्रौर पीडा से मृतप्राय हुए बिना अव फिर देखने जा सकूँगा ।

फैनी ग्रब त्रैविसो मे है ! भगवान जाने तुम्हारे पत्र अव कव मिलेगे ? इस वीच केवल तीन पत्र मुझे मिले है । तुम अव तक रेवन्ना पहुँच चुकी होगी । मैं तुम्हारे यहा पहुचने की सूचना पाने को उत्सुक हूँ । मेरा भाग्य तुम्हारे निर्णय पर निर्भर करता है !

हे मेरी निधि ! मेरा जीवन बडा ही नीरस और दुखपूर्ण हो गया है । न कितावे, न सगीत, न घोडे (तुम जानती ही हो घोडे वेनिस मे दुर्लभ है, ग्रौर मेरे ग्रपने घोडे लीडो में हैं), न कुत्ते ही मुझे आनन्द दे पाते है । स्त्रियो का संग मुझे ग्राकर्षित नही करता । पुरुषो के संग की तो वात ही छोड दो, क्योंकि मैंने उसे सदा ही घृणा की दृष्टि से देखा है । कुछ वर्षो से मैं धीरे-धीरे तीव्र प्रेमोद्रेक से वचने का प्रयत्न कर रहा हूँ । कारण . प्यार की क्रूरताए मैं वहुत काफी सह

चुका हूँ ..प्रशसाओ को बिल्कुल अनुभव न करना, आनन्दोपभोग को स्वय वहुत अधिक महत्त्व दिये बिना, अपने आपको आनन्दित करते रहना, सासारिक हलचलो के प्रति लापरवाही का भाव रखना, उपेक्षा का भाव तो बहुतो के प्रति रखना पर घृणा किसी के लिये भी नही; यही मेरे जीवन-दर्शन के मूल सिद्धान्त बन गये थे। मेरी अब किसी को भी प्यार करने इच्छा नही थी, न ही मुझे किसी का प्यार पाने की आशा थी। लेकिन तुमने मेरे सब फैसलो को धूल मे मिला दिया है। अब मै पूरी तरह तुम्हारा हूँ। मैं वही बन जाऊगा जो तुम चाहोगी। तुम्हारा प्यार मुझे सुख देगा, पर शान्ति तो अब मुझे कभी भी नही मिल सकेगी। तुम्हे मेरी प्रेम-भावना को फिर से नही जगाना चाहिए था, क्योकि मेरा प्यार, (कम से कम मेरे अपने देश मे), जिनसे भी मैंने प्यार किया, उनके लिये भी, और मेरे अपने लिये भी, घातक सिद्ध हुआ है। पर ऐसे विचार मेरे मन मे बहुत देर बाद आ रहे है। तुम मेरी हो चुकी हो, और चाहे कुछ भी परिणाम क्यो न हो, सदा-सदा के लिये पूरी तरह मेरी ही रहोगी। मैं तुम्हारा हजार-हजार बार चुम्बन लेता हूँ!

मेरे प्रिय, इतना प्रिय बनने से तुम्हे क्या लाभ ?
और इतना प्यारा प्रेमी पा लेने से मुझे क्या लाभ ?
क्रूर भावी क्यो उन्हे अलग कर देता है ?
जिन्हे प्यार ने एक बार एक कर दिया है!*

—ग्वारिनी इल पेस्टर फीडो
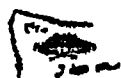
*बायरन के पत्र चोरी से गाईकोली तक पहुँचाये जाते थे, इसीलिये इस पत्र के नीचे बायरन का नाम नही है।

अमेरिका का वह प्रथम राष्ट्रपति जिसने 'स्वतंत्रता की लडाई' जीती, और अमेरिका को इगलैड की दासता से मुक्त किया.....

—जॉर्ज वाशिगटन का पत्र सेराह फेयरफैक्स के नाम†

"......मौन, मधुरतम भाषण की अपेक्षा अधिक चतुराई से अपनी बात कह जाता है . ..."

फोर्ट कम्बरलैड का शिविर
१२-६-१७६८

प्रिय श्रीमती,

कल मै तुम्हारा बहुत बढिया, छोटा पर बहुत ही सुन्दर कृपा-पत्र पाकर कृतार्थ हो गया। कितनी खुशी के साथ इस शुभ अवसर का लाभ उठाकर मै इस पत्र-व्यवहार को फिर से आरम्भ करता हूँ, जिसके बारे मे मुझे डर हो गया था, कि तुम अपनी ओर से उसे नापसन्द करती हो। मै सब चीजो को अविफल रहस्योद्घाटन करने वाले समय पर, और अपने हृदय की वफादार प्रेरणाओ पर छोडता हूँ, कि वे मेरी गवाही दे। मैं अब चुप रह कर अपनी खुशी जाहिर करता हूँ, क्योकि कुछ मामलो मे—और मै समझता हूँ कि वर्तमान स्थिति मे अवश्य . मौन मधुरतम भाषण की अपेक्षा अधिक चतुराई से अपनी

बात कह जाती है

यदि तुम मानती हो कि मेरे अपनी वर्तमान व्यवस्था का विरोध करने से प्रतिष्ठा मिल सकती है, तब तुम कैसे, मेरी दृष्टि मे जो इस बात का महत्त्व है, उसे यह कह कर पूरी तरह नष्ट कर डालती हो, कि मेरी चिन्ताओ का कारण श्रीमती कस्टिस को प्राप्त करने की उत्तेजक सम्भावना मात्र है, जब कि—मुझे नाम बताने की जरूरत नही—तुम स्वय अनुमान कर लो। मेरी अपनी इज्जत और देश का हित क्या मेरी उत्तेजना का कारण नही होना चाहिए ? यह सच है कि मै अपने आपको प्रेम का पुजारी कहता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ, कि एक स्त्री इस मामले से सम्बद्ध है, ओर वह तुमसे परिचित भी है। हा श्रीमती, वह स्त्री किसी के लिये ऐसी है, कि वह उसके आकर्षणो के प्रति पूरी तरह सचेत है, और उसके प्रभाव की शक्ति से इन्कार नही कर सकता, व उसके सामने सदा ही घुटने टेकता रहेगा। मै उसके मधुर सौन्दर्य की ताकत को उन हजारो पक्तियो के स्मरण मे अनुभव करता हूँ, जिन को मै तब तक के लिए भुला डालना चाह सकता था, जब तक कि वे मुझे दुबारा न याद कराई जाये। लेकिन, अफसोस ! अनुभव बताता है कि ऐसा करना असम्भव है, और इससे मेरा यह चिरस्वीकृत विचार दृढ होता है कि हमारे सभी कार्यो पर भाग्य का पूर्ण नियन्त्रण है, और मानव-प्रकृति के सबलतम प्रयत्न भी भाग्य का मुकाबला नही कर सकते।

प्रिय श्रीमती, तुमने मुझसे अथवा मैने ही स्वय से एक साधारण तथ्य की सच्ची आत्म-स्वीकृति करा ली है। मेरे कहने का गलत मतलब मत लगाना, न ही इस कहे पर शक करना, और न इसे जाहिर करना। दुनिया क्यो मेरे प्रेमास्पद को जाने, जिसे मैंने तुम पर इस ढग से प्रकट किया है, और जिसका नाम मै छुपाना चाहता हूँ। दुनिया की सब बातो मे बढ कर मैं एक बात जानना चाहता हूँ, और तुम्हारी पहचान

का सिर्फ एक आदमी मेरी समस्या हल कर सकता है, अथवा मेरा मतलब समझ सकता है, पर इन बातो को उन सुख के दिनो के आने तक नमस्कार ! जो पता नही मेरे लिए कभी आयेगे भी या नही ! यह प्रस्तुत समय तो बड़ा ही उदासीनता एव सुस्ती भरा है। न तो युद्ध का कठोर परिश्रम और न नृत्य सभाओ के मीठे सघर्ष ही मेरी रुचि के विषय बन पाते है। मैं यकीन करता हूँ, जैसा कि तुम कहती हो, तुम खुश हो। कही मैं भी खुश हो सकता ! आमोद-प्रमोद, दिल्लगी, मन का हल्कापन और सब कुछ तुम्हे खुश बनाने और तुम्हारी इच्छाओ को पूरा करने मे विफल नही हो सकते।

मेरा पिछला सन्देशवाहक एक अनुचित जल्दबाजी मे था, और यदि उसके कारण मैं तुम्हारे एक शब्द से भी, जिसे तुम अपनी चिट्ठी मे बढाना चाहती थी, वञ्चित रह गया, तो मैं अपने आप को क्षमा नही कर सकता। यह वर्तमान सन्देशवाहक, जैसा कि पहले को भी होना चाहिए था, पूरी तरह तुम्हारी छुट्टी पर है। मै जब तक इस वर्तमान अभियान का भविष्य किसी न किसी तरह निश्चित न हो जाये, इस एक बार के सिवाय फिर अपने मित्रो की कोई सूचना प्राप्त नही कर सकूंगा। इसलिए मै जानना चाहता हूँ कि तुम हैम्पटन के लिये कब कूच करोगी और तुम्हारे वापिस वेलवियर लौटने की कब आशा है ? मुझे तुम्हारे जल्दी ही कूच कर देने की खबर सुन कर खुशी होगी, क्योकि मै चाहूँगा कि मेरे लौटने से पहले ही तुम भी लौट आओ। तुम्हारे परिवार से मिल पाने पर मुझे बहुत चिन्ता हो जायेगी। जो कुछ भी मै देख रहा हूँ, उसके आधार पर यह कहना, कि कब तक सब कुछ समाप्त हो जायेगा, बहुत ही कठिन है। मै समझता हूँ नवम्बर के अन्त तक ऐसा होने की कोई सम्भावना नही है। जिस क्षण कप्तान जिस्ट के नाम मुझे तुम्हारा पत्र मिला, उसी क्षण मैंने उसे सुरक्षित हाथो उसके पास भिजवा दिया।

उसका उत्तर बहुत होशियारी के साथ तुम्हारे पास भिजवा दिया जायेगा।

कर्नल मर्सर, जिसे मैने तुम्हारा सन्देश व अभिनन्दन दे दिया था, मेरे साथ मिलकर तुम्हारे और वेलवियर की दूसरी स्त्रियो के लिए कामना करता है, कि तुम सब ससार मे मिलने वाले सभी सुखो को भोगो ! विश्वास रखो प्रिय श्रीमती, कि मै तुम्हे अपना निश्छल सम्मान अर्पित करता हूँ, और तुम्हारा सर्वाधिक आज्ञाकारी एव अनुगृहित तुच्छ सेवक हूँ।

—जॉर्ज वाशिगटन

अंग्रेजी रोमान्टिक कविता का सिरताज, जिसने बालिग न होते-होते दो-दो प्रेमिकाओं से प्रेम-विवाह कर लिया......

— कवि शैले के नाम मेरी का पत्र†

"......तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा करने का धीरज भी मुझमें नहीं है. ..."

क्लिफ्टन
२७ जुलाई, १८१५

मेरे प्यारे शैली,

जो कुछ मै अब लिखने जा रही हूँ, वह घबराहट के आवेश मे पैदा हुई मेरी कोई सनक नही है। मै हृदय से प्रार्थना करती हूँ, कि तुम मेरी बात पर ध्यान दो और मेरा कहा करो।

हमे अब बिल्कुल भी अलग नही रहना चाहिए; निश्चय ही नही। मेरे लिये यह सुख की बात नही है। जब मैं अपने कमरे मे आराम करने पहुँचती हूँ, तो मुझे तुम्हारा मधुर प्यार

---

†शैले ने अपनी पहली पत्नी हेरियट को अभी तलाक नही दिया है। वह मेरी को अपने साथ योरप ले गया है, जहाँ वे अविवाहित होते हुए मित्र-साथ-साथ रह रहे हैं। शैली एक उपयुक्त मकान की तलाश मे है।

नही मिल पाता। भोजन के बाद भी प्रिय शैली के दर्शन नही होते। ढेर की ढेर बाते है, जो मै सिर्फ तुम से कहना चाहती हूँ। या तो तुम फौरन चले आओ, या मुझे ही अपने पास बुला लो। तुम कहोगे कि क्या हम एक घर, अपना एक प्यारा घर, तलाश न करे? नही मेरे प्रियतम! मैं दुनिया की किसी भी वस्तु के लिए उस घर की उपेक्षा नही करूँगी, पर विश्वास करो, लन्दन मे घर तलाश करना एक बहुत-बहुत लम्बा काम है, और एक प्रिया की अनुपस्थिति मे इतना लम्बा काम प्रिय को हाथ मे नही लेना चाहिए। प्रियतम! मै जानती हूँ कि क्या होगा। हम दोनो का मिलना दिन पर दिन टलता जायेगा। हर दिन, अगले दिन सफलता मिलेगी, इस आशा के साथ बीत जायेगा। पर मै घबरा उठी हूँ। कब तक ऐसा चलता रहेगा? मेरे अपने प्रियतम तुम इस दृष्टि से क्यो नही सोचते? हमे अलग हुए एक बहुत लम्बा समय बीत गया है, और घर अभी तक नही मिल सका है। अगर तुम कोई एक घर चुन भी लो, मुझे कोई आशा नही कि तुम एक सप्ताह के भीतर-भीतर ऐसा कर सकोगे—तो शेष मामले तय करने मे और देर लगेगी। मेरे प्रियतम! सच यह है, कि मैं तुम्हारे बिना इतने दिन अकेले रहना सहन नही कर सकती। इसलिए यदि तुम मुझे वहाँ आने की अनुमति नही दोगे, तो मैं बिना अनुमति के ही किसी भी दिन वहाँ पहुँच जाऊँगी। इस निराशाजनक स्थिति मे दिन पर दिन गुजारे चले जाने से मै तग आ चुकी हूँ।

कल २८ जुलाई है। प्रियतम क्या इस दिन हमे एक साथ नही होना चाहिए? मेरे प्रिय! इस दिन निश्चय ही हमे एक जगह होना चाहिए। यदि हम पास नही होगे, तो मै आँसू बहाऊँगी। मेरे प्रिय! नाराज न होना। तुम्हारी पैक्सी एक अच्छी लडकी है, और अब बिल्कुल ठीक है। सिवाय उस सिर-दर्द के जो अपने प्रियतम के

पत्रो की उत्सुक प्रतीक्षा करने के कारण उसे हो जाता है।

प्रियतम, अच्छे शैली ! कृपा करके मेरे पास आ जाओ ! मैं प्रार्थना करती हूँ, बार-बार प्रार्थना करती हूँ, कि मुझ से दूर न रहो ! बडा ही सुहाना मौसम है, और अच्छा हो कि हम 'टिन्टर्न-ऐबे' की मनोरजक और आनन्ददायक सैर के लिए चलें। मेरे प्रिय प्रियतम ! मैं आँखो मे आँसू भर कर उत्कण्ठापूर्वक प्रार्थना करती हूँ, कि यदि तुम घर की तलाश का काम छोड नही सकते तो मुझे ही अपने पास आने की अनुमति दे दो।

.. तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा करने का धीरज भी मुझ मे नहीं है...कल तुम्हारा समाचार शायद मिले, लेकिन मुझे उसकी आशा नही है, क्योकि तुम दिन के एक बजे के बाद खोज के लिये निकलते हो, और भला दिवस के उन कुछ घन्टो मे हो ही क्या सकता है ?*

तुम्हारी
—मेरी

*शैली का हेरियट के नाम एक पत्र इसी खड के 'ख' भाग मे उद्धृत है। मेरी के नाम लिखा हुआ उसका एक अन्य पत्र भी इसी खड के इसी भाग मे अन्यत्र उद्धृत है।

. ७० .

—शैले का पत्र मेरी के नाम†

" ...वह अपने भरे यौवन में ही कट कर गिर जायेगा .

लन्दन,

अक्तूबर २५ १९१४

प्रियतमे मेरी !

आज रात मै तुमसे मिलूंगा। डरो मत, मेरा पक्का विश्वास है कि हमारे कष्टो का अन्त उत्तम व सौभाग्यपूर्ण होगा। तुमसे अलग और तुमसे दूर, मैं अत्यन्त दीन व दुखी हूँ। हमारे लिए कभी एक दूसरे से अलग होने का क्षण भी आ सकता है, यह सोचते ही मैं बेचैन और पागल हो उठता हूँ। हमारे जब-तब मिलने की बात बहुत ही गुप्त रहनी चाहिए। यह बहुत ही जरूरी है। याद रखना, यदि लोगो ने तुम्हे मेरी ओर झुकते हुये देख लिया, तो मै कही का भी न रह जाऊंगा !

†मेरी के नाम शैले का यह पत्र, मेरी के उसके साथ लन्दन छोडने से पूर्व का है।

मैं बेकार इधर से उधर घूमता रहता हूँ। मै न कुछ पढ पाता हूँ, न ही लिख पाता हूँ। मेरे मन की हालत बहुत नाजुक हो गई है। लेकिन ऐसी स्थिति शीघ्र ही समाप्त होगी, इसका मुझे विश्वास है। मै अपनी निराशा-भरी भावनाओ से अपनी प्यारी मेरी को दुखी नही करूगा। मुझे तो चाहिए कि मैं उस को धीरज बधाऊ, क्योकि वह स्वय समस्याओ की भवर मे फसी हुई है।

अच्छा, तो आज रात हम मिलेगे! मै यहाँ अधिक नही लिख पा रहा हूँ, पर मेरे अमर अनन्त, शाश्वत प्यार का ध्यान, तुम यदि करोगी, तो इस पत्र की कमियाँ तुम्हे अखरेगी नही।

यदि हूखम से तुम्हारी भेट हो जाये, तो सब के सामने उसका अपमान मत करना। अभी तक मेरी आशा छूटी नही है। हमे चाहिए कि हम आशा को रच-मात्र भी न छोडे। समय आयेगा। तो मैं इस निर्दय हूखम को ऐसी दयनीय दशा तक पहुचाऊगा, कि वह स्वय अपने से ही नफरत करने लगेगा वह अपने भरे यौवन मे ही कट कर गिर जायेगा उसका अहकार कुचला जायेगा! वह स्वय चूर-चूर हो जायेगा मैं उसकी आत्मा के खण्ड-खण्ड करके उनको सुखा डालूँगा

डरावने जबडो मे फूत्कार करती हुई हत्या"

---
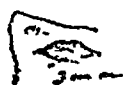
*शैले का लिखा हुआ हेरियट के नाम एक पत्र इसी खड के 'ख' भाग में उद्धृत है। मेरी का लिखा हुआ उसके नाम एक पत्र इसी खड के इसी भाग मे अन्यत्र उद्धृत है।

: ७१ :

विश्व के सब से वडे दो कहानीकारो में से एक–मोपासा – जिसका शागिर्द था–'मैडम बावेरी' लिख कर, फ्रान्सीसी व्यभिचारी जीवन का मानो एनसाइक्लोपीडिया लिख देने वाला ...।

—गस्टेव फ्लाबेयर का पत्र लुइस कालेट के नाम

' . . *उफ् तुम्हारे चेहरे की सुन्दरता ! मेरे चुम्बनों के कारण पीला पडा, कापता हुआ तुम्हारा मुख. ....''*

शनिवार-इतवार मध्यरात्रि
क्रायसट, अगस्त ६, १८४६

प्रिये,

आकाश स्वच्छ है। चाँद चमक रहा है। मै मल्लाहो का सगीत सुन रहा हूँ, उन मल्लाहो का सगीत जो आने वाले ज्वार के साथ कूच कर देने के लिए लगर उठा रहे है। न बादल है न हवा। चाँद की रोशनी मे नदी सफेद लगती है, छाया मे,काली। मेरे इस दीपक पर पतगे मडरा रहे है, और खुली खिडकियो मे से होकर रात की सुगन्ध अन्दर आ रही है। और तुम ? क्या तुम सोई हो ? या अपनी खिडकी पर खडी हो ? क्या तुम उसके बारे मे सोच रही हो, जो कि तुम्हारे बारे मे सोच रहा है ? क्या तुम सपना देख रही हो ?तुम्हारे सपनो का रग कैसा है ?एक सप्ताह पहले ही तो हम 'बाय द बुलग्ने' मे बग्घी मे बैठ मनोरजक सैर कर रहे थे। उस दिन के बाद से सब कुछ कैसा नरक सा लगता है ? दूसरो को तो

उन मजेदार घड़ियो और उनके आगे पीछे की घडियो मे कोई अन्तर नही लगा होगा, पर हमारे लिए तो वह एक ज्योतिर्मय क्षण था, जिस की रोशनी हमारे हृदयो को सदा ही प्रकाशित करती रहेगी। आनन्द और कोमलता से भरा हुआ वह क्षण कितना सुन्दर था! क्या नही था? मेरी प्यारी! यदि मै अमीर होता तो उस बग्घी को खरीद कर अपनी घुड-साल मे रख लेता, और कभी इस्तेमाल न करता! हाँ, मै आऊगा और जल्दी ही, क्योकि मै सदा तुम्हारे ही बारे मे सोचा करता हूँ। मै स्वप्न देखता रहता हूँ; तुम्हारे चेहरे का, तुम्हारे कन्धो का, तुम्हारी सफेद गर्दन का, तुम्हारी मुस्कराहट का, और तुम्हारी आवाज का, जो प्यार की पुकार के समान है, और उत्तेजक, उग्र व मधुर एक साथ है। शायद मैने तुम्हे बताया था, कि मै तुम्हारी आवाज को ही सबसे ज्यादा प्यार करता हूँ।

आज सुबह मै पूरा एक घण्टा डाकिये की प्रतीक्षा मे खडा रहा। वह लाल कालर वाला मूर्ख क्या जानेगा, कि इस दिल मे कितनी धड-कनो का कारण वह बना? तुम्हारे उत्तम पत्र के लिए तुम्हे धन्यवाद! लेकिन मुझे इतना प्यार मत करो, मत करो इतना प्यार। तुम मुझे चोट पहुँचाती हो। क्या तुम नही जानती, कि अत्यधिक प्यार प्रेमी व प्रेम-पात्र दोनो के ही दुर्भाग्य का कारण बनता है? प्रेमी व प्रिय अधिक प्यार से बिगडे हुए बच्चो की तरह होते हैं, जो जल्दी ही मर जाते हैं! जीवन मरने के लिए नही है। प्रसन्नता एक राक्षसी-प्रवृति है, और जो इसकी कामना करते हैं, दण्डित किए जाते हैं।

तुम्हारे सम्पर्क मे आने से ठीक पहले मेरे मन मे कोई हलचल न थी। मै शान्त बन चुका था। उस समय मेरा दो वर्ष पुराना स्नायविक रोग, जो पहले घटी घटनाओ का ठीक परिणाम था, लगभग समाप्त हो चुका था। एक बार फिर सब कुछ पहले जैसा ही बन गया था। मै दूसरो को, और अपने को एक दम साफ-साफ देखने-समझने लगा था। मै स्वग

बनाये नियमो के अनुसार अच्छी तरह रहने लगा था । मैं अपनी समझ के अनुसार सब बातो के बारे मे एक फैसले पर पहुँच गया था। मैने विषयो को छाट लिया था और उनका वर्गीकरण कर लिया था । परिणाम यह हुआ, कि मै अपने जीवन के किसी भी पहले समय की तुलना मे अधिक शान्ति पा गया था, यद्यपि हर एक का विचार था कि मेरी दशा दयनीय है। तभी मेरे सम्पर्क मे तुम आईं, और सिर्फ ऊगली से छू कर मेरा सब कुछ तुमने फिर से गडबडा दिया। पुरानी तलछट उबल कर फिर ऊपर आ गई। मेरे हृदय की झील मे मन्थन प्रारम्भ हो गया। लेकिन तूफान समुद्रो मे ही आते हैं। जब तालाबो को कुरेदा जाता है, तो उनमे से अस्वास्थ्यकर दुर्गन्ध ही फूटती है। यह सब मैं तम्हे बताना चाहता हूँ, क्योकि मै तुम्हे प्यार करता हूँ! अगर हो सके तो मुझे भूल जाओ। दोनो हाथो से अपनी आत्मा को अपने शरीर से अलग तोड कर उसे इतना कुचलो, कि उस पर से मेरे निशान भी मिट जाये। नाराज मत होना .

नही, मै तुम्हे गले लगाता हूँ, तुम्हारा चुम्बन लेता हूँ! मै जगलीपन सा अनुभव करता हूँ। अगर तुम यहाँ होती, तो शायद मै तुम्हे दन्त-क्षत प्रदान करता। मुझे ऐसा करने की इच्छा होती है। मैं—जिसकी उदासीनता पर औरते मुँह विचकाया करती थी , मैं—जिसे प्रेम-चर्या के अयोग्य समझा जाता रहा, क्योकि मैने इस क्षेत्र मे बहुत कम व्यवहार किया है— वह मैं अब अपने अन्दर जगली पशुओ की सी भूख पाता हूँ। मै एक ऐसे प्रेम-सस्कार अपने मे पाता हूँ, जो मास-भक्षी जैसा है। जो गोश्त के टुकडे-टुकडे करने की ताकत रखता है। क्या यह प्यार है ? शायद यह उससे उल्टा है। शायद मेरे मामले मे मेरा हृदय है, जो नपुन्सक है।

हर चीज का विश्लेषण करने का मेरा भूत मुझ बहुत तग करता है। मैं हर चीज़ पर सन्देह करता हूँ, यहाँ तक कि अपने सन्देह पर भी! तुमने मुझे जवान समझा, पर मैं बूढा हूँ। मेरी भावनाओ को ऊंचाई

मेरे मन की उड़ान, मेरी क्षणिक सवेदना को यदि मुझसे छीन लिया जाये, तो मुझमे बच ही क्या रहेगा ? अन्दर से मै बस यही हूँ। मै जीवन का रस लेने के लिए नही बनाया गया था ! इन शब्दों को भौतिक अर्थों मे मत लो, इनकी आध्यात्मिक गहराई पकड़ने की कोशिश करो। मै अपने से कहता रहता हूँ, कि मै अपनी प्रेमिका के दुर्भाग्य का कारण बनूँगा, कि यदि मैं तुम्हारे रास्ते मे न आता तो तुम्हारा जीवन अव्यग्र चलता रहता, कि वह दिन आयेगा जब हम अलग होंगे। यह सोच कर मैं उदास हो जाता हूँ। मुझ मे जीवन के प्रति घृणा पैदा हो जाती है, और मैं असीम आत्म-ग्लानि का, और तुम्हारे प्रति एक धार्मिक कोमलता का अनुभव करने लगता हूँ।

और कभी-कभी, उदाहरणार्थ कल, जब मैंने अपना पत्र बन्द किया तो तुम्हारा खयाल, उस मीठी आग की तरह गाने, मुस्कराने, चमकने और नाचने लगा, जो आग कि हजारों रंग बदलती है, और अपने मे भेदक गर्मी रखती है। बोलते समय तुम्हारे मुख की कमनीय, आकर्षक सिहरनों को मैं याद रखता हूँ। वह तुम्हारा गुलाबी, नमीदार मुँह उत्तेजक है ! यह चुम्बनों का आह्वान करता है, और

एक-दो वर्ष क्या गिनती रखते है ? प्रत्येक नापी जा सकने वाली चीज का अन्त होता है। हर गिनी जा सकने वाली सख्या खत्म होती है। अनन्त केवल तीन चीजे है। आकाश अपने तारों के कारण, समुद्र अपने जल-बिन्दुओं के कारण, और हृदय अपने आँसुओं के कारण। केवल इसी दृष्टि से तो हृदय बड़ा है, नही तो शेष दृष्टियों से तो वह तुच्छ ही है। क्या मैं झूठ बोलता हूँ ? सोचो। जरा स्थिर-मन बनने की कोशिश करो। केवल एक या दो खुशियाँ हृदय को पूरा भर डालती है, लेकिन सारी मनुष्य-जाति के सारे दुख-सन्ताप उसमे मेहमान बन कर बस सकते है !

खैर, तुम्हारी नीली भूषा का नाम हम दोनो मिलकर रखेंगे। मैं

सन्ध्या के छ वजे के लगभग पहुँचूँगा। हमारे पास सारी रात व अगला दिन होगा। हम उस रात को जगमगा देंगे। मैं तुम्हारी कामना हूंगा और तुम मेरी। हम एक दूसरे को आत्मसात कर लेंगे, और देखेंगे, कि हमारी सन्तुष्टि हो सकती है क्या? कभी नही, नहीं, कभी नही! तुम्हारा हृदय एक अक्षय सोता है। तुम मुझे जी भर कर पी लेने दो। यह सोता मुझ पर बाढ बनकर छा रहा है। मुझको भेद रहा है! मैं डूब रहा हूँ उफ तुम्हारे चेहरे की सुन्दरता! मेरे चुम्बनो के कारण पीला पडा काँपता हुआ तुम्हारा मुख. लेकिन मैं कितना निस्पन्द था! मैंने कुछ नही किया, वस तुम्हारी तरफ देखता गया। मैं चकित था, मोहित था

विदा, मेरी जीवन-लता! मेरी प्यारी विदा! तुम्हारे हर कही के लिए तुम्हे हजारो चुम्बन! फीडिया से कहो कि वह मुझे पत्र लिखे। मैं आऊगा। अगले जाडो मे तो किसी तरह भी हम नही मिल सकेंगे, पर तीन सप्ताहो के लिए मैं पैरिस आऊँगा।

हजारो चुम्बन! आह, कुछ तुम भी दो, कुछ दो मुझे ..

---
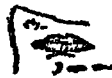
*फ्लावेयर ने कालेट को दो सौ पचहत्तर से भी अधिक पत्र लिखे। 'मेडम वावेरी' की प्रधान पात्र ऐमा बावेरी के रूप मे फ्लावेयर ने कालेट का ही चित्रण किया है। कालेट इस बात से बहुत नाराज हो गई थी।

इगलैड की वह बेताज रानी ! जिसके कारण जॉर्ज प्रथम को गद्दी मिली, पर स्वयं उसको एकान्तवास का क्रूरतम दड, व अपने प्रेमी का कटा हुआ सिर .

—सोफिया का पत्र कोनिग्समार्क के नाम

"......किसी स्त्री ने किसी पुरुष को इतना प्यार नहीं किया, जितना मैं तुम्हें करती हूँ....."

हनोवर

प्रिये,

मैंने रात के सन्नाटे को विना सोये गुजारा, और सारा दिन तुम्हारे बारे मे सोचते हुये, और अपने वियोग पर आसू बहा कर बिताया। दिन मुझे कभी इतना लम्बा महसूस नही हुआ था ! मैं नही जानती कि तुम्हारी अनुपस्थिति को मैं किस प्रकार सह पाऊँगी ? ला गावरमन्टे ने भी तुम्हारा पत्र मुझे दिया है। मैंने बेहद खुशी से उसे लिया। विश्वास मानो, कि मै अपने वादे से कही ज्यादा सब कुछ करूँगी, और अपने प्रेम-प्रदर्शन का कोई भी मौका नही खोऊँगी। जब तक तुम बाहर हो, तब तक अगर मैं अपने आप को कमरे मे बन्द रख सकती, और किसी से भी न मिलती, तो मुझे बडी खुशी होती; क्योकि तुम्हारे विना मुझे सभी कुछ नीरस और उबाने वाला लगता है। कोई भी चीज तुम्हारी अनुपस्थिति को मेरे लिये सहनीय नही बना सकती। मै रो-रो कर बेहोश हुई

जाती हूँ। मैं अपने प्राण देकर भी यह सिद्ध करना चाहती हूँ, कि . किसी स्त्री ने किसी पुरुष को इतना प्यार नही किया, जितना मैं तुम्हे करती हूँ और किसी की वफादारी मेरी वफादारी का मुकाबला नही कर सकती ! चाहे कोई भी परीक्षा मुझे देनी पडे, और चाहे कोई भी सकट मुझ पर पडे, कोई भी चीज मुझे तुमसे अलग नही कर सकती। मेरे प्यारे ! यह सच है कि मेरा प्यार मेरे जीवन के साथ ही खत्म होगा।

मैं आज इतनी बदली-बदली और इतनी दुखी सी लग रही थी, कि राजकुमार, मेरे पति तक ने रहम खा कर मुझ से कहा, कि तुम बीमार हो और तुम्हे अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिये। वे ठीक कहते है कि मै बीमार हूँ, पर मेरी बीमारी यह है, कि मैं तुम्हे प्यार करती हूँ ! और इस से मै कभी अच्छा होना नही चाहती। मैं किसी भी उल्लेखनीय व्यक्ति से नही मिली। कुछ देर के लिये मै डचेस सोफिया से मिलने गई थी, पर जल्दी ही घर वापिस लौट आई, जिससे तुम्हारे बारे मे बाते करने का रस ले सकूँ। ला गजले का पति मुझसे विदा लेने आया था। मैं उससे अपने कमरे मे ही मिली, और उसने मेरा हाथ चूमा।

अब आठ बजे हें। मुझे बाहर जाना है। मै वहाँ कितनी सुस्त व अजीब लगूँगी। भोजन के बाद मैं फौरन ही लौट आऊँगी और तुम्हारे पत्रो को दुबारा पढने का आनन्द उठाऊँगी, क्योकि जब तक तुम बाहर हो, मेरे लिये सुख के यही एकमात्र साधन है। मेरे आराध्य विदा ! केवल मौत ही मुझे तुम से अलग कर सकती है ! मानवीय शक्ति इस बात मे सफल नही हो सकती। अपने वादो को याद करो, और उतने ही दृढ प्रेमी बने रहो, जितनी कि मैं वफादार हूँ

—सोफिया

: ७३ :

—अंग्रेज कवि अलैक्जैन्डर पोप का पत्र मेरी वार्टले के नाम।

"   जब से मैने तुम्हें देखा है, मुझे निश्चय होता गया है, कि दर्शन से अधिक शक्तिशाली भी कोई वस्तु है......"

प्रिये,

...तुम बडी आसानी से अन्दाजा लगा सकती हो, कि मैं एक ऐसे आदमी से पत्र-व्यवहार करने को कितना इच्छुक हूँ, जिसने कि मुझे बहुत पहले यह सिखाया था, कि प्रथम मिलन पर प्यार कैसे सभव होता है, और जिसने मुझे तब से इस कदर बरबाद कर दिया है, कि केवल उसी की बात करता हूँ, और दूसरो से मित्रता भी खत्म हो गयी है। अक्सर मुझ पर वही ठहराव और ग़म की छाया हावी होने लगती है, जो कि बहुत दिन पहले एक शाम गाँव में तुम से बातचीत करके हावी हुई थी, और जिस बातचीत ने मेरी एकान्त-प्रियता को भी भग कर दिया। ग्रन्थों और पुस्तकों का प्रभाव मुझ पर से हट गया है, और जब से मैंने तुम्हे देखा है, मुझे निश्चय होता गया है, कि दर्शन से अधिक शक्तिशाली भी कोई वस्तु है.. और जब से मैंने तुम्हे सुना है, तो लगा है, कि तमाम

बुद्धिमान महात्माओं से भी अधिक बुद्धिमान एक जीवित एव बौद्धिक व्यक्ति भी मौजूद है । ...एक नारी-जनित बौद्धिकता किस कदर झुँझला देने वाली वस्तु है ! यह आदमी को दस गुना अधिक बेचैन कर देती है...

—अलैग्जैंडर पोप

: ७५-७६ :

फ्रान्स का वह बेबाक लिखारी, जो कहा करता था—'जो नैपोलियन ने तलवार से जीता है, वह मैं कलम से जीत कर दिखा दूंगा......।'

—बालजक का पत्र मैडम-डी-हन्सका के नाम¹

"......मेरे पास हमेशा टिकटों के लिये पैसे नहीं होते थे . ..."

प्रिये,

आह! आखिर मुझे पता लग ही गया, कि तुम कितनी अच्छी हो, और यह भी सिद्ध हो गया कि तुम इसी दुनिया की प्राणी हो। तो तुमने मुझे पत्र लिखना इसलिए बन्द कर दिया, क्योंकि मेरे पत्र तुम्हे बहुत-बहुत देर बाद मिलने लगे थे? ऐसा इसलिए हुआ कि ..मेरे पास हमेशा टिकटों के लिए पैसे नही होते थे और यह बात मै तुम्हें बताना नही चाहता था। मैं इतना नीचे आ चुका था, और शायद इससे भी नीचे। यह स्थिति बडी ही भयानक थी, बहुत निराशा जनक पर उतनी ही सत्य, जितनी कि यूक्रेन की धरती, जहाँ तुम रह रही हो।

हन्सका बालजक की रूसी प्रेमिका थी, जिसके साथ उसने लगभग पचास वर्ष की आयु मे विवाह किया, और एक-दो साल बाद मर गया... यह पत्र हन्सका के पति की मृत्यु से पूर्व का है।

*आह, मेरी प्यारी! यह मेरी लालसा है कि हम एक दूसरे के लिए, एक दूसरे के निकट, दिल से दिल मिला कर रहे, और किसी भी जंजीर से वधे न हो। कभी-कभी मैं उत्तेजित हो जाता हूँ, और अपने से सवाल कर उठता हूँ, कि ये सत्रह महीने वीते कैसे, जव कि मैं यहाँ रहा और तुम वहाँ इतनी दूर? धन की ताकत कितनी वडी है? कितने दुख की वात है कि मानव के सवसे सुन्दर भाव धन पर निर्भर करते है! जव हृदय पाँच सौ कोस दूर गया होता है, तो शरीर मानो जजीरो से जकडा, और कीलो से ठुका वही पडा रहता है। कभी-कभी ऐसा होता है, कि मै स्वय को सपनो के हवाले कर देता हूँ। मैं कल्पना करता हूँ कि सव कठिनाइया समाप्त हो गई हैं, और मेरी रानी की समझदारी, चुनाव-शक्ति व उसकी कुशलता ने विजय पाई है, और उसके पास से खवर आई है कि 'आ जाओ', और मैं वहाना करता हूँ कि मैं यात्रा कर रहा हूँ! ऐसे दिन मेरे मित्र मुझे पहचान नही पाते। वे पूछते है, 'वात क्या है? तुम्हे हो क्या गया है?' मै उत्तर देता हू कि मुझे आशा है कि मेरी विपत्तिया वस अव टलने ही वाली है, और वे कहते है, कि यह पागल हो गया है! .
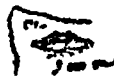
*यह पत्र वालजक ने उस समय लिखा जव कि काउन्ट हन्सका की मृत्यु हो चुकी थी, और मैडम हन्सका इस दुविधा के वीच झूल रही थी, कि वे वालजक से विवाह करें अथवा नही।

उन्नीसवी सदी रूस की वह जर्मन सम्राज्ञी जिसने केवल राज्य हथियाने के लिये रूसी भाषा, रूसी धर्म और रूसी पति अपनाये, जिनमे से एक से भी उसे कोई प्यार नही था...जिसके राज्यकाल में रूसी सीमाओं का सर्वाधिक विस्तार हुआ......

—कैदरिन 'दी ग्रेट' का पत्र, दरबारी पटियामकिन के नाम†

'......मैं तुम्हारे बारे में बहुत सोचती हूँ......"

१७७३

मेरा विश्वास है कि तुम्हारे सभी कार्य स्वदेश-भक्ति और मेरे प्रति सच्ची लगन से ही प्रेरित होते है। मैं बहुत उत्सुक हूँ, कि ऐसी लगन वाले, बहादुर, समझदार और योग्य व्यक्ति खतरे से बाहर रहे। इसलिये जहा तक हो सके खतरे मोल मत लेना। यह पत्र पढते हुए तुम सोचोगे कि मैंने ऐसा क्यो लिखा है ? मै तुम्हारे सामने यह सिद्ध करने के लिये सिर्फ इतना ही कह सकती हूँ; कि.. मैं तुम्हारे बारे मे बहुत सोचती हूँ...क्योकि मैं सदा तुम्हारा भला चाहती हूँ।*

*पटियामकिन कैदरिन का तीसरा या चौथा प्रेमी था। युद्ध से वापिस बुलाते हुए कैदरिन ने उसे यह पत्र लिखा।

† यह पत्र पाते ही पटियामकिन कैदरिन के दरबार मे वापिस 'हाजिर' हो गया। मृत्यु तक दोनो का यह गुप्त प्रेम-सम्बन्ध चलता रहा।

: ७८ :

जिसने अपनी उमर का तीन-चौथ जेलो और मुसीवतो में काटा ..भूख, गरीबी और निराशा को जिसने अपने अमर उपन्यास 'ला मिजरेबिल' मे मूर्तिमान करके रख दिया है... ..

—विक्टर ह्यूगो के नाम जूलियट का पत्र†

" .....मै तुम्हे इतने चुम्बन भेजती हूं, कि तुम्हारे और मेरे मुखों के बीच एक पुल सा बन जाये......!"

जर्सी
इतवार १० वजे प्रात
१ जनवरी, १८५८

मेरे प्रिय,

मै तुम्हे इतना प्यार करती हूँ, कि मेरे पास कहने के लिए और कोई भी बात नही है ! मेरी कमजोर प्राण-शक्ति इस अत्याधिक प्यार के बोझ से झुकी जाती है, उसी तरह जैसे बहुत अधिक फलो के बोझ से शाखा टूटने लगती है। लेकिन, तुम्हारे प्रति जो असीम कोमलता एव प्रशसा और पूजा की भावना मैं महसूस करती हूँ, उसे अविकल रूप से वहन करने की ताकत मेरे दिल मे है।

आह, मेरे आराध्य ! कैसा पत्र तुमने मुझे लिखा ! अपनी

†ह्यूगो ने यह पत्र मृत्यु से कुछ समय पूर्व अपने अन्तिम जन्म-दिवस को लिखा था...

आँखो मे अपना दिल भर कर मैंने उसे पढा। ऐसा लगा जैसे कि पत्र का एक-एक शब्द सूर्य की किरणो की तरह मेरी हड्डियो मे उतरता चला गया! मेरे विक्टर! तुम्हारी उम्मीदे मेरी उम्मीदे हैं, तुम्हारा निश्चय मेरा निश्चय है, तुम्हारा विश्वास मेरा विश्वास है। मै वही हूँ, जो तुम चाहते हो कि मैं बनूँ। मैं तुम्हारे लिए ही जिन्दा हूँ और तुममे जिन्दा हूँ! तुम्हें प्यार करना, तुम्हारी सेवा करना, तुम्हारी इज्जत करना, और तुम्हारी पूजा करना—इस दुनिया मे मेरी बस यही आकॉक्षाये बाकी है। जहाँ तुम होगे वही मैं हूँगी; जहाँ तुम सघर्ष करोगे, वहाँ मैं तुम्हारी निगरानी करूँगी; जब तुम दुख झेलोगे मै तुम्हारे लिये प्रार्थना करूँगी; जब तुम सकट मे होगे, मै तुम्हारी रक्षा करूँगी, तुम्हे बचाऊँगी या मर मिटूँगी। मेरे प्यारे विक्टर! पता नही मै क्या-क्या उटपटाँग तुमसे कह गई हूँ, क्योकि जब तुम्हारी बात आती है तो मेरे खयाल मेरे काबू मे नही रहते! वे मेरी बुद्धि से उतना प्रभावित नही होते, जितना कि मेरे दिल और मेरी आत्मा से, जो आज सुबह से ही उत्तेजना की अवस्था में है। मै नही जानती, ओ मेरे उदात्त एव सताये हुए प्रिय! अभी क्या-क्या परीक्षायें तुम्हे और देनी है, पर मेरा साहस और मेरी भक्ति तुम्हे अर्पित है। तुम्हारी तरह ही मै अपने देवताओ को प्रार्थनाओ, उम्मीदो, खुशियो और प्यार से सुसज्जित करती हूँ। उन्ही को मै तुम्हारा रक्षक व अभिभावक बनाती हूँ, और उन्ही को मै तुम्हारा जीवन, जो कि मेरा है; तुम्हारा दिल, जो कि मेरी खुशी हे; सौंपती हूँ...मै तुम्हें इतने काफी चुम्बन भेजती हूँ, कि उनसे तुम्हारे और मेरे मुखो के बीच एक पुल सा बन जाये...*

—जूलियट

---

*जूलियट फ्रान्सीसी स्टेज की एक प्रसिद्ध अभिनेत्री थी। ह्यूगो ने उस के साथ इसलिए विवाह नही किया, क्योकि उसने अपनी परामुखा पत्नी को भी, जो कि उसको छोड कर चली गई थी, तलाक देना उचित नही समझा!

घ

विवाह के पश्चात
प्रेमी अथवा प्रेमिका को लिखे गये
इकतर्फ़ा प्रेम के पत्र

७६/८१ :

जिसकी कलम मे बिच्छू का सा डक, और पहाडी झरनो का सा मुक्त हास्य है...जिसने अपने युग तक को नही बख्शा ! दुनिया का सब से बडा व्यग्यकार... .

—जार्ज बर्नार्ड शॉ का पत्र अभिनेत्री कैम्पबेल के नाम†

" . ..*तुम एक उल्लू हो, जो दो दिन में ही मेरे सुख की धूप से चौंधिया उठो .....*"

गिल्ड-फोर्ड होटल, सैन्डविच

११-८-१९१३

वहुत अच्छा जाओ। एक औरत का चला जाना प्रलय हो जाना

---

†कैम्पवेल इगलैंड की एक अत्यन्त प्रसिद्ध अभिनेत्री व शॉ की मित्र थी। एक ऑप्रेशन के वाद वह कुछ दिनो के लिए सैडविच के समुद्री तट पर विश्राम कर रही थी। जनाब शॉ भी वहाँ पहुँच गये। न जाने किस वात के कारण कैम्पबेल ने शॉ से कह दिया, कि या तो वह सैडविच से चला जाये, वरना वह स्वय चली जायेगी, और यह, कि वह उसे अपने से घृणा करने पर विवश न करे। शॉ तो गया नही, कैम्प-बल को ही शहर छोड कर कही चले जाना पडा। इस अपमान से शॉ चोट खाये हुये सॉप की तरह फुफकार उठा और नतीजे के तौर पर फूटे ये तीन पत्र, जो उसने कैम्पवेल को ११ तारीख की सुबह, उसी दिन शाम, और १२ तारीख की सुबह लिखकर एक साथ डाक मे डाले।

तो है नही !. सूरज चमक रहा है। ऐसे मे तैरना वडा सुहाना लगता है, और काम करना और भी अच्छा। मेरा मन अकेले रह सकता है, पर मुझे बहुत गहरा, वहुत गहरा, बहुत गहरा घाव लगा है। तुमने मेरी परीक्षा ली है। तुम्हे मेरी संगति मे सुख नही मिला। मै तुम्हे सुख और आराम नही दे सका। तुम्हारा मन-बहलाव भी नही कर सका। आखिर यही सिद्ध हुआ ना कि हमारी मित्रता मे असल मे कोई बेतकल्लुफी थी ही नही ? मै कितना प्रसन्न था, कितना लापरवाह और कितना खुश, जब मैं सन्ध्या के भोजन के वाद मीलो तुम्हारी खोज मे चला गया, भागता-भागता और रास्ते भर गाता-गाता (जब कि सुबह मैं आठ मील चला था, और अपने नाटक का एक दृश्य मैंने लिखा था) , पर जिस क्षण मैंने तुम्हें अपनी उपस्थिति से ऊबता हुआ पाया, और समझा कि हवा गलत दिशा मे बह निकली है, तो मुझे एक स्वस्थ पर व्यग्यपूर्ण नीद ने आ घेरा। क्या कहूँ, तुममें जरा भी धैर्य नही है। जरा सा भी दिमाग नही। तुम अट्ठारहवी सदी के उस पुरुष भावाभिनेता का कार्टून भर हो, जिसे हैडा गैबलर ने बर्न जोन्स की गुदडी मे भरी अजीब-अजीब कत्तरो से सजा कर दिलचस्प बनाया है। तुम कुछ भी नही जानती, और जो जानती हो गलत जानती हो। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे ! दिन का प्रकाश तुम्हें चौधियाता है। तुम जिन्दगी के पीछे चोरी-चोरी भागती हो, और जब जिन्दगी घूमकर अपनी बाहे तुम्हारी तरफ फैलाती है, तो तुम पीठ दिखाती हो, सहमती हो और चीखती हो। तुम पुरुष के लिये अपमान हो, और उसकी बुद्धि को भ्रष्ट करने वाली। उसका हीरो जडा मुकुट तुम नही बन सकती। दुनिया को अपनी ओर खीचने के बदले, तुम खुद अपने को दुनिया मे से बाहर खीच लेने का प्रयत्न करती हो। भिन्न-भिन्न एक हजार लोगो के लिये अलग-अलग एक हजार सम्मोहन रखने के बदले, तुम्हारे पास केवल एक ही जादू है, जिसे तुम (चाहे वह लगे या न लगे) बटो,

जवानो, नौकरो, बच्चो, कलाकारो और अशिक्षितो सब पर आज-
माती फिरती हो। तुम्हारे व्यक्तित्व का सिर्फ एक हिस्सा ही अभिनेत्री
है, और वह एक भी ठोस नही. तुम एक उल्लू हो, जो दो दिन मे ही
मेरे सुख की धूप से चौंधिया उठी। मैंने तुम्हारे साथ कुछ ज्यादा अच्छा
बर्ताव कर डाला! मैंने तुम्हे अपनी कल्पना मे मूर्त्त बनाया, अपना
दिल और दिमाग तुम्हे अर्पित किया, (और ये दोनो चीजे मैं सारी
दुनिया को दे डालता हूँ), इसलिये कि तुम जो चाहो उनका बनाओ।
और क्या बनाया तुमने इनका ? तुम इनसे दूर भागी। कोई बात नही,
जाओ! मेरे विचारो की ताज़ी प्राण-वायु तुम्हारे नन्हे फेफडो को
शायद जलाती है। तुम्हे तो घुटन पैदा करने वाली पुरानी हवा ही
अच्छी लगती है। तुम्हे जॉर्ज से विवाह तो करना था नही! आखिर
मे या तो तुम खुद उससे दूर हट जाओगी, या एक अधिक मजबूत
हृदय तुम्हे अपने से परे धकेल देगा। तुमने मेरे अह को चोट पहुँचाई
है ..कैसा अकल्पनीय दु साहस हे यह कैसा अक्षम्य अपराध विदा,
हतभागे!

जिसे मैंने प्यार किया

—जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

मैण्डविच, अन्धकार
११-८-१९१३

...आह! मेरी जलन अभी तक शान्त नही हुई है। काफी गालिया
अभी तुम्हे नही दे सका हूँ। तू कैसी नीच दुरात्मा है जो मेरी अँतडियो
को घडी-घडी कुरेद रही है, और उन्हे खीच रही है। अपने जीवन
के ५७ वर्षों के २० वर्ष मैंने यातनाएँ भोगी, और ३७ वर्ष परिश्रम
किया; तब जाकर मुझे एक पल का आनन्द मिला था। तुम्हारे साथ
प्रेमचर्या करने के लिये मैंने अपने आप को गिराया। मैंने मित्रता की गहरी

जड़ों को खोदने और अपने पवित्र सम्बन्धों को नष्ट करने तक का खतरा मोल लिया। मैंने ढिलमिल रेत पर अपने पैरों को साहस के साथ जमाया। मैं झूठे दीपकों के पीछे अंधेरे मे भागा। जानते-बूझते कि मैं क्या कर रहा हूँ, मैंने स्त्री के प्राचीनतम धोखे को पकड़ने की कोशिश की। मुट्ठी भर सूखे पत्तों को हाथ मे लेकर मैंने कहा,—"मैं इन्हे सोना मान कर ग्रहण करता हूँ।" ऐसा निर्णय करके मैं उस उजाड समुद्र के किनारे उतरा जहाँ से रैक्सगेट की रोशनियाँ दीख रही थी। ये रोशनियाँ स्वर्ग के पर्वतो पर रहने वाले अतिथि-सेवक देवताओं के शिखरो मे जलती रोशनियो सदृश दीख पडती थी। मैंने कहा, "ग्रह सात होते है, सात कष्ट है, स्वर्ग की रानी के हृदय मे सात तलवारें थीं, और मैं भी अपने लिये केवल सात दिन माँगता हूँ।" वे दिन आरम्भ हुए, और मैंने अपने आप को रोके रखा। मै लालची नही था। मैं उनमे से आखिर के दिनो को ही सबसे अधिक रंगीन बनाना चाहता था। तुम उकता उठी, जभाइयां लेने लगी, और शेष पाँच दिनो को किसी उजाड और बेहूदा जगह बिताने के लिये अपनी नौकरानी और शोफर के साथ भाग निकली। भगवान करे वहाँ तुम इतनी उकताओ, कि निराश होकर अपने नौकर के साथ ही कही चल दो। तुम किसी स्त्री के प्रेत से भी बदतर हो। वह कम से कम घृणा तो कर सकता है, और उस पर दृढ रह सकता है। तुम तो न प्यार कर सकती हो, न घृणा। दीन, दुरात्मा! मैं, आयरलैंड का एक वासी भला इस रोमन कैथोलिक प्रवृत्ति को कैसे सहन कर सकता हूँ? इस अकाल-प्रौढ उद्दीपन भावुकता को, इन सकरे विचारो को, इस अज्ञान को, और इस बेबसी को, जो दूसरो पर हावी होना चाहती है, क्योंकि यह किसी का अनुसरण नही कर सकती—और करेगी भी नही। यह कोई परिवर्तन भी पैदा नही कर सकती और उसके पास सिवाय प्रेम की शक्ति के कोई अन्य शक्ति नही, सिवाय रूप की जुबान के कोई और जबान नही। जब

मैं तुम्हे आजादी और सहयोगिता के क्षेत्र मे खीच लाना चाहता हूँ, तो तुम ऊपर बतलाये सस्कारो को मेरे सामने रख देती हो। ओ मेरे तार्किक मन ! ओ मेरी सूक्ष्म दृष्टि ! इस छिछले प्राणी से उचित व्यवहार करने के लिये, और सम्भव हो तो इस से राक्षसी बदला लेने के लिये मुझे आवश्यक विवेक प्रदान कर। इस स्त्री के लिये मैंने जितने अच्छे मित्रो की उपेक्षा की वे सब मेरे साथ खडे हो। इसको बदनाम करने वालो का भी मैं स्वागत करूँगा। तब मैं उससे कहूँगा, "तुम अपना विष थूक दो अपने झूठ को बाहर निकाल फेंको, और अपनी ईर्ष्या को उगल दो, इतना कि तुम्हारा हृदय स्वच्छ हो जाये, पर तब भी सच्चाई को तुम नही पहुँच सकोगी। और उसके मित्रो, उसके द्वारा छले गये व्यक्तियो, और उसके प्रशसको से मैं कहूँगा, "आप लोग जो कहते है, वह सच तो है, पर वह आधा भी काफी नही है, और असल मैं वह कुछ भी नही है। वह स्त्री तो ऐसी है कि स्वर्ग-परी की वीणा के तारो को पार्सल बांधने के लिये तोड ले, और उसने ऐसा ही मेरी हृदय-वीणा के तारो के साथ किया। और यह वही दुष्ट है, जिसे मुझे अपने नाटक मे लाना पड़ेगा, और मेरे नाटक का सत्यानाश करने मे वह कुछ भी उठा न रखेगी। जब वह नाराज होकर, मुँह मोड कर, समुद्र की गहराई की ओर भागेगी तो मुझे उसे मनाना पडेगा और खुशामद करके उससे मित्रता जोडनी पडेगी। स्टेला, तुम यह सब कैसे कर सकी ? कैसे कर सकी तुम ? कौन सा मापक-यन्त्र तुम्हारे उस उथलेपन को नाप सकता है, जो तुम्हें अपने किये को पहचानने से रोक रहा है ? यदि मैं तुमसे अन्दर ही अन्दर बेहद उकता उठा होता, तब भी मैं उस उकताहट के कष्ट को सहता और तुम्हें कही छोडकर चले जाने की क्रूर चोट तुम्हें न पहुँचाता। पर इमसे प्रकृति का क्या नियम है, वह मेरी कल्पना मे फिर से ताजा हो उठा हैं। मैंने ही तुम्हारी परवाह की, तुमने मेरी नही, इसका मुझे उचित ही फल मिला। मुझे अब स्वर्ग की रानी की कोई परवाह नही। मै

आकाश मे पहाड की तरह ऊँचा खडा होकर देख रहा हूँ, कि एक नन्ही व प्यारी सी चीज मेरे ऊपर चल-फिर रही है। कैसे और क्यो यह इतनी छोटी नाचीज वस्तु मेरी छाती की झिल्ली पर रेंग रही है, और एक अजीव पीडा व कचोट मुझे दे रही है, जिससे वेबस होकर मैं ये बेकार की उद्धत वाते लिख रहा हूँ? ओह! यह पूरी दुनिया उस फटकार को सहने की शक्ति नही रखती, जो तुम्हे अकेली को मिलनी चाहिये। तुम एक शिशु से भी अधिक निर्दय हो!

बहुत काफी है। अव मैं सोऊँगा। मुझे नीद आ रही है ..

—वर्नार्ड शॉ

—सैण्डविच

१२-८-१९१३

...अगला दिन जो एक मजेदार दिन वन सकता था! मै क्या वन गया हूँ? इन इतने वर्षो मे मैंने वहुत से लोगों को चोट पहुँचाई है, पर उसी भावना से जिससे डाक्टर ने तुम्हारे अँगूठे को दुखाया था। शायद कई बार वहुत ज्यादा दुखाया होगा, पर कभी भी ईर्ष्या के वश हो कर नही, तुम्हे चोट पहुँचाने की इच्छा से नही, और उन दर्द-नाशक औपधियो के लेप के विना नही, जिनको मेरी तुरत-बुद्धि खोज सकी। मैंने कभी कोई झूठी, अन्यायपूर्ण अथवा द्वेपपूर्ण वात नही कही, और कहनी चाही भी नही। और आज झूठी, द्वेपपूर्ण घृणा-जनक, नीच, तुच्छ, विपैली अथवा दुष्टतापूर्ण; कैसी भी वात मैं कह सकता हूँ, यदि वह वात तुम्हे चोट पहुँचा सके! मै तुम्हे चोट पहुँचाना चाहता हूँ, क्योकि तुमने मुझे चोट पहुँचाई है! वदनाम, नीच, हृदय-हीन ओछी, दुष्ट, झूठी, झूठे होंट, झूठी आखे, झूठे हाथ, वचन भग करने वाली, धोखेवाज, विश्वास-घातिका!..."अक प्रथम—नाश्ते से पहले

पौने आठ वजे हम नहायेंगे। अक द्वितीय—आओ नहाने चलें। (मुस्कराती हुई नौकरानी वाहर आती है)—वे तो जा चुकी है श्रीमन्।" क्या आज?"—मैंने सोचा यह शायद आने वाला कल था। इस बूढे खिलाडी की आवाज व मुसकराहट कितनी खूबसूरत बन गई होगी, जो बात छुपाने की कोशिश नही करता, यद्यपि वह करता हे। एक मानव हृदय कैसे ऐसी ठोकर मार सका? और इसी अपराध को मुझे क्षमा करना है! स्टेला! ऐसा क्यो किया था तुमने?

...और तुम! तुम कहा चली गई? क्या तुम्हे आराम मिला? क्या वहा तुमने आनन्द-पूर्ण दिन बिताये? यदि ऐसा हुआ हो, तो मै तुम्हे क्षमा कर सकता हूँ। तुम्हारी सुख-कामना कर सकता हूँ। और यदि नही, तो अरी दुष्ट! मै तेरे टुकडे-टुकडे कर डालना चाहूँगा

—वर्नार्ड शॉ

: ८२ :

इगलैड की अपनी समय की विश्व-प्रसिद्ध अभिनेत्री, जिसने शाँ के साथ स्टेज की बजाय जिन्दगी में नाटक खेलने से इन्कार कर दिया......

—अभिनेत्री कैम्पबेल का पत्र जॉर्ज बर्नाड शॉ के नाम

"......*मेरी अन्तरात्मा में एक चांदी का दीपक जलता है...* "

लिटिल स्टोन
१३-६-१६१३

...ओ आवारा अन्धे, शब्द-जाल बुनने वाले, क्रोध से लाल-पीले पडे, सत्य को छुपाने वाले, ओ तुच्छ दीन पुरुप, ! ऐसा पुरुप जो एक मामूली स्त्री को समझने की योग्यता भी नही रखता ! पर कुछ भी हो, हो तुम मेरे मित्र ही ! तुम्हारे कोई लडकी नही, जो तुम्हारी लालसाओ को ठडा कर देती ? कोई छोटे बच्चे नही जो तुम्हारी व्यगपूर्ण बकवास को कम करते । मैं तुम्हारी सब कमियों का शिकार क्यो बनूँ ? ओ झाडू और चादर लिये घूमने वाले तथाकथित सुधारक ! तुम्हारे अन्दर व्यग के पटाखे और झूठ की राख भरी है !

अपने चिथडो मे लिपटी अथवा सुन्दर भूपा मे सजी मैं, मेरी

अन्तरात्मा मे एक चाँदी का दीपक जलता है, और मै तुम से यही चाहती हूँ कि उसकी जोत तुम जलने दो । मै तुमसे यही प्रार्थना करती हूँ ! मेरे मित्र, हर दशा मे मेरे प्यारे मित्र...*

—स्टेला

उर्दू साहित्य का रामचन्द्र शुक्ल, जिसने हर विषय पर दर्जनों किताबें लिखी ..कवि, लेखक, कोष-निर्माता, तथा आलोचक.....

—मौलाना शिबली का पत्र अतिया फैज़ी के नाम†

"......अफ़सोस! कि आंखों को हृदय नहीं बनाया जा सकता....."

२२ जून, १९०९

अज़ीज़ी!

आज जी चाहता है कि 'बू-ए-गुल' के कुछ शेर लिखूं और उनका अर्थ भी समझाऊँ, ताकि फारसी के शेरों को समझने की योग्यता तुम में हो जाये।

जौके-नजर-ब-लज्जते-काविश नमी रसद,
दागम अज़ी कि दिल न तवाँ कर्द दीदा रा

'जौके-नजर'—दीदार का लुत्फ, 'काविश'—प्रिय को देखने से

---

†अतिया एक पढ़ी-लिखी मुस्लिम स्त्री है। आपने कई साहित्यिक पुस्तकें भी लिखी। अपने समय के अनेक उर्दू साहित्यिकों से उनका पत्र-व्यवहार रहा, जिनमें से मौ० शिबली और इकबाल प्रमुख हैं। शिबली अतिया से निःसन्देह प्रेम करते थे, यद्यपि उनसे ऐसा खुल कर कहने का साहस उन्हें कभी नहीं हो सका।

जो हृदय मे बेताबी और तडप होती है, दागम—अर्थात् मुझ को दु:ख है, या अफसोस है, 'नमी रसद'--अर्थात् बराबर नही, या इसको नही पहुँचता ।

अब अर्थ यह हुआ कि दीदार मे भी एक लुत्फ है, और दिल की बेताबी और तडप मे भी एक आनन्द है । किन्तु प्रिय-दर्शन का आनन्द हृदय की तडप के आनन्द के बराबर नही हो सकता । इस लिये मुझे अफसोस है कि आँखो को हृदय नही बनाया जा सकता अर्थात् काश ! यदि आँखे हृदय बन सकती, तो दोनो आनन्द एक साथ प्राप्त हो सकते !

चश्मश सए-मा निगहे-नातमाम कर्द,
साकी बजाय रेख्त मये-ना-रसीदा रो

'ना रसीदा शराब'—जो खूब पक न गई हो और नशे वाली न हो, उसको 'ना रसीदा' कहते है । अर्थ यह है कि उसकी आँखो ने मेरी तरफ देखा, लेकिन खूब आँख भर कर नही देखा, बल्कि यूँ ही उचटती सी नजर डाल दी । तो मानो साकी ने जाम मे शराब तो डाली लेकिन शराब ठीक नही थी और खूब तैयार नही होने पाई थी ।

अज लज्जते-अदाए-सितम मी तवाँ शनाख्त,
की जोर अज-दो-बुदा व अज आस्माँ न बूद

आस्मान भी अत्याचार करता है, और प्रिय भी, किन्तु अन्तर केवल यह होता है कि आस्मान के अत्याचार मे लुत्फ नही होता, जब कि प्रिय के अत्याचार मे लुत्फ होता है । इस आधार पर शायर कहता है, कि जब हम पर अत्याचार होता है, और हमे यह पता नही लग पाता कि अत्याचार किसने किया, तो हम यूँ पहिचान लेते है, कि यदि जुल्म मे मज़ा आया है, तो वह अत्याचार अवश्य प्रिय ने ही किया होगा !

सद हर्फे-राज बूद निहाँ, दर निगाहे-मन,
शादम कि कार वा सनमे-नुक्तादा नबूद

मैं खुश हूँ—'कार', अर्थात् मामला, 'सनम' अर्थात् प्रिय, नुक्तादाँ—जो बात की तह तक पहुँच जाये। अर्थ यह हुआ कि मेरी निगाह मे सैंकडो भेद छुपे हुये हैं—जैसे, मौहब्बत, शौक, हसरत, आरजू, शिकायत, गिला, वगैरह, किन्तु गनीमत यह हुई कि प्रिय 'नुक्तादाँ' न था, अन्यथा मेरी निगाह ही से समझ जाता कि दिल मे क्या-क्या विचार है।

—शिबली

*अतिया के ही नाम इकबाल का लिखा हुआ एक पत्र इसी खण्ड के इसी भाग मे आगे उद्धृत है। इकबाल की आयु शिबली से उस समय लगभग आधी थी।

विश्व-प्रसिद्ध उर्दू शायर जिसका कहना था—'मैंने कभी अपने आपको शायर नही समझा, और शायरी की कला से मुझे दिलचस्पी नही रही'...'सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा'—लिखने वाला, जो स्वय हिन्दोस्तान से नफरत करता था। और दोबारा युरोप भाग जाने के लिये बेचैन रहता था पाकिस्तान के विचार को जिसने जज्बा दिया .

—इक़बाल का पत्र अतिया फैजी के नाम†

" ...*तुम्हे प्रसन्न बनाना मेरे लिये यथेष्ठ पारितोषक है* "

लाहौर, ७ जुलाई, १९११

मेरी प्रिय कुमारी फैज़ी,

मुझे अफसोस है, कि मै तुम्हारे कृपापत्र को, जो मुझे कुछ दिनो पूर्व मिला था, देख नही पाया। कारण यह है कि मैं इन दिनो बहुत ही अव्यवस्थित रहा। मेरा दुर्भाग्य एक स्वामिभक्त कुत्ते की तरह मेरे पीछे-पीछे रहा, और मैं अपने उस दुर्भाग्य को अपने स्वामी के प्रति उसकी अनथक वफादारी के कारण पसन्द करना सीख गया हूँ। खुलासा मै फिर कभी लिखूँगा।

जहाँ तक कविताओ का सम्बन्ध है, मैं उनकी प्रति तुम्हे भेज

---

† इकबाल का अतिया के प्रति प्रेम प्रमुख रूप से बौद्धिक था। अपनी दर्जनो कवितायें, छापने से भी पूर्व वह उनको भेज दिया करता था।

कर प्रसन्न होऊगा ! मेरे एक मित्र ने मेरी कविताओ का अपना सग्रह मुझे भेज दिया है, और मैंने उनको लिप्यान्तर करने के लिए एक आदमी ठीक कर लिया है। जब उसका काम पूरा हो चुकेगा, मैं सव को दोहरा कर प्रकाशन योग्य कविताओ को फिर से लिखूंगा, और एक प्रति तुमको भेज दूंगा। तुम्हे कृतज्ञ होने की कोई आवश्यकता नही, क्योकि जैसा कि तुमने अपने पत्र मे लिखा भी तुम्हे प्रसन्न बनाना मेरे लिये यथेष्ठ पारितोषक है...इसके विपरीत मैं तुम्हारी प्रशसा, जिसके योग्य मैं कतई नही हूँ, का बेहद शुक्र-गुजार हूँ। लेकिन, मैं इन कविताओ का क्या करूँ, जो एक रिसते हुये हृदय की प्रतिज्ञाये है ! उनमे प्रसन्नता का लेशमात्र भी नही है। इसीलिए मैने समर्पण मे कहा है—

"कली की मुस्कानो का जादू उसकी पराजय की भूमिका मात्र है। तू मेरी कलियों को मुस्कराहट से रहित समझ। कविता की ज़मीन दर्द पाने से ही हरी-भरी होती है। शायर के स्वभाव-रूपी दर्पण मे जो दुख है, उसको समझ।"

मेरी बडी कठिनाई प्रकाशन के लिए कविताये चयन करना है। पिछले छः छ सालो से मेरी कविता अत्यन्त व्यक्तिगत वनती जा रही है, और मेरा विश्वास हे कि जनता को उन्हे पढने का कोई हक नही पहुँचता। कुछ का तो मैने इस डर से, कि कोई उन्हे चुरा कर छाप न डाले, नाश कर भी दिया है। फिर भी देखूंगा मैं क्या कर सकता हूँ। अब्बा हुजूर ने मुझे बू-अली-कलन्दरी की तर्ज पर एक मसनवी लिखने के लिये कहा है, और कठिन रुचि के वावजूद मैंने वह स्वीकार कर लिया है। प्रथम पक्तिया ये है—

. ..

शेप पक्तियाँ मैं भूल गया हूँ, लेकिन आशा है कचहरी से लौटने पर याद आजायेंगी। दस वज रहे हैं और अव मुझे चलना ही चाहिये। साथ मे एक गजल, जो अभी हाल ही मे 'अदीव' मे छपी है, भेज रहा

हूँ। मैंने अपने मित्र सरदार उमराव सिह को, (जिनको मेरा विचार है कि तुम भी जानती हो), अपनी उन कुछ कविताओ का अंग्रेजी अनुवाद भेजने के लिये लिखा है, जो मैंने कुमारी गोट्समान (राजकुमार दलीप सिंह की मित्र) को तब लिख कर भेजी थी, जब उन्होने शालीमार बाग से मुझे एक खूबसूरत फूल तोड कर भेंट किया था। मूल प्रति, मुझे डर है, मेरे पास नही है, पर मैं उसे तुम्हारे लिए ढूंढने की कोशिश करूँगा।

मेहरबानी करके हिज हाईनैस को मेरा स्मरण करना कहना, और उसके लिए मेरा धन्यवाद भी।

तुम्हारा वफादार
—मो० इकबाल

---

*अतिया के ही नाम मौ० शिबली का लिखा हुआ एक प्रेम-पत्र इसी खड के इसी भाग मे, पूर्व उद्धृत है। उस समय शिबली की आयु इकबाल से लगभग दुगनी थी।

महान रूसी विश्व-प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार. . .

—दोस्तावस्की के नाम अपोलनेरिया का पत्र†

"......मुझे शर्म आती है कि मैंने तुमसे प्यार किया......"

प्रिये,

तुम्हारे लिए तो मेरे-तुम्हारे सम्बन्ध केवल शिष्टाचार के सबन्ध ही थे। तुमने मेरे साथ एक गम्भीर, व्यस्त आदमी का सा ही वर्त्ताव किया, उस आदमी का सा, जो अपने अलग ढंग से जिम्मेदारियो को उठाता है, और साथ ही उपभोग करना भी नही भूलता। और शायद किसी वडे डाक्टर या दार्शनिक को आधार मानकर उपभोग करना तुमने दर-अमल जरूरी समझा हो, वैसे ही, जैसे कि भारी

†अपोलनेरिया यूनिवसिर्टी की एक विद्यार्थिनी थी। जव वह रुठ कर फ्रान्स चली गई तो दोस्तावस्की उसके पीछे-पीछे फ्रान्स गये, मगर उसने अत्यन्त वेरुखी दिखलाई। २०, २५ वर्ष वाद जव एक वार वह दोस्तावस्की से दोवारा मिलने आई, तो उन्होंने उसे पहचाना तक नही!.. दोस्तावस्की को आयु अपोलनेरिया से लगभग दुगनी थी।

पियक्कडो के लिए यह जरूरी होता है, कि वे मास मे एक बार पीकर गर्क हो जायें ।

तुम नाराज हो । तुम चाहते हो कि मै न लिखूं कि मुझे शर्म आती है कि मैंने तुमसे प्यार किया मैं ऐसा कभी नही लिखूंगी। सिर्फ यही नही मै तुम्हे विश्वास दिलाती हूँ, कि मैंने ऐसा कभी नही लिखा, लिखने का सोचा तक नही, क्योकि अपने प्यार के लिए मैंने कभी शर्म महसूस नही की। मेरा प्यार सुन्दर था, शायद महान भी था । मुझे लिखना चाहिए था, कि मुझे पहले के सबन्धो पर शर्म आती है । पर इसमे तुम्हारे लिए कोई नई बात नही है, क्योकि मैंने तुमसे कभी कुछ छुपाया नही, और विदेश जाने से पहले कितनी ही बार मैंने इन सबन्धो को समाप्त कर देना चाहा ..

*दोस्तावस्की अपोलनेरिया से विवाह नही कर सके, क्योकि उन्होने अपनी तपेदिक-ग्रस्त पत्नी को तलाक देना उचित नही समझा ।

उर्दू का वह महान शायर जो फौजी वातावरण मे जन्मा और बड़ा हुआ, मगर जिसने तलवार चलाने की बजाय फूलो के गीत बुनने ज्यादा पसन्द किये..।

— शायर दाग़ का पत्र मुन्नी बाई के नाम।

". . मै तुम्हारे लिये बिलबिला रहा हूँ......"

—५ सितम्बर १८८०

बाई जी, सलाम शौक़ !

गजब तो यह है कि दूर बैठी हो। पास होती तो खैर होती। कभी तुम्हारे चारो ओर घूमता और गोला बन जाता, और कभी तुम्हे शमा करार देता और पतगा बन कर कुरबान हो जाता। कभी तुम्हारी बलाये लेता, और कभी सदके कुरबान हो जाता। एक खत भेजा है। जवाब की इन्तजार की मुद्दत खत्म नही हुई, कि दूसरा लिखने लगा। खुदा के लिये जल्दी आओ या आने की तारीख तय करके खबर दो। दिन-रात इन्तजार मे गुजरते है। वहाँ के लोग क्यो कर इजाजत देगे ? तुम्ही चाहोगी तो छुट्टी ले सकोगी.. मै तुम्हारे लिये बिलबिला रहा हूँ.. ये भयानक काली राते, यह अकेलापन ! क्या कहूँ, क्योकर तड़प-तड़प कर सुबह की सूरत देखना है ? यकीन मानना ऐसे तड़पना

हूँ, जैसे बुलबुल पिंजरे मे । मेरे दोनो ख़तो का जवाब आना जरूरी है

तुम्हारा दिलदादा, मुन्तजर

—दाग़

जर्मनी का विश्व-प्रसिद्ध कवि, नाटककार, तथा विचारक, 'फास्ट' का लेखक... .

—गेटे का पत्र कैंचन के नाम†

"... ..मैंने देखा कि तुम्हारी शादी हो चुकी है.. क्या यह सपना सच है... ?"

मेरी प्यारी, मेरी प्रियतमा मित्र,

कल रात मुझे एक सपना दीखा और उसने मुझे याद दिलाया कि मुझे तुम्हे पत्र लिखना है। यह नही, कि मै यह बात बिलकुल भूल गया था। यह भी नही, कि मै तुम्हारे बारे मे कभी नही सोचता। नही मेरी प्रिय मित्र, हर आने वाला दिन तुम्हारे बारे मे, और मेरी कमियो के बारे मे मुझ से कुछ न कुछ कहता है, पर ताज्जुब की बात है, और तुमने भी ऐसा अनुभव किया होगा, कि आँखो से दूर हो जाने

---

†लीपजिग मे गेटे एक विद्यार्थी था, जब कि उसका कुमारी कैंचन से प्रथम परिचय हुआ। गेटे ने अपने मित्र कैंने से उसका परिचय कराया। कैंचन गेटे से विमुख होकर कैंने से ही प्यार करने लगी। उनके विवाह की अनिश्चित सी खबर पाकर गेटे ने कैंचन को यह पत्र लिखा। तब गेटे सख्त बीमारी से उठकर ही चुका था।

पर याद चाहे पूरी तरह न मिटे पर धुँधली जरूर पड जाती है। जिन्दगी के काम-धन्धे ; नई चीजो व आदमियो से परिचय, संक्षेप मे—परिस्थिति मे हर परिवर्तन हमारे दिलो पर वही असर डालता है, जो धूल और धुआ एक तस्वीर पर डालते है। ये उसकी हल्की, कोमल रेखाओ को एक दम मिटा सा देते है, और वह भी ऐसे ढग से कि कोई जान ही नही पाता कि ऐसा कैसे हो गया। हजारो बाते है जो मुझे तुम्हारी याद दिलाती है। हजारो बार मैं तुम्हारी तस्वीर देखता हूँ, लेकिन इतनी अनासक्ति से और अक्सर इतनी थोडी भावना के साथ, जैसे कि मैं किसी एक दम अपरिचित व्यक्ति के बारे मे सोच रहा हूँ। अक्सर मुझे लगता है, कि मुझे तुम्हें उत्तर देना है, पर पत्र लिखने का मुझे जरा भी उत्साह नही होता। और अब जब मैंने तुम्हारा कृपा-पत्र पढा है, जो पहले ही कुछ महीने पुराना हो चुका है, और तुम्हारी मित्रता और मुझ नाचीज़ के लिए तुम्हारी चिन्ता के बारे मे सोचता हूँ, तो मेरे दिल को बडा धक्का सा लगता है। पहली बार मैं महसूस करता हूँ, कि मेरे भावो मे कैसा एक परिवर्तन आ चुका है, कि जो बात पहले कभी मुझे स्वर्गीय आनन्द दे सकती थी, उसी से अब जरा सी खुशी भी मुझे नही मिल पाती। इसके लिए मुझे माफ करना। क्या उस भाग्यहीन को दोषी बताना उचित है, जो आनन्द अनुभव करने मे असमर्थ है। मै इतना दीन बन चुका हूँ, कि अपने हित की बातो के प्रति भी लापरवाह हूँ। मेरा शरीर तो निरोग हो गया है, पर मन अब भी अस्वस्थ है। मै सुस्त और निष्क्रिय बना पडा हूँ, और इससे किसी को प्रसन्नता नही मिल सकती। इस निष्क्रिय शान्ति मे मेरी कल्पना इतनी जड हो गई है, कि वह उनकी तस्वीर भी नही खीच सकती, जो मुझे कभी सबसे अधिक प्यारे थे। सिर्फ सपनो मे ही मेरी भावना असली रूप मे फूट पाती है। सपनो मे ही वे मधुर तस्वीरे पुनर्जीवित हो पाती है, और मेरी अनुभूतियो

मे एक बिजली सी दौड पार्ती है। मैंने पहले ही लिखा है, कि इस पत्र के लिखे जाने का श्रेय एक सपने को है। मैंने तुम्हे देखा। मैं तुम्हारे साथ था। वह सब कैसा लगा यह बहुत अजीब है, और बताना तो बहुत ही कठिन है। एक शब्द मे...मैंने देखा कि तुम्हारी शादी हो चुकी है। क्या यह सपना सच है ? मैंने तुम्हारा पत्र पढा और उसमे दिया हुआ समय सपने के समय से मिलता है । यदि यह सच है, तो ईश्वर करे यह तुम्हारी प्रसन्नता का आरम्भ हो !

जब मैं इस विषय पर निरपेक्ष भाव से विचार करता हूँ, तो मेरी सबसे अच्छी मित्र ! यह जान कर मुझे कितनी प्रसन्नता होती है, कि उन सब स्त्रियो से पहले ही, जो कि तुमसे ईर्ष्या करती थी और स्वयं को तुमसे श्रेष्ठ समझती थी, तुम एक योग्य पति की बाँहो मे पहुँच गई ! कितनी प्रसन्नता होती है मुझे यह जान कर, कि अब तुम उन सब दिक्कतो से मुक्त हो, जो तुम्हे, और विशेषकर तुम्हे, कुंआरेपन के कारण थी। मै अपने सपने का आभारी हूँ, कि उसने तुम्हारी और तुम्हारे पति की खुशी की, तथा तुम्हे खुशिया देने के एवज मे तुम्हारे पति को जो इनाम मिला है, उसे मेरे सामने स्पष्ट अंकित कर दिया। क्योंकि तुम मेरी मित्र हो, इसलिए अपने पति की मित्रता भी मुझे प्राप्त कराओ। तुम दोनो की हर चीज एक होनी चाहिए, और मित्र भी एक होने चाहिए ! यदि मैं सपने को सच मानूँ, तो हमे आगे मिलना चाहिए। लेकिन ऐसा जल्दी ही होने की मुझे उम्मीद नही। जहाँ तक मेरा सम्बध है, मै इस अवसर को टालने की ही कोशिश करूंगा, यदि वास्तव मे मनुष्य भावी के विरुद्ध कुछ कर सकता है तो। मुझे आगे क्या करना है, यह मैंने बहुत ही स्पष्ट रूप मे एक बार तुम्हे लिखा था। अब मै साफ-साफ कहता हूँ, कि मैं अपना रहने का स्थान बदल दूंगा, और तुमसे दूर चला जाऊँगा। कोई चीज मुझे लीपजिग

की याद नही दिलायेगी, सिवाय एक बेचैन सपने के। न वहा से कोई मित्र मेरे पास आयेगा, न पत्र। फिर भी मै सोचता हूँ, कि इससे कोई सहायता मुझे नही मिलेगी। धैर्य, समय, और स्थानान्तर वह कर देगा जो और कोई नही कर सकता। सब अरुचिकर यादे मिट जायेगी, और एक सन्तोष और नई जिन्दगी से भरकर हमारी मित्रता हमे वापिस मिल जायेगी। इस प्रकार कुछ वर्षो के वाद हम, यद्यपि एक दम भिन्न आँखो से, पर उसी पुराने स्नेह के साथ परस्पर मिल सकेगे। तीन महीनो के भीतर तुम्हे मेरा एक और पत्र मिलेगा, जिसमे मै अपने लक्ष्य-स्थान और चलने के समय का पता तुम्हे दूंगा, और शायद वह वात बेकार ही सही, एक वार फिर कहूँगा, जिसे मै हजारो वार कह चुका हूँ, मेरा अनुरोध है कि तुम अब मुझे आगे उत्तर न देना। यदि तुम्हे मुझसे कुछ कहना भी हो तो किसी मित्र की मार्फत कहला देना। यह एक दुख-भरा अनुरोध है। मेरी सर्वोत्तमे सारी स्त्री जाति मे तुम्ही एक ऐसी हो, जिसे मै मित्र नही कह सकता, क्योकि यह उसकी तुलना मे, जो मै तुम्हारे लिए महसूस करता हूँ, वहुत ही तुच्छ शब्द है। मै अव आगे, उसी प्रकार तुम्हारा लिखा नही पढना चाहता, जिस प्रकार तुम्हारी आवाज सुनना नही चाहता। मेरे सपने तुमसे भरे होते है, यही मेरे लिए काफी कष्टकर है। मेरा एक और पत्र तुम्हे मिलेगा। इस वायदे को मै ईमानदारी स पूरा करूगा, और इस प्रकार अपने कर्ज का एक भाग अदा करूँगा। बाकी के लिए तुम मुझे माफ करना!

—गेटे
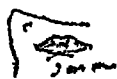
फ्रान्सीसी दरबार की अत्यन्त रूपवती दरबारिन, जो अपने पति से अलग रहती थी, और अपने समय के अनेक विशिष्ट व्यक्तियों, फ्रैडरिक लैम्ब, लेनी, बायरन आदि से जिसने प्रेम (?) किया .....

—हैरियट विल्सन का पत्र बायरन के नाम

"..... शीत ऋतु में जब उस्तरा कुंद हो, और पानी ठंडा, उस समय शायद तुम मुझे याद करो......"

प्रिये,

१००० फ्रांक मुझे मिले और प्यारे लार्ड बायरन इनके लिए मैं तुम्हें दुबारा हार्दिक धन्यवाद देती हूँ, यद्यपि इतने छोटे भद्दे पत्र से, और मुझे ऐसे बहाने से टरकाकर तुमने बहुत ही बुरा किया है, और इसके लिए तुमने वही क्षण चुना, जब कि घोड़ा इन्तजार कर रहा था, और तलाक दिया जा रहा था। कुछ भी हो, यह बहुत ही बढ़िया प्यारा पत्र है, और इसे तुमने मेरी शैली मे लिखा है, और अगर अनजाने मे तुमने ऐसा किया है, तो यह मेरे लिए और भी अधिक खुशी की बात है। मैं उस नन्हे सिकुडे हुए हाथ को भी अब प्यार करती हूँ, और इसके हर घुमाव को पहचानती हूँ।

प्यारे लार्ड बायरन, मै प्रार्थना करती हूँ, कि जब-तब थोड़ा-बहुत मुझे याद कर लिया करना। एक अच्छे तुच्छ साथी के रूप मे (एक

औरत के रूप मे नही, क्योंकि तुम्हारे लिए एक औरत मै कभी भी नही हो सकूँगी !) उस साथी के रूप मे, जिसे, जो कुछ भी तुम पर गुजरता है, और जो कुछ भी तुम्हे परेशान करता है, उस सब मे सहानुभूतिपूर्ण रुचि है। दुनिया मे और किसी को भी इतनी रुचि न होगी। जब तुम खुश हो तो मुझे भूल जाना, पर दुख के क्षणो मे, सुन्न करने वाली खराब .. शीतऋतु मे जब उस्तरा कुन्द हो और पानी ठडा, उस समय शायद तुम मुझे याद करो. और मुझे लिखो। तुम एक स्त्री की घसीटवाँ लिखाई से आसानी से अन्दाजा लगा सकते हो, कि उसका दिल लेख के साथ है अथवा नही, और मैं तुम्हे दिल से और ईमानदारी से प्यार करती हूँ। दुख है कि मैं इस बात को किसी बलिदान द्वारा सिद्ध नही कर सकती !

मै सच कहती हूँ, और सच के सिवाय और कुछ भी नही। एक रात मैंने तुम्हे आधे घन्टे तक परखा, और जब मैं तुम्हारे अत्यन्त खूबसूरत चेहरे को देख रही थी, तो तुम्हारे होठो का मेरे होठो पर जो दबाव पडा, उसने एक अजीब सी अनुभूति मुझ मे पैदा की। यह अनुभूति तुम्हारी कविता की तरह ही एक दम वहशी और जोश-भरी थी। जितना मेरी प्रकृति सह सकती थी, यह उससे बहुत अधिक थी, और अपनी ताकत से मुझे टुकडे-टुकडे कर देने, और नष्ट कर डालने का भय दिखा रही थी।

बादलो का देवता इन्द्र (जूपिटर) सर्वशक्तिमान है, और स्त्रियाँ घोडे की शक्ति की प्रशसा करना भी जानती है, पर एक स्त्री को अधिक धीमी, अधिक अच्छी, अधिक ऐन्द्रिक अनुभूति चाहिए, और वह तुम नही दे सकते !

इसके सिवाय नीली आखो को छोड कर मैंने कभी किसी को प्यार नही किया। मेरा अनुमान है अब तुम पेरिस कभी नही आओगे। तुम्हारा मित्र टी० मूर भी तुम्हे यहाँ नही खीच सकेगा। फिर भी मुझे उम्मीद है, कि एक दिन (लगभग बीस वर्ष बाद), मरने से पहले हम दोनो एक साथ एक चुटकी सुंघनी सूंघ सकेंगे ! जब तुम मुझे

मरी छोटी सी नुकीली टोपी और चश्मे मे सूखे टखनो पर ढीली जुराबें पहने अपने प्याले को हिलाते और चखते हुए देखोगे, तो तुम पान्सनबाई, वारसेस्टर और आरगाइल की उस परी जैसी हैनरिटे की कल्पना कर सकोगे ?

अभी पिछले दिनो मैने एक नई विजय प्राप्त की है—लार्ड कनिंघम पर। लेकिन मैं जवान लड़को से नफरत करती हूँ, और मैंने उस से कहा, कि तुम मेरे सफेद बालो को ढूँढ कर उखाड डालो, इसलिये कि उस का भ्रम दूर हो सके। उसने दस ढूँढ निकाले, और मुझे पता ही नही था कि मेरे सिर मे एक भी है ! तुम कहोगे कि इक्कीस साल के बढिया नीली आँखो वाले नौजवान के बदले क्यो न मैं एक बन्दर को ही पकड़ लाई ? कितना बेवकूफ था वह ! जब मैं और तुम मिलेगे तो मैं तुम्हे भूरे बालो पर लगाऊगी, क्योकि जैसे ही सफेद बाल बढ जाते है, मै कालो को उखाड फेकना चाहूँगी। एक ही रग पर कायम रहना ज्यादा अच्छा है !

मै विश्वास करती हूँ, और उम्मीद करती हूँ, कि तुम अपनी मुसीबत से छूट चुके हो, नही तो मुझे बडा दुख होगा, क्योकि इतनी मुसीबत उठाने जितना प्यार तुम उसे नही करते थे ! प्रियतम मुझे प्यार करने दो , कहो कि मै तुम्हे प्यार करू !

मै तुम से एक दम हानिशून्य दूरी पर हूँ, तुम जानते ही हो।

तुम्हारी प्यारी

—ब्यू पेज

भगवान तुम पर कृपा करे। मेरे सिवाय और कोई नही जानता कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ...

---

*बायरन के नाम उसकी पत्नी इसाबेला द्वारा लिखा गया एक पत्र व बायरन द्वारा लिखे गये कैरोलिन व कॉउन्टेस गाइकोली को एक-एक पत्र इसी खड के 'क' और 'ग' भाग मे उद्धृत है।

से
लिखे गये प्रेम-पत्र

क

ये दोबारा सूर्य को नहीं देख सके

इगलैंड का प्रसिद्ध नाईट, यात्री, इतिहासकार, कवि एव लेखक, जिसने अपना मखमल का कीमती कोट रानी के कोमल पाँवो को बचाने के लिए कीचड पर बिछा दिया, मगर जिसे सिर्फ इसलिए मार दिया गया, क्योकि वह इगलैंड के राजा के लिए सोने की खाने खोजने मे असफल रहा था ..

—सर वाल्टर रैले का पत्र पत्नी एलिजाबेथ के नाम†

" *मैं जिन्दगी की भीख मांगने से घृणा करता हूँ .* "

अब, मेरी प्यारी पत्नी, इन अन्तिम पक्तियो मे मेरे अन्तिम शब्द तुम्हे मिलेगे। इनके माध्यम से अपना प्यार मै तुम्हे भेजता हूँ, जिसे तुम मेरे मरने के बाद अपने पास रखोगी, और अपनी सलाह भेजता हूँ, जिसे तुम तब याद करोगी जब मैं नही रहूँगा ! मै अपनी वसीयत मे अपने दुख तुम्हे भेंट नही करूगा ! मेरी प्यारी बॉस ! उन्हे मेरे साथ मेरी कब्र मे ही चले जाने दो, और वहाँ मिट्टी मे दफनाए जाने दो ! क्योकि ईश्वर की ऐसी इच्छा नही है, कि मैं इस जिन्दगी मे अब कभी तुम्हे देखूँ, यह सब बहुत धीरज और अपने योग्य साहस के साथ सहन करो।

सब से पहले मै उन बहुत सारी यातनाओ और चिन्ताओ के लिए, जिन्हे तुमने मेरी खातिर सहा, वह धन्यवाद देता हूँ, जिसको मेरा हृदय

---

†यह पत्र रैले ने अपने गर्दन काटी जानी से केवल एक रोज पूर्व लिखा था।

कल्पना कर सकता है, या जिसे शब्द अभिव्यक्त कर सकते है ! यद्यपि तुम्हारा मनचाहा पूरा न हो सका, पर इससे मेरा ऋण जरा भी कम नही होता, और मै इस दुनिया मे रहते उसे कभी भी अदा नही कर सकूंगा।

दूसरे, मैं तुमसे उस प्यार के नाम पर, जो तुम मुझसे करती रही हो, प्रार्थना करता हूँ, कि मेरी मौत के बाद अपने को बहुत दिनो तक छुपाना मत, बल्कि अपने परिश्रम से अपनी उजडी सम्पत्ति को, और अपने निरीह बालक के हको को फिर से प्राप्त करने का प्रयास करना। तुम्हारा रोना-धोना मुझे वापिस नही ला सकता, क्योकि मै तो धूल बन चुका हूँ !

तीसरे, तुम जान लेना कि मेरी जायदाद सीधी मेरे बच्चे को पहुचती है। इस बारे मे बारह महीने पहले मिडसमर मे लिखा-पढी की गई थी। मेरा ईमानदार चचेरा भाई ब्रैट यह बात प्रमाणित कर सकता है; और डालबेरी को भी उसमे की कुछ न कुछ लिखत याद होगी ही। मेरा विश्वास है कि मेरा खून उन लोगो की ईर्ष्या को शान्त कर देगा, जो इस क्रूरता से मेरी हत्या कर रहे है, और वे तुझे और तेरे बच्चे को घोर गरीबी के द्वारा मार डालना नही चाहेगे।

किस मित्र के पास जाने को मैं तुम्हें कहूँ ? मै जानता हूँ कि मेरे सब मित्र मुसीबत पडने पर मुझे छोड गए हैं, और साफ देखता हूँ कि पहले ही दिन से मेरी मौत सुनिश्चित थी।

भगवान जानता है कि मुझे सबसे अधिक दुख इसी बात का है, कि इस प्रकार अचानक मौत के चगुल मे फस कर मैं तुम्हें अच्छी दशा मे नही छोड कर जा सकता। ईश्वर इस बात का गवाह है, कि मै अपना शराब का कारोबार, अथवा जो कुछ इसको बेचने से मिल सकता, वह सब, और अपने सब जवाहरात तुम्हारे लिए छोड जाना चाहता था; पर भगवान ने मेरे सब इरादो को तोड दिया। उस भगवान ने, जो सब पर

निरकुश शासन करता है। पर अगर तुम गरीबी से मुक्त होकर रह सकी, तो अधिक की लालसा न करना, क्योंकि बाकी सब अहकार के सिवाय और कुछ नही है।

भगवान को प्यार करना और समय रहते स्वय को उस पर निर्भर बना देना, और इसी प्रकार सच्ची व स्थायी सम्पत्ति और अनन्त शान्ति तुम्हे मिल सकेगी; नही तो दुनिया भर की साँसारिक बातो के बारे मे विचार, चिन्ता एव श्रम करने के बाद अनुताप एव दुख के सिवाय और कुछ भी तुम्हारे पास नही बच रहेगा।

अपने बेटे को भी भगवान से प्यार करना, और उससे डरना सिखाना। अभी वह बच्चा ही है, और भगवान का डर उसमे उम्र के साथ-साथ बढना चाहिए। भगवान ही तेरे पति होगे व उसके पिता—ऐसे पति व पिता जिन्हें कोई तुमसे छीन नही सकता!

बेली की तरफ मेरे २०० पौड हैं, ऐड्रियन गिल्बर्ट की तरफ ६००। इनके अतिरिक्त शराब की पुरानी लेनदारी मे मेरा कर्ज अदा हो जायेगा। और तुम कैसे भी करो, मेरी आत्मा की शान्ति के लिए सभी गरीबो का भुगतान जरूर कर देना।

जब मै जा चुकूँगा तो निसन्देह कितने ही लोग तुमसे विवाह करना चाहेगे, क्योंकि दुनिया समझती है कि मै बहुत अमीर था! पुरुषो के बहानो व उनके प्रेम-प्रदर्शन के प्रति सचेत रहना, क्योंकि केवल ईमानदार एव योग्य व्यक्तियो का प्यार ही स्थायी होता है, और इस जिन्दगी मे पहले शिकार बनने और पीछे घृणा किए जाने से बडी कोई और विपत्ति तुम पर नही पड सकती। भगवान जानता है, कि तुम्हे विवाह से विमुख करने के लिए मै ऐसा नही लिख रहा हूँ, क्योंकि विवाह कर लेना ही तुम्हारे लिए सर्वोत्तम रहेगा, दुनिया की दृष्टि से भी और भगवान की दृष्टि से भी।

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मै अब तुम्हारा नही रहा, न तुम मेरी रही। मौत ने हम दोनो को काटकर अलग कर दिया है, और भगवान ने मुझे दुनिया और तुम से पृथक कर दिया है।

अपने निरीह बच्चे का उसके पिता की खातिर ध्यान रखना। जिस पिता ने तुम्हे चुना और अपने सर्वोत्तम दिनो मे तुम्हे प्यार किया।

उन पत्रो को (यदि संभव हो सके तो) वापिस ले लेना, जिन्हे मैंने लार्ड को अपना जीवन बचाने के उद्देश्य से लिखा था। ईश्वर मेरा गवाह है, कि तुम्हारे और तुम्हारे बच्चे की खातिर ही मै अपनी जिन्दगी बचाना चाहता था, पर यह भी सच है कि.. मै जिन्दगी की भीख माँगने से घृणा करता हूँ...मेरी प्यारी पत्नी, यह जान लो कि तुम्हारा बेटा एक सच्चे आदमी का बेटा है, उस आदमी का जो जहाँ तक उसका सम्बन्ध है, विकृत एव भद्दी शक्ल वाली मौत से घृणा करता है।

मै और अधिक नही लिख सकता। भगवान जानता है, कि कितनी कठिनाई से दूसरो के सोते-सोते मैंने इतना समय निकाला है। फिर वह समय भी अब आ चुका है, जब मैं अपने विचारो को दुनियादारी से अलग कर लूं।

मेरे मृत शरीर को, जो जीते जी तुम्हे न मिल सका, माँग लेना और या तो इसे शरबर्न मे, या ऐक्सेटर चर्च मे, मेरे माता-पिता के पास दफना देना।

मै और कुछ नही कह सकता। समय और मौत मुझ दूर पुकार रहे है।

अनन्त शक्ति सम्पन्न, असीम व सर्वशक्तिशाली भगवान, वह सशक्त प्रभू जो साक्षात शिवत्व है, सज्जीवन है और सत्ज्योति है, तेरी और तेरे पुत्र की रक्षा करे, मुझ पर दया करे, और बल दे, कि मै उन्हें माफ कर सकूं, जिन्होने मुझे कष्ट पहुँचाये हैं, और मुझ पर दोषारोप लगाये

है, और वह हम सब को स्वर्ग मे मिलाये !

प्यारी पत्नी विदा। अपने निरीह बेटे को आशीर्वाद दो, मेरे लिए प्रार्थना करो, और मेरे अच्छे भगवान तुम दोनो को अपनी बाहो मे थाम ले !

—जो कभी तेरा पति था और जिसे अब समाप्त कर दिया गया है, उसी के मरते हुए हाथो ने यह पत्र लिखा है

—वाल्टर रैले

—जो कभी तुम्हारा था पर अब खुद अपना भी नही

मामूली पिता की चरित्रवान लड़की व इंगलैंड की रानी, जिसे विलासी एव अय्याश हेनरी अष्ठम ने मन भर जाने के बाद राजद्रोह का झूठा अभियोग लगा कर मार डाला ...

—रानी ऐनीबोलीन का पत्र पति हेनरी अष्ठम के नाम†

" *मेरे सच को किसी शर्म का डर नहीं है* "

श्रीमन्,

आप की नाराजी और मेरा वन्दी वनाया जाना ऐसी अजीव वातें है, कि उनके बारे मे मैं क्या लिखूँ और क्या छोड दूँ, यह मैं एकदम नही समझ पाती। इस पर आप ऐसे आदमी के हाथ यह सन्देशा (कि मैं सच्चाई को मान लूं और इस प्रकार मुक्ति पा लूँ), भेज रहे है, जो कि मेरा पुराना घोषित शत्रु है। जैसे ही मैंने उस आदमी के मुख से यह सन्देशा प्राप्त किया, मैं आप का मतलव ठीक-ठीक समझ गई, और अगर जैसा कि आप कहते है, सच को मान लेने से मेरा वचाव हो सकता हे, तो मैं आपका आदेश खुशी से मान लूँगी।

लेकिन आप कभी ऐसा न समझे, कि आप की गरीव पत्नी उस अपराध

---

†ऐनीवोलीन विवाह से पूर्व हैनरी की वहिन की नौकरानी मात्र थी।

को स्वीकार करेगी, जिसका खयाल भी उसने कभी नही किया। और सच तो यह है, कि कभी किसी राजा को इतनी कर्त्तव्यपरायण और सच्चा प्रेम करने वाली पत्नी न मिली होगी, जितनी कि आपको एनीबोलीन के रूप मे मिली है। अगर भगवान और आप चाहते, तो मैं अपनी इस स्थिति मे पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहती। अपने इस उत्कर्ष मे, अथवा रानी पद की प्राप्ति मे, मैंने कभी स्वय को नही भुलाया, क्योकि मुझे उस परिवर्त्तन की सतत आशका थी, जो मैं आज देख रही हूँ। मेरा चुनाव किसी ठोस आधार पर न किया जा कर मामूली रुचि की प्रेरणा-भर से ही किया गया था। किसी अन्य की तरफ ढुलकने का उस रुचि मे परिवर्तन हो जाना ही पर्याप्त व उचित कारण होगा, इस बात को मैं जानती थी। मेरी योग्यता व इच्छा से बहुत परे आपने मुझे एक निम्न स्तर से उठा कर अपनी रानी व साथिन बनाया। यदि आपने मुझे इस सम्मान के योग्य समझा था, तो मेरे अच्छे राजा, अब किसी तुच्छ रुचि के कारण अथवा मेरे शत्रुओ की कुसम्मति से प्रेरित होकर अपनी राजकीय कृपा को मुझसे छीन मत लो, और न ही उस कलक को, आपके विरुद्ध विद्रोह करने के दुष्ट कलक को, अपनी वफादार पत्नी और शिशु राजकुमारी पर दूषित धब्बा बन कर लगने दो। ओ अच्छे राजा! मुझ पर मुकदमा चलाओ, पर मेरा मुकदमा न्याय-सम्मत हो, और मेर वचन-बद्ध शत्रु ही मुझ पर दोषारोपण करने वाले और मेरे जज न बनाये जाये। खुली अदालत मे मुझ पर मुकदमा चले। ... मेरे सच को किसी शर्म का डर नही है तब तुम देखोगे कि या तो मरी निर्दोषिता प्रमाणित होगी या तुम्हारा सन्देह और तुम्हारे मन की आवाज ठीक निकलेगा, या तो मेरी बदनामी और दुनिया के दोषारोप समाप्त हो जायेगे, या मेरा अपराध खुले रूप मे घोषित हो जायेगा। इससे यह होगा कि भगवान और आप चाहे मेरे लिये कुछ

भी फैसला करे, पर आप एक खुली आलोचना से मुक्त ही जायेंगे, और मेरा अपराध न्यायपूर्वक सिद्ध हो जायेगा, और आप भगवान व मनुष्य दोनो के सामने अपनी बेवफा पत्नी को, मुझ को, केवल उचित दण्ड ही न दे सकेंगे, बल्कि दूसरे पक्ष के प्रति अपने प्यार को भी सुस्थिर बना सकेंगे। यह वह पक्ष है जिसकी खातिर मैं आज की स्थिति को पहुची हूँ, और जिसका नाम मैं निश्चय ही बता सकती थी, और आप स्वय भी मेरे इस सन्देह से अपरिचित नही थे।

लेकिन अगर आपने फैसला कर लिया है कि मेरी मौत और मेरा यह दूषित कलक ही आपको उस मनोवाञ्छित खुशी का उपभोग करा सकता है, तो मैं भगवान से चाहूँगी कि वह आपके और मेरे शत्रुओ के, जो कि इसमे यन्त्र बने हैं, इस घोर पाप को क्षमा कर दें, और न्याय के मौके पर मुझसे किये गये इस क्रूर व्यवहार का आप सब से सख्त हिसाब न मागे। उस दैवी न्याय के सामने तुम्हे और मुझे दोनो को जल्दी ही उपस्थित होना पडेगा, और उस न्याय मे (दुनिया चाहे कुछ भी सोचे) मुझे जरा भी सशय नही है, कि मेरी निर्दोषिता निश्चय ही खुले और पर्याप्त रूप मे प्रमाणित हो जायेगी।

मेरी आखिरी और एक मात्र प्रार्थना यही है, कि सिर्फ मैं ही आप की नाराजी का दण्ड भुगतूँ, और उन दीन सज्जनो के निर्दोष प्राणो को कुछ न सहना पड़े, जो जहाँ तक मुझे पता है, मेरे कारण जेल मे डाल दिये गये है। अगर कभी मुझे आपकी कृपा प्राप्त हुई है, अगर कभी ऐनीबोलीन का नाम आप के कानो को मधुर लगा है, तो मेरी यह प्रार्थना मान ली जाये। मैं आगे कभी भी आपको कोई कष्ट नही दूंगी। मैं भगवान से हार्दिक प्रार्थनाएँ करूगी, कि आपका गौरव बना रहे और वही आपको आपके कार्यों मे सत्प्रेरणा दे। इस बुर्ज मे स्थित इस उदासी

भरी जेल से ६ मई के दिन।

आपकी सर्वाधिक राजभक्त व वफादार पत्नी—

—ऐनीबोलीन

ऐनीबोलीन के नाम हैनरी का एक पत्र—'विवाह से पूर्व लिखे गये प्रेम-पत्र' —खड के 'ग' भाग मे उद्धृत है।

अमेरिका का प्रसिद्ध अणु-वैज्ञानिक, जिसे शान्ति-प्रेमी ! राजनीतिज्ञो ने रोम के पोप की अपील के बावजूद, निरपराध बिजली की कुर्सी को भेट चढ़ा दिया. ...

—जूलो रोज़नबर्ग का पत्र पत्नी ईथल के नाम+

" .. लोहे की ये छड़े कहीं अधिक वास्तविक हैं . "

१० अप्रेल, १९५१

ईथल, मेरी प्यारी,

सच ही तुम एक महान प्रतिष्ठित नारी हो। जैसे-जैसे मैं अपने भावो को इस पत्र मे जाहिर करने की कोशिश कर रहा हूँ, मेरी आँखे भरी-भरी आती है। मैं केवल इतना कह सकता हूँ, कि मेरी ज़िन्दगी सफल हो गई, क्योकि तुम मेरे साथ हो ! मेरा पक्का विश्वास है कि मुकावला करने पर हम औरो से वहुत श्रेष्ठ व्यक्ति निकलेंगे, क्योकि हमने वरावर मुकदमे और उसके कठोरतम दण्ड का, पूरी तरह वेकसूर होते हुए भी हिम्मत के साथ मुकावला किया है। जिन लोगो को पूरे विवरण का पता नही, अथवा जो एकदम पत्थर है, उनके लिए हमारी अन्दर की ताकत का अन्दाजा लगाना वहुत कठिन

है। हमारे पालन-पोषण ने, और अमरीकी व यहूदी परम्पराओं के हम मे हुए पवित्र मेल से निकले हमारे जीवन के सही अर्थ ने, यानी स्वतन्त्रता, सस्कृति और मानवीय मर्यादा के सिद्धान्तो ने, ही हमे वह बनाया है, जो हम आज है। इस गलत आरोप के कारण जितनी गन्दगी, झूठ और कलक-कालिमा जो हम पर पोती गई है, वह सब हमारी हिम्मत को तोड नही सकेगी, बल्कि हमे तब तक जोश दिलाती रहेगी, जब तक कि हम पूरी तरह दोष-मुक्त नही हो जाते।

हमने ऐसा दण्ड पाने के काबिल कोई अपराध नही किया। हम तो सब-पचडो से दूर रहना चाहते थे, लेकिन हमे फॉस लिया गया! और हम शरीर मे एक रत्ती भी जीवन-शक्ति रहते समय तक मुक्त होने के लिए सघर्ष करेगे।

मैं लगातार तुम्हारे बारे मे सोचा करता हूँ! मैं तुम्हारे लिए तरसता हूँ!, मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूँ! यह वियोग बहुत दुखदायी है। यह मेरे दिल पर एक गहरी चोट है। इसका यही अर्थ हो सकता है, कि मैं तुम्हे अपने व्यक्तित्व के हर अश से प्यार करता हूँ! मैं बार-बार केवल यही दोहरा सकता हूँ, कि तुम्हारा खयाल और उस खुशी की याद, जो तुमने मुझे एक पत्नी के रूप मे दी है, आज की इस पीडा की क्षति-पूर्ति कर देती है। मै तुम्हे भूल नही सकता, मेरी प्यारी! तुम मुझे बहुत ही अधिक प्रिय हो! जो ताकत तुम मुझे देती हो, यदि उसका प्रथम अश तुम स्वय ग्रहण कर लो, तो मुझे निश्चय है, कि तुम इन प्रत्यक्ष विपत्तियो का मुकाबला करने की सामर्थ्य पा लोगी।

मुझे माइकेल का एक विस्मयजनक पत्र मिला, और इसने मुझे बहुत गहरे हिला सा दिया। मैंने फौरन ही उसे उत्तर दिया। उसे अपने प्यार का विश्वास दिलाया, और उसके प्रश्नो का ऐसे ढग से उत्तर दिया जिससे वह समझ सके। मैंने उसे बताया कि हमे अपराधी समझा

गया है और हमने बड़ी अदालत मे अपील की है, और अन्त मे सब कुछ ठीक हो जायेगा। मैंने इसे लिखा कि हम तुमसे मिलने के लिए बहुत बेचैन हैं, और अदालत से तुम लोगो से मिलने की इजाजत पाने के लिये हर सभव प्रयत्न कर रहे है। मेरा विचार है कि माइकेल यह सब समझ पायेगा।

मैंने उसे अपने दण्ड के बारे मे कुछ नही बताया। मैंने केवल यही लिखा कि मिलने पर ही हम मुकदमे के बारे मे सब कुछ तुम्हे बतायेंगे। अपने बच्चो से बिछुड जाना कितना अवास्तविक लगता है.. पर लोहे की ये छड़े कही अधिक वास्तविक हैं...मैं अपनी इस कोठरी मे खाता हूँ, सोता हूँ, पढता हूँ, और चार कदम आगे-पीछे चलता भी हूँ। मै तुम्हारे व बच्चो के बारे मे बेहद सोचता हूँ!

हमारा सारा परिवार सौ फीसदी हमारे साथ है, और इससे मुझे प्रोत्साहन मिलता है। मैं जानता हूँ जैसे-जैसे समय बीतेगा अधिक से अधिक लोग हमारी रक्षा और सहायता के लिए आयेंगे, और हमे इस भयानक सपने से मुक्ति दिला देंगे। मैं तुम्हे मधुर चुम्बन और अपना सम्पूर्ण प्यार भेजता हूँ...

तुम्हारा अपना

—जूली

प्रसिद्ध अमेरिकी अणु-वैज्ञानिक जूली रोज़नबर्ग, जिसे निरपराध मार डाला गया, की प्यारी पत्नी, जो पति के साथ जियी ही नही, उसी के साथ मर भी गई ! अमेरिका के माथे पर कभी न धोये जा सकने वाला काला कलक......

—ईथल रोजनबर्ग का पत्र पति जूली के नाम†

"......ईंटों, ककरीट, और फौलाद से बध कर भी हमारा प्यार यहां गहरी जड़ें जमायेगा "

१६ मई, १६५१

मेरे अपने प्यारे

तुमसे अलग होते समय कितना कष्ट मुझ हुआ, और जब मैं अपनी कोठरी के पास पहुँची तो मेरे पैर अन्दर घुमने मे कितने हिचक रहे थे ! जड, कठोर, और घिनौनी यह कोठरी लगती है । इस कोठरी को अपने मालिक के बाहर जाने का ज्ञान नही था, पर उसके लौटने का पता उसे था, क्योकि अब वह साफ-सुथरी थी ।

कुल तीन ही दिन तो गुजरे है, जब मैंने प्रिय प्रियतम, अजीब

---

†ईथल व जूली पर यह इल्जाम लगाया गया था, कि उन्होने अणुबम बनाने के रहस्य कम्यूनिस्ट रूस को बेचे है । यह दोप साबित नहीं किया जा सका, मगर फ़िर भी उन्हे लगभग तीन साल तक जेल मे रख कर मृत्यु-दड दे दिया गया । यह पत्र जेल की एक कोठरी मे कैद ईथल द्वारा जेल की दूसरी कोठरी मे कैद जूनी को लिखा गया !

से जाने-पहचाने और उस अनोखे व्यक्ति को देखा था, जिसकी बगल मे मै पता नही कितनी रातो लेटी हूँ, तब भी लगता है जैसे युग बीत गये है, और मै अपने उस दिन के मिलन के सपने देख रही हूँ। मैं तुम्हारा पीला कृश चेहरा, तुम्हारी विनय करती सी आखे, तुम्हारी लडको जैसी छरहरी देह, और तुम्हारी स्पष्ट यातना को देख रही हूँ। मेरे प्रियतम पति ! कितना स्वर्गिक आनन्द और कितनी नारकीय पीडा यहाँ 'सिग सिगे' की जेल मे तुम्हारा स्वागत करते हुए एक साथ मुझे हो रही है। यहाँ के दिन नीरस व उकताने वाले हैं, और राते सूनी वह खुशी से रहित है। असीम इच्छाये है यहाँ, और असीम इकार है, और ईंटो ककरीट और फौलाद से बध कर भी हमारा प्यार-यहाँ गहरी जडे जमायेगा और फले-फूलेगा। यही हम अन्याय का करारा मुकाबला करेगे और लडाई लडेगे।

यह सच है कि हृदय मे उठने वाली भीड की भीड विचारो व भावनाओ को न तुम जाहिर कर सकते, हो न मैं। क्या तुम आशा करते हो कि वर्तमान अवस्थाओ मे अपने दिलो को खोलना हमारे लिये सम्भव होगा ? मैं फिर भी मानती हूँ, कि मैने अचानक ही छुट जाने की आशा अपने मन मे सोच रखी थी; और जब मै छुट न सकी तो एक हार और मनचाहा पूरा न होने की घुटन के धुँधले भावो ने मेरे हृदय मे स्थान बना लिया, और तुम्हारी ही तरह मैं भी घोर निराशा से भर उठी। तुम्हारी चिट्ठी आने तक तो मै उसे कागज पर लिख भी नही सकती थी।*

तुम्हारी अकेली पत्नी
—ईथल

*जूली द्वारा ईथल को लिखा गया एक प्रेम-पत्र इसी खड के इसी भाग मे आगे उद्धृत है।

अफ्रीका और कांगो का तेजवान दीपक ! जिसे बैलजियम के राक्षसी उपनिवेशवाद ने धृष्टतापूर्वक बुझा डाला .....

—अमर शहीद लुमुम्बा का पत्र अपनी पत्नी के नाम†

" ... सिर सीधा किये हुए मरने को ज्यादा पसन्द करता हूँ . मेरी प्यारी पत्नी रोओ मत ... !"

मेरी प्यारी पत्नी,

मैं तुम्हे ये शब्द लिख रहा हूँ, बिना यह जाने, कि वे तुम तक पहुँचेंगे, कब पहुँचेंगे, और जब तुम उन्हे पढ रही होगी, तब मैं जीवित भी बचा होऊँगा या नही। अपने देश के पूरे स्वतन्त्रता सघर्ष मे, मुझे एक क्षण के लिए भी उस पवित्र उद्देश्य की अन्तिम जीत के विषय मे कभी कोई सन्देह नही रहा, जिसके लिए मेरे साथियो और मैंने अपनी पूरी जिन्दगियाँ समर्पित कर दी हैं !

अपने देश के लिए हमने चाहा, था सिर्फ एक सम्मानपूर्वक जीवन, अच्छी शान और बिना बेडियो वाली स्वतन्त्रता का अधिकार, जो कि बैलजियम उपनिवेशवादी व उनके पश्चिमी साथियो

---

†यह अमर शहीद लुमुम्बा का अन्तिम पत्र है, जो मूल फ्रान्सीसी लिखा गया था।

जिनको राष्ट्र-संघ— जिस सस्था मे हमने अपना पूर्ण विश्वास स्थापित किया हुआ है—के कुछ ऊँचे अधिकारियो का सीधा व परोक्ष, चाहा व अनचाहा सहयोग मिला है—ने कभी नही चाहा। उन्होने हमारे कुछ देशवासियो को भ्रष्ट कर डाला, कुछ को खरीद लिया उन्होने सच को तोडने-मरोडने और हमारी स्वतन्त्रता को हानि पहुँचाने व उसको मारने मे अपना भाग अदा किया है। तस्वीर के दूसरे रुख के बारे मे मैं क्या कहूँ ? जहाँ तक उन लोगो का सम्बन्ध है जो उपनिवेशवादियो की आज्ञा पर मर चुके है, जी रहे हैं, आजाद हैं या बन्दी है, मैं किसी गिनती मे नही हूँ ! यह कागो है !.. यह हमारी गरीब जनता है, या हमारा गरीब राष्ट्र है ! जिसकी स्वतन्त्रता एक पिंजरे मे परिवर्तित कर दी गई है ! जिसके बाहर से, कभी दुखियो के प्रति करुणा भाव के साथ, और कभी प्रसन्नता और आनन्द के साथ वे हमारी तरफ देखते है !

लेकिन मेरा विश्वास अडिग रहेगा ! मैं जानता हूँ, और अपने हृदय के गहनतम से अनुभव करता हूँ, कि जल्दी या देरी से मेरी जनता अपने तमाम अन्दरूनी और बाहरी शत्रुओ से छुटकारा पा लेगी, और अपमानपूर्ण और शर्मनाक उपनिवेशवाद को 'ना' कहने के लिए, व अपना सम्मान दोबारा प्राप्त करने के लिए वे सारे एक आदमी की तरह उठ खडे होगे !

अब हम अकेले नही हैं ! अफ्रीका, एशिया और स्वतन्त्र व आजाद कराये गये लोग, दुनिया के हर कोने से कांगोलियो के बराबर खडे होगे, जो कि केवल उसी दिन अपने सघर्ष को छोडेंगे, जब कि कोई भी उपनिवेशवादी व उनके किराये के टट्टू हमारे देश मे नही रहेंगे !

अपने बच्चों के लिए जिनको मैं छोडे जा रहा हूँ, और शायद अब कभी भी नही देखूँगा, मैं कामना करता हूँ, उनसे कहा जाये कि कागो का भविष्य खूबसूरत है, और उनका इन्तज़ार कर रहा है ! जैसे

कि वह प्रत्येक कांगोली का इन्तजार कर रहा है; कि वे हमारी स्वतन्त्रता के पूर्ण निर्माण के कार्य को पूरा करें, क्योंकि बिना स्वतन्त्रता के कोई सम्मान नही है, बिना न्याय के कोई सम्मान नहीं है, और बिना स्वतन्त्रता के आजाद आदमी नही होते। न तो बर्बरताओ ने, और न ही क्रूरताओ ने मुझे दया की भीख मागने के लिये मजबूर किया है, क्योकि मैं अपने देश के भाग्य के प्रति विश्वास और दृढ श्रद्धा के साथ अपना ..सिर सीधा किये हुये मरने को ज्यादा पसन्द करता हूँ, ..अपेक्षा इसके कि पवित्र सिद्धान्तो की अवहेलना करके जूये के नीचे जियूं !

एक दिन इतिहास अपना फैसला देगा, लेकिन यह वह इतिहास नही होगा, जो ब्रूसलस, पेरिस, वाशिंगटन या राष्ट-सघ मे पढाया जायेगा। वरन् वह इतिहास होगा जो उन देशो मे पढाया जायेगा, जिन पर उपनिवेशवाद और उसके कठपुतलो ने हमला बोला हुआ है। अफ्रीका अपना इतिहास अपने आप लिखेगा ! और वह इतिहास सहारा के उत्तर और दक्षिण मे शानदार और सम्मान का इतिहास होगा।

.. मेरी प्यारी पत्नी रोओ मत... । जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं जानता हूँ कि मेरा देश, जो कि इतना पीडित है, अपनी आजादी और अपराधीनता की रक्षा कर सकेगा। कागो दीर्घायु हो।...अफ्रीका दीर्घायु हो। .

तुम्हारा प्रिय,
—पेट्रिस

फ्रास की अन्तिम रानी, जिसने पति के होते हुये, और उसकी जानकारी में, अनेक अन्य प्रेमी 'पाल' रक्खे थे.. ...

— मेरी अन्टोनियटे का पत्र प्रेमी फ़रसन के नाम*

"..... *तुम किसी भी बहाने से, यहां आने की कोशिश न करना.. ...*"

प्रिय,

२४ जून १७९१

मै फिर तुम्हे आश्वस्त करती हूँ, कि हम अभी जीवित हैं। मेरा अस्तित्व अभी है...लेकिन तुम्हारे लिए मैं भयानक रूप से बेचैन रही हूँ, और हमारी कोई खबर न पाकर तुम्हे कितनी तक्लीफ होती होगी, यह सोच मुझे बहुत परेशान करता है। क्या भगवान की कृपा से यह पत्र तुम तक पहुच सकेगा ? मुझे पत्र मत लिखना, क्योकि इससे हम अनावश्यक खतरे मे पड़ सकते है। . तुम किसी भी बहाने से यहाँ आने की कोशिश न करना.. यह सबको मालूम है कि हमारे भाग निकलने मे तुम्ही हमारे प्रमुख सहायक थे। इसलिए यदि तुम फिर यहाँ आ पहुचे, तो सब कुछ समाप्त हो जायेगा। हम पर रात-दिन निगरानी

---

*क्रान्ति आरम्भ हो चुकी है, और मेरी को राज-महल मे कैद किया जा चुका है।

रखी जाती हैं । मुझे इस सब की परवाह नही । तुम मन मे कोई फिक्र मत करना । मैं ठीक ही रहूँगी । असेम्बली हमसे नम्र वर्ताव ही करना चाहती है । विदा...मैं आगे और पत्र तुम्हे नही लिख सकूँगी...*

२५ जून १७९१

...मैं तुम्ह सिर्फ इतना कह सकती हूँ, कि मैं तुम्हे प्यार करती हूँ। यद्यपि मेरे पास उसके लिए भी समय नही है ! मैं अच्छी हूँ। मेरे बारे मे परेशान मत होना। यह जानने के लिए, कि तुम भी ठीक हो, मैं कितना तडपती हूँ ! सकेत की भापा मे मुझे लिखो। अपने नौकर से पता लिखाओ। मुझे बताओ कि मैं अपनी चिट्ठियाँ किन पते पर भेजूँ ? क्योकि तुम्हे पत्र लिखे बिना मैं जीवित नही रह सकती ! मेरे प्रियतम, और पुरुपो मे सब से मनोरम पुरुप, विदा ! मेरा हृदय तुम्हारे लिए बेचैन हैं

*फरसन वेष बदल कर आया, और दो-एक रात महल मे गुप्त रूप से रहा।

: ९६ :

अवध का अन्तिम और अय्याश नवाब !.. जो कलकत्ते की ब्रिटिश जेल मे मरा . ...

—नवाब वाजिद-अली-शाह का पत्र शैंदा बेगम के नाम†

"......*परिन्दा तक पर नहीं मार सकता*......"

जान जाने आलम नवाब शैंदा बेगम साहिबा, जाद जिस्नहा व जमाल हा—

दो तरफीनामे तुम्हारे अँजुमुल्दौला बहादुर ने नवी रजब को ला कर दिखाये। दिल शाद हुआ। तबीयत मे कूवत आई। जान ताजा पाई। मगर ऐ जानी ! अब हम वो नही रहे ! हम अब अपना हाल लिखते है। इससे मालूम होगा हम पर क्या गुजर रही है ? इश्क व आशिकी सब मफकूद हैं। रज ने हालत तबाह की। उठे तो नाला किया। बैठे तो आह किया। हम किला फोर्ट विलियम मे नज़रबन्द हैं। लार्ड लिंग साहब का मेरे पास खत भी आया, कि अफसरान आपके ऐजाज

†शैंदा वाजिदअली की दर्जनों बेगमो मे से एक थी ! उसी को वाजिद-अली ने सबसे अधिक पत्र लिखे।

मे फ़र्क न करेंगे, मगर मेरी जिन्दगी दुश्वार हो रही है। आठ दिन बाद किले मे एक कोठी है, उसमे उठ आये। तेईस आदमी हमराह हैं। परिन्दा तक पर नही मार सकता...कैदखाने के दरवाज़े बन्द कर लिए गये है। हमारा दम घुटता है। मजाहदउलदौला मिर्जा जीन उलअला बदीन दयानतुलदौला मतदीनलमालिक मौहम्मद माहतमद-अली खान इमानत जंग के मैदान हर वक्त परवानावार जा निसार थे। फतहुलदौला बख्शी उलमालिक ज़ईफी के सबब चिरागे-सहरी थे। वो २८ सिफर, २३ हिजरी को हम से रुखसत हो गये। हमको कुलकत मे छोड कर खुद राही-ए-जन्नत हो गये।

मोहदमलदौला वहादुर और जुलफिकरलदौला सईदे मौहम्मद सज्जादअली खान विसालदार हर वक्त शरीको-दर्दो-गम थे। आखिर मुसीबत और तक्लीफ से आजिज आकर और नुकता मुझसे जुदा होना शुरू किया। पहले दयानतुलदौला कौंसिल से अतवाले हालियात जाने की इजाजत ली, मगर इजाजत मिलते ही किले मे चल दिया। मौहतमलदौला ने पागल वन कर हर एक को गालियों पर धर लिया। मार-पीट करने लगा। आखिर निकाला गया। मोहम्मद शेरखाँ गोलन्दाज ने वाकरअली की नाक काट ली। सजा हो गई। जेल गया। करीम वख्श सक्का तपेदिक मे मुब्तला हुआ। मैं जान से अजीरान हूँ ..*

मरकूमदहम रजब
२३ हिजरी
राकिम
जाने आलम

---

*वाजिद-अली-शाह के नाम शैदा वेगम का लिखा हुआ एक पत्र—विवाह के पश्चात् लिखे गये प्रेम-पत्र' —खड के 'क' भाग मे उद्धृत है।

.. .फ्रान्सीसी क्रान्ति का महान नेता, जिसको पीछे प्रति-क्रान्तिवादियो ने गिलोटिन पर चढा दिया . जिसने कहा था—'स्वतन्त्रता सिर्फ कैफे-सगीत, लाल टोपी, गन्दी कमीज और चिथड़ो का नाम नही है ! जब उस से उसकी उमर पूछी गई, तो उसने हस कर कहा—'मेरी उमर ?...३४ साल, (जब कि उसकी ठीक आयु ३३ साल थी), ईसा मसीह की आयु; जो प्रत्येक देश-भक्त के लिये अत्यन्त खतरनाक आयु होती है .....

—डैस मौलेन का पत्र लूसिले के नाम+

" *मेरे बंधे हाथ तुम्हारा आलिंगन करते हैं.....*"

सुबह के ४ बजे, १ अप्रेल, १७९४

प्रिय,

एक गहरी नीद ने मेरी यातना को कम कर दिया है। जब व्यक्ति सोता है, तब उसे यह ध्यान नही रहता कि वह जेल मे है ! वह आजाद हो जाता है ! भगवान ने मुझ पर दया की, और सिर्फ एक पल पहले ही मैंने तुम्हे सपने मे देखा, मैंने तुम्हारा बार-बार आलिंगन किया ! हमारे बच्चे की एक आँख जाती रही थी। सपने मे मैंने उसे पट्टी बांधे देखा। इस दृश्य से जो बेचैनी मुझे हुई उससे मै जाग उठा, और

+कैमिले को उसके एक सहपाठी ने ही पकडवाया था !

अपने को अपनी अधेरी कोठरी मे पडे पाया। दिन निकल रहा था। मेरी लोलोते! इसके बाद मैं तुम्हे नही देख सका, और तुम्हारी आवाज नही सुन सका। सपने मे अपनी और अपनी माँ की तरफ से तुम मुझ से बोली थी, और होरेस ने अपने दर्द को भूल कर मुझसे कहा था, "पापा—पापा!" ओह ये क्रूर व्यक्ति इन शब्दो को सुनने से मुझे वचित रख रहे है! तुम्हे देख पाने से, और तुम्हे प्रसन्नता देने से। यही मेरी एकमात्र साध थी, और यही मेरा षड्यन्त्र था!

मैंने अपनी कोठरी मे एक छेद ढूँढ निकाला है। मैंने कान लगा कर सुना तो किसी की हाय सुनाई दी! मैने कुछ शब्द बोलने का खतरा लिया, और एक बीमार आदमी की आवाज मुझ तक पहुँची। उसने मेरा नाम पूछा। मैंने उसे बताया। "हे भगवान!"—वह चीखा और अपनी बैंच पर पीछे खिसक गया। "मैं फेब्रर एगलैन्टाइन हूँ। लेकिन तुम यहाँ हो? तब क्या क्रान्ति-प्रतिरोध सफल हो गया?" हमने एक-दूसरे से अधिक बात करने का साहस नही किया, जिससे पुरानी नफरत वर्तमान मामूली सहानुभूति को भी नष्ट न कर दे। इसलिये भी कि कोई सुन न ले, और हम अलग-अलग और अधिक तग कोठरियो मे बन्द न कर दिये जाये। प्यारी, तुम्हे क्या पता होगा कि अधेरे मे बन्द किया जाना कैसा होता है? और वह भी बिना कारण जाने, बिना पूछ-ताछ के, और बिना किसी समाचार-पत्र तक के! इसका मतलब होता है जीते जी भी मरे बराबर होना, अथवा ताबूत मे बन्द कर दिये जाना! कहा जाता है, कि निर्दोष चैन से रहता है, और साहसी होता है। ओ मेरी अमूल्य लूसिले! यह सच होता यदि कोई भगवान बन सकता!

अभी-अभी रिपब्लिक के अफसर मुझसे पूछ-ताछ करने आये, कि क्या मैंने रिपब्लिक के विरुद्ध षड्यन्त्र किया है? क्या मजाक है! वे पवित्रतम गणतन्त्रवाद का इस प्रकार अपमान कैसे कर पाये? मैं

जानता हूँ मेरा भविष्य क्या है। मेरी मूल्यवान लूसिले विदा! मेरी लोलोते, अपने पिता से मेरी ओर से विदा माँग लेना। मुझमे तुमने आदमी की वहशियत और कृतघ्नता का एक नमूना पाया होगा। जैसा कि तुम जानती हो, मेरा भय सत्य था, और मेरी आशका हर बार ठीक थी। लेकिन मेरे अन्तिम क्षण तुम्हारी बदनामी के कारण नही बनेंगे! मैं एक दिव्य गुणो वाली स्त्री का पति था, एक अच्छा पति था, एक अच्छा बेटा था! मैं एक अच्छा पिता भी होता! मैं अपने उन भाइयो के पीछे जा रहा हूँ, जिन्होने रिपब्लिक के लिये प्राण दिये हैं! मुझे विश्वास है कि शिव, स्वतन्त्रता और सत्य के साथी अपना सन्मान और करुण भाव मुझे अर्पित करेंगे। मै चौतीस वर्ष की आयु मे मर रहा हूँ, और यह एक आश्चर्य ही है, कि पिछले पाँच वर्षो मे मैं क्रान्ति की कितनी उथल-पुथल के बीच से गुजर चुका हूँ, और फिर भी अब तक जीवित रहा हूँ।

अपने अनगिनत लेखो के तकिये पर मै विश्वास के साथ अपना सिर टिकाता हूँ! मेरे इन लेखो मे मानवता का प्यार भरा है। अपने साथी नागरिको को स्वतन्त्र और प्रसन्न बनाने की इच्छा इनमे है। उन नागरिको को जिन पर कानून की कुल्हाडी सौभाग्यवश नही गिर पायेगी। शक्ति और अधिकार सभी को पागल बना देते हैं, और सिराक्यूस के डायनीसियस के शब्दो मे वे कह उठते है—'नृशसता एक खूबसूरत वरदान है।' कुछ भी हो अधीर विधवे! स्वय को सान्त्वना दो। ओ हेक्टर की विधवा! तुम्हारे भाग्यहीन कैमिले की कब्र पर जो लेख खोदा जायेगा, वह अधिक यशस्वी होगा! वह वही होगा जो कैटो और ब्रूटस की कब्रो पर खोदा गया था, जो कि नृशसो के हत्यारे थे!

मेरी प्यारी लुसिले, मेरा जन्म कवितायें लिखने और भाग्यहीनों

की रक्षा करने के लिये हुआ था ! इसी हाल मे जहाँ मैं अपने जीवन के लिये संघर्ष कर रहा हूँ, चार वर्ष हुए, पूरी-पूरी रातो लडकर एक दस बच्चो की माँ का वचाव मैंने किया था, जिसे कोई वकील नही मिल सका था। जूरियो के इसी वेच के सामने, जो अव मेरी हत्या करने जा रहे हैं, मैं उपस्थित हुआ था। मेरे पिता यह मुकदमा हार चुके थे। मेरा आना एक आश्चर्य सिद्ध हुआ था। उस समय रोना अपराध नही माना जाता था ! मेरे भावनापूर्ण भाषण ने जजो के दिलो को हिला दिया था, और मैं वह मुकदमा जीत गया था, जिसे मेरे पिता हार चुके थे ! ऐसा षड्यन्त्रकारी हूँ मैं ! मैं ऐसा ही हमेशा रहा हूँ ! मैं पैदा हुआ था, तुम्हे प्रसन्न बनाने के लिये, अपने दोनो के लिये, तुम्हारी मा और मेरे पिता के लिये, तथा कुछ घनिष्ठ मित्रो के वास्ते एक 'ताहिती' निर्माण करने के लिये। मैंने तो ऐबे सेन्ट पियरे के सपने देखे थे। मैने उस गणतन्त्र के सपने देखे थे, जो सब मनुष्यो का इष्ट होता ! मुझे इस वात का विश्वास नही था, कि आदमी इतना क्रूर व अन्यायी निकलेगा ! मुझे क्या अनुमान था कि अपने लेखो मे साथियो का एक विनोद-पूर्ण उल्लेख मात्र सब किये-कराये पर पानी फेर देगा ? अपने से मैं छुपाना नही चाहता, कि मै उन विनोद-पूर्ण लेखो और भाग्यहीन डान्टन के साथ अपनी मित्रता के कारण ही शिकार बनाया गया हूँ।

मेरे साथी मेरे मित्रो का 'पहाड का पहाड', जिनमे से कुछ के सिवाय सभी ने मुझे प्रोत्साहित किया, मुझे बधाई दी, मुझे प्यार किया, मुझे धन्यवाद दिया, वे सभी इतने कायर निकले, कि मुझे अकेला छोड गए ! वे, जिन्होने मेरी प्रशसा की है, और वे जिन्होने मेरे पत्र की निन्दा की है, कोई भी गम्भीरता पूर्वक विचार करने पर मुझे षड्यन्त्र-कारी नही वता सकता। प्रेस और विचारो की स्वतन्त्रता के रक्षक अब बाकी नही बचे ! हम अन्तिम गणतन्त्रवादी हैं, जो मर रहे है, और

यदि यह जिलोटिन नामक फासी न होती, तो यदशा हमे कँटो की तरह अपनी ही तलवारे अपने सीनो मे भोकनी पडती !

मेरी प्यारी, मेरी सच्ची जिन्दगी ! मुझे क्षमा करो, कि जब हम अलग हुए तब मैं तुम्हारी यादो मे खो गया। मुझे तुम्हे भूल जाने की कोशिश करनी चाहिए ! मेरी लूसिले, मेरी प्यारी लूलप, मेरी रानी, मैं तुम से प्रार्थना करता हूँ, कि तुम मेरे पास न आना ! यदि मैं कब्र मे पडा हूँगा, तब भी तुम्हारी चीखे मेरी छाती को चीर डालेगी ! अपने बच्चे की देख-भाल करना। मेरे होरेस के लिए जीवित रहना ! उससे मेरी बाते करना। जो वह आज नही समझ सकता, वे उसे बाद मे बताना। बताना कि मैं उसे खूब प्यार करता था ! अपने दण्ड की बात भूलते हुए, मैं विश्वास करता हूँ, कि ईश्वर है। मेरा खून, मेरी बुराइयो व मेरी मानवीय कमजोरियो को धो देगा, और जो कुछ मैंने अच्छा किया है उसका, मेरे गुणो का, मेरे स्वातन्त्र्य प्रेम का इनाम ईश्वर मुझे देगा ! ओ लूसिले मै फिर तुम्हे मिलूँगा, जैसा कि मै अनुभव कर रहा हूँ ! क्या सचमुच ही मौत एक बहुत बडा दुर्भाग्य है ? पर यह तो मुझे बहुत से शत्रुओ के दर्शन से मुक्त कर रही है !

विदा, लूलप, मेरी ज़िन्दगी, मेरी आत्मा, धरती पर मेरी स्वर्ग ! मैं तुम्हे उन अच्छे मित्रो की दया पर छोडता हूँ, जो विचारशील हैं, धर्मात्मा हैं, और शेष है। विदा लूसिले, मेरी लूसिले, मेरी प्यारी लूसिले। जिन्दगी का तट मुझे से दूर होता है। लूसिले मेरी प्यारी, मैं अब भी तुम्हे देख रहा हूँ मेरे बधे हाथ तुम्हारा आलिगन करते है . मेरा सिर गिरते-गिरते अपनी बुझती आँखे तुम्हारे ऊपर टिका रहा है. *

---

*कैमिले की पत्नी लूसाइल को भी एक सप्ताह बाद फांसी दे दी गई ..क्योकि उसने अपने पति को छुडाने की कोशिश की थी ..!

ख

जेल के सींखचे
मगर इन्हें
नहीं रोक सके..

: ९८ :

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में जिस एक व्यक्ति का सर्वाधिक योग रहा . सन्त और राजनीतिज्ञ रूसी ऐनसाइक्लोपीडिया तक को जिसके बारे में अपनी गलत राय बदलनी पड़ी ....

—महात्मा गांधी का पत्र पत्नी कस्तूरबा के नाम†

" . तू मरेगी तो यह भी सत्याग्रह के अनुकूल है......"

९-११-१९०८

तेरी तबियत के बारे मे श्री वेहर ने आज तार भेजा है। मेरा हृदय चूर-चूर हो रहा है; परन्तु तेरी चाकरी करने के लिए आ सकूं, ऐसी स्थिति नही है। सत्याग्रह की लडाई मे मैंने सब कुछ अर्पित कर दिया है। मै वहाँ आ ही नही सकता। जुर्माना भर दूं, तभी आ सकता हूँ। जुर्माना तो हर्गिज नही दिया जा सकता! तू साहस बनाये रखना। कायदे से खाना खाओगी तो ठीक हो जाओगी। फिर भी मेरे नसीब से तू जायेगी ही, ऐसा होगा तो मै तुझको इतना ही लिखता हूँ, कि तू वियोग मे, पर मेरे-जीते जी, चल बसेगी, तो बुरी बात न

---

†गाधी जी ने यह पत्र दक्षिणी अफ्रीका की एक जेल से लिखा था। गाधी जी के राजनीतिक जीवन का यह प्रारम्भ था और वे पहली बार जेल गये थे

होगी। मेरा स्नेह तुझ पर इतना है, कि मरने पर भी तू मेरे मन मे जीवित ही रहेगी ! यह मैं तुझको निश्चयपूर्वक कहता हूँ, कि अगर तेरा जाना ही होगा, तो तेरे पीछे मै दूसरी स्त्री करने वाला नही हूँ ! यह मैंने तुझे एक-दो बार कहा भी है। तू ईश्वर पर आस्था रख कर प्राण छोडना ..तू मरेगी तो वह भी सत्याग्रह के अनुकूल है...मेरी लडाई केवल राजकीय नही है। यह लडाई धार्मिक है, अर्थात् अति-स्वच्छ है। इसमे मर जाए तो भी क्या, और जीवित रहे तो भी क्या ? तू भी ऐसा ही जान कर अपने मन मे जरा भी बुरा नही मानेगी, ऐसी मुझे उम्मीद है। तुम से यह मेरी माग है !

—म० गाधी

: ९९ :

तुर्की का महान क्रान्तिकारी कवि जिसकी कविता मे सैकड़ो सूर्यो की गर्मी और तेज मौजूद है जिसके जीवन का दुखद अन्त पागलखाने में हुआ......

—कवि नाज़िम हिकमत का पत्र पत्नी के नाम

"......इस बीसवीं सदी में मरने वालों के लिये, एक साल के अर्से तक ही रोया जाता है ....."

मेरी प्रियतमे,

पिछले पत्र मे तुमने लिखा है, "यदि तुम्हे फाँसी दे दी जायेगी और मैं तुम्हे खो दूंगी, तो निश्चय ही मैं जीवित नही रह सकती।" प्रियतमे ! तुम जियोगी, जियोगी और जीती ही रहोगी ! मेरी स्मृति हवा मे काले धूंए की तरह लीन होकर मिट जायेगी, और तुम जियोगी ! हे मेरे हृदय की अरुणकेशी सहोदरे ! इस बीसवी सदी मे मरने वाले के लिए, एक साल के अर्से तक ही रोया जाता है

हे मेरी जीवन साथिन, प्रिये ! हे कोमल खामोश हृदय वाली ! मैंने गलती ही की, जो तुम्हे लिख दिया, कि ये मुझे फासी पर चढा देने के लिए वेचैन हैं। अभी तो मुकदमा शुरू ही हुआ है, और वे एक आदमी का सिर धड से अलग करना चाहते है, और यह काम उतना

आसान नही है, जितना कि शलजम का उखाडना ! तुम बेकार चिन्ता न करो। मेरी मौत अभी बहुत दूर है ! अगर तुम्हारे पास कुछ पैसे हो, तो फलालैन की पट्टियाँ मेरे लिए ले रखना, क्योकि मेरी टाँगों मे बाय का दर्द रहता है। और तुम्हे यह भी नही भूलना होगा, कि कैदी की पत्नी को सदा ही प्रसन्न रहना चाहिए !

सबसे आकर्षक वह महासागर है, जिसे हममे से किसी ने भी अभी तक नही देखा ! सबसे सुन्दर बच्चा वह है, जो अभी तक इस धरती पर चल नही सका ! सबसे मोहक दिन वे हैं जो अभी इस जीवन में आये नही ! सबसे प्यारी बाते वे हैं, जो मुझे तुम से अभी कहनी है; जिन्हे मेरे होठ तुमसे अभी तक नही कह पाये !

— नाज़िम हिकमत

: १०० :

उर्दू गजल को जिसने सब से पहले सच बोलना सिखलाया ..खिलाफत आन्दोलन का प्रसिद्ध नेता

—हसरत मोहानी का पत्र निशातुन्निसा बेगम के नाम

"......तुम पत्र रोज़ लिखा करो......"

फ़ैज़ाबाद
डिस्ट्रिक्ट जेल,
५ फरवरी, १९१६

अस्लाम वालेकुम,

मैं प्रतापगढ से फ़ैज़ाबाद दो फ़रवरी को राजी-खुशी पहुँच गया। यहाँ जेलर साहब बडी मेहरबानी से पेश आये। सुप्रिन्टेन्डैन्ट जेल माशअल्ला खाँ है। उनसे भी दूसरे दिन मुलाकात हुई। यहाँ भी नियमानुसार मुझ को खास खाना मिलता है— यानि दूध, चीनी के अलावा, दोनो वक्त गेहूँ की रोटी, और घी में तुली हुई सब्जी, याने हर तरह से आराम है। तुम इत्मिनान रखो। किताबें और अखबार भी नियमानुसार मिलते हैं। बिस्तर वगैरह भी और जरूरी सामान, लोटा, प्याला वगैरह, ये सब मैं अपने पास रखता हूँ।

तुम्हारा ३० जनवरी का लिखा हुआ कार्ड मुझे पहली फ़रवरी को प्रतापगढ़ मे मिल गया था। आज ३१ का लिखा हुआ कार्ड प्रतापगढ से वापिस होकर मिला। आगे सब पत्र और अख़बार फैज़ाबाद के पते से भेजा करना। फैज़ाबाद अग्रेजी मे यूं लिखना—Fyzabad। मेरे पास अख़बार वगैरह बहुत इक्कट्ठे हो गये हैं। जल्दी ही मैं वे सब एक बोरे मे भर कर वापिस कर दूंगा। उसके बाद अलीगढ से "तज़करतुश शोरा" (शायरो की जीवनियाँ) के लिये बहुत से दीवान (शायरी के संकलन) मंगाऊँगा, जिनकी सूची बाद मे भेजूंगा। तुम वे सब दीवान हमारी लाइब्रेरी से ढूंढ कर, एक ट्रंक मे बन्द करके, सवारी गाडी से भेज देना, और ताला बन्द कर देना। बिल्टी ताली के साथ रजिस्ट्री वाले लिफाफे मे, जिसके अन्दर कपडा लगा होता है, अलग से भेज देना।

सम्पादक हिन्दुस्तान के रुपये भेजने का हाल मालूम हुआ, मेरा भी शुक्रिया उन को लिख देना।

...तुम पत्र रोज़ लिखा करो...मगर मैं सप्ताह मे एक बार लिखा करूंगा। शनिश्चर के दिन तुम जवाबी कार्ड लिख दिया करो, ताकि मैं इतवार के दिन जवाब लिख दिया करू। बाकी बराबर इसी तरह से कार्ड लिखती रहा करो।

—हसरत

युद्ध के समय

क

सेनाध्यक्षों द्वारा लिखे
गये
पत्र

: १०१-१०२ :

—नैपोलियन का पत्र जोसफ़ीन के नाम†

" .. चुम्बन जो इक्वेटर से भी ज्यादा गर्म हैं... "

प्रिय जोसफ़ीन,

तुमने कोई पत्र नही लिखा। पता नही, हो क्या गया है तुम्हें ? मेरे इतने सारे पत्रो मे से तुमने एक का भी उत्तर नही दिया। इस बात का मुझे बहुत दुख भी है और नाराजी भी। मैं अब तुम्हें प्यार नही करता—तुमसे घृणा करता हूँ। तुम बेइज्जत हो, मूर्ख हो, और घृणा के ही योग्य हो!

श्रीमती जी! तुम्हे दिन भर कौन से आवश्यक काम करने पडते है ? क्यों तुम उस व्यक्ति को चार पक्तियाँ भी नही लिख पाती, जो हृदय की पूरी शक्ति से तुम्हे अपनी प्रेयसी मानता है ?

---

†जोसफीन व नैपोलियन का प्रेम स्थिर न रह सका। तलाक से कुछ ही समय पूर्व नैपोलियन ने जोसफोन को यह पत्र लिखा। मरते समय नैपोलियन की जबान पर 'जोसफीन' शब्द ही था!

पता नही कौन देवदूत तुम्हारे जीवन में आकर तुम्हारे सारे समय को चुरा लेता है। कौन है वह लुटेरा, जिसने तुम्हारे जीवन के क्षणों को तुमसे, और मुझे आनन्द देने वाले अवसरो को मुझसे, छीन लिया है ?

जोसफ़ीन याद रखना, किसी न किसी खूबसूरत रात को तुम्हारे सोने के कमरे के दरवाज़े को झटके के साथ खोल कर, नेपोलियन अन्दर घुस आयेगा। यदि उस समय कोई तुम्हारे पास हुआ, तो हे मेरी प्राण प्यारी ! ओथेलो का हाथ उसकी गर्दन तक पहुँच जायेगा !

शायद अपनी एक सनक से मजबूर होकर ही तुमने मुझे चाहा, और मुझसे शादी की, और अब ससार के अन्य आकर्षणो मे फस कर तुमने मेरी तरफ से आखे फेर ली हैं। मैं तो संकटो मे ही पला हूँ ! बुरे दिनो को बिना घबराये पार कर जाना मेरा स्वभाव है। हे जोस-फ़ीन ! अब तुम दुर्भाग्य की भयकर चोटो के विरुद्ध सघर्ष करना व सिर ऊँचा रखना भी मुझे सिखा रही हो !

तुम कोई फिक्र मत करना। अपने सुख मे कोई रुकावट न पडने देना। सदा प्रसन्न रहना। ससार की खुशियाँ केवल तुम्हारे लिए ही तो बनी हैं ! सारी दुनियाँ प्रसन्न है, और उसे मौका मिला है, कि वह तुम्हें प्रसन्न बनाये ! यदि कोई अकेला, अभागा, त्रस्त व दुखी है, तो वह तुम्हारा पति है...

—नैपोलियन

अगले दिन प्रात. फिर—

चाहे मैं सुखी हूँ या दुखी, तुम्हे मेरी फिक्र क्यो हो ? तुम तो नैपोलियन को प्यार नही करती ? लेकिन मेरे भाग्य मे तो यही है, कि मैं तुम्हें प्यार करता रहूँ; चाहे कितनी भी व्यथा व कष्ट मुझे क्यो न सहना पड़े ! तुम्हारे लिए तो अच्छा यही है, कि तुम उस पति के

जीवन से स्वय को अलग कर लो, जो केवल तुम्हारे लिये ही जीवित है। जो अपने देश से बाहर है, और लडाइयाँ जीत रहा है, केवल तुम्हे खुश करने के लिए! मेरी नित्य बढती ताक़त को देख कर लोग जले जाते हैं; लेकिन तुम जानती हो कि मेरी शक्ति का रहस्य यही है, कि तुम इस शक्ति से अत्याधिक प्यार करती हो!

मेरी सबसे बडी कमी शायद यह है, कि मुझे भगवान ने वह सुन्दरता नही दी, जो तुम्हे मेरे साथ एक-प्राण कर देती। मेरे लिए यही काफ़ी है, कि जोसफ़ीन मुझे किंचित सन्मान दे, और मुझे अपने ख़यालो मे थोड़ा सा स्थान दे दे, सिर्फ इसलिए, क्योकि मैं उसे प्यार करता हूँ! ऐसा प्यार जो पागलपन भी कहा जा सकता है।

यदि एक बार तुम मुझे यह यक़ीन दिला सको, कि अब तुम मुझे कभी प्यार नही कर सकोगी, तो मैं अपने भाग्य का दोष मानकर सतोष कर लूंगा, और अपना जीवन इस बात के लिए लगा दूंगा, कि कभी मैं तुम्हारे काम आ सकूं।

तुम्हारा
—नैपोलियन

पुनश्च.—

इस पत्र को फिर एक बार पढकर तुम्हें बहुत सारे चुम्बन भेजता हूँ.. चुम्बन जो इक्वेटर से भी ज्यादा गर्म हैं...

—नैपोलियन का पत्र महारानी लूसी के नाम†

"......मेरा दुर्भाग्य उतनी दूर तक ही मुझे प्रभावित करता है, जितनी दूर तक वह तुम्हें कष्ट पहुंचा पाता है......"

फाउन्टेन ब्लू, १३ अप्रल १८१४
प्रात ३ बजे

मेरी प्रियतमा लूसी,

मुझे तुम्हारा पत्र मिला है। मैं तुम्हारे रम्बायलत चले जाने से सहमत हूँ। तुम्हारे पिता वहाँ तुमसे आ मिलेगे। दुर्भाग्य के इस अँधेरे मे यही एक आश्वासन मेरे पास बचा है। पिछले सप्ताह से तो मैं बडी ही बेचैनी से तुम्हारे मिलने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। तुम्हारे पिता को गलत रास्ते पर डाल दिया गया है, और उन्होने हमारे साथ बुरा बर्ताव किया है, लेकिन कम से कम तुम्हारे और तुम्हारे बेटे के साथ तो वे एक अच्छे दयालू पिता का सा व्यवहार करेंगे ही ! कालेन-

---

†लूसी पोलेन्ड की राजकुमारी थी, जिससे नैपोलियन ने जोसफीन को तलाक देने के बाद विवाह किया।

कोर्ट यहाँ पहुँच गया है। कल मैंने तुम्हें उस व्यवस्था की एक नक़ल भेजी है, जिस पर उसने तुम्हारे बेटे के भविष्य को सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से दस्तखत किये हैं। विदा मेरी मधुर लूसी ! मैं ससार की सब वस्तुओ से अधिक तुम्हे प्यार करता हूँ मेरा दुर्भाग्य उतनी दूर तक ही मुझे प्रभावित करता है, जितनी दूर तक वह तुम्हे कष्ट पहुँचा पाता है जब तक तुम जीवित हो, अपना प्यार उसपर लुटाओगी, जो सबसे अधिक पत्नी-परायण पति है ! मेरे बेटे के लिए चुम्बन ! मेरी लूसी विदा ! तुम्हे मेरा प्यार !...

—नैपोलियन

: १०४ :

अट्ठारहवी शती इगलैड के क्रूर और मूर्ख राजा चार्ल्स द्वितीय का सिर उतरवाने वाला ..जिसकी लाश को दस साल बाद कब्र मे से बाहर निकाल कर फासी दी गई......!

—क्रामवैल का पत्र पत्नी एलिजाबेथ के नाम

"......तू मुझे ससार के सब प्राणियों से अधिक प्यारी है... "

एम्वर, ४-९-१९५०

मेरी प्रियतमे,

मेरे पास अधिक लिखने का समय नही है, पर मै तुझे डांटना चाहता हूँ, क्योकि तूने अपने कई पत्रो मे लिखा है, कि मुझे, तुझको और तेरे नन्हे बच्चो को भूल नही जाना चाहिये ! यदि मैं तुम लोगो को अधिक अच्छी तरह प्यार नही कर पाता, तो मैं तुम्हे भूल जाने की गल्ती भी अधिक नही करता तू मुझे संसार के सब प्राणियो से अधिक प्यारी है . इसीको काफ़ी समझना !

भगवान ने हम पर बहुत अधिक दया दिखाई है। भगवान की इस महान् दया का वर्णन किया ही नही जा सकता। मेरा कमजोर विश्वास पक्का हो गया है। मेरे अन्दर के मन को बडा भारी जोश मिला है। पर मैं निश्चय ही अब बूढा होता जा रहा हूँ, और आयु से

प्रौढ होने वाली कमजोरिया मुझमे तेजी से बढती जा रही है। कही मेरी ये कमजोरियाँ उतनी ही तेजी से घटती भी ! इस दूसरी बात के लिये तुम ईश्वर से प्रार्थना करो। हमारी पिछली सफलता के बारे मे हैरी वेन या-गिल पिकरिंग तुझे आवश्यक सूचनाये देगे।

सब प्रिय मित्रो को मेरा प्यार...

मैं हूँ तेरा
—ओलीवर क्रामवेल

नैपोलियन के समुद्री बेड़े को अपने प्राण देकर जिसने समाप्त कर डाला . ट्राफ़लगार की लड़ाई का वह अंग्रेज वीर......

—नेलसन के पत्र ऐमा के नाम†

विक्टोरिया,
१६ अक्तूबर १८०५, दोपहर
कैडिज़ ई० ए० ई०, १६ लीग

मेरी परम प्रिया, प्रियतमा ऐमा,

तुम मेरे सुख की प्यारी सहभोगिनी हो। सिग्नल मिल चुका है कि शत्रु का सम्मिलित जहाज़ी वेडा वन्दरगाह से बाहर निकल चुका है। हवा बहुत हलकी चल रही है, इसलिए कल से पहले शत्रु से टकराने की मुझे आशा नही है। युद्धो का देवता मेरे प्रयत्नो को सफल वनाये! सभी परिस्थितियो मे, मैं इस वात का ख्याल रखूंगा, कि मेरा नाम तुम्हारे और होरेशिया के लिए सर्वाधिक प्रिय वना रहे, क्योंकि तुम दोनो को मैं अपने प्राणो के समान ही चाहता हूँ! युद्ध से पहले मेरा

---

†उस लडाई मे नैलसन की मृत्यु हो गई थी।

अन्तिम लेख तुम्हारे लिए होगा। मै ईश्वर से आशा करता हूँ, कि युद्ध के बाद अपने उस अधूरे पत्र को पूरा करने के लिए मै जीवित रहूँगा ! भगवान तुम्हारी सहायता करे...

—नेलसन और ब्रान्टी

२० अक्तूबर

प्रिये,

सुबह हम माउथ आफ़ दी स्ट्रेट्स के निकट पहुच गये, लेकिन अभी हवा का रुख़ पश्चिमी दिशा की ओर इतना काफी नही है, कि शत्रु का सम्मिलित जहाजी बेडा ट्राफ़ल्गार से दूर स्थित छिछले पानी को पार कर सके। जहाँ तक गिना जा सका है, शत्रु के पास चालीस लडाकू जहाज़ है, जिनमे, जहाँ तक मेरा अनुमान है, चौतीस साधारण है, और छ फ्राइजेट हैं। इनका एक दल आज सुबह कैडीज के लाइट-हाउस से कुछ दूर देखा गया। हवा ऐसी है कि वे रात से पहले बन्दरगाह मे पहुच जायेगे, ऐसा मेरा विश्वास है। सर्वशक्तिमान् ईश्वर हमे इन लोगो पर विजय दिलाये, और शान्ति स्थापित करने मे हमारी सहायता करे !

—नैलसन

*ट्राफल्गार की लडाई से एक दिन पूर्व ही नैलसन ने यह पत्र अपनी प्रेमिका को लिखा था।

एक समय फासिस्ट हिटलर का दायां बाजू, जिसे युद्ध-नोति मे तनिक विरोध करते ही, मूलो-गाजर की तरह काट फेका गया......

—सैनापति रोमेल का पत्र पत्नी लू के नाम†

" इस अन्तिम समय मै तुम्हारे बारे मे ही सोच रहा हूँ . "

२८-१०-१९४२

प्रियतमा लू,

कौन जाने अगले कुछ दिन, या अब कभी भी शान्ति से वैठने, और तुम्हे कुछ लिखने का मौका मुझे मिलेगा या नही ? आज फिर भी अवसर है।

युद्ध वहुत तेज़ी पर है। शायद हम इस भीषण परिस्थिति मे टिक सके, और उसे विफल वना सके। लेकिन सव कुछ उल्टा भी हो सकता

---

†रोमेल के पास एक दूसरा जनरल भेजकर कहलवाया गया—'या तो तुम १५ मिनट के भीतर यह जहर खा लो, वरना तुम्हारे घर पर वम्वारी करके तुम्हे पत्नी, व बच्चो समेत समाप्त कर दिया जायेगा ! रोमेल ने जहर पीना ज्यादा पसन्द किया। वाद मे उसे किसी दुर्घटना का शिकार वता कर 'राज्य सम्मानो' के साथ दफनाया गया ..' लडाई के मैदान से रोमेल ने सैकेड़ो पत्र लिखे। उन्ही मे से यह एक पत्र है।

और इस हार का पूरे युद्ध की गति पर बड़ा गम्भीर प्रभाव पड़ेगा। परिणाम यह होगा कि उत्तरी अफ्रीका कुछ ही दिनो मे, और बिना युद्ध के ही अंग्रेजो के हाथ मे चला जायेगा। हम जो भी इस खतरे को टालने के लिए कर सकते है, करेंगे, किन्तु शत्रु की शक्ति बहुत भयानक है, और हमारे साधन बहुत कम है।

मुझे हार मिलेगी या जीत, यह भगवान के हाथो मे है। पराजितो व घायलो की दशा बहुत खराब है। मेरी आत्मा सन्तुष्ट है, कि मैने विजय के लिए सभी कुछ किया है, और अपनी परवाह भी नही की है।

जो पिछले कुछ सप्ताह मै तुम्हारे पास रहा, उसने मुझे बता दिया, कि तुम दोनो मेरे लिए कितने कीमती हो ..इस अन्तिम समय मै तुम्हारे ही बारे मे सोच रहा हूँ...

— रौमेल

प्रसिद्ध अंग्रेजी अभिनेता, जिसने द्वितीय महायुद्ध में स्वयं को ए० आर० पी० वार्डन के जान-जोखम वाले कार्य के लिये प्रस्तुत करने का साहस दिखलाया......

—स्टैनले लूपिनो का पत्र पत्नी एडा के नाम†

"......साठ के लिए बने एक सुरक्षागृह में एक-सौ-चालीस आदमी फर्श पर ठसाठस लेटे थे......"

लन्दन १३ अक्टूबर १९४०

प्रिये,

लन्दन की लड़ाई जारी है। शत्रु उन सब-खुराफातों को हम पर आजमा रहा है, जो नरक उसे दे सकता है, पर इससे जीत की तरफ़ वह एक इंच भी नहीं बढ़ सकेगा। कोई ही एक ज़िला ऐसा बचा होगा जहाँ मोर्चाबन्दी नहीं है, और जिस पर बम नहीं बरसाये गये हैं; पर शत्रु लन्दन की आत्मा को नहीं कुचल सकता। यहाँ जोश इतना अद्भुत है, कि यदि मैं कोशिश भी करूं और उसका वर्णन तुम्हें भेजूँ, तो भी तुम कठिनाई से ही विश्वास करोगी। बेघर लोग अपनी बची-खुची चीज़ें लिए बीच सड़क पर बैठे हैं, और गा रहे हैं,— 'इंगलैण्ड अमर है', डेज़ी-डेज़ी'— आदि गीत।

†एडा भी उस समय की एक अंग्रेज़ी अभिनेत्री थी, जो युद्ध के कारण अमेरिका में रह रही थी।

हम ए० आर० पी० के वार्डन सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक काम करते है। मैं पूरे सप्ताह मे केवल दो घटे की नीद ही बिस्तर मे ले सका। तोपो की अधिकाधिक मार से जो अवरोध हम पैदा कर रहे है, वह इतना भयकर है, कि पेडो की चिडियाये हजारो की सख्या मे मर कर गिर गई है। यह गोलाबारी निरन्तर चल रही है। हजारो दहकते हुए सितारो के समान जब शैल फटते है तब लगता है मानो आस्मान से लपटे उठ रही हैं। गोलिया ऊपर से ऐसे बरसती है, जैसे बारिश पड रही हो। हम घुप्प अधेरे मे ही घूमते है, भागते है, सपाट गिरते है, ठहरते है, और फिर भागते है। इसी तरह चलता रहता है।

मेरा सुरक्षागृह ठसाठस भरा है। लोग यहाँ सारी रात सोते है। औरते, बच्चे और तीन सन्तरी, जो बारी बारी से पहरा देते है, और ऊघते हैं। मुझे ऊपर कोयले की कोठरी मे कुछ जगह साफ करके छोट सा सुरक्षित स्थान बनाना पडा है, जिससे ऊपर ड्यूटी दी जा सके। यह इसलिए किया गया है, कि यदि नीचे का सुरक्षागृह उडा दिया जाये, तो मैं लोगो को खोद कर निकलवा सकूं, और यदि मैं उड जाऊ, तो नीचे के सन्तरी मुझे खोद कर निकाल सके! यह जासूसो, शत्रु के दूतो, और सिग्नल करने वालो की दृष्टि से भी किया गया है।

इसी प्रकार हमे विस्फोटको को बुझाने के लिए भी भागना पडता है, और टाइम-बमो के गिरने की हल्की आवाज का भी ध्यान रखना पडता है। यह सबसे खतरनाक काम है। हमे एक छोटी सी रोशनी के सहारे घुप्प अधेरे मे एक सूराख की खोज करनी पडती है, और बम किसी भी समय फट सकता है! यह बहुत ही सकट का काम है। दो रात पहले मैं और एक वार्डन छ घन्टे खोज करते रहे, जब कि हर मिनट बाद तोपें और बम छूट रहे थे। भगवान की दया से यह टाइम बम नही था। यह एक दूसरी प्रकार का बडा बम था, जिसने हमे चौकन्ना किया था।

लोग अब वार्डनो पर नही हसते। वे हमारी शुभ कामना करते हैं, और हमे अपना सबसे बडा मित्र समझते है। जब बच्चे काले टीन का सुपरिचित हैट और उस पर सफ़ेद रग मे 'डब्लू' लिखा देखते है, तो हमारी ओर भागते है। कन्डक्टर हमसे किराया नही लेते, और दुकानदार कठिनाई से ही पैसे लेना स्वीकार करते है! हम पुलिस वाले, नर्स, आग बुझाने वाले, सकट के समय निगरानी करने वाले, और बीमारी मे मदद देने वाले, सभी कुछ है, और सभी को एक समान आश्वासन व विश्वास देते है।

रात के समय मै सुरक्षागृहो मे सोते लोगो के पास जाता हूँ। मैं बोलता नही, बस खडा होकर उनको देखता हूँ, और वे कहते है कि अधेरे मे भी वे मेरी उपस्थिति को महसूस कर लेते है। इससे उन्हे तसल्ली मिलती है। वे मेरे चलने की परिचित ध्वनि को और मेरे रबड के भारी जूतो की हल्की चाप को पहचानते है। मै उन्हे कभी जगाता नही। बस रात की मद्धिम रोशनी मे उनके पास खडा होता हूँ। अगर कोई बात करना चाहता है, तो फुसफुसाता है. साठ के लिए बने एक सुरक्षागृह मे एक-सौ-चालीस आदमी फ़र्श पर ठसाठस लेटे थे.. उनके बीच एक लडकी, जो शहर मे टाइपपिस्ट है, जाग रही थी। उसने मुझे देखा और फुसफुसाई, "श्रीमान जरा एक मिनट के लिए मेरा हाथ पकडना।" "जरूर"—मैंने कहा। कुछ देर बाद उसने उसे अपने चेहरे से चिपटा लिया और कहा,—"मैं अब पहले से अच्छी हूँ. . मैं तीन महीने से अपने आदमी से नही मिल सकी, और मैं माँ बनने वाली हूँ! मैं किसी आदमी का हाथ अपने चेहरे से छुआना चाहती थी!"

ये उनमे से कुछ घटनाये हे, जो यहा रात-दिन घटित होती है। कण्ठावरोध करने वाली, हृदय को हिलाने वाली घटनाये, जिन्हें सुनकर तुम अपने होठों को काट लोगी! बम या तोपे नही, बल्कि लोगो की

प्रेममयता देखकर व्यक्ति हडबडा उठता है। उनके दिल, उनकी आत्माएँ निरावरित है, और निरावरित होकर वे और भी मधुर लगती है। वे पडौसी, जिन्होने कभी आपस मे बात भी नही की थी, आज ऊष्णता व सान्त्वना के लिए एक दूसरे से लिपटे पड़े है। मुझे एक पीले चेहरे वाला अट्ठारह-वर्षीय युवक मिला, जो एक बुढिया का सिर अपनी गोदी मे रखे बैठा था, और उसके बालो मे उंगली पिरो रहा था। "तुम्हारी माँ है यह ?"—मैने पूछा। "नही श्रीमान इसे मैं नही जानता" उसने उत्तर दिया, और मैं वापिस हो लेता हूँ। शान्त सडके एक भी मानव दिखाई नही पडता। अंधेरा...तोपे धड-धड ! मै अपनी कोयले वाली कोठरी मे सलाखो मे को झाँकता हूँ, और लालटेन की मद्धिम रोशनी मे दो चटाइयो पर एक लडकी को सोता हुआ पाता हूँ। यह अपनी सली है। एक कम्बल ओढे और कुत्ते के सिर को अपनी छाती पर रखे।

दो महीने पहले वह लन्दन पेवेलियन मे अभिनय कर रही थी, और अब सप्ताह भर से न वह नहा सकी है, न ठीक तरह से खाना ही खा सकी है, क्योकि सिर के ऊपर शैल फट रहे है, और बम गिर रहे है ! न बाल सवारने वाले है, न बिस्तर है। उसके एक तरफ कोयला, मकडी के जालो, धूल व मकडियो का ढेर लगा है, लेकिन वह नही जाती ! वह हमे नही छोडती। वह सूप, पानी की बाल्टियाँ, ब्रुश और खाना दूसरो तक पहुचाती है, और उसे कोई शिकायत नही ! लिपस्टिक लगाने, अथवा किसी भी ऐसे काम का उसे समय नही। वह मुस्कराती है, खुश रहती है ! वह बहादुर है ! मैं अपनी ड्यूटी नही छोड सकता। वह साइकिल पर चढ कर तुम्हे, मेरी पत्नी को, तार देने जाती है। वह नरक की सब से गन्दी कोठरी मे सो रही है !

मै मार्ग पर आगे बढता हूँ पुराने प्यारे चिनार के पेडो के बीच मे को। पेड कहते प्रतीत होते है, "हमारे पास रहो, पॉल।" मै रुक-

रुक कर आगे बढता हूँ। एक निदियाया-सतरी मुझे चेतावनी देता है। मैं उसे अपना नम्बर बताता हूँ। हम सिगरेट पीते हैं, और तब मैं २५ सोते हुए आदमियो के बड़े परिवार की देख-भाल के लिए आगे बढता हूँ। सली वहा होगी। नही एक ८९ वर्ष की बुढिया ने उसका स्थान ले लिया है। अजीब बात है कि जीवन के अन्त के समीप पहुच कर व्यक्ति जवानो की अपेक्षा जीवन से अधिक चिमटता है! मेरे खयाल मे मधुर स्मृतियो के कारण ही वह ऐसा करता है। लेकिन जवानो के पास सन्देह, अविश्वास, घृणा और युद्ध की गली-सडी स्मृतियाँ ही होती है, और उन्हे इस बात की परवाह नही होती, कि भगवान उन्हे कितनी जल्दी उठा लेते है।

कोयन्ने की कोठरी मे वापिस आया। एक कुर्सी पर बैठा। दरवाजा बन्द किया और रेत के बोरे लगाये। थोडी व्हिस्की पी, और एक जरी हुई कील से लटकते अटैची-केस की ओर देखा। इसमे एक नया लेख है। अभी सिर्फ कागज़ और शब्द मात्र ही है वह, लेकिन यह आगे बढेगा। हाँ हिटलर, यह आगे बढेगा! इसे देखकर हंसी आयेगी, न घृणा, न दुख। पच* उठ कर देखता है, मानो कहता हो, "हाँ मालिक।" मैं उसे लेटने का इशारा करता हूँ। वह सली की गर्दन मे अपनी नाक घुसेड कर लेट जाता है। मै अपना टिन का टोप आँखो पर सरका लेता हूँ, और ऊघता हूँ। बहुत देर तक नही। एक धीमी थपथपी और एक आवाज़-"बाहर आओ, आरभिक चिकित्सा!" मै बाहर जाता हूँ। बुढिया को दिल का दौरा पडता है। मैं अपना दवाइयो का डिब्बा खोलता हूँ। इस सुबह वह फिर बिल्कुल ठीक है। छः बजे। 'कोई खतरा नही' का सिग्नल सुनाई दिया। सबने उसका स्वागत किया। थके-पीले चेहरे धरती के भीतर से अपनी गुफ़ाओ मे से निकले। मैं चाय बनाता हूँ। दो

---

*स्टैनले का कुत्ता।

घन्टे के लिए सोने को जाता हूँ ।

फिर चेतावनी का सिग्नल गूँजा । काम पर आ गया । मैं उन्हें नही जगाऊगा । मैं एक भयानक हवाई-युद्ध देखता हुआ खडा हूँ । गोश् ! यह एक इजनो वाला डोर्नियर है । वे उधर गये । हवा-मार तोपे छूटी । हे भगवान उन्होने उस पर चोट की ! वह ऊपर है । वह गिर रहा है ! सात टन धातू वर्फ की तरह एक साथ गिर रही है ! मै प्रार्थना करता हूँ, कि वह किसी घर पर न गिरे ! विमान-चालक नीचे कूद रहे हैं । उनमे एक के पास पैराशूट भी नही है । जर्मन हड्डियाँ अग्रेजी मिट्टी मे सूराख कर देगी ! हिटलर तुम हार रहे हो, तुम हार रहे हो ! तुमने हम पर विनाश लाना चाहा, वह उल्टे तुम पर आ रहा है । उन्होने हमारे राजा और रानी पर, जिन्होंने कभी किसी प्राणी को कष्ट नही पहुचाया, बम गिराने चाहे । साथी , हमारी वायु सेना ने क्या कहा था—

"हताश आदमी सब कुछ करने को तैयार हो जायेगे । वे निराश है, और जल्दी ही सकट मे होगे ।" मैं चाहता हूँ कि वे सकट मे हो ! और सकट आ रहा है । हम आ रहे है । अमरीका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैन्ड, भारत, मिश्र, टर्की यूनान और सारा ससार ! पर यह इग्लैण्ड ही है जो उनकी छातियो को तोड़ेगा, और जल्दी ही । मैं चाहता हूं कि उन्हे तोड डाला जाये, पीटा जाये, चूरा कर दिया जाये, और यूरोप के इस कैन्सर को जला डाला जाये ! सदा-सदा के लिए ! और भगवान जब हमे अपनी शिक्षाओ की तरफ ले जा सकते है ।

इस समय मैं सुरक्षित हूँ, पर थोडा निंदियाया, पर डरा हुआ बिल-कुल नही । मैने तुमसे कहा था कि चिन्ता मत करना । अमरीका के प्रति अपना कर्त्तव्य करो । आत्मा से अग्रेज रहो पर दिल से अमरीकी । अमरीका तुम्हे सुरक्षित रख रहा है, और जीविका दे रहा है । उसके लिए जितना भी तुम कर सको करो । जितना ही तुम बहादुर होगी,

और चिन्ता नही करोगी उतना ही तुम' मेरी सहायता करोगी।

हमारा देश बहुत महान है ! जब सब कुछ समाप्त हो जायेगा, तब हम दुनिया के सामने सिर ऊंचा कर सकेंगे, और यदि 'ब्रिटिश' शब्द दुनिया भर के दिलो में अपना स्थान नही बना लेता, तब मुझे अपना टिन का हैट फिर पहनने मे, और यह सिद्ध करने मे प्रसन्नता ही होगी !

यह एक बडा भारी नाटक है, और इसमे ऐक्स्ट्रा बन पाने की मुझे खुशी है !

भगवान अमेरीका को आशीर्वाद दे !

भगवान ब्रिटेन की रक्षा करे ! .. !

और ईसा हम सब के साथ हो ! ..

मार्क्स के दर्शन को जिसने शरीर दिया साम्यवाद का पिता, इतिहास की दिशा जिसने मोड दी. ....

—लैनिन का पत्र क्रुप्सकाया के नाम[1]

"......खूब खाओ...खूब सोओ...तब तुम जाड़े तक काम-काज के लिए तैयार हो जाओगी .. "

मास्को
६-७-१६१६

प्यारी नाद्युश्का,

तुम्हारे समाचार पाकर मुझे बेहद खुशी हुई। मैं पहले ही एक तार कजान भेज चुका था। जब वहा से कोई उत्तर नही मिला तो मैंने दूसरा तार निजनी भेजा। वहा से आज उत्तर आया है, कि "क्रास्नाया ज्वेज्डा" जहाज को ८ जुलाई तक कजान पहुँच जाना है, और वह वहाँ २४ घन्टे से कम नही ठहरेगा। मैंने उस तार मे पूछा था कि क्या, 'क्रास्नाया ज्वेज्डा' मे गोर्की को एक केबिन दिया जा सकना संभव होगा ? वह कल यहा पहुँच रहा है, और मै पैट्रोग्रेड से उसे

[1] यह पत्र लैनिन ने क्रान्ति के दिनो मे लिखा था। क्रुप्सकाया, जो स्वय भी एक कुशल क्रान्तिकारी थी, प्रचार-दौरे पर बाहर गई हुई थी।

निकाल लेना चाहता हूँ। वहाँ उसका साहस चूर-चूर हो चुका है, और वह बहुत ही घबरा उठा है। मुझे आशा है कि तुम्हें और दूसरे साथियो को गोर्की के साथ सफर करने मे खुशी ही होगी। वह बहुत ही बढिया आदमी है। थोड़ा अस्थिर-मन ज़रूर है, पर यह मामूली सी बात है।

मैंने वे पत्र, जिनमे सहायता मांगी गई हैं, पढे हैं। ऐसे पत्र कभी-कभी तुम्हारे पास भी भेज दिये जाते हैं। जो मै कर सकता हूँ, कर रहा हूँ

मित्या कीव चला गया है। मै समझता हूँ क्रीमिया फिर श्वेतो के हाथो मे जा पहुचा है।

हमारा जीवन सदा जैसा ही बीत रहा है। हम अपनी 'कोठी' मे इतवार को आराम करते है। ट्राट्स्की ठीक हो गया है, और दक्षिण की तरफ गया है। मुझे आशा है वह सब ठीक कर लेगा। प्रधान सेनापति वत्सेतीस के स्थान पर एस० एस० कामेनेव (पूर्वी मोर्चे का) को लगाने से मुझे आशा है स्थिति मे सुधार होगा।

हमने पैंक्रोस्की (एम०एन) (इतिहासज्ञ) को दो मास की छुट्टी दे दी है। हम लुडमिलर रूडोल्फोव्ना मेंम्झिन्स्की (बोलशेवा के सोशल डिमोक्रेट) को उसकी जगह नियुक्त करना चाहते हैं। अभी यह पूरी तरह तय नही है, लेकिन पोजनर (नारकोम्प्रोस मे जो हैं) को यह पद देने का विचार नही है।

मैं तुम्हारा आलिंगन करता हू। तुम मुझे लिखो और जल्दी-जल्दी तार दो।

तुम्हारा

—वी० विलियानोव

इटली का प्रसिद्ध क्रान्तिकारी, जिसने सामन्तशाही के विरुद्ध केवल तीन हजार स्वयसेवको से स्वतन्त्रता की पवित्र लडाई प्रारम्भ कर दी थी .इटली का लैनिन

—गैरीबाल्डी का पत्र पत्नी अनीता के नाम

सूबियाको, १६ अप्रेल १८४६

प्रियतमा अनीता,

तुम्हे सूचित कर रहा हूँ कि मै ठीक हूँ, और कोलोना के साथ अनाग्नी की ओर वढ रहा हूँ। शायद कल मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा। वहाँ मैं कब तक ठहरूँगा, यह मैं तुम्हे अभी नही वता सकता। अनाग्नी मे मुझे सेना के लिये राइफले और दूसरा समान मिल जायेगा। जब तक मुझे तुम्हारा पत्र नही मिल जाता, कि तुम सुरक्षित नाइस पहुँच गई हो, मेरा मन चैन नही पा सकता। मुझे फौरन लिखो ? मेरी प्रियतम अनीते ! मुझे तुम्हारा समाचार मिलना ही चाहिये ! जिनेवा और तस्काना की घटनाओ पर अपने विचार मुझे लिखो। तुम दृढप्राण और वीर स्त्री हो। तुम इटलीवासियो की इस जनाना जाति को कितनी घृणा की दृष्टि से देखती होगी ! ये मेरे देशवासी है, जिनमे आत्मा की

महानता की भावना फूंकने का प्रयत्न मैंने बहुत बार किया है, पर जो ऊँचा उठने के योग्य ही नही है। यह सच है, कि प्रत्येक साहसिक क्रान्ति की जड विश्वासघात ने ही खोदी है! चाहे कैसे भी हुआ हो, यह सच है, कि हम वदनाम हो चुके है। इटली-वासियो का नाम दुनियाँ मे उपेक्षा और घृणा से लिया जाता है। मुझे अफसोस है कि मैं उस परिवार से सम्वन्ध रखता हूँ, जिसमे कितने ही कायर भरे हुये है। पर, यह मत सोचना कि इस कारण मे हिम्मत हार वैठा हूँ, और अपने देश के भविष्य के प्रति निराश हो गया हूँ। इसके विपरीत मुझे अब पहले से अधिक आशा है। कोई एक व्यक्ति की वेइज्जती कर सकता है, और उसकी सजा से बच सकता है, पर एक समूचे राष्ट्र का अपमान करके दड भुगते बिना कोई नही वच सकता! कौन ऐसा देश-द्रोही है, यह अव जाना जा चुका है। इटली का दिल अभी धडकता है, भले ही वह पूर्ण सशक्त न हो, पर बीमारी के उन तत्वो को वह निश्चय ही वाहर निकाल फेक सकता है, जो इटली के सकट का कारण वने है।

प्रतिक्रियावादी अपने देशद्रोह और गुडागर्दी से लोगो को भयभीत करने मे सफल हो गये है, लेकिन लोग इनके देशद्रोह और नीच आचरण को कभी नही भूल सकेंगे। जैसे ही उनका डर दूर होगा, वे एक जबर्दस्त जोश के साथ उठेगे, और अपनी उस कायरता को चिथडे-चिथडे कर देगे, जो उनके पतन का कारण है। मै तुमसे फिर अनुरोध करता हूँ कि तुम मुझे लिखो। तुम्हारी, माँ की, और बच्चो की खबर मुझे मिलनी ही चाहिये। मेरे बारे मे फिक्र करने की जरूरत नही है। मेरा स्वास्थ्य पहले से अच्छा है, और मैं अपने को, और अपने बारह सौ सशस्त्र अनुयाइयो को अजेय मानता हूँ। रोम की तस्वीर आज एक मन पर छा जाने वाली तस्वीर है। सभी बहादुर इसकी परिधि

पहुँच चुके हे, और ईश्वर हमारी सहायता अवश्य करेगे। विदा

तुम्हारा
—गायसप्पे

---

*इस पत्र के ग्यारह दिन बाद गैरेबाल्डी ने रोम का प्रसिद्ध युद्ध लडा और विजय प्राप्त की। पीछे उसे जगलो मे भाग जाना पडा। वही उसकी वीर पत्नी अनीता का बीमारी के कारण देहान्त हो गया।

क

जिनकी
अस्वाभाविक मृत्यु हुई

जॉर्ज इलियट के बाद इंगलैंड की सबसे बड़ी उपन्यास-लेखिका, जो प्रकाशक के पसन्द आने के बावजूद अपने उपन्यास से स्वयं असन्तुष्ट होने के कारण, नदी में डूब कर मर गई

वर्जीनिया वुल्फ का पत्र लियोनार्ड वुल्फ के नाम*

" मुझे आवाजें सुन पड़ती हैं "

मार्च, १९४१

प्रिय

मुझे महसूस होता है कि मैं पागल हो जाऊँगी। और इन भीषण दिनों में मैं आगे नहीं चल सकती . मुझे आवाजें सुन पड़ती हैं...और मैं अपने मन को काम में केन्द्रित नहीं रख सकती। मैंने अपनी इस स्थिति के खिलाफ लड़ाई की है, पर मैं अब और नहीं लड़ सकती।

.जीवन में जो भी खुशी मुझे मिली है, उसका श्रेय तुम्हें है। तुम अत्यन्त अच्छे रहे हो मेरे पति। मैं अब और नहीं जी सकती, और तुम्हारा जीवन बर्बाद नहीं कर सकती ..।

---

*यह पत्र आत्म-हत्या करने से कुछ देर पहले ही लिखा गया था।

जिनकी
स्वाभाविक मृत्यु हुई

: ११२ :

जिसने अपनी उम्र का तीन-चौथ जेलों और मुसीबतो मे काटा भूख, गरीबी और निराशा को जिसने अपने अमर उपन्यास 'लॉ—मिजरेबिल' मे मूर्तिमान करके रख दिया है......

—विक्टर ह्यूगो का पत्र प्रेमिका जूलियट के नाम†

".... तुम्हारी मौत मेरी भी मौत सिद्ध होगी......"

प्रिय,

यदि तुम पहले मर गईं, तो उसके बाद भी मैं तुम्हे प्यार करता रहूँगा ; और यदि मैं पहले मर गया, तो मरने पर भी मे तुम्हे प्यार करना नही छोड़ूंगा !... तुम्हारी मौत मेरी भी मौत सिद्ध होगी.. !*

—विक्टर

†विक्टर ह्यूगो ने यह पत्र अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व, अपनी अस्सीवी वर्ष-गाठ पर लिखा था।

*जूलियट फ्रान्सीसी स्टेज की एक प्रसिद्ध अभिनेत्री थी। ह्यूगो ने उसके साथ इसलिए विवाह नही किया, क्योंकि उसने अपनी परामुखा पत्नी को भी, जो कि उसको छोड-कर चली गई थी, तलाक देना उचित नही समझा।

विक्टर ह्यूगो के नाम जूलियट का एक पत्र,—'विवाह के बाद लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'ग' भाग मे उद्धृत है।

रूस का महानतम लेखक तथा विचारक, गांधी जी ने जिससे अपने सिद्धान्त ग्रहण किये। लेनिन ने एक बार गोर्की से कहा था. 'गोर्की! लिखना सीखना है, तो टाल्स्टाय से सीखो.

—टॉल्स्टाय का अन्तिम पत्र पत्नी सोनिया के नाम†

" .....*तुम्हारे पास लौटना जिन्दगी से मुह मोड़ने के बराबर है......*"

३१-१०-१६१०

प्रिये,

हम दोनो का मिल सकना, और उससे भी अधिक मेरा वापिस लौटना अब एक दम असम्भव है। सब कहते है कि मेरा यह फैसला तुम्हे असीम हानि पहुँचायेगा, पर मेरा लौटना तो मेरे लिये भयानक सिद्ध होगा! तुम उत्तेजित हो, नाराज हो, बीमार हो, और यदि मै तुम्हारे पास लौटा, तो मेरी स्थिति वर्त्तमान से भी अधिक दुखभरी और

---

†टाल्स्टाय का वैवाहिक जीवन सुखी नही रहा। वे अक्सर घर से भाग जाते थे। ४८ वर्ष का वैवाहिक जीवन 'भोगने' के बाद, और लगभग ८० वर्ष की आयु मे उन्हें अन्तिम बार घर छोड़ना पड़ा। सोनिया ने क्षमा-याचना की और घर वापिस लौटने का अनुरोध करते हुये उन्हे पत्र लिखा। उसी का उत्तर टाल्स्टाय ने [illegible] दिया है। उस पत्र के लिखने के कुछ ही दिन बाद टाल्स्टाय [illegible] बीमार पड़े और उनकी मृत्यु हो गई।

असम्भव बन जायेगी। तुम्हे मेरी सलाह है, कि तुम जो कुछ बीतचुका है, उसे स्वीकार करलो, और कम मे कम फिल्हाल मुझसे अलग रहो, और अपने स्वास्थ्य की पूरी तरह् देख-भाल करो।

मैं नही कहता, कि तुम मुझे प्यार करो, पर मुझसे घृणा भी तो मत करो! कम मे कम थोडा सा मेरी स्थिति मे अपने को रख कर तुम्हे अवश्य सोचना चाहिये, और यदि तुम ऐसा करोगी तो निश्चय ही तुम मुझे दोषी न मानोगी, उल्टे तुम मेरी मदद करोगी, जिससे मैं शान्ति पा सकूं, और मेरे लिये जी सकना सम्भव हो सके! अगर तुम खुद पर काबू पाने का प्रयत्न करोगी, तो मेरी बहुत वडी सहायता करोगी, और तब तुम नही चाहोगी कि मै अब लौटूं। तुम्हारे मन की दशा इस समय अजब है। तुमने आत्म-हत्या करने तक की कोशिश की। स्वय को काबू मे रखने का तुम कोई भी प्रयत्न नही कर पाती हो। ऐसी दशा मे वापिसी की बात तो मुझे सोचनी भी नही चाहिए! तुम और सिर्फ तुम, पास रहने वालो, मुझे और खुद अपने को, उन कष्टो से छुटकारा दिला सकती हो, जिन्हे तुम आजकल अनुभव कर रही हो। अपनी सारी शक्ति, अपना मनचाहा (फिल्हाल मेरी वापिसी) पूरा करने की तरफ न लगा कर, अपने को शान्त करने, अपनी प्रवृत्तियो को सन्तुलित करने की तरफ लगाने की कोशिश करो, और तब तुम्हारा मनचाहा भी पूरा हो जायेगा।

मैंने दो दिन अमरदिनो और आपटिनो मे विताये, और मै आगे यात्रा करता जा रहा हूँ। यह पत्र रास्ते मे डाला जा रहा है। मै नही वताता कि मै कहाँ जा रहा हूँ, क्योकि मैं समझता हूँ, कि तुम्हारे लिये भी, और मेरे लिये भी वियोग बहुत जरूरी है!. मै तुम्हे छोड गया, क्योकि मै तुम्हे प्यार नही करता था; ऐसा कभी मत सोचना! मैं तुम्हे अपने हृदय के सर्वांश से प्यार करता हूँ, और तुममे सहानुभूति रखता हूँ, पर मै जो कर रहा हूँ, उसमे भिन्न मैं कुछ भी नही कर सकता!

म जानता हूँ तुमने पत्र सच्ची भावना से ही लिखा है, पर तुममे स्वय अपनी ही इच्छा के अनुसार आचरण करने की ताकत नही है। मेरी कुछ इच्छाओं और माँगो को पूरा करने की तो बात ही यहाँ नही है; बात तो है तुम्हारे अपने सन्तुलन की, और जीवन के प्रति तुम्हारे एक तर्क-संगत रुख अपनाने की। जब तक यह कमी पूरी नही होती, मेरा तुम्हारे साथ रहना विचार का भी विषय नही बन सकता। जब तक तुम्हारी यह दशा है तुम्हारे पास लौटना जिन्दगी से मुँह मोडने के बराबर है। मै नही समझता कि मुझे ऐसा करने का कोई अधिकार है।

विदा प्यारी सोनिया! ईश्वर तुम्हारी सहायता करे! जिन्दगी एक मज़ाक नही है, और हमे अपनी इच्छानुसार उसे समाप्त कर डालने का अधिकार नही है।...और जिन्दगी को समय की लम्बाई से नापना भी युक्ति-सगत नही है! हो सकता है, हमारे जीवन के जो कुछ महीने बाक़ी बचे है, वे उन लम्बे सालो से अधिक महत्त्व-पूर्ण हो, जो हम जी चुके है, और हमे इस शेष जीवन को भली प्रकार जीना चाहिये..

—लियो टाल्सटाय

स्वतन्त्र भारत की प्रथम संसद के सम्मान्नीय स्पीकर श्री मावलंकर जी की पति-परायणा पहली पत्नी .

—श्रीमती मनोरमा मावलंकर का पत्र श्री मावलंकर के नाम†

"......मेरी इतनी चिन्ता न किया करो... .."

३-३-१९२२
मिरज

आपके पत्र और तार मिले। आपके लगातार आने वाले पत्रो से प्रतीत होता है, कि मेरी बीमारी के कारण आप वहाँ बेचैन रहते है। इस तरह बेचैन रहने जैसी कोई बात नही है। पूज्या बाई के पत्र आपके पास पहुँचते रहते है, इसलिये मै आपको अलग पत्र नही लिखती। इसके सिवा यहाँ दोपहर को सख्त गर्मी पडती है। इससे घबराहट होती है, और फलस्वरूप लिखने मे कष्ट होता है। इसलिये

---

†मई १९१९ मे मनोरमा ने एक बच्ची को जन्म दिया। प्रसव के कुछ मास बाद ही उन्हे रक्तहीनता का रोग हो गया, और १९-३-२० को उनकी मृत्यु हो गई। प्रस्तुत पत्र ३-३-२० को मिरज के हस्पताल से पेन्सिल से लिखा गया था।

भी नही लिखा। इस कारण आप अपना मन दुखी करेंगे, तो दिन बिताना बहुत मुश्किल हो जायेगा। मेरा स्वास्थ्य बहुत सुधार पर है। कोई कुछ लिख देता है, वह पढ कर आप चिन्ता करने लगे, यह मुझे जरा भी अच्छा नही लगता। खाने-पीने के बारे मे चिन्ता करके आप इतना लिखते है, लेकिन दस्त और उल्टी का कोई ठीक हिसाब रहता हो, तो इस विषय मे कुछ किया जा सकता है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है, कि ग्रह-दशा ही लगी है। इसी के कारण यह सब हो रहा है। इसीलिये तो लिखती हूँ मेरी इतनी चिन्ता न किया करो. एक चम्मच चावल का मॉड लेती हूँ, और कुछ नही। इस विषय मे आपको भरोसा होने की बात आपने कही थी। ऐसी दशा मे दूर रहकर चिन्ता करने मे मेरे मन को आपकी ही चिन्ता बहुत होती है, और इससे बेचैनी प्रतीत होती है। आप लिखते है, कि आपको वहाँ चैन नही पडता। यह पढ कर मन मे यह लगता है, कि आप जैसे काम-धन्धे वाले को भी यदि ऐसा होता है, तो मुझ जैसी चौबीसो घण्टे बिस्तर पर पडी रहने वाली का जी उकता जाने मे आश्चर्य की क्या बात है? चि० कमला की याद के कारण आपका समय नही बीतता होगा; किन्तु इस समय हमारी दशा ही ऐसी बैठी है, कि इस तरह दिन गुजारने पडते है। मुझे, पूज्या बाई को, तथा अन्य सभी को ऐसा ही प्रतीत होता है। चि० कमला सहारे-सहारे के साथ धीरे-धीरे खडी होती है, खेलती और तमाशे करती है . पत्र मिलेगा ही।

— मनोरमा

: ११५ :

भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू की सब से छोटी बहिन.....

—कृष्णा नेहरू के नाम हथीसिंह का पत्र†

" . ..शौक—पाइप मुह में दबा कर आराम कुर्सी पर लेटना . "

मेरा परिचय-पत्र

नाम गुणोत्तम हथीसिह ।

स्कूल नेशनल स्कूल और गुजरात विद्यापीठ ।

कालिज सेन्ट केथरीन्स, आक्सफोर्ड ।

इन्स आफ कोर्ट लिंकन ।

उपाधि राजनीति, अर्थशास्त्र और दर्शन मे बी० ए० ।

क्लब कोई नही, और किसी मे जाने का विचार भी नही ।

---

†नेहरू जी श्री हथीसिंह के बारे मे विशेष जानकारी प्राप्त करना चाहते थे । उन्होने कृष्णा से पूछा, तो उसने हथीसिंह से—क्योंकि अब तक कोई विशेष जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता ही उसने नही समझी थी । इसी सम्बन्ध से हथीसिंह ने यह विवाह-प्रस्ताव का पत्र कुमारी कृष्णा नेहरू को लिखा । बाद मे उनका विवाह हो गया ।

पेशा : बैरिस्टर । मुझमे अपने इस पेशे की लगन है, और हर उस काम की होती है जो भी मैं करता हूँ ! लेकिन इसका यह मतलब नही, कि मैं इसे किसी अन्य कार्य के लिये छोड नही सकता। हो सकता है, साल दो साल मे राजनीति मे आने के लिये मै इसे छोड दूँ।

शौक : पाइप मुँह मे दबा कर आराम कुर्सी पर लेटना सोचने की आदत भी बहुत काफी है, जो कि अधिकतर लोगो के लियें असाधारण है ।

खेल : बहुत साल पहले क्रिकेट खेलता था। अब कोई खेल नही खेलता ।

चरित्र . मैं घमन्डी और स्वार्थी समझा जाता हूँ ।

विवाह सम्बन्धी विचार : जिसे स्वतन्त्रता मिली है, और जो उसकी रक्षा करने को उत्सुक है, उसे मै पूर्ण स्वतन्त्रता देने के पक्ष मे हूँ ।

परिचय . कोई नही !

उज्जवल भविष्य की आशाये कोई नही !

आर्थिक स्थिति काम चलाऊ। साधारण आराम की ज़िन्दगी बिताने की सामर्थ्य है, पर निश्चय ही शान-शौकत की जिन्दगी बिताने की शक्ति नही है।

अन्त मे यह एक प्रार्थना पत्र है—निश्चय ही दुस्साहस पूर्ण, लेकिन परवाह नही—कुमारी कृष्णा नेहरू की सेवा मे, कि वे उपरोक्त व्यक्ति से अक्तूबर १९३३ मे विवाह करने पर राजी हो जायें !

—जी० हथीसिंह

: ११६ :

हिन्दी का गीतो का बादशाह ! . जिसकी कविता हृदय मे मिसरी ही नही घोलती, हाथो मे पडी हथकडियो को तोड फेकने की प्रेरणा भी देती है......

—नीरज का पत्र नीं के नाम†

"....*तुम्हारा प्रेम हमारे लिए कभी पिजरा तो नहीं बनेगा. ....?*"

इटावा
१०-७-१९५७

श्नी प्रिय,

अभी-अभी एक घन्टे पहले तुम्हारा पत्र मिला है—वही पत्र जिसे पाने के लिये एक सप्ताह से मेरा मन छटपटा रहा था, और जिसे न पाकर तरह-तरह की आशकाओ से मै भर गया था। कभी सोचता था, कि कही तुम बीमार न पड गई हो, कभी सोचता था, कि कही तुम मुझसे नाराज न हो गई हो—और कभी सोचता था, कही तुम मुझे भूल न गई हो, और अब शायद मुझे कभी भी पत्र न लिखो !

---

†नी नीरज जी की प्रेमिका का अर्द्ध नाम है। वे कलकत्ते मे स्थित हैं, व एक प्रसिद्ध लेखिका हैं, इतना ही ज्ञान्तव्य नीरज जी ने हमे प्रदान किया है।

एक असह्य बोझ से मेरी सास-सास दबी जा रही थी, और अब जब तुम्हारा पत्र आ गया है, और मेरी सारी आशकाये निमूल सिद्ध हुई है, तो मुझे अपने भीतर ऐसे हरे-भरेपन का, ऐसे आनन्द-उल्लास का अनुभव हो रहा है, जैसे यह मेरा जन्म-दिन हो।

तो तुम घर पर मेहमानो के आ जाने के कारण बहुत अधिक व्यस्त थी। लेकिन प्रिय यदि तुम कोशिश करती, तो अपनी व्यस्तता मे भी दो-चार क्षण मुझे पत्र लिखने के लिये निकाल सकती थी। तुम्हारे इस 'न लिखने' को लेकर इस समय तुम तक पहुँचने के लिये कलम की नोक पर, कितनी ही शिकायते, कितने ही शिकवे मचल रहे है—लेकिन मैं उन्हे मनाकर तुमसे केवल इतना ही कहूगा, कि ईश्वर के लिये भविष्य मे तुम फिर कभी इतना लम्बा मौन धारण न करना। तुम नही जानती, कि शाम को घर लौटने के बाद अपनी मेज पर मै सब से पहले जिस चीज की तलाश करता हूँ, वह है तुम्हारा पत्र। रोज ही तुम्हारा पत्र पढने की मुझे आदत सी पड गई है, और जिस दिन तुम्हारी पाती नही आती, उस दिन अनचाहे ही मेरा मन उदास हो जाता है। और मेरे होठ स्वय ही वह गीत गुनगुना उठते है—

ऐसी सुधि बिसराई,
कि पाती तक न पठाई।

क्या तुम जानती हो इस समय कहा बैठा हुआ, मै यह पत्र लिख रहा हूँ? उसी कमरे मे जहा आज से एक वर्ष पूर्व तुम एक दिन के लिये आ कर ठहरी थी। उसी खिडकी की ओर मुँह किये मै बैठा हूँ, जिससे झाककर उस दिन तुमने बरसात का पहला बादल देखा था। कैसा काला-काला डरावना वह बादल था! और जब यकायक जोर से बिजली कडकी थी तो तुम्हारा सारा शरीर कैसे काप गया था, जैसे पीपल का पात। आज भी वह खिडकी वैसे ही खुली हुई है, और

आकाश मे वैसे ही काले-काले सावन के शैतान मेघ मडरा रहे है—फर्क सिर्फ इतना है, कि आज बिजली नही कडक रही है, और यह अच्छा भी है, क्योकि बिजली की कडक तो तभी अच्छी लगती है, जब सास दुकेली हो। अकेली राम तो तुलसी के राम के शब्दो मे कहती है —

घन घमण्ड नभ गरजत घोरा,
प्रिया हीन डरपत मन मोरा!

हा यह वही कमरा है, जो साल भर पहले तुम्हारे चरणो का पावन स्पर्श पाकर एक दिन तीर्थ बन गया था! दाहिनी ओर की दीवार मे चूना उखड जाने से जो धब्बा बन गया था, वह अभी भी ज्यूं का त्यूं बना हुआ है। कुर्सी का कील—(उसी कुर्सी पर बैठ कर मै तुम्हे लिख रहा हूँ), वैसा ही निकला हुआ है, वही कील जिसमे उलझकर तुम्हारी साडी उस रोज फट गई थी (तुम्हे याद है?) और तब तुम कुर्सी पर नाराज होने की बजाय केवल यह कहकर हस पडी थी, – 'अरे यह साडी तो फट गई'! और कोने मे वह खूंटी वैसी की वैसी गडी है, वही खूंटी जिस पर उस रोज तुमने मेरे कपडे जिन्हे मैंने फेंककर कमरे मे इधर-उधर बिखरा दिया था -- बडी तरतीब से टागे थे, और उधर परिश्रम कर दीवार पर वे लाल-पीली टेढी-मेढी लकीरें जो गुंजन ने चाक से बना दी थी, वैसी की वैसी ही बनी हुई है, हा उनका रग तनिक हल्का हो गया है। लेकिन उन लकीरो के समान तुम्हारे प्रेम का रग हल्का नही होगा, ऐसा मेरा विश्वास है!

आज भी सब कुछ वही है, जो साल भर पहले था, पर तुम नही हो इसलिये कमरे की एक-एक चीज मन को चुभ रही है! तुम इस कमरे मे केवल कुछ घन्टो के लिये ही रुकी थी, लेकिन जो साँसें, जो आहटे, उस रोज तुम इसके वातावरण मे छोड गई थी, वे आज भी, साल भर बाद भी, इस कमरे मे उसी तरह घूम रही है! ओह! क्षमा

करना, मैं शायद रोमान्टिक हो रहा हूँ ।

तुमने लिखा है, कि अभी तीन महीने तक तुम इस ओर नही आ सकोगी। क्यो ? इसका तो मतलब यह है, कि फिर मुझे ही तुम्हारी ओर आना होगा ! लेकिन मै चाहता हूँ, तुम ही इन दिनो इस ओर आओ। आजकल यहा वडा अच्छा मौसम है। दिन-रात आकाश मे बादल मडराते रहते है। तुम्हे तो वादल देखना वहुत अच्छा लगता है ? और कुछ नही तो बादल देखने के लिए ही तुम आ जाओ !

तुमने कभी निँबौली खाई है ? नीम तो कडुवा होता है, लेकिन उसकी निँवौली, जो उसके सृजन का फल है, बडी स्वादिष्ट होती है ! हर सृजन का फल मीठा ही होता है ! जब वरसात आती है, और पानी बरसता है, तव मुझे दो ही चीजे अच्छी लगती है; एक तो भीगते हुये अमराइयो मे जाकर बीन-बीन कर आम चूसना, और दूसरे अपने आँगन की निँबौली खाना। आकाश के घुमडते बादलो को देखकर, कुछ लोगो को तो, विशेष रूप से उर्दू के शायरो को, मय और मीना याद आते है, और कुछ लोगो को कॉफी, चाय और पकौड़े अच्छे लगते हैं, लेकिन मुझे तो बादल देखकर केवल दो ही चीजें—आम और निँवौली—ही याद आते है ! पर हा जब से तुम इस कमरे मे ठहर कर गई हो, तब से पानी की पहली बौछार के साथ, एक और भी चीज मुझे याद आने लगी है। जानती हो वह तीसरी 'चीज़' क्या है ?—'तुम'. ! अच्छा तुम वताओ, जब पानी वरसता है, तव तुम्हे क्या अच्छा लगता है ...?

कल रात मैं एक पुस्तक पढ रहा था। उसमे एक कवि की ये पक्तियाँ मुझे वहुत अच्छी लगी। मैं तुम्हारे पढने के लिये उन्हें यहाँ लिख रहा हूँ—

A Church, a Temple, a Kaba stone,

All these and more my heart can tolerate,
Since my religion is love alone ! ..

क्या तुम उस बात से सहमत नही हो, कि जब हम प्रेम करते है, तब हमारे भीतर वह सहिष्णुता, वह न्याय-प्रियता और समत्व-बुद्धि जाग्रत हो जाती है, जो सब धर्मो, सब समुदायो, तथा समस्त मानव जाति को एक दृष्टि से देखने लगती है ! मेरे विचार से जीवन मे प्रेम का सर्वाधिक महत्व इसीलिये है, कि वह व्यक्ति को उसकी 'स्व' के सकुंचित घेरे से वाहर निकालकर, समष्टि के बीच लाकर प्रतिष्ठित करता है। जिस प्रेम की परिणति इस रूप मे नही होती, मेरे विचार से न तो व्यक्ति के लिये ही श्रेयस्कर है, और न समाज के लिये ही उपयोगी है। क्यो तुम्हारा इस सम्वन्ध मे क्या अभिमत है ?

मैं तुम्हे शायद लिखना भूल गया, कि अभी कुछ दिन पहले मैं वाजार से एक मैना खरीद लाया था ! मैना की वाचालता की कितनी ही कहानियाँ मैंने किताबो मे पढी हैं, और वहुत वचपन से मेरे मन मे उसके प्रति एक कौतूहल एवम् विस्मय का भाव था। उसी जिज्ञासा को शान्त करने के लिये मैंने उस रोज उसे खरीद लिया। सचमुच ही यह वडी बातूनी मैना है। अभी घर आये हुये इसे ८-१० दिन ही हुये हैं, फिर भी न जाने क्या-क्या बोलना इसने सीख लिया है। यह 'पापा' तो इतने प्यार से कहती है, मानो कोई छोटा बच्चा वोल रहा हो ! इसका सीटी बजाना, 'पापा' कहना, मुझे बडा अच्छा लगता है, लेकिन जब वह उस छोटे से पिंजरे मे उडान भरने के लिये छटपटाती है, तब मुझे वडी पीडा होती है ! वैसा ही कष्ट होता है, जैसा कि सीखचो के बाहर खडे हुये व्यक्ति को, सीखचे के पीछे छटपटाते हुये व्यक्ति को—वन्दी को—देखकर होता है। कल सुबह की वात है—उसके पिंजरे के आस-पास कुछ चिडियाँ दाना चुग रही थी, और जब उडकर चली, तो उन्हे देखकर मैना ने भी अपने पिंजरे मे अपने पख फडफडाये, पर जेल की दीवारे लाघने मे वह असमर्थ थी ! इसलिये वह विवश होकर,

उनकी ओर केवल एक सतृष्ण दृष्टि डालकर ही रह गई। मुझसे उसकी यह व्यथा नही देखी गई, और मैने जाकर उसके पिंजरे का द्वार खोल दिया। मैना एक क्षण मे बाहर आ गई, और फिर उसने बडे उल्लास से उडने के लिये अपने पख फडफडाये, पर उड न सकी, और विवश होकर मुझे उसे पिंजरे मे फिर बन्द करना पडा।

वह उड नही पा रही थी, लेकिन फिर भी पिंजरे मे जाने के लिये उसने कितनी आनाकानी की, मै तुम्हे कैसे लिखूँ। कुर्नी—एक बात बताओ . क्या हमारा प्यार कभी हमारे लिये पिंजरा तो नही बनेगा . ? चाहे सोने का हो, चाहे लोहे का, चाहे प्रेम का हो, चाहे नेम का, पिंजरा तो पिंजरा है, और उसमे कुछ दिन रहने के बाद आत्मा की उडने की, ऊपर उठने की शक्ति, उसी प्रकार नष्ट हो जाती है, जैसे इस मैना की नष्ट हो गई! मेरी कामना है, कि हमारा प्रेम गगन-विहारी कपोत के समान सदैव ही स्वतन्त्र, सदैव ही मुक्त हो कर, असीम की गहराइयो मे उडान भरता रहे, पर साथ-साथ यह भी कहता रहे—

O' be mine still, still make me thine,
Or neither make me thine or mine'

—नीरज

: ११७ :

—कवि नीरज के नाम नी...का पत्र

" .....उसका चेहरा डार्विन के उस सिद्धान्त का प्रमाण था, कि मनुष्य की उत्पत्ति बन्दर से हुई है "

सावता
१-४-१९'

प्रिय नीर,

बहुत दिन पहले आध्यात्मिक प्रेम की यह कहानी मैंने पढी थी। मैं सक्षेप मे उसे यहा लिख रही हूँ। आशा है तुम इसे पढना पसन्द करोगे।

"एक लेखक था, जो यद्यपि बहुत विद्वान तो न था, फिर भी दूर-दूर तक लोग उसकी रचनाये पढते, और उनकी प्रशसा किया करते थे। उसके स्वभाव मे एक सहज वैचित्र्य एवम् एकान्त-प्रियता थी, जिसके कारण यह लोगो से बहुत कम मिलता-जुलता था। लोग उसके विषय मे रुचि से बातचीत किया करते थे, पर उसके व्यक्तिगत जीवन से उदासीन थे। लेखक होने के नाते उसमे वह भावुकता थी, जो हृदय

के सूक्ष्म से सूक्ष्म स्पन्दन को ग्रहण कर लेती है, और जिससे कि सामान्य मनुष्य अपने जीवन के अनुभवो मे प्राय: अपरचित ही रह जाता है। उसे एक ऐसे स्नेहशील हृदय की तलाश थी, जो उसे लेखक-रूप मे कम, और मनुष्य रूप मे अधिक प्यार करें ! आखिरकार एक दिन किसी स्त्री द्वारा लिखा हुआ एक सुन्दर पत्र उसे मिला, जिसमे स्नेह और आत्मीयता की झलक थी। उसने अपने प्रशसक को उत्तर दिया, और फिर वे नियमित रूप से पत्र-व्यवहार करने लगे। परिचय निकटता वनी, निकटता मित्रता, और फिर मित्रता प्रेम वन गई ! उन्होने अभी तक एक-दूसरे को देखा भी नही था ! केवल पत्रो द्वारा ही एक-दूसरे को प्रेम करने लगे थे ! मिलन की व्याकुलता दोनो को थी, पर स्त्री मिलन मुहूर्त को सदैव ही स्थगित कर देती थी। वह लिखा करती थी—'हमे उस दिन तक प्रतीक्षा करनी चाहिए, जव तक हमे यह निश्चय न हो जाये, कि हमारा प्रेम शारीरिक अथवा साँसारिक नही है; हम उस प्रेम की कामना करते है, जो दिव्य और स्वर्गीय है, जो भौतिक इच्छाओ से पूर्णतया मुक्त है, जो स्थूलता से परे आत्मा मे निवास करता है, और जिसके अक्षय कोप मे अद्वैत का परम आनन्द तथा असख्य अनदेखे रहस्यो का रहस्य वन्द है !'

पर लेखक उससे मिलने के लिए वहुत ही व्यग्र था। वह उसकी इच्छा की अवहेलना नही कर सकता था, इसलिए वे एक दूसरे को और भी तन्मयता तथा तीव्रता से पत्र लिखने लगे। दोनो ही एक दूसरे को यह विश्वास दिलाना चाहते थे, कि उनका प्रेम निरन्तर पवित्र और महान होता जा रहा है ! लेखक मिलन के उस क्षण के अनेक सुन्दर-सुन्दर सपने वुना करता था, जो सारे भौतिक वन्धनों को तोड कर चिरकालिक हो जायेगा !

सयोग से एक वार वे दोनो एक ही नगर मे ठहरे हुए थे। स्त्री ने, जो लेखक के प्रेम मे सचमुच ही खो गई थी, फिर भी मिलन की स्वीकृति

नही दी, किन्तु वे एक-दूसरे को पत्र बराबर ही लिखते रहे। दोनो ही नगर के समीप वाली एक पहाडी पर एक शिला के नीचे अपने-अपने पत्र रख आते, और उसका उत्तर ले आया करते थे। लेखक प्रत्येक सुबह अपना पत्र रखने और लेने के लिए जाता था, और वहा मत्र-मुग्ध सा घटो खडा रह कर, पत्थर के उस टुकडे को सतृष्ण नेत्रो से निहारा करता था, जिसे उसकी प्रेयसी ने अपने कोमल करो से बार-बार छुआ था, और तब अपने भावो के उफनते हुए वेग को नही रोक पाता था, और उसके आसू निकल पडते थे। अपनी कल्पना की राजकुमारी के विरह मे बुरी तरह वह जल रहा था। जब वह एक दिन बहुत विकल हो गया, तब वह एक शाम को पहाडी पर उस समय गया, जब कि उसकी प्रेयसी वहाँ पत्र रखने आती थी। वह वहाँ एक बडे पेड के पीछे छिप गया, और धडकते हृदय से उसके आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर बाद पहले उसे एक धीमी पदचाप सुनाई दी, फिर रेशमी अचल का एक कोना दिखाई पडा ! उसका हृदय असीम आनन्द से भर गया, और कुछ अकल्पित तथा अवर्णित देखने की अभीप्सा मे उसका रोम-रोम थिरक उठा। एक क्षण बाद उसे एक नारी-मूर्ति का पृष्ठ-भाग, जो प्रेम की विरहाग्नि मे तपकर अत्यन्त क्षीण हो गई थी, दिखाई दिया। स्त्री को लेखक की उपस्थिति का कुछ भी आभास न था। वह उस शिला पर झुकी, जिस पर कि लेखक का पत्र रखा हुआ था। लेखक एक कदम आगे बढा, और फिर यकायक ही नाराज होता हुआ, तथा बडबडाता हुआ पहाडी की दूसरी ओर भाग गया। उसने तय किया, कि बिना देखे हुए वह अब किसी से भी पत्र-व्यवहार नही करेगा, क्योकि जिस स्त्री को उसने देखा था, उसकी पीठ पर कूबड था, और . उसका चेहरा डार्विन के उस सिद्धान्त का प्रमाण था, कि मनुष्य की उत्पत्ति बन्दर से हुई है !

—नी

: ११८ :

अमरीकी युद्ध-शतरंज का वह निर्दोष मोहरा । जिस को कठपुतली की तरह नचाने वाले हाथ विश्व-शान्ति के दूत कहलाते हैं।......

पायलट गैरी पार्वस का पत्र बारबरा के नाम †

" .... .तुम्हें भी एक अधिक अच्छा पति मिलना चाहिए था ... "

मेरी प्रियतमे बारबरा,

मेरे पास शब्द नही हैं, जिनमे मैं उस आनन्द का वर्णन करूँ, जो मुझे तुम्हारा पत्र पाने पर हुआ है !

मेरे पिछले पत्र के समय से अब तक, स्थिति मे कोई परिवर्तन नही हुआ है। जितना मैं तब जानता था, उससे अधिक मैं आज भी नही जानता, कि मेरा क्या बनना है, और मेरा मुकदमा कब शुरू होना है ?

मैं अब भी प्रतिदिन सैर को जाता हूँ, और धूप मे भी बैठता हूँ।

---

† पार्वस एक अमरीकी हवाबाज व जासूस है। पिछले वर्ष सोवियट रूस मे जासूसी करते समय रौकिट द्वारा उसके विमान को अत्याधिक ऊँचाई से नीचा गिरा दिया गया। अनेक लोगो के अन्दाजों के विपरीत पार्वस को मृत्यु-दंड नही दिया गया, और केवल १५ वर्ष कैद की सज़ा मिली।

मुझे पेट भर खाना मिलता है, और किताबे पढने को मिलती है। मेरी शिकायत सिर्फ इतनी है, कि मै वहाँ तुम्हारे पास नही हूँ !

प्यारी, मुझे बडा खेद है, कि मैंने अपनी दोनो की जिन्दगियो को कितना गडबड मे डाल दिया है। हमारी सब योजनाएँ, हमारी सब उम्मीदे, मालूम पडता है, धूल मे मिल गई है ! यह कहना व्यर्थ ही है, कि यदि मुझे मेरा जीवन दुबारा जीने को मिल गया, तो तब वह बहुत ही भिन्न होगा। जो किया जा चुका, किया जा चुका, और अब मै उसमे कोई सुधार नही कर सकता।

अमरीका का वातावरण 'एक' (उनका कुत्ता) के अनुकूल रहा होगा। मुझे याद है, इधर रहते हुए हम कितनी कोशिश किया करते थे, कि उसका वजन बढे। वहाँ उसे अच्छा खाना मिलता होगा ! बारबरा, उसकी अच्छी देखभाल करना। वह एक बहुत ही प्यारा कुत्ता है !

बारबरा, मेरी माँ को बहुत अधिक चिन्ता करने से रोकना। मुझे डर है, कि मेरे यहाँ होने के कारण उसे दूसरा दिल का दौरा न पड जाये। मै अपने को कभी क्षमा नही करूँगा, यदि, मेरे कारण ऐसा हुआ !

मुझे याद है, तुम मुझे कितना मजबूर किया करती थी, कि माता-पिता को मैं अधिक बार पत्र लिखा करूँ। मैं हमेशा टालता रहता था, यह जानते हुए भी, कि वे मेरे पत्रो का कितना इन्तजार करते होगे ! जैसा उन्हे मिला है, उन्हे तो उससे अधिक अच्छा बेटा मिलना चाहिए था ! हो सकता है मैं भविष्य मे अपनी कमियो को दूर कर सकूँ।

प्यारी, मै कैसे बताऊँ, कि जो कुछ गुजर चुका है, उसके लिए मुझे कितना खेद है तुम्हे भी एक अधिक अच्छा पति मिलना चाहिए था .. ऐसा लगता है कि जिन लोगो को मै सबसे अधिक प्यार करता हूँ, उन्हे दुख देने के सिवाय और कुछ भी मैं नही कर सका ! मैं आशा करता

हूँ, कि भविष्य मे कुछ अच्छा करने का मौका मुझे मिलेगा ! लेकिन, दुख है, कि भविष्य उज्जवल दिखाई नही देता ..

मेरा सम्पूर्ण प्यार—

—गैरी पावर्स

: ११९ :

प्रसिद्ध प्रगतिशील उपन्यासकार तथा कहानीकार, जिसकी रचनायें पाठकों के हृदय और मस्तिष्क मे सुर्ख लावा उ डेल देती है .

—साहित्यकार कृष्ण चन्द्र का पत्र ? के नाम†

" .. *तुम जो मेरी पाकीजगी हो ..मेरी खूबसूरती हो मेरा तखैयुल हो . ..*"

वम्वई
२१-८-५६

आज तीसरे पहर को तुम्हारा वेहद मुख्तसर खत पाकर एक जरा कटीला सा खत तुम्हे लिख दिया था। चन्द और वजूहात से भी आज दिन भर से परेशान था। खत पोस्ट कर के—के यहाँ वापिस आ कर वही पलग पर पड गया। छ' वजे की डाक से तुम्हारा वेहद प्यारा शिगुफ्ता खत मिला। खत लेकर घर आ गया। घर की फिजाँ वडी अच्छी सी लग रही है। वच्चे हौले-हौले रेडियोग्राम वजा रहे हैं। सहगल का कितना पुराना गीत। सुनोगी ? यह गीत शायद किसी ने तुम्हारी वजह से लिखा था।

---

†श्री कृष्ण चन्द्र ने इस पत्र के सम्वन्ध मे अन्य ज्ञान्तव्य हमे प्रदान नही किया।

सुना-सुना रे कृष्ण काला

आई तुमरे द्वार

सुनो मेरी पुकार

अब सुन ले बासुरी वाला

तुम जानते हुये जो जानो ना,

अब कासे कहूँ दु ख सारा ?

मेरे पाँव तो हो, और मै आ न सकूँ

हूँ अधीन मैं दीनानाथ !

.... (ठीक से सुना नही गया)

कहूँ जल ले आऊँ,

तो लोग करे बदनाम,

जैसी जो चाहे बाते उडाये,

कहे राधा भी मोहे कलकिनी

तोमे चोरी जो मिलने आऊँ

अरे ! चण्डी दास का है। कहो कैसा रहा ? मुझे यह टुकडा अच्छा लगा—

कहे राधा भी मोहे कलकिनी,

तोसे चोरी जो मिलने आऊँ !

इस एक टुकडे से कितनी जगहो की याद ताजा होती है ! कुछ याद भी है भूलने वाले ?..

तुम्हारे ख़त के अलावा एक और खत भी घर की डाक मे मिला है, जिसने मुझे परेशान कर दिया है, कि मैने तुम्हे तीसरे पहर वाला ख़त क्यो लिखा ? अब सोच-सोच कर जी बुरा हो रहा है। हालाकि वह मजाक ही था, मगर फिर भी क्यो लिखा ? और फिर परेशानी इस बात की भी है, कि दो ही दिन हुये हैं, मैंने तुम्हे आज-कल की लडकियो की आवारगी और उनके गलत-सलत खत लिखने के बारे

मे लिखा था। यह खत भी एक लडकी का है, मगर इसकी तहरीर ने मुझे शर्मिन्दा कर दिया, कि मैने आज कल की लडकियो के बारे मे इतनी जल्दी 'जनरेलाइज' क्यो कर लिया ?

यह एक चीनी लडकी का खत है। तुम्हे भेज रहा हूँ। तुम्हें मेरा अफसाना—'मैं इन्तजार करूँगा'—तो याद होगा ? जिसमे हीरोइन हिन्दुस्तान छोड कर अपने वतन चीन चली जाती है, और कोरिया के जग मे शहीद हो जाती है। यह खत उस लडकी ने इस तरह लिखा है, गोया वही मेरे अफसाने की हीरोइन है, और अब हिन्दुस्तान से चीन गई, और वहाँ रह रही हैं। लडकी हिस्सास मालूम होती है। तर्जे-तखातुब मे कुरबत के अलावा एक शाइस्तगी पाई जाती है। लेकिन जिस चीज ने मुझे सबसे ज्यादा मुतास्सिर किया, वह यह है, कि इस लडकी ने खत मे कही अपना पता नही लिखा है। यह ऐन-मुनासिब है। इस चीज ने इस खत को अजीब पाकीजगी बख्श दी है! इसलिए इस खत को मै तुम्हे भेजता हूँ। यह खत जुलाई वस्त का लिखा, आज मेरे पास पहुँचा है।

कभी-कभी जब परेशानियाँ हद से बढ जाती है, जब बहुत अकेला महसूस करने लगता हूँ, जब फिजाँ मे तारीक धुँधलके से फैलने लगते है, जब तुम्हे पुकार-पुकार कर थक जाता हूँ, जब कोई नही होता, उस वक्त कही दूर-दराज से उडकर आने वाला, यह अजनबी खत दिल को अजीब तरीके से ढाढस देने लगता है ; कि अभी नेकी, पाकीजगी इन्सान के दिल मे जगमगाती है—अभी ऐसे लोग दुनियाँ मे मौजूद है, जो मेरे काम की कद्र कर सकते है, जिनके दिल मे मेरे अफसाने अहसास को जगाते है, जिससे इन्सानियत इबारत है!

...तुम जो मेरी पाकीज़गी हो, मेरी खूबसूरती हो, मेरा तखैयुल हो . मुझसे इस कदर दूर-दूर क्यो रहती हो ? क्यो रहती हो ? यह तो बिल्कुल गुनाह है! जाने तुम्हे इस गुनाह का अहसास कब होगा!

देख लो इस निथरे, सुथरे, पाकीजा, मीठे, धीमे, मद्धम, मेहरो-वफा से लबरेज हौल के अन्दर भी दर्द की एक लहर सी दौड़ जाती है! यह दर्द जो तुम से है! यह लहर जो मेरे अकेलेपन की है! जाने ऐसे कितने ही खूबसूरत लम्हे आयेंगे, और चले जायेंगे! और मैं इस बड़े लैम्प शेड के नीचे अकेला लिखता रहूँगा...

तुम्हारा अकेला

— कृष्ण

:

भारत के प्रसिद्ध लेखक तथा राजनीतिज्ञ . स्वतन्त्र पार्टी के वर्तमान कर्णधारो मे से एक

—श्री के० एम० मुंशी का पत्र पहली पत्नी अतिलक्ष्मी के नाम†

" जो फौज उनके (लीलावती के) आस-पास घूमती है उनमें मैं कभी नहीं घूमूँगा......"

८-१२-२२

भावनगर

आज कई दिनो से बातें करना चाहता हूँ, समय नही मिलता। माता जी बात-चीत नही करती है, और न करने देती हैं, और तुम्हारे मस्तिष्क पर व्यर्थ का बोझ सा रहा करता है।

मैंने तुमसे जुदाई कभी नही समझी। किसी भी दिन, अपने हाथो जान-बूझ कर दु ख नही दिया, और तुम्हे दु ख हो, इसकी अपेक्षा मैं खुद दु ख सहूँ, यह मुझे अच्छा लगेगा।

---

†अतिलक्ष्मी की जीवितावस्था मे ही मुँशी का ध्यान उस से हट कर लीलावती की ओर झुक रहा था। अतिलक्ष्मी ने मुँशी से इस बात की अपने पत्र मे शिकायत की—(विवाह के पश्चात् लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड 'ख' मे देखिये)। उसी के उत्तर मे मुँशी ने यह पत्र अतिलक्ष्मी को लिखा।

तुम पर मेरा पूरा विश्वास है। मैंने शुद्ध हृदय से तुमसे बातें करने की रीति रखी है, और वही रखना चाहता हूँ। मुझे तुम्हारी चोरी से या छिपाकर कुछ नही करना है। इसकी अपेक्षा मैं तुमसे गिड़गिडाकर माँग लूँ, तो तुम कभी इन्कार न करोगी, ऐसी तुम शुद्ध-हृद्या हो! तब फिर मैं छिपाऊँ किसलिए ?

लीला बहन शौकीन है। साहित्य-रसिक है। उनके पास बैठकर आकाश-पाताल की गप लडाने मे मजा आता है! इनके अनेक गुण और खूबियाँ आकर्षक है, यह तो तुम जानती ही हो!

इसमे वहम या शका की क्या बात है ? अन्य स्त्रियाँ आकर्षक लगे, तो उन्हे बहन का रूप देने मे ही सुख है। उसी भावना से मैंने लीला को बहन रूप दिया है।

·जो फौज उनके आस-पास घूमती है, उसमे मैं कभी नही घूमूँगा ·· परन्तु यदि विशुद्धता के साथ, निर्दोष रहकर, उनके साथ बन्धुत्व रहे, तो मैं रखना चाहता हूँ!

—मुंशी

---

*अतिलक्ष्मी की और लीलावती के पति की मृत्यु के पश्चात मुंशी और लीलावती का विवाह हो गया।

मुंशी द्वारा लीलावती को, व लीलावती द्वारा मुंशी को लिखे गये एक-एक पत्र इसी खड मे आगे उद्धृत है।

: १२१ :

—श्री के० एम० मुंशी का पत्र वर्तमान पत्नी लीलावती के नाम†

"......अब सारा घर जल जायेगा, कि हम विवाह करने वाले हैं "

...अब तुम्हारे विषय मे। तुम समझोगी कि मैं जुल्मी हूँ। हुक्म पर हुक्म निकालता हूँ, मानो नैपोलियन . तीन महीनो मे तुम्हे तबियत सुधारनी है, साथ ही अग्रेजी भी। शिष्टाचार का भय न रखना। मूर्ख न बनना। गणित पढना छोड देना। मास्टर को छुट्टी दे दो। इससे तुम पर भार पडता है। मैं जीजी माँ से स्पष्ट बाते करने वाला हूँ। अब सारा घर जल जायेगा, कि हम विवाह करने वाले हैं...सिस्टर स्टेनिस्लो से कह देना कि सामाजिक कारण से तुम्हे पचगनी से बाहर जाना होगा। अब तुम अग्रेजी पर ध्यान देना। पडित को छुट्टी दे देना।

†लीलावती के पति की मृत्यु कुछ दिन पूर्व हो के चुकी है। मुँशी की पहली पत्नी अतिलक्ष्मी की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी। इस पृष्ठ-भूमि मे मुँशी ने लीलावती को यह पत्र लिखा।

अंग्रेज सहचारी रखना, कि जो रोज सवेरे तुम्हारे साथ अंग्रेजी पढे ।

— मुंशी

[1]अतिलक्ष्मी के नाम श्री मुंशी का एक पत्र व मुंशी के नाम लीलावती के दो पत्र इसी खड मे अन्यत्र उद्धृत है । मुंशी के नाम अतिलक्ष्मी का एक पत्र—'विवाह के पश्चात लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'ख' भाग मे उद्धृत है ।

: १२२-१२३

—श्री मुंशी के नाम लीलावती क दो पत्र†

" . . . ऐसा लगता है, जैसे मै नई हो गई हूं . ! तुमने जो कहा उससे हृदय फड क उठा ....."

आज शाम को तुम्हारा और नरू भाई का तार मिला। अन्त मे इतने वर्षो का सम्बन्ध टूटा। मेरे जीवन मे उनका अणुमात्र भी प्रवेश नही था! वर्षो तक एक कच्चे तार पर मेरी और उनकी जिन्दगी जुडी हुई थी। फिर भी केवल इसी वधन के वल पर मेरा जीवन उन्होने जकड रखा था। तव भी इस घटना से एक प्रकार का दु ख तो होता ही है। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे। मुझे रोना नही आया! आँखो से एक आँसू भी नही निकला! वडी वहन को अजीव सा लगा होगा, परन्तु मैं ढोग क्यो करूँ? स्वतन्त्रता का भान हुआ है, परन्तु न जाने क्यो कल्पना नही चलती? मेरा मस्तिष्क स्तब्ध सा

†उपरोक्त दोनो पत्र श्री मुंशी के पिछले पत्र के उत्तर मे लिखे गये थे।

हो गया है। तुम से मिल कर मुझे बातें करनी है. ऐसा लगता है जैसे मैं नई हो गई हूँ . पहले नही थी, ऐसी निर्बन्ध हो कर मैं अब तुम से मिल सकती हूँ !

आज सवेरे बाला आ गई। वह बदली हुई सी लगती है। यह परिवर्तन मुझे अच्छा लगता है, परन्तु अभी कुछ नही कहा जा सकता...इसके लिए हम क्या व्यवस्था करेंगे ? इसे हमेशा रखेंगे, तो बच्चो के साथ स्कूल भेजना होगा। इसको पहले की हालत के अनुभव काफी है, इसलिये यह कोई कठिनाई तो उपस्थित नही होगी ? तुम कहो तो 'फ्रेंच होम' मे भरती कर दें...

१३-१-२६

—अब तुम्हारा पत्र ! तुमने जो कहा उससे मेरा हृदय फड़क उठा...यह बहुत जल्दी है। परन्तु गर्मियो की छुट्टिया आ रही है, इसलिये छुटकारा नही मालूम होता। मै चक्कर मे पड गई हूँ। तुम आओगे, तब बाते की जायेगी। जब स्टेनिस्लो को मालूम हुआ, कि मैं विधवा हो गई, तब उसने कहा—" मैं बहुत दु खी हूँ, परन्तु तुम फिर से विवाह कर सकती हो।" उसने यह एकदम कह डाला, इसलिये मुझे सूझा नही, कि क्या कहूँ ? उसने पूछा -"इससे तुम्हारे व्यवहार-क्रम मे कोई फ़र्क पडेगा ? तुम्हारी पेन्शन तो बन्द नही हो जायेगी" ? जब मैंने उससे कहा, कि मेरे पति की ओर से मुझे कुछ नही मिलता, और उनकी मिल्कियत से मैं कुछ भी नही लूँगी, तब वह बहुत चकित हुई। उसने पूछा—"डियर, तुम्हे लगता है कि तुम स्वतन्त्र हो गई ?" उसे ऐसा लगा, कि मैं बहुत दु.खी हूँ, इसलिये उसने विशेष ममता-मोह प्रकट किया। 'सिस्टर ऑफ़ मर्सी' के रूप मे उसे सहानुभूति प्रकट करने का अवसर प्राप्त हुआ, इससे वह बहुत प्रसन्न हुई सी मालूम

हुई। परमात्मा के पोथे मे एक अधिक अच्छा काम वह जमा कर सकी...।

—लीलावती

*अतिलक्ष्मी व लीलावती क नाम श्री मुँशी का एक-एक पत्र इसी खड मे अन्यत्र उद्धृत है। श्री मुँशी के नाम उनकी पहली पत्नी अतिलक्ष्मी का एक पत्र—'विवाह के पश्चात् लिखे गये प्रेम-पत्र'—खड के 'ख' भाग मे उद्धृत है।

जर्मनी का जनकवि जिसको 'राजद्रोह' के कारण अपनी आयु के दसियो साल हिटलर की फासिस्ट जेल में काटने पडे......

—अर्नेस्ट टॉलर का पत्र पत्नी टेसा के नाम*

"......मेरा अपना एक बाग था, जिसमे सूर्यमुखी के फूल खिले थे......"

नीदरशनफील्ड, सितम्बर १९२०

प्यारी,

सन्ध्या मेरे सपनो की साथिन है। बहुत धीमे वह मेरे पास आती है, और एक से एक चमकदार रंग ओढती है। इन सब रगो मे दूर का एक इशारा छुपा रहता है, और इन रगों पर छायाओ के हल्के पर्दे पड़े रहते है, पर सपना मेरा मित्र है। जब वह चाहता है, तब वह रौबिन गुडफैलो जितना ही मित्रता-पूर्ण बन जाता है।

आज रात मै तुम्हारे साथ पेविया के करटोसा मे था। मेरा मतलब यह है, कि मैं वहाँ रह रहा था। मेरा अपना एक छोटा सा घर था। मेरा अपना एक कुआ था मेरा अपना एक बाग था, जिसमे सूर्यमुखी

*टॉलर ने यह पत्र जेल से अपनी प्यारी पत्नी के नाम लिखा था।

के फूल खिले थे। वाह! यह सब बहुत ही बढिया था! लिली के पौधे खिले पड रहे थे, और इसी प्रकार पतझड के गेंदे भी। चेरी फल रही थी, और एक पेड पके सेवो के बोझ के कारण झुका जाता था। मैंने देहली पर पैर रखा। मैं तुमसे मिलने गया। डोरा—गोरी डोरा, नई जिन्दगी से चमक रही थी, और उसका सिर पीछे को झुका था। तुम ..जरा सोचो . तुम कुछ शंकाकुल थी। तुम एक सगमरमर की प्रतिमा के सहारे लग कर खडी हो गईं (पर क्यो? मैंने सोचा, साधारण रूप से तुम इन 'जीवित तस्वीरो' से घृणा करती हो), और तुमने कहा, "फादर, एक प्रार्थना कहो।"

मैने सोचा, और अपनी जेव से एक छोटी सी किताव निकाली, और ऐसी आवाज मे पढा जिसने उस वृक्ष-पक्ति की लय को पकड लिया, और जब मैंने समाप्त कर लिया, तो किसी ने कहा (शायद तुम थी या डोरा), "कितनी खूबसूरती से तुमने रेनियर मेरिया रिल्के की कविता "इन दि करटोसा' को पढा है। हम तुम्हे धन्यवाद देते है!

मैं पीछे घूमा, और हम तीनो अचानक एक नाँव मे बैठकर रात के समय वेनिस की सैर कर रहे थे!

तब, जब हम मकान की छत के छज्जे पर बैठ गये, तो एक अजीब आवाज ने कहा, "ये कन्डोटियरे की यात्राएँ है।"

मैं फुसफुसाया, "मैं समझता हूँ मैं सपना ले रहा हूँ।" कैसे मै कभी भी शक न कर सका, कि ज़िन्दगी खूबसूरत है, खूबसूरत है!

मैं जाग उठा। हमारी कोठरियो के बरामदो मे सुबह का शोर भर रहा था।

क्या तुम्हे बताने की जरूरत है कि दिन भर मैं एक धनी की सी अकड मे रहा!

—अर्नेस्ट टॉलर

: १२५ :

पजाबी कविता की सिरमौर . जिस के कविता-सग्रह 'सुन्हैड़े' को साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी किया जा चुका है . कहानी, उपन्यास के क्षेत्र मे भी अग्रणी......

—कवियत्री अमृता प्रीतम का पत्र ? के नाम †

... ...,

कल्पना के पानी मे
मेरा सपना ऐसे तैरता है,
जैसे सागर मे मछली
मछली जब धरती को छूयेगी
तड़प-तड़प कर मर जायेगी !
सपना जब असलियत को देखेगा
अपनी सास तोड देगा !
—पर अगर तुम्हे भूख हो !
कल्पना का पानी भरपूर बहता है
मैं प्राणो का जाल डालूँगी

---

†अमृता जी ने इस पत्र के सम्बन्ध मे कोई और ज्ञान्तव्य हमे प्रदान नही किया ।

सपने की सुनहरी मछली पकड़ूँगी
मै उसे छीलूँगी, चीरूँगी !
आँसुओ का नमक लगाऊँगी !
दिल की आग पर भूनूँगी !
और तुम्हारे आगे परस दूँगी
अगर तुम्हें भूख हो !
और अगर तुम्हारी तृप्ति हो सके
बेशक एक जून ही सही !...

—अमृता प्रीतम

भारत-प्रसिद्ध नाटककार, जिसके एकांकी पुस्तको की शोभा ही नही, रगमच के शृगार भी हैं......

—नाटककार विष्णु प्रभाकर का पत्र पत्नी सुशीला के नाम†

"......काश ! कि तुम मेरे कधे पर सिर रक्खे बैठी होतीं, और मैं लिक्खे चला जाता......"

हिसार
७-६-३८

रानी,

सोचता हूँ, जो हुआ क्या वह सत्य है ? सवेरे जब उठा था तो जान पडा, जैसे स्वप्न देखा हो, लेकिन आँखे जो खोली, तो प्रकाश ने उस सारे स्वप्न को सत्य रूप मे प्रत्यक्ष कर दिखाया। अब भी कभी-कभी हृदय मे कोई गुना जाता है—'जिसे तुम सत्य कहते हो, वह स्वप्न का पार्थिव रूप है।' हो ! मैं उसे भूल न सकूँगा !

प्रिये ! रात ९.२७ पर जब मैं हिसार पहुँचा, तो तुम स्टेशन पर

---

† सुशीला जी विवाह के बाद पहली बार मैके गई थीं, जब विष्णु जी ने यह पत्र उन्हें लिखा।

जाने के लिए तैयार हो रही होगी। शायद तुमको मेरा ध्यान भी होगा। मैं न जाने कितनी बार चौंक पडा था! मालूम हुआ तुम ने आकर मेरे वक्षस्थल पर अपना सिर टिका दिया है! मेरे दोनो हाथ धीरे-धीरे ऊपर उठे। लेकिन सुशीला! वहाँ कौन था? अपनी छाती को दबाकर ही मैं काप उठा!

भद्रे! अब ६ ३८ का समय है। तुम अपने घर के बहुत करीब पहुँच चुकी होगी। तुम्हे रह-रह कर अपने मा-बाप और अपनी बहिन से मिलने की खुशी हो रही होगी। लेकिन रानी! मेरा जी भरा आ रहा है! आसू रास्ता देख रहे हैं! इस सूने आगन मे मैं अकेला बैठा हूँ! ग्यारह दिन मे घर की क्या हालत हुई है, वह देखते ही बनती है। कमरे मे एक-एक अगुल गर्दा जमा है। पुस्तके निराश्रित पत्नी सी अलस-उदास जहाँ-तहाँ बिखरी है। अभी-अभी कपडे सभाल कर तुम्हे खत लिखने बैठा हूँ, परन्तु कलम चलती ही नही। दो शब्द लिखता हूँ, और मन उमड पडता है काश! कि तुम मेरे कन्धे पर सिर रखे बैठी होती, और मैं लिखता चला जाता पृष्ठ पर पृष्ठ! लो रानी! एक पृष्ठ लिखने मे १५ मिनिट समाप्त हो गए। एक बच्चा अभी-अभी मेरे पास आ बैठा है, पर पढना नही जानता। इसी से बेखबर लिख रहा हूँ। होल्डर भी नया है। रुकता है। क्या करूँ देवि? इतनी उद्विग्नता मुझे रुचती नही।

रानी! चलते समय तुमने कहा था, कि तुममे जो त्रुटिया मैंने देखी हो, वे लिख दूं। प्रिये! कमी ससार के प्रत्येक प्राणी मे है। पूर्ण तो केवल वही एक है। तो भी 'हम अपनी कमी को, और उसके कारण को जाने, तो जीवन की दुरूहता बहुत कुछ कम हो जाती है'—तुम्हारा यह विचार सुन्दर है। परमेश्वर करे तुम इन भावो को बनाए रक्खो! लेकिन त्रुटियाँ मैं क्यो लिखूं, यह भी मैं नही समझता। उनको जानना भी तुम्हारा काम है। देवि! हृदय का मन्थन करो तो रत्न पाओगी।

जीवन का मन्थन करो तो उसकी दोनो 'साइड्स' तुम्हारे सामने होगी।

एक बात कहूँ प्रिये ! मुझे 'स्टडी' करना बहुत कठिन है ! क्षण भर मैं कायर जान पडता हूँ ! दूसरे ही क्षण मेरी भावना सब को पराजित कर चलती है। तुमने सुना होगा, उस विवाह के बाद मुझे लोगो ने कायर ही कहा है। उनका दोप भी क्या ? पिछले सात साल से मै बराबर विद्रोह करता आ रहा था। अब एक दम उस 'सबमिशन' से वे चौके तो ठीक है। मुझे कोई नही जानता। तुम भी, मुझे डर है, न जान सकोगी। यही श का है, जिससे मै कभी-कभी वे बाते कह देता था, जिससे तुम्हे दुख हुआ होगा। मै अब भी कहता हूँ, मेरा विवाह नही होता, तो ज्यादा ठीक था ! तुम्हारे प्रति मुझे कोई शिकायत अभी क्या हो सकती है ? फिर भी रानी ! मुझ नजदीक से पढो। सहानुभूति से पढो। मुझसे कुछ न कहलवाओ, आप ही समझ-सोच कर काम करलो तो ठीक हे, नही तो यह दुनिया है। कलह और असफलता और पीडा सब हम तुम पावेगे।

पीडा मे भी मुझे सुख होगा, लेकिन तुम नष्ट हो जाओगी ! समझती हो न शीला ? मैने जन्म से लेकर आज तक दुख और पीडा को अपना साथी बनाये रक्खा है। अब भी नही डरूँगा, लेकिन मेरे किसी अपराध का दण्ड तुम पाओ, यह मेरी दृष्टि मे दुनिया का सबसे बडा पाप है ! पाप से मुझे प्रेम है, लेकिन वह मुझे मिले, तुम्हे नही। इसी से घबराना मत रानी। ओह रानी ! क्या तुम डर गई ? नही, नही ! श्रद्धा और विश्वास को तुम भूलो मत। ऐसा करो, ये दोनो तत्व कभी भी हमारा साथ न छोडे। जिस दिन श्रद्धा तुम खो दोगी, उसी दिन तुम्हारा पतन जरूरी हो जाएगा।

मेरी रानी ! क्या तुम सच ही मुझसे प्रेम करती हो ? इसका उत्तर खूब शान्ति से जब तुम, (१) अपने माता पिता के घर मे खूब व्यस्त हो, (२) भाई-बहिन घुल-मिल कर बाते कर रहे हो। (३) अपनी

सखी के सौभाग्य पर कोई चर्चा चल रही हो, या तुम बिल्कुल एकान्त मे बैठी हो, तब सोचना। मै दावे से कहता हूँ, उत्तर तुम्हे मिलेगा! सच-सच लिख देना। उसी एक प्रश्नोत्तर पर सारा जीवन निर्भर रहेगा। सत्य के लिए साहस की जरूरत है! मैं तुमसे एक ही प्रार्थना करता हूँ रानी! कभी भी कोई बात मुझसे छिपाना मत! मेरे हृदय-मन्दिर की अधिष्ठात्री देवि! ऐसा तुम करोगी, तो दुनिया तुम्हे सदा-सदा के लिए याद रक्खेगी।

जानती हो प्रिये! मै एक निर्धन व्यक्ति हूँ! गरीबी मुझे मिली है, यही बात नही, गरीबी मेरा व्रत भी है! शीला! इसे तुम सदा याद रखना। यदि निर्धनता से प्रेम न हो, यदि आवश्यकता पडने पर मेरे कन्धे से कन्धा भिडा कर भूखे-प्यासे रहकर तुम खेत मे काम करने की शक्ति न रखती हो, तो मुझसे कह देना। अपने मन को दुखी मत करना। तब मैं तुम्हारी व्यवस्था कर दूंगा, लेकिन कहता हूँ यह सब ठीक न होगा। क्या तुम समझी मेरी रानी? सोचोगी मा-बाप ने क्या सोच कर ऐसे व्यक्ति से मेरा पल्ला बाँधा? मै भी कहता हूँ, यह तुम्हारा दुर्भाग्य ही है! तुम्हारा ही क्यो, न जाने कितनी उदासीन लडकिया इस दुर्भाग्य का शिकार हो जाती है! तुम भी उन्ही मे से एक हो। लेकिन अब इस दुर्भाग्य को सौभाग्य मे पलट सकी तो रानी, क्या होगा? जानती हो ?

शीला रानी! ७-३० का टाइम है। तुम घर पहुँच चुकी होगी। बडे प्रेम से आँखो मे आसू भर-भर अपने गुरुजनो और परिजनो और प्रियजनो से मिल रही होगी। आँसूओ की दो बूँदें मेरे लिए भी बचा रखना! क्यो? .

और क्या लिखूँ? तुम्हे लिखना भी क्या समाप्त होगा? उसकी सीमा मैंने नही देखी। परन्तु शीला—सेवा मे जो शक्ति है, वह इस भावु-

कता मे नही है। प्रेम प्रतिदान चाहता है ! नही मिलता, तो वह प्रतिशोध लेता है ! मित्रो के बीच मे जब शका पैदा हो जाती है, तो वे सबसे बडे दुश्मन बन जाते है । मेरा मन अब उचट रहा है प्रिये ! लिख नही सकता। जीवन मे पहली बार ही तो ऐसा पत्र लिखा है, इससे झिझक भी तो है—कही तुम कह न बैठो, एक अपरिचित को ऐसा पत्र तुम कैसे लिख सके ? शीला क्या हम अपरिचित है ? बताओगी प्रिय ?

मेरी रानी ! मै चाहता हूँ तुम्हे बिलकुल भूल जाऊँ ! समझूँ तुम बहुत बदसूरत, फूहड और शरारती लडकी हो ! मेरा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नही ! लेकिन विद्रोह तो और भी आसक्ति पैदा करता है ! तब क्या करूँ ? मुझे डर लगता है ! मुझे उबार लो, नही तो पतन के उस खड्डे मे जा गिरूँगा, जहा दुनिया को मेरी किरच ढूँढी न मिलेगी !

शीला देवि ! सुनना चाहती हो तो सुन लो—तुम मेरी हो, मैं तुम्हे प्रेम करता हूँ ..लेकिन नही, नही—मैं बिलकुल भी प्रेम करना नही चाहता। यह पुरुष है जो नारी की अपूर्णता मे अपनी अपूर्णता मिलाकर सम्पूर्ण बन जाना चाहता है ! बोलो प्रिये ! क्या तुम उसे अपने नजदीक आने दोगी, या ठुकरा् दोगी ?

आज्ञा दो रानी मै अब उठूँ। स्नान और भोजन की व्यवस्था करनी है। पानी आगया है। भोजन के लिए भूख नही। बस ठीक है !

कल तक कर्फ्यू-आर्डर जारी था, परन्तु मैं १० बजे से पहले ही घर आ गया था। स्टेशन पर मामा जी और एक दो 'फ्रैंड' आ गए थे। यहा गरमी काफी है। हाथ पसीने से तर है ! पर तुम्हारा खत बचाने के लिए एक और कागज़ रख लिया है। सोचता हूँ कल की तरह पखा लेकर तुम मेरे पास बैठी होती !

सुशीला ! तुम्हारी बहुत सी बाते मुझे आश्चर्य मे डालने वाली होती है। कभी-कभी तुम इतना सयम धारण करती हो कि बस हद है !

कभी-कभी इतनी भोली जान पडती हो, कि देवी के समान ! कभी-कभी इतनी चचल हो उठती थी, कि मैं घबरा गया, और कभी इतनी चतुर, कि मै तुमसे डरने लगा ! लेकिन डरना मत, केवल सोचना—क्या ऐसा हुआ था, या मैं वैसे ही कह रहा हूँ, ? शायद वैसे ही कहता हूँ रानी ! ये सब भावनाएँ है, जो तुमसे मै छिपाऊँगा नही, पर इसका मतलब यह नही, कि तुम डरो या रोओ ! ऊँ हूँ, केवल अपने को जानो। जिसने अपने को जाना, उसने जग को जाना !

और रानी ! उपदेश समझो या याचना; एक बात याद रक्खो—'अपने मत पर दृढ रहो, और दूसरो के प्रति विनयी।'

अच्छा ! तुम्हारी जय बनी रहे रानी। भिखारी को दरवाजे से कोरा न लौटा देना। कुछ न दे सको तो दया-दृष्टि से देख भर लेना, जिससे उसकी सूखी हड्डियो मे रक्त-कण चमक आयेंगे, और वह आगे बढ सकेगा !

मेरे पत्रो को फाडना मत। अच्छा सबको नमस्ते कहना, और सरला जी से कहना, कि जीजी की याद मे इतना रोना ठीक नही है। लो होल्डर की स्याही भी खत्म हुई। विदा, रानी ! अनेक प्रेम-चुम्बनो के साथ विदा !

तुम अगर बना सको, तो तुम्हारा ही
—विष्णु

और भी,

कैलाश ने तुम्हे पुस्तक दी होगी। विवाह सम्बन्धी सब बाते समझ कर पढ लेना।

वि—

और भी

रानी ! मुझसे एक गल्ती हो गई। मैं तुम्हारा फोटो वही भूल आया। परसो शायद माता जी लावे। नही तो ..याद हे ना ?

अभी दफ्तर आया हूँ। अजीव आफत का सामना है! काम का बवंडर सा फैला है। कल के १० से १२ का वक्त, और आज का। उफ! कितना अन्तर है! तुम तो सोच भी नही सकतीं!...

—विष्णु

: १२७ :

प्रगतिशील-लेखक-संघ के मुंशी प्रेमचन्द जी के साथ मूल स्थापको मे से एक . पाकिस्तान कम्यूनिस्ट पार्टी के भूतपूर्व मन्त्री, जिन्हे १९४७ के बाद भी जेल की च्हारदीवारी के भीतर सासे लेनी पडी .

—श्री सज्जाद जहीर का पत्र रजिया के नाम†

"... ..कहीं मेरे साथ वैसा न करना, जैसा शिवजी ने कामदेव के साथ किया था......"

सेन्ट्रल जेल
१६, नवम्बर १९४७

मेरी प्राण प्यारी,

इस हफ्ते मुझे तुम्हारे तीन खत मिले। एक मे परेशानी और गुस्सा, दूसरा बहुत मीठा व प्यारा, और तीसरा रज से भरा। एक उत्तर लिखने बैठता हूँ, तो साकार तुम मेरी आखो के आमने-सामने घूमने लगती हो। जैसी तुम असल मे हो, वैसी ही यहाँ भी हो, यानी कभी-कभी वडे गुस्से मे मुझसे खफा, और मेरी तरफ से मन मे तरह-तरह के शकूक और तोहमात, और कभी, वस क्या कहूँ, कैसी नरम,

†सज्जाद जहीर सन् ४२ के स्वतन्त्रता-आन्दोलन मे जेल गये थे। वही जेल से ही उन्होने यह पत्र लिखा।

अच्छी, मीठी, रसीली ! तुम्हारी ही दिल लुभाने वाली बाते मेरे दिल और मेरी नजरो मे बस रही है ! लेकिन सिर्फ तुम ऐसी होती, तो मुझे कितनी मायूसी होती ! तुम्हारी सूरत जो मेरे दिल मे बसी है, वे सब विशेपताएँ रखती है, जो ब्रह्मा, विष्णु व शिव की विशेपताये है। यानी निर्माण, पालन और विनाश। मेरा मन तुमको तरह-तरह के रूपो मे देखता है, और हर तरह से तुम्हारी पूजा करना चाहता हे, और करता हे। बेगम जान ! आपसे सिर्फ यह इल्तिजा है, कि इस देवताओ के बुलन्द मर्तबे को इस्तेमाल करके . कही मेरे साथ वैसा न करना, जैसा शिवजी ने कामदेव के साथ किया था...जानती हो क्या हुआ था ? शिवजी किसी बडी तपस्या मे बरसो से लगे थे। कामदेव ! यानी इश्क के शरीर देवता ने इनके तप को तोडना चाहा। बाहर की मस्त हवाये खुशबुओ और हुस्न तमाम अश्को के साथ वह उनके सामने आकर अपने करिश्मे दिखाने लगा। आखिर शिवजी ने गुस्से मे आकर अपनी तीसरी आख खोल दी, और ये बेचारे कामदेव जल कर राख हो गये ! लेकिन कही यह न समझना, कि इसके बाद कामदेव हमेशा के लिये खत्म हो गये। उनका जिस्म बेशक जल गया, पर अब उन्होने बेजिस्म होकर इन्सानो के दिल मे जगह कर ली। तो जानेमन ! जरा होशियार ! अब आप अपनी पालन व निर्माण करने वाली विशेपताये ज्यादा इस्तेमाल किया कीजिये, नही तो मेरी मुहब्बत आपके दिल को चैन न लेने देगी ! तुम कहती होगी, कि इनको हो क्या गया है, जो ऐसे बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं ? लेकिन सचमुच आज तो जैसे कुछ हो ही गया है ! यह साल का अच्छा महीना, गुलाबी जाड़े, ठडी रातें, खुशगवार दिन, नीला साफ आस्मान, और फिर यह तन्हाई ! यह जुदाई हसरतो का खून है ! तुम इतनी दूर, के ख़याल भी वहा तक न पहुँचे ! और दिल है, कि बस हर समय तुमको—तुमको और बार-बार तुमको चाहता है; पुकारता है, ढूंढता है, लेकिन तुम्हारी आवाज तक

नही सुन पाता ! इस भयानक सन्नाटे मे गश्त लगाने वाले की आवाज ही बार-बार सुनाई देती है, और मायूसी की तारीकी और गहरी हो जाती है।

प्यारी, असल मे बात यह है, कि यह अजीब जगह है ! इन्सान पर अजीव असरदार तरीके से असर डालती है। सहज-सहज गौर व फिक्र की ताकत जैसे टूटने सी होने लगती है। हम हसते, बोलते, लिखते, पढते है, लेकिन सतही तौर पर। जिन्दा रहने के लिये, जिन्दगी मे उम्मीद व उमग को कायम रखने के लिये, अपनी रूह की सारी ताकत इस्तेमाल करनी पडती है। उफ, यह मनहूस मरघट ! हाँ यहाँ से रिहाई कभी न कभी जरूर होगी। मगर जख्म कभी ना भरेंगे, जिन्होने दिमाग को मफलूज, दिल को साकत, और रूह को मुर्दा कर दिया है।

आजकल यहाँ सियासी कैदियो मे बराबर छूटने के चर्चे हो रहे है। इसलिये लिखने-पढने का कोई सजीदा काम मुमकिन नही है। बस सिर्फ हल्के, हल्के नाविल पढता हूँ। अजीब जिन्दगी है ! तुमसे कब मुलाकात होगी, या जाडे भी यूँ ही गुजर जायेगे ?...

तुम्हारी आखो व लबो, सबसे प्यार !

तुम्हारा चाहने वाला
—सज्जाद जहीर

: १२८ :

गांधी जी के 'पांचवे पुत्र' जमनालाल बजाज की जीवन-संगिनी, जो अपने पति के राजनीतिक कार्यो को ठीक नही समझनी थी, मगर वाद में उनके साथ जेल तक गई .....

—श्री जानकी देवी बजाज का पत्र श्री जमनालाल बजाज के नाम।

" ...मेरी कमजोरियां आपके तेज में वाधक हो रही है......"

२६-११-३२

मैं तो आपको योग-भ्रष्ट योगी ही मानती आ रही हूँ। आपके ही पीछे दुनिया का वैभव देखा, और स्वर्ग की इच्छा ही नही है! मोक्ष के योग्य तो करनी ही नही, यह वडा दुख है।

और मैं आपको नर मानूँ या नारायण ? यही मेरी समझ मे नही आ रहा है ..मेरी कमजोरियाँ आपके तेज मे वाधक हो रही है... अप्रत्यक्ष देख रही हूँ, पर समझ कर भी कोई पाप आडे आ रहा है क्या ?

'हिम्मते मरदा तो मरदे खुदा' की तरह जो 'एक दम हिम्मत करलूँ, तो सारा वातावरण तेजमय बना हुआ ही है। सोने मे सुगन्ध हो जावे !

आत्मा एक है, मिट्टी से क्या मोह है ?

—जानकी

परिशिष्ट—१

अभिनेताओ के प्रेम-पत्र :

एडा—३०० कैम्पबेल—२२५, २३२, स्टैनले लूपिनो—३००

उद्योगपतियो के प्रेम-पत्र :

जमनालाल बजाज—११६, हेनरी फोर्ड—५२

कवियो के प्रेम-पत्र .

अर्नेस्ट टॉलर—३४६ अमृता प्रीतम ३४८, अलेक्जेंडर पोप—२१६, इकबाल २३७, एडगर एलन पो—१४८, कॉलरिज—१२१, कीट्स—८६, गेटे—६६, ७१, ७४, १८१, १८४, २४४, जाँ निसार अख्तर—१३०, जेब्रिल रोजेट्टी—१५३; १६५, टैनीसन—६८, दाग—२४२, नजरुल इस्लाम—१६६, नाजिम हिकमत—२८३, नीरज—३२३, ३२६, ब्राउनिंग—३८, १३६, बायरन—१११, १८४, १६६, २४८, बेंजेमिन फ्रैंकलिन—७६, बैरट—३८, १३६, रेनर मेरिया रिल्के—१३२, लुमुम्बा—२६७, वर्डस्वर्थ—६१, शैले—१७७, २०४, २०७, शिबली मौ०—२३४, हसरत मोहानी—२८५

क्रान्तिकारियो के प्रेम-पत्र :

अनीता—३०६, अरविन्द घोष—१२७, क्रामवेल—२६४, क्रुस्पकाया—३०७, गैरेवाल्डी—३०६, टैम मौलिन—२७४; मैज़िनी—६६, लैनिन—३०७

राजनीतिज्ञों के प्रेम-पत्र :

अब्राहिम लिंकन—२७; क्रामवेल—२६४, कैंदेरिन—२२०, गाधी—२८१; गेरेबाल्डी—३०६; चार्ल्स प्रथम—१६२; जमनालाल बजाज—११६, ३६०, जॉर्ज वाशिंगटन—२००; डैस मौलिन—२७४; नैपोलियन—१०८, ११८, २८६, २६२,; बिस्मार्क—१५०; बैंजेमिन फ्रैंकलिन—७६, मुंशी के० एम०—१७५, ३३६, ३४१, ३४३; मैजिनी—६६; रूज़वेल्ट—१३४; रूसो—६३; रोमेल—२६८, लुमुम्बा—२६७, लैनिन—३०७; वारेन हेस्टिंग—१४४, सिसरो—१४०, हसरत मोहानी—२८५

लेखकों के प्रेम-पत्र :

अतिया फैजी—२३४, २३७, अमृता प्रीतम—३४८; अलैक्जैंडर ड्यूमा—१०६, इकबाल—२३७, एडवर्ड फिजगेराल्ड—५८; कृष्ण चन्द्र—३३५, काफ्का फ्रान्ज—६५, कार्लाइल—४०, १५६; गाधी—२८१, गिब्बन्स—८४, ८७, गेटे—६६, ७१, ७४, १८१, १८४, २४४, चार्ल्स डिकन्स—१२५, चैंखव—८०, जॉर्ज सैंड—१८६, जोनेथन स्विफ्ट—१००, १०२; टाल्स्टाय—३०, ३१६; दोस्तो-एस्की—११४, २४०, प्रेमचद—१४२; फ्लावेयर २०६; फ्रायड—४७, बर्नार्ड शॉ—२२५, २३२, बालजक—२१८; बैंजेमिन फ्रैंकलिन—७६, मुंशी के० एम०—१७५, ३३६, ३४१, ३४३; रजिया स० जहीर—३५७, रूसो—६३; लैनिन—३०७, वर्जीनिया वुल्फ—३१३, वाल्टर रैले—२५३, वाल्टर स्कॉट—३३, विक्टर ह्यूगो—२२१, ३१५; विष्णु प्रभाकर—३५०; शिवली मौ०—२३४; सज्जाद जहीर—३५७; सिसरो—१४०; हैज़लिट—५६

विचारकों के प्रेम-पत्र :

अरविन्द घोष—१२७, इकबाल—२३७, गाधी—२८१;

टाल्स्टाय—३०, ३१६; फ्रायड—४७; रामतीरथ—१७२; रूसो—
९३, लैनिन—३०७, सिसरो—१४०

वैज्ञानिको के प्रेम-पत्र :

पियरे क्यूरी—६५, १५७; फ्रायड—४७; फैरेडे—५४,
बैंजेमिन फ्रैन्कलिन—७६, मेरी क्यूरी—६५, १५७, लुई पेस्चर—
५०; हुम्फ्री डेवी—१२३

शासकों के प्रेम-पत्र

अब्राहिम लिंकन—२७; एलिज़ावेथ प्रथम—१०४, क्रामवेल—
२९४; कैंदरीन—२२०; चार्ल्स प्रथम—१६२; जॉर्ज वाशिगटन—
२००, नैपोलियन — १०८, ११८, २८९, २९२, बैंजेमिन
फ्रैंकलिन—७६, मावलकर—३१९, मेरी अन्टोनियटे—२७०,
मेरी द्वित्तीय—१४६, रूजवेल्ट—१३४, लुमुम्बा—२६७; लैनिन—
३०७; वाजिद अली शाह—१५५;, २७२, वारेन हेस्टिग—१४४;
विक्टोरिया—३७, विलियम—१४६, हैनरी अष्ठम—६३, २५८

सगीतज्ञों के प्रेम-पत्र :

मोजार्ट—१७३

सन्तों के प्रेम-पत्र :

अरविन्द—१२७; गाधी—२८१, टाल्स्टाय—३०, ३१६,
रामतीरथ—१७२

सेनाध्यक्षो के प्रेम-पत्र :

क्रामवेल—२९४; कोनिंग्समार्क—२१४; जॉर्ज वाशिगटन—
२००, ११८, २८९, २९२, नैपोलियन—१०८, नेल्सन—२९६;
पटियामाकिन—२२०; बिस्मार्क—१५०; रूज़वेल्ट—१३४, आर०
इसैक्स—१०४; रोमेल—२९८

परिशिष्ट २—स्त्रियों के पत्र

१ अतिलक्ष्मी ... १७५
२ अमृता प्रीतम ... ३५८
३ ईथल रोजनवर्ग ... २६५
४ एनीबोलीन .. २५८
५ एलिजाबेथ प्रथम ... १०४
६ करगो ... ८७
७ कैंदरीन (रानी) ... २२०
८ कैम्पवेल ... २३२
९ जानकी देवी बजाज ... ३६०
१० जार्ज सैंड . १८९
११ जेन वेल्श ... ४०
१२ नी ... ३२९
१३ फ्रॉ-वॉन-स्टीन .. १८१
१४ वैंरट ... १३६
१५ मनोरमा मावलकर ... ३१९
१६ मेरी ... २०७
१७ मेरी क्यूरी ... १५७
१८ मेरी द्वित्तीय ... १४६
१९ मेरी अन्टोनियटे ... २७०
२० मेरी वर्डस्वर्थ ... १६५
२१ लीलावती ... ३४३
२२ लूसी ... ११८
२३ वर्जीनिया वुल्फ ... ३१३
२४ विक्टोरिया ... ३७
२५ वेनेसा .. १०२
२६ शैदा वेगम .. १५५
२७ सोफिया डोरोथिया .. २१४
२८ हैरियट विलसन ... २४८

परिशिष्ट ३—भारतीयों के पत्र

१	अतिलक्ष्मी	...	१७५
२	अमृता प्रीतम	...	३४८
३	अरविन्द घोष	...	१२७
४	इकबाल		२३७
५	कृष्ण चन्द्र	.	३३५
६	गाँधी	...	२८१
७	जमनालाल बजाज		११६
८	जानकी देवी बजाज	.	३६०
९	जॉ निसार अख्तर	...	१३०
१०	दाग	..	२४२
११	नजरूल इस्लाम	..	१६९
१२	नी...	...	३२९
१३	नीरज	...	३२०
१४	प्रेमचन्द	..	१४२
१५	मनोरमा मावलकर		३१९
१६	मुँशी के० एम०		१७५, ३३९, ३४१
१७	रामतीरथ	...	१७२
१८	लीलावती	.	३४३
१९	वाजिद अली शाह		१५५, २७२
२०	विष्णु प्रभाकर		३५०
२१	शैंदा बेगम	..	१५५, २७२
२२	मौ० शिबली	...	२३४
२३	सज्जाद जहीर	...	३५७
२४	हर्थीसिंह	...	३२१
२५	हसरत मोहानी	...	२८५

अनुक्रमणिका

अतिलक्ष्मी १७५
अर्नेस्ट टॉलर ३४६
अपोलनेरिया २४०
अब्राहिम लिंकन २७
अमृता प्रीतम ३४८
अरविन्द घोष १२७
अलैक्जैंडर ड्यूमा १०६
अलैक्जैंडर पोप २१६
इकवाल २३७
ईथल रोजनबर्ग २६५
एडगर एलन पो १४८
ऐडवर्ड फिज्‌गेराल्ड ५८
ऐनीबोलीन २५८
ऐलीजाबेथ प्रथम १०४
करशो ८७
कृष्ण चन्द्र ३३५
काफ्का फ्रान्ज ६५
क्रामवेल २६४
कार्लाइल १५६
कॉलरिज १२१
कीट्स ८६
कैंदरिन २२०
कैम्पबेल २३२
गाधी २८१
गिब्बन्स ८४
गेटे ६६, ७१, ७४, १८४, २४४
गैरी पार्वस ३३२
गेरेबाल्डी ३०६
चार्ल्स डिकन्स १२५
चार्ल्स प्रथम १६२
चैखव ८०
जमना लाल बजाज ११६
जानकी देवी ३६०
जाँ निसार अख्तर १३०
जार्ज वाशिंगटन २००
जार्ज सैंड १८६
जूलियट २२१
जूली रोजनबर्ग २६२
जेन वैल्श ४०
जैब्रिल रोजैट्टी १५३
जोनेथन स्विफ्ट १००
टाल्स्टाय ३०, ३१६
टैनीसन ६८
डार्विन ११०

डैस मौलिन २७४
दाग २४२
दोस्तोवस्की ११४
नज़रुल इस्लाम १६६
नाजिम हिकमत २८३
नी. ३२६
नीरज ३२३
नैपोलियन १०८, २८६, २६०
नैल्सन २६६
प्रेम चन्द १४२
पियरे क्यूरी ६५
फ्लाबेयर २०६
फ्रान्सिस यग हस्बैंड १८६
फ्रायड ४७
फ्रॉ-वॉन-स्टीन १८१
फैरेडे ५४
बर्नार्ड शॉ २२५
ब्राऊनिंग ३८
बायरन १११, १६४, १६६
बालजक २१८
बिस्मार्क १५०
बैंजेमिन फ्रैन्कलिन ७६
बैरट १३६
मनोरमा मावलकर ३१६
मुंशी, के० एम० ३३६, ३४१
मेरी २०४
मेरी क्यूरी १५७
मेरी अन्टोनियटे २७०
मेरी द्वित्तीय १४६
मेरी वर्डस्वर्थ १६५
मैजिनी ६६
मोजार्ट १७३
रामतीरथ १७२
रेनर मेरिया रिल्के १३२
रूजवेल्ट १३४
रूसो ६३
रोमेल २६८
लीलावती ३४३
लुई पेस्चर ५०
लुमुम्बा २६७
लूसी ११८
लैनिन ३०७
वर्जीनिया वुल्फ ३१३
वर्डस्वर्थ ६१
वाजिद अली शाह २७२
वारेन हेस्टिंग १४४
वाल्टर रैले २५३
वाल्टर स्काट ३३
विक्टोरिया ३७
विक्टर ह्यूगो ३१५

प्रभाकर ३५०
१०२
शैदा बेगम १५५
शैले १७९, २०७
शिबली मौ० २३४
सज्जाद जहीर ३५७
स्टैनले लूपिनो ३००
सिसरो १४०
सोफिया डोरोथिया २१४
हथीसिंह ३२१
हम्फरी डेवी १२३
हसरत मोहानी २८५
हैजलिट ५६
हैनरी अष्ठम ६३
हेनरी फोर्ड ५२
हैरियट विल्सन २४८